शिक्षा निदेशालय

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली सरकार

सहायक सामग्री

(2022-2023)

कक्षा : ग्यारहवीं

संस्कृतम् (केन्द्रिकम्)

मार्गदर्शन:

श्री अशोक कुमार
सचिव (शिक्षा)

श्री हिमांशु गुप्ता
निदेशक (शिक्षा)

डॉ. रीता शर्मा
अतिरिक्त शिक्षा निदेशक (स्कूल एवं परीक्षा)

समन्वयक:

श्री संजय सुभास कुमार
उप शिक्षा निदेशक (परीक्षा)

श्रीमती सुनीता दुआ
विशेष कार्याधिकारी (परीक्षा)

श्री राजकुमार
विशेष कार्याधिकारी (परीक्षा)

श्री कृष्ण कुमार
विशेष कार्याधिकारी (परीक्षा)

उत्पादन मंडल

अनिल कुमार शर्मा

दिल्ली पाठ्य पुस्तक ब्यूरो में राजेश कुमार, सचिव, दिल्ली पाठ्य पुस्तक ब्यूरो, 25/2, पंखा रोड, संस्थानीय क्षेत्र, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित तथा मैसर्स अरिहन्त ऑफसेट, नई दिल्ली द्वारा मुद्रित।

ASHOK KUMAR
IAS

सत्यमेव जयते

सचिव (शिक्षा)
राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र
दिल्ली सरकार
पुराना सचिवालय, दिल्ली-110054
दूरभाष: 23890187 टेलीफैक्स : 23890119

Secretary (Education)
Government of National Capital Territory of Delhi
Old Secretariat, Delhi-110054
Phone : 23890187, Telefax : 23890119
E-mail : secyedu@nic.in

Message

Remembering the words of John Dewey, "Education is not preparation for life, education is life itself", I highly commend the sincere efforts of the officials and subject experts from Directorate of Education involved in the development of Support Material for classes IX to XII for the session 2022-23.

The Support Material is a comprehensive, yet concise learning support tool to strengthen the subject competencies of the students. I am sure that this will help our students in performing to the best of their abilities.

I am sure that the Heads of Schools and teachers will motivate the students to utilise this material and the students will make optimum use of this Support Material to enrich themselves.

I would like to congratulate the team of the Examination Branch along with all the Subject Experts for their incessant and diligent efforts in making this material so useful for students.

I extend my Best Wishes to all the students for success in their future endeavours.

(Ashok Kumar)

HIMANSHU GUPTA, IAS
Director, Education & Sports

सत्यमेव जयते

Directorate of Education
Govt. of NCT of Delhi
Room No. 12, Civil Lines
Near Vidhan Sabha,
Delhi-110054
Ph.: 011-23890172
E-mail : diredu@nic.in

MESSAGE

"A good education is a foundation for a better future."
- Elizabeth Warren

Believing in this quote, Directorate of Education, GNCT of Delhi tries to fulfill its objective of providing quality education to all its students.

Keeping this aim in mind, every year support material is developed for the students of classes IX to XII. Our expert faculty members undertake the responsibility to review and update the Support Material incorporating the latest changes made by CBSE. This helps the students become familiar with the new approaches and methods, enabling them to become good at problem solving and critical thinking. This year too, I am positive that it will help our students to excel in academics.

The support material is the outcome of persistent and sincere efforts of our dedicated team of subject experts from the Directorate of Education. This Support Material has been especially prepared for the students. I believe its thoughtful and intelligent use will definitely lead to learning enhancement.

Lastly, I would like to applaud the entire team for their valuable contribution in making this Support Material so beneficial and practical for our students.

Best wishes to all the students for a bright future.

(HIMANSHU GUPTA)

Dr. RITA SHARMA
Additional Director of Education
(School/Exam)

सत्यमेव जयते

Govt. of NCT of Delhi
Directorate of Education
Old Secretariat, Delhi-110054
Ph.: 23890185

संदेश

शिक्षा निदेशालय, दिल्ली सरकार का महत्वपूर्ण लक्ष्य अपने विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास करना है। इस उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए शिक्षा निदेशालय ने अपने विद्यार्थियों को उच्च कोटि के शैक्षणिक मानकों के अनुरूप विद्यार्थियों के स्तरानुकूल सहायक सामग्री उपलब्ध कराने का प्रयास किया है। कोरोना काल के कठिनतम समय में भी शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया को निर्बाध रूप से संचालित करने के लिए संबंधित समस्त अकादमिक समूहों और क्रियान्वित करने वाले शिक्षकों को हार्दिक बधाई देती हूँ।

प्रत्येक वर्ष की भाँति इस वर्ष भी कक्षा 9वीं से कक्षा 12वीं तक की सहायक सामग्रियों में सी.बी.एस.ई. के नवीनतम दिशा-निर्देशों के अनुसार पाठ्यक्रम में आवश्यक संशोधन किए गए हैं। साथ ही साथ मूल्यांकन से संबंधित आवश्यक निर्देश भी दिए गए हैं। इन सहायक सामग्रियों में कठिन से कठिन पाठ्य सामग्री को भी सरलतम रूप में प्रस्तुत किया गया है ताकि शिक्षा निदेशालय के विद्यार्थियों को इसका भरपूर लाभ मिल सके।

मुझे आशा है कि इन सहायक सामग्रियों के गहन और निरंतर अध्ययन के फलस्वरूप विद्यार्थियों में गुणात्मक शैक्षणिक संवर्धन का विस्तार उनके प्रदर्शनो में भी परिलक्षित होगा। इस उत्कृष्ट सहायक सामग्री को तैयार करने में शामिल सभी अधिकारियों तथा शिक्षकों को हार्दिक बधाई देती हूँ तथा सभी विद्यार्थियों को उनके उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं देती हूँ।

रीता शर्मा

(रीता शर्मा)

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक [1][**संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य**] बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म

और उपासना की **स्वतंत्रता,**

प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,

तथा उन **सब में**

व्यक्ति की गरिमा और [2][**राष्ट्र की एकता और अखंडता**] सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. को **एतद्द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।**

---

1. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) "प्रभुत्व संपन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य" के स्थान पर प्रतिस्थापित।
2. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) "राष्ट्र की एकता" के स्थान पर प्रतिस्थापित।

THE CONSTITUTION OF INDIA

PREAMBLE

WE, THE PEOPLE OF INDIA, having solemnly resolved to constitute India into a [1]**[SOVEREIGN SOCIALIST SECULAR DEMOCRATIC REPUBLIC]** and to secure to all its citizens :

JUSTICE, social, economic and political;

LIBERTY of thought, expression, belief, faith and worship;

EQUALITY of status and of opportunity; and to promote among them all

FRATERNITY assuring the dignity of the individual and the [2][unity and integrity of the Nation];

IN OUR CONSTITUENT ASSEMBLY this twenty-sixth day of November, 1949 do **HEREBY ADOPT, ENACT AND GIVE TO OURSELVES THIS CONSTITUTION.**

---

1. Subs. by the Constitution (Forty-second Amendment) Act, 1976, Sec.2, for "Sovereign Democratic Republic" (w.e.f. 3.1.1977)
2. Subs. by the Constitution (Forty-second Amendment) Act, 1976, Sec.2, for "Unity of the Nation" (w.e.f. 3.1.1977)

भारत का संविधान

भाग 4क

नागरिकों के मूल कर्तव्य

अनुच्छेद 51 क

मूल कर्तव्य - भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह -

(क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे;

(ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करे;

(ग) भारत की संप्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण बनाए रखे;

(घ) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे;

(ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभावों से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो महिलाओं के सम्मान के विरुद्ध हों;

(च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्त्व समझे और उसका परिरक्षण करे;

(छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखे;

(ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे;

(झ) सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे;

(ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत् प्रयास करे, जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू सके; और

(ट) यदि माता-पिता या संरक्षक है, छह वर्ष से चौदह वर्ष तक की आयु वाले अपने, यथास्थिति, बालक या प्रतिपाल्य को शिक्षा के अवसर प्रदान करे।

Constitution of India

Part IV A (Article 51 A)

Fundamental Duties

It shall be the duty of every citizen of India —

(a) to abide by the Constitution and respect its ideals and institutions, the National Flag and the National Anthem;

(b) to cherish and follow the noble ideals which inspired our national struggle for freedom;

(c) to uphold and protect the sovereignty, unity and integrity of India;

(d) to defend the country and render national service when called upon to do so;

(e) to promote harmony and the spirit of common brotherhood amongst all the people of India transcending religious, linguistic and regional or sectional diversities; to renounce practices derogatory to the dignity of women;

(f) to value and preserve the rich heritage of our composite culture;

(g) to protect and improve the natural environment including forests, lakes, rivers, wildlife and to have compassion for living creatures;

(h) to develop the scientific temper, humanism and the spirit of inquiry and reform;

(i) to safeguard public property and to abjure violence;

(j) to strive towards excellence in all spheres of individual and collective activity so that the nation constantly rises to higher levels of endeavour and achievement;

*(k) who is a parent or guardian, to provide opportunities for education to his child or, as the case may be, ward between the age of six and fourteen years.

Note: The Article 51A containing Fundamental Duties was inserted by the Constitution (42nd Amendment) Act, 1976 (with effect from 3 January 1977).

*(k) was inserted by the Constitution (86th Amendment) Act, 2002 (with effect from 1 April 2010).

शिक्षा निदेशालय

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली सरकार

सहायक सामग्री

(2022-2023)

संस्कृतम् (केन्द्रिकम्)

कक्षा : ग्यारहवीं

निःशुल्क वितरण हेतु

दिल्ली पाठ्य-पुस्तक ब्यूरो द्वारा प्रकाशित

सहायक सामग्री निर्मातृणां सूची

क्रम. सं	नाम	पद एवं संस्था
1.	डॉ विश्वम्भर दयालु: (समूह समन्वयक:)	उप प्रधानाचार्य: रा.उ.मा. बाल विद्यालय: बिन्दापुरम नव दिल्ली-59
2.	डॉ प्रवीण कुमार: (विषय विशेषज्ञ:)	प्रवक्ता- संस्कृत रा. सह-शि. उ. मा. विद्यालय: मुंढेला कलाँ नव दिल्ली-73
3.	श्रीमती सविता (विषय विशेषज्ञा)	प्रवक्ता- संस्कृत रा. कन्या उ. मा. विद्यालय: ककरौला नव दिल्ली-78
4.	श्रीमती सुनीता गौतम (विषय विशेषज्ञा)	प्रवक्ता- संस्कृत रा. बाल उ. मा. विद्यालय: सं. 2 यमुनाविहार नव दिल्ली-53
5.	डॉ संगीता कुमारी (विषय विशेषज्ञा)	प्रवक्ता- संस्कृत रा. कन्या व. माध्यमिक विद्यालय: पपरावटम् नव दिल्ली-43
6.	डॉ. कविता रानी (विषय विशेषज्ञा)	प्रवक्ता- संस्कृत सर्वो. कन्या. विद्यालय: सं. 2 नरेला, नव दिल्ली-40

पुरोवाक् / भूमिका

सम् उपसर्गपूर्वकात् 'कृ' धातोः 'क्त' प्रत्यये कृते 'संस्कृतम्' शब्दः निष्पद्यते। 'संस्कृतम्' अर्थात् व्याकरणनियमैः संपन्नम् असाधुत्वादिदोषैः रहितम् इति भावः। या भाषा व्याकरणनियमाननुसृत्य संस्कृता सकलदोषरहिता च वर्तते सैव संस्कृतभाषा। इयं भाषा सुरवाणी, देववाणी, गीर्वाणवाणी, सुरभाषा, आर्यभाषा, देवभाषा इत्यादिभिः नामभिः चापि लोके प्रथिता अस्ति। अत एवोक्तं महाकविना दण्डिना –

''संस्कृतं नाम दैवी वागन्वाख्याता महर्षिभिः''

भावाभिव्यक्तिरेव भाषायाः प्रमुखं प्रयोजनम्। मानवः मनसि समुत्पन्नान् विचारान् भावनाः च सार्थकैः शब्दैः लिखितसंकेतैः वा प्रकटयति। एतस्मिन्नेव भावाभिव्यञ्जनक्रमे संस्कृतभाषायाः विकासोऽभूत्। विश्वस्यादिमासु भाषासु संस्कृतभाषा परिगण्यते। अस्यामेव चत्वारः वेदाः, षडङ्गानि, चतुर्दशविद्याः, षड्दर्शनानि नानाशास्त्राणि च रचितानि सन्ति। अस्मात् संस्कृतं न केवलं भाषा प्रत्युत जीवनदर्शनमेव वर्तते। अस्याः प्रभावः न केवलं भारतीयासु भाषासु प्रत्युत वैदेशिकीषु भाषासु चापि द्रष्टुं शक्यते। अस्यां न केवलं धार्मिकसाहित्यं लिखितमस्ति अपितु नैतिकं, ज्ञानवर्धकं, मनोरञ्जकं लोकोपकारकं साहित्यमपि प्रचुरतया प्राप्यते।

संस्कृतभाषा न केवलं प्राचीना भाषा वर्तते अपितु वैज्ञानिकी भाषा खल्वेषा। अस्याः ध्वनिविज्ञानं विलक्षणं वर्तते। भाषावैज्ञानिकानां मतेनापि एषा सर्वश्रेष्ठा। अस्यां यल्लिख्यते तदेवोच्चारितं भवति। कृत्रिम बौद्धिकतायै संगणकस्यापि कृते सर्वथोपयोगित्वात् चैतस्याः वैज्ञानिकत्वं सिद्ध्यति। एषा प्रायः विश्वस्य सर्वासां भाषाणां जननी अस्ति। विश्वस्यानेके विद्वांसः संस्कृतस्य प्रभावेण प्रभाविताः सन्तः अस्याः अध्ययनं कृतवन्तः, तत्तत् भषासु च संस्कृतग्रन्थानामनुवादं विहितवन्तः। अतोऽस्याः महत्त्वं सर्वदा सर्वथा चाक्षुण्णमस्ति। संस्कृतविषये प्रोक्तं केनचित् कविना यत्–

संस्कृते संस्कृतिर्ज्ञेया संस्कृते सकलाः कलाः।
संस्कृते सकलं ज्ञानं संस्कृते किन्न विद्यते।।

प्राक्कथनम्

दिल्लीसर्वकारेण संस्कृतभाषायाः महत्त्वं निरीक्ष्य विद्यालयेषु संस्कृतस्य पठन-पाठनं व्यवस्थितमस्ति। एकादश-द्वादशकक्षयोरपि संस्कृतस्य पठनं पाठनं च राजकीयेषु विद्यालयेषु केन्द्रिक-विषयरूपेण विधीयते प्रायः। एतदर्थं प्रोक्तयोः कक्षयोः कृते राष्ट्रीय-शैक्षिकानुसन्धान-प्रशिक्षण-परिषदा रचितं 'भास्वती' इत्येतत् भागद्वयात्मकं पुस्तकं पाठ्यसामग्रीरूपेण निर्धारितमस्ति। शिक्षकाणां प्रशिक्षणार्थं समये समये राज्य-शैक्षिकानुसन्धान-प्रशिक्षण-परिषदा अनयोः पाठ्यपुस्तकयोः भावार्थ-सरलार्थ-अन्वयादिबोधार्थं प्रयासः क्रियते किन्तु तत्सर्वं शिक्षककेन्द्रितं भवति। एषा पाठ्यसामग्री छात्राणां कृतेऽपि सुगमा, सुबोधा सुलभा च स्यादिति संस्कृतानुरागिणां छात्राणां शिक्षकाणाञ्चाकाङ्क्षा आसीत् बहोः कालात्। अधुना दिल्लीसर्वकारः छात्राणां शिक्षकाणां च मनोरथमिमं पूरयितुं प्रयतमानः वर्तते। प्राथम्येन कार्यमेतत् कैश्चित् कार्यान्तरव्यापृतैरपि संस्कृतशिक्षकैः शिक्षिकाभिश्च विधीयते इत्यतोऽत्र न्यूनाधिक्यं संभाव्यत एव।

केन्द्रीयमाध्यमिकशिक्षासंघट्टनेन परीक्षादृष्ट्या प्रश्नपत्रस्य यत् प्रारूपं 2022-2023 सत्रे विन्यस्तमस्ति तदनुरूपमेव एषा सहायकसामग्री सज्जीकृता शिक्षक-शिक्षिकाभिः। पाठ्यपुस्तकस्य निर्धारितानां पाठानां विशदं विवरणं परीक्षानुरूपं तु विहितमेव, प्रश्नानां विन्यासोऽपि तथा विहितः यथा छात्राणामधिकाधिकोऽभ्यासः भवेत्। अपठितांशावबोधानां, रचनात्मकानां कार्याणां, व्याकरणिकानां तत्त्वानां, साहित्यकाराणां साहित्यिकानां तत्त्वानाञ्चापि पर्याप्तः अभ्यासः छात्रहितेच्छया पुस्तकेऽस्मिन् समावेशितः। नूतनं प्रश्नपत्रप्रारूपं सर्वथा हृदि निधाय शिक्षक-शिक्षिकाभिः प्रतिप्रश्नं विकल्पानां समावेशोऽपि कृतोऽस्ति। सन्धि-समास-प्रत्यय-उपपद-वाच्यादिषु व्याकरणिकेषु तत्त्वेषु न केवलं पाठ्यपुस्तकोदाहरणानां चयनं कृतमपितु नियमोल्लेखोऽपि विहितः, येन छात्राः याथातथ्येन विषयवस्तुनः अवबोधनं कुर्युः।

एषा सामग्री न केवलं छात्राणां प्रत्युत शिक्षकानामपि पथप्रदर्शनं विधास्यतीति धिया पुस्तकमिदं संग्रथितम्। एषा सामग्री संस्कृतजिज्ञासूनां कोमलमतीनां छात्राणां कियदिवोपकारं करिष्यतीति स्वयमेव समूहन्तां सुधियः। स्वल्पीयसा कालेन ग्रथिते ग्रन्थेऽस्मिन् याः काः अपि त्रुटयः स्युः ताः क्षन्तव्याः सन्ति सुधीभिः। एतस्य पुस्तकस्य परिष्काराय विदुषां परामर्शाः स्वागतार्हाः। सामग्रीलेखने कृतपरिश्रमाणां विषयविशेषज्ञानां शिक्षकाणां शिक्षिकाणां च कृते हार्दिकीं कृतज्ञतां व्यवहराम्यहम्। सहायक सामगी प्रकाशनाय दत्तानुमतेः कृते शिक्षामन्त्रिण शिक्षानिदेशक महोदयस्य अन्येषां च सहयोगिनाम् अधिकरिणां हार्दिकं कार्त्तज्ञं प्रकटयामि।

विद्यार्थिनां कृते सामान्यनिर्देशाः

(क) अपठितानुच्छेदाधारितानां प्रश्नानाम् उत्तरप्रदानात् पूर्वं ध्यानेन अनुच्छेदः पठनीयः।

(ख) प्रश्नानां भाषा निर्देशं च सम्यग्रूपेण अवबुध्य उत्तरलेखनं करणीयम्।

(ग) शीर्षक लेखनसमये अनुच्छेदस्य मूलप्रेष्यसंदेशं मनसि ध्यातव्यम्।

(घ) पत्रलेखनसमये प्रश्नमवबुध्य मञ्जूषा – प्रदत्त – सार्थकपदैः रिक्तस्थानपूर्तिः करणीया। सम्पूर्णं पत्र लेखनीयम्।

(ङ) सम्पूर्णा कथा लेखनीया।

(च) अनुच्छेदलेखनसमये तथ्यमिदं मनसि ध्यातव्यम् यत् मञ्जूषा- प्रदत्तपदानां प्रयोगः अनिवार्यः नास्ति। आवश्यकता चेत् पदानि गृहीतव्यानि।

(छ) अनुवादसमये कर्तृक्रियान्वितिः ध्यातव्या।

(ज) व्याकरणांशाधारितानां प्रश्नानाम् उत्तरप्रदानात् प्राक् समुचितं विकल्पचयनं कर्त्तव्यम्।

(झ) गद्यांश-पद्यांश-नाट्यांशाधारितप्रश्नानां उत्तरप्रदानात् पूर्वं प्रश्नस्य भाषा अवबोद्धव्या।

(ञ) सम्पूर्णः अन्वयः लेखनीयः।

(ट) सम्पूर्णः भावार्थः लेखितव्यः।

(ठ) सर्वे प्रश्नाः समाधेयाः।

(ड) प्रत्येकं खण्डस्य प्रश्नानां उत्तराणि एकस्मिन् स्थाने लेखितव्यानि।

विषय-तालिका

संस्कृतम्-नवीनतमः पाठ्यक्रमः अंकयोजना च

क्रम सं.	विषय सामग्री	अङ्काः
भाग 'क'	अपठितांशावबोधनम्	अंकः-10
भाग 'ख'	रचनात्मकं कार्यम्	अंकः-15
	1. औपचारिकानौपचारिकं प्रार्थनापत्रम्, अंकः-5	
	2. लघुकथा/वार्तालापे	
	3. वा एक पक्षपूरणम्, अंकः-5	
भाग 'ग'	अनुप्रयुक्तं व्याकरणम्	अंकः-20
	1. **सन्धिः स्वरसन्धिः** दीर्घ गुण, वृद्धि, यण्, अयादि प्रकृतिभावः। **व्यञ्जन सन्धिः** श्चुत्व, ष्टुत्व, जश्त्व, अनुस्वार, परसवर्णः। **विसर्गसन्धिः** उत्व, रुत्व, लोप, विसर्ग को स्-श्-ष्।	अंकः-3
	2. प्रत्ययाः- क्त, क्तवतु, तव्यत्, अनीयर, क्त्वा, ल्यप्, तुमुन्।	अंकः-3
	3. शब्दरूपाणि, अंकः-3	
	4. धातुरूपाणि, अंकः-3	
	5. उपपदविभक्तयः, अंकः-3	
	6. वाच्यपरिवर्तनम् (लट् लकारे) अंकः-2	
	7. अशुद्धिसंशोधनम्, अंकः-3	
भाग 'घ'	पठितांशावबोधनम्	अंकः-35
	I. पठित-अवबोधनम्, अंकः-25	
	1. प्रथमः पाठः - कुशलप्रशासनम्	

2. तृतीयः पाठः - सूक्तिसुधा

3. पंचमः पाठः - वीरः सर्वदमनः

4. षष्ठः पाठः - शुकशावकोदन्तः

5. अष्टमः पाठः - संगीतानुरागी सुब्बण्णः

6. नवमः पाठः - वस्त्रविक्रयः

7. दशमः पाठः - यद्भूतहितं तत्सत्यम्

8. एकादशः पाठः - स मे प्रियः

II. सामान्य-संस्कृत-साहित्य-परिचयः अंकः-10

भाग 'ङ' आन्तरिक मूल्यांकनम् अंकाः-20

1. आवधिकपरीक्षा अंकाः-5

2. बहुविधमूल्याङ्कनम् अंकाः-5

3. निवेशसूचिका (पोर्टफोलियो) अंकाः-5

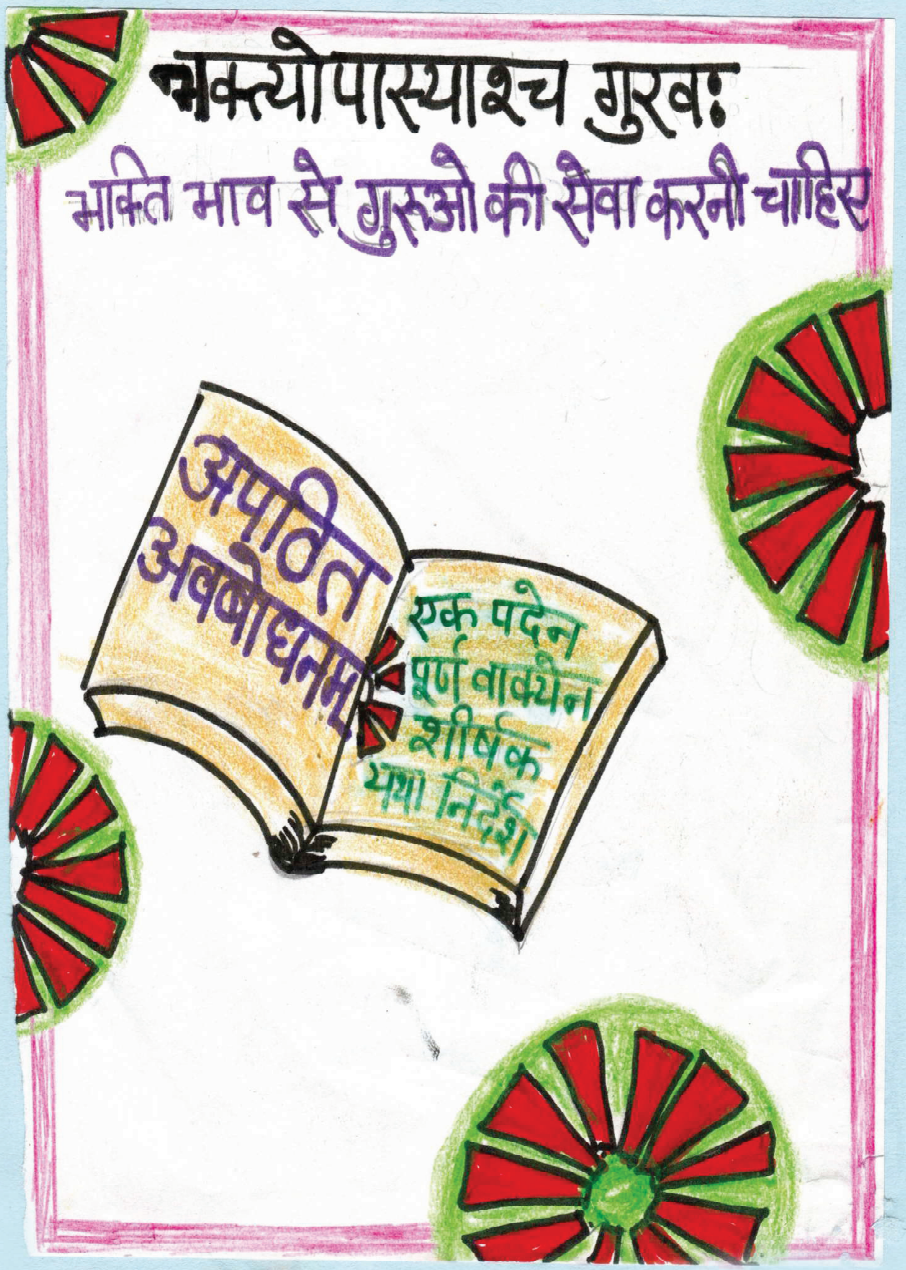
4. भाषा- संवर्धनायंगतिविधिः अंकाः-5

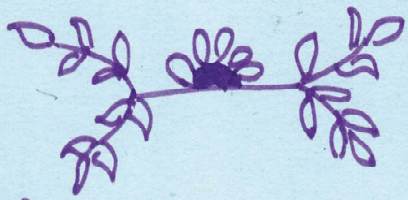
(क) श्रवण-भाषणकौशलम्

(ख) लेखनकोशलम्

विषयानुक्रमः

क्रम.सं.	विषयः	पृष्ठ संख्या
1.	अपठितांशावबोधनम्	01–32
2.	रचनात्मकं कार्यम्	33–67
3.	अनुप्रयुक्तं व्याकरणम्	67–92
4.	पठितांशावबोधनम्	165–270
5.	प्रथमः पाठः	93–99
6.	तृतीयः पाठः	100–107
7.	पंचमः पाठः	108–115
8.	षष्ठः पाठः	116–123
9.	अष्टमः पाठः	124–130
10.	नवमः पाठः	131–138
11.	दशमः पाठः	139–146
12.	एकादशः पाठः	147–164
संस्कृत-साहित्य-परिचयः		271–287
1.	आदर्शप्रश्नपत्रम् 1	288–315
2.	आदर्शप्रश्नपत्रम् 2	316–341
3.	आदर्शप्रश्नपत्रम् 3	342–365
4.	आदर्शप्रश्नपत्रम् 4	366–392
5.	आदर्शप्रश्नपत्रम् 5	393–418


भक्त्योपास्याश्च गुरवः
भक्ति भाव से गुरुओं की सेवा करनी चाहिए
अपठित अवबोधनम्
एकपदेन पूर्ण वाक्येन सार्थकं यथा निर्देशं



"मितभोजनं स्वास्थ्यम्"।

"आवश्यकतानुसार नपा तुला
भोजन ही स्वास्थ्य है।"

अपठितगद्यांशः–1

अपठितगद्यांशं पठित्वा प्रदत्तप्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतेन लिखत

अनुशासनस्य आशयः अस्ति-व्यवस्था नियमो वा। सकले संसारे सर्वां प्रकृतिं, सर्वान् पदार्थान् प्रातः कालतः सांयं यावद् वयम् अनुशासनेन शिष्टान् पश्यामः। सूर्यो हि सनियमं प्रातः उदेति सायं च गच्छति अस्ताचलम्। सर्वे ऋतवः स्वस्मिन् समये प्रकृतेः शोभा संवर्धयन्ति। अस्माकमपि इदं कर्तव्यं जायते यद् वयम् अनुशासनस्य व्यवस्थां पालयेम। जीवने खलु महन्महत्त्वम् अस्ति अनुशासनस्य। विशेषतः छात्रजीवने तु भवति अनुशासनम् अनिवार्यम्। कक्षायां सदैव प्रतिविभागं समयविभागः विद्यते। परीक्षापि नियतकाले दीयते। यदि वयं आत्मनो भिन्नं जगत् पश्यामः तर्हि तत्र सर्वत्र अनुशासनं दृश्यते। पक्षिणः स्वभोजनं प्राप्तुं गगने विहृत्य भोजनकणान् लभन्ते। पशवः स्वभोजनं पाचयितुं मुखं चालयन्ति। इत्थं सर्वैः अपि मानवैः प्रकृतेः विविधरूपाणि अवलोक्य अनुशासनस्य सेवनं कर्त्तव्यम्।

प्रश्नाः

(अ) एकपदेन उत्तरत

(i) अनुशासनस्य आशयः किम् अस्ति?

(ii) ऋतवः कस्याः शोभां वर्धयन्ति?

(iii) अनुशासनस्य महत्वं कुत्र अनिवार्यम्?

(iv) सूर्यः कदा उदेति?

(ब) पूर्णवाक्येत उत्तरत

(i) कानि अवलोक्य मानवैः अनुशासनं पालनीयम्?

(ii) प्रकृतौ कुत्र कुत्र अनुशासनं दृश्यते?

(स) यथानिर्देशम् उत्तरत। (केवलं प्रश्नत्रयम्)

(i) 'पश्यामः' इति क्रियायाः कर्ता कः अस्ति?

(क) अहम् (ख) वयम्

(ग) त्वम् (घ) सः

(ii) 'महत्त्वम्' अस्य विशेषणं किम्?

(क) सकले (ख) विविधम्

(ग) महत् (घ) महन्

(iii) 'अनिश्चित्समये' अस्य विलोमपदं किमस्ति?

(क) समयविभागः (ख) नियतकाले

(ग) उत्तमकाले (घ) प्रतिक्षणे

(iv) 'दृष्ट्वा' इत्यस्य कः पर्यायः?

(क) पश्यामः (ख) अवलोक्य

(ग) कर्त्तव्यम् (घ) कृत्वा

(द) अस्य अनुच्छेदस्य कृते उपयुक्तं शीर्षकं संस्कृतेन लिखत

उत्तराणि

(अ) एकपदेन उत्तरत

(i) व्यवस्था नियमो वा

(ii) प्रकृतेः

(iii) छात्रजीवने

(iv) प्रातः/प्रातः काले

(ब) पूर्णवाक्येन उत्तरत

(i) प्रकृतेः विविधरूपाणि अवलोक्य अनुशासनं पालनीयम्।

(ii) सूर्यो हि समयेन उदेति, सर्वे ऋतवः अपि समयस्य पालनं कुर्वन्ति।

(स) यथानिर्देशम् उत्तरत (केवलं प्रश्नत्रयम्)

(i) (ख) वयम्

(ii) (ग) महत्

(iii) (ख) नियतकाले

(iv) (ख) अवलोक्य

(द) अनुशासनस्य महत्त्वम्

अपठितगद्यांशः–2

अधोलिखितं गद्यांशं पठित्वा प्रदत्तप्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतेन लिखत

संस्कृतसाहित्ये भारतवर्षस्य गौरवं स्थाने स्थाने वर्णितम्। एषा तु कर्मभूमिः। देवाः अपि अस्य गीतानि गायन्ति। भारतीयसंस्कृतेः आधारभूतं गुणद्वयम् अस्ति, त्यागः सेवा च। वयं संग्रहे विश्वासं कुर्मः। अस्माकं श्रद्धा तु त्यागे एव। सर्वेषु मनुष्येषु एकः एव आत्मा। विविधजातिषु विभक्ताः जनाः भारते निवसन्ति। यदि सर्वे स्वार्थभावनायाः त्यागं कुर्युः, सेवाभावनां स्वीकुर्युः, तदा अस्मांक देशः पुनः स्वप्राचीनं गौरवपदं प्राप्नुयात्। देशे ऐक्यभावं वर्धयितुं श्रीशंकराचार्यः देशस्य चतुर्षु कोणेषु चत्वारि मठानि स्थापितवान्। एतानि मठानि भारते सांस्कृतिकचेतनायाः प्रसारम् अकुर्वन्। नूनम् आध्यात्मिकता एव अस्य अमूल्या सम्पत्तिः। यदि एषा संपत्तिः विनश्यति तर्हि मानवतायाः एव विनाशः भविष्यति।

प्रश्नाः

(अ) एकपदेन उत्तरत

(i) वयं कस्मिन् विश्वासं न कुर्मः?

(ii) के भारतस्य गीतानि गायन्ति?

(iii) अस्माकं श्रद्धा कुत्र वर्तते।

(iv) संस्कृतसाहित्ये कस्य गौरवं वर्णितम्।

(ब) पूर्णवाक्येन उत्तरत

(i) अस्माकं देशः कथं गौरवपदं प्राप्नुयात्।

(ii) भारतीयसंस्कृतेः संवर्धनाय मठानां कार्यं किमस्ति?

(स) यथानिर्देशम् उत्तरत (केवलं प्रश्नत्रयम्)

(i) 'निवसन्ति' इति क्रियापदस्य कर्तृपदं किम्?

(क) देवाः (ख) जनाः

(ग) वयम् (घ) संपत्तिः

(ii) 'सर्वेषु मनुष्येषु' इत्यत्र विशेष्यपदं किम्?

(क) सर्वेषु (ख) एतानि

(ग) मनुष्येषु (घ) सकलेषु

(iii) 'अस्य अमूल्या संपतिः' इत्यत्र 'अस्य' इति सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्?

(क) भारतवर्षाय (ख) साहित्याय

(ग) संसाराय (घ) मनुष्याय

(iv) 'क्षयः' इत्यस्य पयार्यपदं किमस्ति?

(क) विश्वासं (ख) लब्धम्

(ग) विनाशः (घ) भृष्टम्

(द) अस्य अनुच्छेदस्य कृते उपयुक्तं शीर्षकं संस्कृतेन लिखत?

उत्तराणि

(अ) एकपदेन उत्तरत

(i) संग्रहे (ii) देवाः

(iii) त्यागे (iv) भारतवर्षस्य

(ब) पूर्णवाक्येन उत्तरत

(i) यदि सर्वे स्वार्थभावनायाः त्यागं कुर्युः, सेवाभावनां स्वीकुर्युः अस्माकं देशः गौरवपदं प्राप्नुयात्।

(ii) मठानि भारते सांस्कृतिकचेतनायाः प्रसारम् अकुर्वन्।

(स) यथानिर्देशम् उत्तरत

(i) जनाः (ii) मनुष्येषु

(iii) भारतवर्षाय (iv) विनाशः

(द) भारतस्य संस्कृतिः

अपठितगद्यांशः–3

अधोलिखितं गद्यांशं पठित्वा प्रदत्तप्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतेन लिखत

जननी शब्दमेव नेत्रयोः समक्षं वात्सल्यस्य कारुण्यौदार्यस्य स्नेहस्य च मूर्तिं स्थापयति। तथा एव मम जननी वर्तते। उच्चशिक्षिता सा विश्वविद्यालये अध्यापयति तथापि अहंकारं तु कुत्रापि किञ्चिदपि न दृश्यते। ममतापूर्णा सा अस्मभ्यं पुत्रेभ्यः पुत्रिभ्यः च सर्वदा सुलभा अस्ति। सा न केवलम् अस्माकम् आवश्यकतानां पूर्तिं करोति अपितु दुविधायाः काले अस्मभ्यमुचितं मार्गमपि दर्शयति। आबलादेव माता अस्मान् पालयति संस्कारान् च शिक्षयति। परिवारे सर्वे सदस्यानां सेवां करोति। परिवारम् एकसूत्रे बध्नाति। मातुः स्थानं कः अन्यः लब्धुं शक्यते। आत्मनं न्यूनं मन्यामहे सा सर्वं कार्यं करोति। सत्यमेव उच्यते लौकिके जगति ईश्वरः तु जननीरूपेण विद्यते।

प्रश्नाः

(अ) एकपदेन उत्तरत

(i) दुविधायाः काले जननी किं दर्शयति?

(ii) परिवारं का एकसूत्रे बध्नाति?

(iii) का ममतापूर्णा अस्ति?

(iv) कस्याः स्थानं न लब्धुं शक्यते।

(ब) पूर्णवाक्येन उत्तरत

(i) जननी इति शब्देन नेत्रयोः समक्षं किम् आयाति?

(ii) लौकिके जगति किम् उच्यते?

(स) यथानिर्देशम् उत्तरत

(i) 'पालयति' इति क्रियायाः कर्ता कः अस्ति?

(क) माता (ख) पिता

(ग) जननी (घ) मती

(ii) 'जननी' इति पदस्य किं पर्यायपदम् अत्र प्रयुक्तम्?

(क) जनकः (ख) माता

(ग) जनकी (घ) अम्बिका

(iii) 'अनृतं' इति पदस्य किं विलोमपदम् अत्र प्रयुक्तम्?

(क) नानृतम् (ख) पापम्

(ग) सत्यम् (घ) युत्रम्

(iv) अत्र 'सा' इति सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्?

(क) जनन्यै (ख) शिक्षिकायै

(ग) अम्बिकायै (घ) अध्यापिकायै

(द) अस्य अनुच्छेदस्य कृते उपयुक्तं शीर्षकं संस्कृतेन लिखत?

उत्तराणि

(अ) एकपदेन उत्तरत

(i) उचितं मार्गं (ii) माता

(iii) माता (iv) मातुः

(ब) पूर्णवाक्येन उत्तरत

(i) जननी शब्दमेव नेत्रयोः समक्षं वात्सल्यस्य कारुण्यौदार्यस्य स्नेहस्य च मूर्तिं स्थपयति।

(ii) लौकिके जगति ईश्वरः तु जननीरूपेण विद्यते।

(स) यथानिर्देशम् उत्तरत

(i) जननी (ii) माता

(iii) सत्यं (iv) जनन्यै

(द) मम जननी

अपठितगद्यांशः–4

अधोलिखितं गद्यांशं पठित्वा प्रदत्तप्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतेन लिखत

मनुष्यः एकः सामाजिकः प्राणी अस्ति। मनुष्याणां सद्व्यवहारेण एवं समाजे सुखस्य शान्तेः च स्थापना भवति, सामाजिकं वातावरणं च सौहार्दपूर्णं भवति। अस्माकं वेदेषु यथोक्तम्-संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्। अस्य मन्त्रस्य तात्पर्यमिदं वर्तते यत् समाजे सर्वे जनाः मिलित्वा गच्छन्तु, मिलित्वा एकस्वरेण वदन्तु, सर्वे परस्परं जानन्तु, सर्वत्र प्रेमपूर्णः व्यवहारः भवेत्। यजुर्वेदे कथितम्-'मित्रस्य चक्षुषा सर्वाणि मित्राणि समीक्षे' अर्थात् अहं सर्वान् जनान् मैत्रीभावेन पश्येयम् इति। कुत्रापि हिंसायाः भावना न भवेत्। कस्यचित् आत्मनः प्रतिकूलम् आचरणं न कर्तव्यम्। अनया भावनया पूर्णः समाज एव आदर्शसमाजः इति कथ्यते येषां जीवने परोपकारादयः गुणाः विलसन्ति, तेषां जीवनम् एव सार्थकं जीवनम् उच्यते।

प्रश्नाः

(अ) एकपदेन उत्तरत

(i) मनुष्यः कीदृशः प्राणी अस्ति?

(ii) केन समाजे सुखस्य शान्तेः च स्थापना भवति?

(iii) मनुष्याणां सद्व्यवहारेण सामाजिकं वातावरणं कीदृशं भवति?

(iv) परोपकारादिगुणैः पूर्णं जीवनं कीदृशं जीवनं भवति?

(ब) पूर्णवाक्येन उत्तरत

(i) वेदेषु सहभावनायाः कृते किम् उक्तम्?

(ii) केषां जीवनं सार्थकम् उचयते?

(स) यथानिर्देशम् उत्तरत (केवलं प्रश्नत्रयम्)

(i) 'गच्छन्तु' इति क्रियापदस्य कर्त्ता कः अस्ति?

(क) मनुष्याः

(ख) मनुष्यः

(ग) सर्वे

(घ) सर्वे जनाः

(ii) 'सर्वे' इति पदस्य विशेष्यपदं किमस्ति?

(क) सर्वेषु

(ख) जनाः

(ग) मनुष्याः

(घ) गुणाः

(iii) 'अहिंसा' इति पदस्य किं विलोमपदम् अत्र प्रयुक्तम्?

(क) परोपकारम्

(ख) आचरणम्

(ग) हिंसा

(घ) सात्विकम्

(iv) 'व्यवहारः' इति पदस्य किं पर्यायपदम् अत्र प्रयुक्तम्?

(क) गुणः

(ख) प्रेमपूर्णः

(ग) आचरणम्

(घ) सामाजिकम्

(द) अस्य अनुच्छेदस्य कृते उपयुक्तं शीर्षकं संस्कृतेन लिखत?

उत्तराणि

(अ) एकपदेन उत्तरत

(i) सामाजिकः

(ii) मनुष्याणां सद्व्यवहारेण

(iii) सौहार्दपूर्णम्

(iv) सार्थकं

(ब) पूर्णवाक्येन उत्तरत

(i) वेदेषु उक्तम् यत्- ''संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।''

(ii) येषां जीवने परोपकारादयः गुणाः विलसन्ति, तेषां जीवनम् एव सार्थकं जीवनम् उच्यते।

(स) यथानिर्देशम् उत्तरत

(i) सर्वे जनाः

(ii) जनाः

(iii) हिंसा

(iv) आचरणम्

(द) आदर्श जीवनम्/आदर्शसमाजः/सार्थकं जीवनम्।

अपठितगद्यांशः–5

अधोलिखितं गद्यांशं पठित्वा प्रदत्तप्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतेन लिखत

को न जानाति भगवद्गीतायाः गुणगौरवम्। गीतायां सर्वेषाम् उपनिषदां सारः मनोज्ञया पद्धत्या वर्णितम् अस्ति। केचन दार्शनिकाः भावाः ये दर्शनानाम् आदर्शरूपाश्च सन्ति ते गीतायां सहजेन उपदिष्टाः कर्मसिद्धान्तः कर्मयोगेन अत्र वर्णितम्, अनासक्तभावेनैव कार्यकरणं गीतायाः परमोपदेशः तथोच्यते।

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।

मा कर्मफलहेतु-र्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्माणि।।

आत्मनः शाश्वतत्वं शरीरस्य च नाशशीलता अत्रैव प्रतिपादिताः विषयाः सन्ति यथा-

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः।

न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः।।

अस्य इदं तात्पर्यम् अस्ति यत् मृत्युना शरीरस्य नाशो भवति न तु आत्मनः। आत्मा तु अजरः अमरश्च अस्ति। आत्मानं शस्त्राणि छेद्युं न शक्नुवन्ति, अग्निरपि आत्मानं ज्वालयितुं न शक्नोति, जलञ्च क्लेदयितुं न शक्नोति, वायुश्च शोषयितुं न शक्नोति। अतः आत्मनः कदापि नाशो न भवति। यथा वयं जीर्णानां वस्त्राणां परिवर्तनं कुर्मः तथैव आत्मा नूतनानि शरीराणि धारयति।

प्रश्नाः

(अ) एकपदेन उत्तरत

(i) गीतायां कस्य सारः विद्यते?

(ii) कस्य कदापि नाशो न भवति?

(iii) मृत्युना कस्य नाशो भवति?

(iv) कः अजरः अमरश्च वर्तते?

(ब) पूर्णवाक्येन उत्तरत

(i) गीतायां कर्मसिद्धान्तः कथं वर्णितः?

(ii) आत्मा कथं नूतनानि शरीराणि धारयति?

(स) यथानिर्देशम् उत्तरत (केवलं प्रश्नत्रयम्)

(i) 'देहस्य' इति पदस्य किं सामानार्थकं पदमत्र प्रयुक्तम्?

(क) गीतायाः

(ख) दार्शनिकस्य

(ग) शरीरस्य

(घ) विषयस्य

(ii) 'धारयति' इति क्रियापदस्य कर्तृपदं किमस्ति?

(क) आत्मा

(ख) गीता

(ग) पावकः

(घ) मारुतः

(iii) 'मनोज्ञया पद्धत्या' इत्यनयोः पदयोः विशेषणपदं चिनुत–

(क) पद्धत्या

(ख) मृत्युना

(ग) मनोज्ञा

(घ) मनोज्ञया

(iv) 'काठिन्येन' इति पदस्य किं विलोमपदमत्र प्रयुक्तम्?

(क) सहजेन

(ख) तात्पर्यम्

(ग) भावेन

(घ) योगेन

(द) अस्य गद्यांशस्य समुचित शीर्षक लिखत।

उत्तराणि

(अ) एकपदेन उत्तरत

(i) उपनिषदां

(ii) आत्मनः

(iii) शरीरस्य

(iv) आत्मा

(ब) पूर्णवाक्येन उत्तरत

(i) गीतायां अनासक्तभावेन कार्यकरणं वर्णितम्

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।

मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि

(ii) यथा वयं जीर्णानां वस्त्राणां परिवर्तनं कुर्मः तथैव आत्मा नूतनानि शरीराणि धारयति।

(स) यथानिर्देशम् उत्तरत

(i) शरीरस्य

(ii) आत्मा

(iii) मनोज्ञया

(iv) सहजेन

(द) भगवद्गीतायाः उपदेशः/श्रीमद्भगवद्गीता

अपठितगद्यांशः–6

अधोलिखितं गद्यांशं पठित्वा प्रदत्तप्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतेन लिखत

विज्ञानेन विना साम्प्रतं जीवननिर्वाहोऽपि दुष्करः। वैज्ञानिकाः अविष्काराः जीवनोपयोगिवस्तुनिर्माणेन प्रतिपलं मानवसभ्यतायाः संस्कृतेश्च विकासम् आवहन्ति। विद्युदुपयोगः सर्वेषु क्षेत्रेषु नवीनां सृष्टि मुत्पादयति। विद्युता विद्युद्व्यजनानि संचाल्यन्ते, वातानुकूलिताः सयंन्त्राः चाल्यन्ते, भोजनं पच्यते, यन्त्रशालाः संचाल्यन्ते, वस्त्रादयो निर्मीयन्ते, भवनादयः प्रकाश्यन्ते च। इत्थमेव यातायातसाधनेषु रेलयानानाम्, मोटरयानानाम्, विमानानाम्, जलयान-पनडुब्बी-मोटरसाइकिल-स्कूटर-प्रभृतीनाम् आविष्काराद् यात्रायां तादृशं सौकर्यं सञ्जातं यथा सहस्रयोजनदूरमपि स्थानं स्वल्पेनैव कालेन प्राप्तुं शक्यते। मनोरञ्जनसाधानानि, दूरवाण्यां मोबाईलेत्यादीनां प्रयोगः चिकित्सा क्षेत्रे एक्स-रे-अल्ट्रावायलेट रेजप्रभृतीनाम् आविष्कारात् नव्या चमत्कृतिः सञ्जाता। एवं विज्ञायते यद् विज्ञानेन किमप्यपूर्वमेव जगदिदं विहितम्।

प्रश्नाः

(अ) एकपदेन उत्तरत

(i) केन विना साम्प्रतं जीवननिर्वाहो दुष्करः?

(ii) वैज्ञानिकाः अविष्काराः कस्याः विकासम् आवहन्ति?

(iii) यातायातसाधनैः यात्रायां किं सञ्जातम्?

(iv) विद्युतव्यजनानि कया सञ्चाल्यन्ते?

(ब) पूर्णवाक्येत उत्तरत

(i) विज्ञानेन यात्रायां कीदृशं सौकर्यं जातम्?

(ii) चिकित्साक्षेत्रे विज्ञानस्य किं योगदानमस्ति?

(स) यथानिर्देशम् उत्तरत (केवलं प्रश्नत्रयम्)

(i) 'आवहन्ति' इति क्रियापदस्य कर्तृपदं किमस्ति?

(क) वैज्ञानिकाः आविष्काराः

(ख) वैज्ञानिकाः

(ग) आविष्काराः

(घ) यन्त्रशालाः

(ii) 'नव्या चमत्कृतिः' इत्यत्र विशेषणपदं किमस्ति?

(क) सामप्रतम्

(ख) नव्या

(ग) चमत्कृतिः

(घ) सञ्जाता

(iii) 'अधिकेन' इत्यस्य विलोमपदं किम् अस्ति?

(क) विज्ञानेन

(ख) निर्माणेन

(ग) स्वल्पेन

(घ) कालेन

(iv) 'संसारः' इति पदस्य पर्यायपदं किम् अस्ति?

(क) विज्ञानम्

(ख) जीवनम्

(ग) जगत्

(घ) दुष्करम्

(द) अस्य अनुच्छेदस्य कृते उपयुक्तं शीर्षकं संस्कृतेन लिखत?

उत्तराणि

(अ) एकपदेन उत्तरत

(i) विज्ञानेन विना

(ii) मानवसभ्यतायाः संस्कृतेश्च

(iii) सौकर्यम्

(iv) विद्युता

(ब) पूर्णवाक्येन उत्तरत

(i) यातायातसाधनैः सहस्त्रयोजनदूरमपि स्थानं स्वल्पेनैव कालेन प्राप्तुं शक्यते। अतः यात्रा सरला जायते।

(ii) चिकित्साक्षेत्रे एक्स-रे-अल्ट्रावायलेट-रेजप्रभृतीनाम् आविष्कारात् नव्या चमत्कृतिः सञ्जाता।

(स) यथानिर्देशम् उत्तरत

(i) वैज्ञानिकाः आविष्काराः

(ii) नव्या

(iii) स्वल्पेन

(iv) जगत्

(द) विज्ञानस्य चमत्काराः/अविष्काराः

अपठितगद्यांशः–7

अधोलिखितं गद्यांशं पठित्वा प्रदत्तप्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतेन लिखत

राजगढ़प्रदेशे गौरसिंहः नामकः राजा अतीव बुद्धिमान् विद्वत्सम्मानी च आसीत्। तस्य 'कुशलकुमारः' नामकः एकः अतीवयोग्यः मन्त्री आसीत्। एकदा तौ प्रासादे स्थित्वा वार्ताम् अकुरूताम्। वार्तां कुर्वन् राजा अपृच्छत्– ''अस्मिन् संसारे कः जनः सफलः श्रेष्ठो वा भवति? कुशलकुमारः अवदत्– यः जनः स्वलक्ष्यस्य निर्धारणं कृत्वा तं चिन्तयति खलु, स एव श्रेष्ठः भवति, स एवं जीवने सफलो भवति, इच्छितञ्च प्राप्नोति। अपि च महाराज! वस्तुतः स्वजीवने ते एव जनाः सफलाः भवन्ति उच्चपदं च प्राप्नुवन्ति, ये जीवनस्य प्रारम्भिके काले अर्थात् किशोरावस्थायाम् एव स्वलक्ष्यस्य निर्धारणं कुर्वन्ति। ते खलु समाजे उच्चेषु पदेषु स्थिताः भवन्ति समाजे च श्रेष्ठाः योग्याः च कथ्यन्ते, सम्मानं चातिशयं लभन्ते।

प्रश्नाः

(अ) एकपदेन उत्तरत

(i) राज्ञः नाम किमासीत्?

(ii) कुशलकुमारः कः आसीत्?

(iii) तौ कुत्र वार्ताम् अकुरुताम्?

(iv) कदा लक्ष्यस्य निर्धारणं करणीयम्?

(ब) पूर्णवाक्येन उत्तरत

(i) राजा किम् अपृच्छत्?

(ii) के जनाः समाजे श्रेष्ठाः कथ्यन्ते?

(स) यथानिर्देशम् उत्तरत (केवलं प्रश्नत्रयम्)

(i) 'उच्चेषु पदेषु' अत्र विशेषणपदं किमस्ति?

(क) पदेषु

(ख) उच्चेषु पदेषु

(ग) उच्चेषु

(घ) क्षेत्रेषु

(ii) 'वार्तां कुर्वन् राजा अपृच्छत्' इति वाक्ये कर्तृपदं किमस्ति?

(क) मनुष्यः

(ख) राजा

(ग) वार्ता

(घ) वैज्ञानिकाः

(iii) 'अयोग्याः' इत्यस्य किं विलोमपदम् अत्र प्रयुक्तमस्ति?

(क) अविष्काराः

(ख) विकासम्

(ग) इच्छितम्

(घ) योग्याः

(iv) 'अभिलषितम्' इत्यस्य किं पर्यायपदम् अत्र प्रयुक्तम्?

(क) प्रतिपलम्

(ख) तादृशम्

(ग) सौकर्यम्

(घ) इच्छितम्

(द) अस्य गद्यांशस्य उचितं शीर्षकं लिखत।

उत्तराणि

(अ) एकपदेन उत्तरत

(i) गौरसिंहः

(ii) मन्त्री

(iii) प्रासादे

(iv) किशोरावस्थायाम्

(ब) पूर्णवाक्येन उत्तरत

(i) ''अस्मिन् संसारे कः जनः सफलः श्रेष्ठो वा भवति?''

(ii) ये जनाः किशोरावस्थायां स्वलक्ष्यस्य निर्धारणं कुर्वन्ति ते एव समाजे श्रेष्ठाः भवन्ति।

(स) यथानिर्देशम् उत्तरत

(i) उच्चेषु

(ii) राजा

(iii) योग्याः

(iv) इच्छितम्

(द) जीवनस्य साफल्यम्।

अपठितगद्यांशः–8

अधोलिखितं गद्यांशं पठित्वा प्रदत्तप्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतेन लिखत

सरस्वत्याः वरदपुत्रस्य बाणभट्टस्य संस्कृतगद्यकाव्ये अद्वितीयं स्थानम् अस्ति। अस्य रचनाकालः सप्तमशताब्दस्य पूर्वार्धः स्वीक्रियते। हर्षचरितं कादम्बरी चेति अस्य द्वे उत्कृष्टे रचने स्तः। कादम्बर्यां चन्द्रापीडस्य पुण्डरीकस्य च जन्मत्रयाणां कथा विद्यते। कादम्बरी-चन्द्रापीडयोः प्रणयगाथा अस्य केन्द्रबिन्दुरिव विराजते। अतएव नायिकामधिकृत्य अस्य गद्यकाव्यस्य शीर्षकं कृतम्। अस्य रसनायकादयः च शास्त्रमाश्रित्यैव निबद्धाः। यथा चन्द्रापीडोऽनुकूलः नायको वर्तते। कादम्बरी मुग्धा नायिकाऽस्ति बाणभट्टेनात्र पाञ्चालीरीतिः आश्रिता। अस्याः कथायाः अङ्गीरसः तु श्रृङ्गारः एव वर्तते।

प्रश्नाः

(अ) एकपदेन उत्तरत

(i) सरस्वत्याः वरदपुत्रः कः आसीत्?

(ii) कादम्बर्यां कस्य कथा विद्यते?

(iii) कः अनुकूलः नायको वर्तते?

(iv) केन पाञ्चालीरीतिः आश्रिता?

(ब) पूर्णवाक्येत उत्तरत

(i) बाणभट्टस्य रचनाद्वयं किम् अस्ति?

(ii) कथायाः केन्द्रबिन्दुः कः अस्ति?

(स) यथानिर्देशम् उत्तरत (केवलं प्रश्नत्रयम्)

(i) 'प्रतिकूलः' इत्यस्य विलोमपदं किम् अस्ति?

(क) स्थानम् (ख) अनुकूलः

(ग) शीर्षकम् (घ) पूर्वार्धः

(ii) 'बाणभट्टेन पाञ्चालीरीतिः आश्रिता' इत्यत्र क्रियापदं किमस्ति?

(क) आश्रिता (ख) रीतिः

(ग) स्वीक्रियते (घ) अस्ति

(iii) 'अद्भुतम्' इत्यस्य पर्यायपदं किमस्ति?

(क) उत्कृष्टे (ख) अद्वितीयम्

(ग) चरितम् (घ) स्थानम्

(iv) 'बाणभट्टः कादम्बरीं रचितवान्' इत्यत्र कर्तृपदं किमस्ति?

(क) नायकः (ख) रचनाकालः

(ग) देवदत्तः (घ) बाणभट्टः

(द) अस्य गद्यांशस्य उचितं शीर्षकं लिखत।

उत्तराणि

(अ) एकपदेन उत्तरत

(i) बाणभट्टः (ii) चन्द्रापीडस्य पुण्डरीकस्य

(iii) चन्द्रापीडः (iv) बाणभट्टेन

(ब) पूर्णवाक्येन उत्तरत

(i) हर्षचरितं, कादम्बरी चेति बाणभट्टस्य द्वे रचने स्तः।

(ii) कादम्बरी चन्द्रापीडयोः प्रणयगाथा कथायाः केन्द्रबिन्दुः अस्ति।

(स) यथानिर्देशम् उत्तरत

(i) अनुकूलः

(ii) आश्रिता

(iii) अद्वितीयम्

(iv) बाणभट्टः

(द) बाणभट्टस्य रचना कादम्बरी/कादम्बरी।

अपठितगद्यांशः–9

अधोलिखितं गद्यांशं पठित्वा प्रदत्तप्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतेन लिखत

मानवमात्रस्य सम्पूर्णे जीवने योगस्य महत् स्थानं वर्तते। तत्र भारतस्य महद्योगदानमस्ति। अत्र ये वैदिक-शैव-वैष्णावादि सम्प्रदायाः वर्तन्ते तेषु सर्वत्रैव योगस्य चर्चा वर्तते। विद्यन्ते बहवोऽपि योगसम्प्रदायाः। तेषु सर्वेषु पातञ्जलयोगसूत्रम् एव सुविख्यातम्। महर्षिपतञ्जलिस्तु योगसूत्राण्येव रचितवान्। तस्य द्वौ भागौ अभ्यासः सिद्धान्तः च। अनयोरपि योगाभ्यास एव सर्वसम्मतः। यमनियमादीनि योगस्य सन्ति अष्टौ अङ्गानि। मानवः स्वशरीरं, प्राणान् इन्द्रियाणि मनः आत्मानं च परस्परं सानुकूलं कृत्वा कार्यकरणयोगाभ्यासेन एव जानाति। भगवान् श्रीकृष्णोऽपि उवाच ''योगः कर्मसु कौशलम्''।

प्रश्नाः

(अ) एकपदेन उत्तरत

(i) 'कर्मसु कौशलम्' किम् अस्ति?

(ii) मानवजीवने कस्य महत् स्थानं वर्तते?

(iii) महर्षिपतञ्जलिः किं रचितवान्?

(iv) योगस्य कति भागाः सन्ति?

(ब) पूर्णवाक्येत उत्तरत

(i) योगाभ्यासः किम् अस्ति?

(ii) योगस्य चर्चा कुत्र वर्तते?

(स) यथानिर्देशम् उत्तरत (केवलं प्रश्नत्रयम्)

(i) 'अष्टौ अङ्गानि' इत्यत्र विशेषणपदं किमस्ति?

(क) द्वौ

(ख) भागौ

(ग) अष्टौ

(घ) अङ्गानि

(ii) 'प्रतिकूलम्' इत्यस्य विलोमपदं किमस्ति?

(क) विश्वासम्

(ख) अनुकूलम्

(ग) कूलम्

(घ) निवासम्

(iii) 'सुप्रसिद्धम्' इत्यत्र पर्यायपदं किमस्ति?

(क) अभ्यासः

(ख) मनः

(ग) सुविख्यातः

(घ) सम्मतः

(iv) 'श्रीकृष्ण उवाच' इत्यत्र क्रियापदं किमस्ति?

(क) श्रीकृष्णः

(ख) उवाच

(ग) वदति

(घ) वर्तते

(द) अस्य गद्यांशस्य समुचितं शीर्षकं लिखत।

उत्तराणि

(अ) एकपदेन उत्तरत

(i) योगः

(ii) योगस्य

(iii) पातञ्जलयोगसूत्रम्

(iv) द्वौ

(ब) पूर्णवाक्येन उत्तरत

(i) मानवः स्वशरीरं, प्राणान्, इन्द्रियाणि मनः आत्मानं च परस्परं सानुकूलं कृत्वा कार्यकरणयोभ्यासेन एव जानाति।

(ii) महर्षिपतञ्जलेः योगसूत्रे योगस्य चर्चा वर्तते।

(स) यथानिर्देशम् उत्तरत

(i) अष्टौ

(ii) अनुकूलम्

(ii) सुविख्यातः

(iv) उवाच

(द) 'योगः कर्मसु कौशलम्'।

अपठितगद्यांशः–10

अधोलिखितं गद्यांशं पठित्वा प्रदत्तप्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतेन लिखत

बौद्धजातकग्रन्थेषु गौतमीनामधेयायाः नार्याः कथा अतीव प्रसिद्धा अस्ति। विधावा गौतमी प्रतिदिनं वनं गत्वा काष्ठखण्डानि आनयति स्म। एकदा तस्याः पुत्रः अपि तया साकं वनं गतवान्। तत्र मधुराणि वन्यफलानि खादन् सः इतस्ततः भ्रमति स्म। तदैव एक कृष्णः सर्पः बिलात् बहिः आगत्य बालकं दंष्टवान्। तत्क्षणवेम सः बालकः मृतः। स्वप्रियं पुत्रं मृतं वीक्ष्य गौतमी रोदितुं आरब्धवती। गम्भीरं मानसिंक दुःखं सोढुम् असमर्था सा बुद्धस्य आश्रमं गत्वा स्वकीयं मृतं पुत्रं पुनः जीवयितुं प्रार्थितवती। बुद्धः तां शाश्वतं सत्यम् उपष्दिष्टवान्। सः प्रावोचत्– ''जातस्य हि निधनम् अवश्यं भवति। एतस्माद् अयं लोकः मर्त्यलोकः कथ्यते। अतः शोकं मा कुरु।''

प्रश्नाः

(अ) एकपदेन उत्तरत

(i) अयं लोकः किं कथ्यते?

(ii) कस्याः नार्याः कथा प्रसिद्धा वर्तते?

(iii) बालकः वने किम् अखादत्?

(iv) बालकं कः दंष्टवान्?

(ब) पूर्णवाक्येन उत्तरत

(i) गौतमी कथं बुद्धस्य आश्रमं गतवती?

(ii) बुद्धः किम् उपदेशं प्रदत्तवान्?

(स) यथानिर्देशम् उत्तरत (केवलं प्रश्नत्रयम्)

(i) 'कृष्णः सर्पः इत्यत्र विशेषणपदं किमस्ति?

(क) सर्पः

(ख) कृष्णः

(ग) योगः

(घ) कर्मः

(ii) 'सः प्रावोचत्' इत्यत्र 'सः' इति सर्वनामपदं कस्य कृते प्रयुक्तम्?

(क) बुद्धस्य

(ख) पुत्रस्य

(ग) जातस्य

(घ) बालकस्य

(iii) 'पुत्रः अपि वनं गतवान्' इत्यत्र क्रियापदं किमस्ति?

(क) पुत्रः

(ख) वनम्

(ग) अपि

(घ) गतवान्

(iv) 'असत्यम्' इत्यस्य किं विलोमपदं प्रयुक्तम् अस्ति?

(क) शाश्वतम्

(ख) निश्चितम्

(ग) दुःखम्

(घ) सत्यम्

(द) अस्य गद्यांशस्य उचितं शीर्षकं लिखत।

उत्तराणि

(अ) एकपदेन उत्तरत

(i) मर्त्यलोकः

(ii) नामधेयायाः

(iii) मधुराणि फलानि

(iv) कृष्णः सर्पः

(ब) पूर्णवाक्येन उत्तरत

(i) तस्याः पुत्रः मृतः। गम्भीरं मानसिकं दुःखं सोढुम् असमर्था सा स्वपुत्रं पुनः जीवयितुं बुद्धस्य आश्रमं गतवती।

(ii) बुद्धः उक्तवान्– ''जातस्य हि निधनम् अवश्यं भवति। एतस्माद् अयं लोकः मर्त्यलोकः कथ्यते। अतः शोकं मा कुरु।

(स) यथानिर्देशम् उत्तरत

(i) कृष्णः

(ii) बुद्धस्य

(iii) गतवान्

(iv) सत्यम्

(द) शाश्वतं सत्यम्/बुद्धस्य जातककथा।


चल रे पथिक त्वया चलितव्यं चलनमेव तव धर्मः
स्वनात्मक कार्यम्
पत्रम्
कथायां / वार्तालापे
औपचारिक पत्रं
अनौपचारिक पत्रं

भाग-ख (रचनात्मकं कार्यम्)

पत्रलेखनम्

भाषा शिक्षण में रचनात्मक कार्य का विशेष स्थान है। क्योंकि इसके द्वारा बालकों की सृजनात्मक शक्ति का विकास होता है, इसी क्रम में पत्र लेखन को भी 11वीं कक्षा के विषय के रूप में रखा गया है। पत्र संचार का एक माध्यम है। इसके माध्यम से एक व्यक्ति अपनी बात दूसरे व्यक्ति या संस्था तक पहुँचा सकता है।

पत्र दो प्रकार के होते हैं।

- औपचारिक पत्र
- अनौपचारिक पत्र

औपचारिक पत्रः- किसी अधिकारी या संस्था विशेष आदि को लिखे जाने वाले पत्र औपचारिक पत्र कहलाते हैं।

अनौपचारिक पत्रः- अपने सगे संबंधी जैसे पिता, भाई, मामा आदि को लिखे जाने वाले पत्र अनौपचारिक पत्र कहलाते हैं।

पत्र का सामान्य स्वरूप

1. प्रेषक का पत्र संकेत
2. संबोधन
3. अभिवादन/आशीर्वाद
4. पत्र कलेवर .....
5. प्रणाम/शुभकामना आदि
6. प्रेषक का संबंध
7. प्रेषक का नाम

पत्र के लिए सामान्य निर्देशः पत्र को पढ़ने से पूर्व ध्यानपूर्वक मञ्जूषा को पढ़ें। इसके

बाद कम से कम दो बार पत्र को अवश्य पढ़ें। एक ही बार में सभी रिक्त स्थानों को भरने का प्रयास न करें।

पत्र को समझने व रिक्त स्थान पूर्ति करने के लिए 15 सहायक तत्त्व इस प्रकार हैं।

रिक्तस्थानस्य विषयः **उत्तरम्**

1. **कुतः लिखति?** दिल्लीतः/काशीतः/चेन्नैतः इत्यादि।

2. **कं लिखिति?** पितरम्/मित्रम्/प्रधानाचार्यम् इत्यादि।

3. **कथम् सम्बोधयति?** आदरणीयाः पितृपादाः/प्रिय मित्र/रमेश!/सुरेश!

4. **कथम् नमस्कारम् करोति?** सादरम् प्रणामाः/सप्रेम नमः/नमो नमः

5. **कथं प्रारम्भः क्रियते?** अत्र कुशलम् तत्रास्तु। तव पत्रम् प्राप्तम् इत्यादि।

6. **विषय-प्रस्तुतीकरणम्** अहं कुशली/अहं कुशलिनी/सर्वगतं कुशलम् इत्यादि।

(अधोलिखित वाक्येषु दत्तानि पदानि रिक्तस्थानानि इति चिन्तयन्तु

'मञ्जूषायां एतानि पदानि (उत्तरपदानि) भवन्ति।

7. **कर्तृपदम्** ....।

8. .... **क्रियापदम्**

9. ..... **कर्मपदम्** ....।

10. ..... **विशेषण-पदम्** ....।

11. ..... **विशेष्य-पदम्** ....।

12. **अन्यपदानि** विभक्तिपदानि, अव्ययपदानि, प्रत्ययान्त-पदानि

13. **समाप्तिः** प्रणामाः/मात्रे नमः/ शुभं भूयात् इत्यादि

14. **कः लिखति?** भवतः पुत्रः/ पुत्री/ भगिनी। भवतः शिष्यः मित्रम्/ सृहृद्

15. **लेखकस्य नाम किम्?** रमेशः/ सुरेशः/

अभ्यासाय कतिचन पत्राणि

1. भवान् नव्यः। स्वास्थ्यरक्षणम् उपलक्ष्य भवता मित्रं गिरीशं प्रति लिखितं पत्रमिदम् अपूर्णम् अस्ति। मञ्जूषायां प्रदत्तपदैः पत्रं पूरयित्वा पुनः लिखत।

जयपुरतः

तिथिः .....

प्रियमित्र (i) .....

सप्रेम (ii) .....

मया ह्यः एव ज्ञातं यत्त्वं गतसप्ताहात् अस्वस्थः असि। अहं (iii) ..... सह तव विषये चर्चां कृतवान्। (iv) ..... पितृमहोदयः प्राकृतिकचिकित्सकः अस्ति। तेन स्वास्थ्य-रक्षणाय (v) ....दत्ताः, तान् अहं लिखामि। ते नियमाः एवं सन्ति। प्रातः सूर्योदयात् (vi) ..... शय्यात्यागः करणीयः। रात्रौ च दशवादने शयितव्यम्। प्रतिदिनं 'भ्रमणं' व्यायामः च कर्तव्यः। यावत् (vii) ..... अनुभूतिः न भवति, तावत् भोजनं न कर्तव्यम्। भोजनेन सह जलं न पातव्यम्। भोजनं शनैः शनैः चर्वणपूर्वकम् (viii) ..... च भक्षणीयम् समये समये स्वास्थ्यविषये त्वया अवश्यं सूचनीयम्। प्रतिदिनं पर्याप्तं जलं पातव्यम्।

अन्यत्सर्वं कुशलम्।

(ix) ..... प्रियं मित्रम्

(x) .....

(मञ्जूषा-निर्देशाः, क्षुधायाः, त्वदीयम्, मम, प्रसन्नमनसा, नव्यः, स्वपित्रा, गिरीश!, एकहोरापूर्वम्, नमस्ते।)

2. भवान् देवेशः। स्वपितरं प्रति लिखितं पत्रं मञ्जूषापद-सहायतया पूरयित्वा पुनः लिखत।

विवेकानन्द-छात्रावासः

(i) .....

दिनांकः .....

पूज्याः (ii) .....!

सादरं प्रणामाः।

अत्र कुशलं तत्रास्तु। इदं विज्ञाय भवान् अतिप्रसन्नः भविष्यति यद् गतदिवसे अन्तर्विद्यालयीयभाषणप्रतिस्पर्धायां मया (iii) ..... स्थानं लब्धम्। क्रीडादिवसे (iv) ..... अहमेव प्रथमः आसम्। अस्मिन् वर्षे वार्षिकोत्सवे अहं नाट्याभिनयं (v) .....। अयं वार्षिकोत्सवः आगामि-सोमवासरे (vi) .....। विद्यालयस्य पक्षतः ह्यः एव (vii) ..... प्रेषितम्। अहमपि (viii) ..... सूचयामि, भवान् अवश्यम् आगच्छतु। मम (ix) ..... भविष्यति।

भवतः आज्ञाकारी पुत्रः,

(x) .....

(मञ्जूषा-निमन्त्रणपत्रम्, धावनप्रतियोगितायां, देवेशः, उत्साहवर्धनम्, भवन्तम्, देवधरतः प्रथमम्, करिष्यामि, पितृमहोदयाः, आयोजयिष्यते।)

3. भवती स्मिता दिल्लीमहानगरे वसति। भवत्याः सखी दिव्या चेन्नईनगरे निवसति। सखीं प्रति लिखितं पत्रं मञ्जूषापदैः पूरयित्वा पुनः लिखत।

20, वसन्तविहार

नवदिल्लीतः

तिथिः .....

(i) ..... दिव्ये

सप्रेम नमस्ते।

गतसप्ताहे अस्माकं विद्यालये (ii) ..... एका महत्त्वपूर्णा गोष्ठी अभवत्। तत्र महानगरेषु वर्धमानं प्रदूषणं दृष्ट्वा (iii) ..... उपायानां विषये चर्चा अभवत्। गोष्ठ्यां वक्तृणां विचारसारः आसीत् यत् गृहात् बहिः (iv) ..... रथ्यासु च अवकरः न क्षेपणीयः। (v) ..... समये समये जलशुद्धिः करणीया। मार्गेषु उद्यानेषु विद्यालयेषु च अधिकाधिकं (vi) ..... आरोपणीयाः। जनजागरणार्थं 'वृक्षो रक्षित रक्षतिः' 'जलम् एव जीवनम्' एतादृशानि महावाक्यानि पट्टिकासु लिखित्वा यत्र-यत्र (vii) .....। ध्वनिप्रदूषणम् निवारयितुम् ध्वनिप्रसारकयन्त्राणां (viii) ... ... प्रयोगः करणीयः। अस्मिन् (ix) ..... भवत्याः विद्यालये किं किं भवति इति मां विस्तरेण लिखतु।

पितृभ्यां नमः।

भवत्याः सखी

(x) .....

(मञ्जूषा-स्मिता, नदीजलेषु, स्नेहस्निग्धे, पर्यावरणविषये, न्यूनतमः, वृक्षाः, पर्यावरणरक्षणस्य, टङ्कणीयानि, जलप्रदूषण-निवारणाय, विषये।)

4. भवान् अजयः मुम्बईनगरे निवसति। परीक्षायां सफलतायै वर्धापनं दातुं मित्रं प्रति लिखिते अस्मिन् पत्रे उचितपदैः रिक्तस्थानानि पूरयित्वा उत्तरपुस्तिकायां पत्रं पुनः लिखत।

(i) .....

तिथिः .....

प्रिय मित्र मनोज!

(ii) .....

अत्र कुशल तत्रास्तु। अद्यैव दशमकक्षायाः (iii) ..... केन्द्रीय-माध्यमिक-शिक्षाबोर्डद्वारा समुद्घोषितः। मया 'इण्टरनेट' इति माध्यमेन तव परीक्षापरिणामः (iv) .....। अस्यां परीक्षायाम् त्वम् पञ्चनवतिः प्रतिशतम् (v) ..... प्राप्य समुत्तीर्णः। (vi) ..... तु शतम् एव अङ्.कान् लब्धवान् असि। योग्यतासूच्याम् अपि तव नाम दृष्ट्वा अहम् हार्दिकं मोदम् अनुभवामि। (vii) ..... कठोरः परिश्रमः सफलो जातः। त्वया न केवलम् (viii) ..... अपितु स्वकुटुम्बस्य अपि यशः वर्धितम्। प्रशंसीयोऽसि त्वम्। अहम् एतस्यै उच्चसफलतायै तुभ्यं हार्दिकं (ix) ..... यच्छामि। भविष्ये तव का योजना इति लिखतु।

मातृ-पितृचरणयोः प्रणामः।

तव मित्रम्

(X) .....

(मञ्जूषा-संस्कृते, परीक्षापरिणामः, मुम्बईतः, सस्नेह नमस्ते, अङ्.कान्, विदितः, आत्मनः, तव, अजयः, वर्धापनं।)

5. भवतः नाम केशवः अस्ति। भवान् स्वमित्रम् सोहनं स्वभगिन्याः विवाहे निमन्त्रणं दातुम् इच्छति। मञ्जूषायाः उचितपदैः पत्रं पूरयित्वा पुनः लिखत।

देहलीनगरतः

तिथिः .....

(i) ..... सोहन!

सस्नेह नमो नमः।

अत्र कुशलं तत्रास्तु। इदं (ii) ..... भवन्तं सूचयित्वा अहम् आनन्दम् अनुभवामि यत् मम (iii) ..... विवाहः अस्य मासस्य दशम्यां (iv) ..... रविवासरे निश्चितः जातः। वरयात्रा रामनगरात् (v) .....। त्वं मम प्रियं मित्रम् इतिकृत्वा (vi) ..... एवं ज्ञापयामि येन त्वम् अत्र (vii) ..... पूर्वम् एव आगच्छेः। भवता पितृभ्यां सह अत्र अवश्यमेव (viii) .....। आदरणीयाभ्यां स्वपितृभ्यां मम (ix) ..... निवेदनीयाः।

भवतः (x) .....

केशवः

(मञ्जूषा–भगिन्याः आगमिष्यति, प्रियमित्र, प्रणामाः, आगन्तव्यम् शुभसमाचारं, पूर्वमेव, त्रिचतुर्दिनानि, प्रियमित्रम्, तारिकायां।)

6. दिल्लीछात्रावासे निवसतः भवतः नाम अभिः अस्ति। पित्रे लिखितं रक्तदानशिविरविषयकं इदं पत्रं मञ्जूषापदैः पूरयित्वा पुनः उत्तरपुस्तिकायां लिखत।

छात्रावासतः

दिल्लीनगरम्

तिथिः .....

पूज्याः (i) .....

चरणवन्दना।

अत्र कुशलं तत्र अपि अस्तु। अद्य अहं भवन्तं निवेदयामि यद् अस्माकं विद्यालये गतसप्ताहे (ii) ..... आयोजितम्। अस्माकं कक्षा अध्यापकः (iii) ..... प्रमुखः आयोजकः आसीत्। सः प्रथमं (iv) ..... प्रायच्छत्। तदनन्तरम् (v) ..... पञ्च छात्राः एतस्मिन् शुभकार्ये अग्रेसराः अभवन्। तेषाम् उत्साहं (vi) ..... मम मनसि अपि भावना संजाता तथा च मयाऽपि स्वरक्तं (vii) .....। अशासे यद् मम एतां भावनां (viii) ..... भवान् प्रसन्नो भविष्यति। अहं पूर्णतया सकुशलोऽस्मि। (ix) ..... चिन्तया।

भवतः (x) .....

अभिः

(मञ्जूषा–प्रदत्तम्, रक्तदानशिविरम्, दशमकक्षायाः, पितृमहोदयाः!, आज्ञाकारी, स्वरक्तं, शिविरस्य, दृष्ट्वा, ज्ञात्वा, अलं।)

7. भवती सौम्या भवत्याः वर्गेण अनाथबालकैः सह प्रतियोगितायां पराजयः अनुभूतः। आत्मानुभवान्वर्णयन्त्या भवत्या मातरं लिखितं पत्रं मञ्जूषापद- सहायतया पूरयित्वा पुनः लेखनीयम्।

सरोजिनी छात्रावासः

देहलीतः

तिथिः .....

पूज्या मातृचरणाः!

सादरं (i) .....।

अत्र खलु (ii) ..... कुशलम्। मन्ये तत्रापि सर्वे (iii) ..... स्युः। मातः! अस्माकं विद्यालयस्य समीपे एकः अन्यः विद्यालयः अस्ति यत्र (iv) ..... दीनाः असहायाः छात्राः एव पठन्ति। अस्माकं (v) ..... तस्य विद्यालस्य दशमकक्षायाः छात्रैः (vi) ..... गीता-अन्त्याक्षरी-प्रतियोगिताम् (vii) .....। जानाति भवती, वयं सर्वे तस्यां (viii) ..... जाताः। तेषां प्रदर्शनं तु अभूतपूर्वम् आसीत्। नूनं (ix) ..... सर्वथा नष्टः, श्रमः सर्वत्र विजयते खलु।

पितृचरणयोः प्रणामाः।

भवत्याः आत्मजा

(x) .....

(मञ्जूषा-सर्वं, कुशलिनः, पराजिताः, सौम्या, दर्पः, आयोजितवान्, सह, चरणस्पर्शः, प्राचार्यः, सर्वे।)

8. भवान् रितेशः। 'प्लास्टिकस्य प्रयोगः पर्यावरण-नाशकः' इति विषयम् अधिकृत्य मित्रम् अखिलेशं प्रति लिखिते पत्रे रिक्तस्थानानि पूरयित्वा पुनः उत्तरपुस्तिकायां लिखत।

(i) .....

दिनांकः .....

प्रिय मित्र (ii) .....

सस्नेह नमः

अत्र कुशलं तत्रास्तु। गतसप्ताहे एव मम (iii) ..... 'त्यज प्लास्टिकम् रक्ष पर्यावरणम्' इति विषये एका गोष्ठी अभवत्। अत्रैव मया प्रथमवारं (iv) ..... यत् प्लास्टिकस्य दूरगामिनः घातकाः च परिणामाः भवन्ति। अन्यानि सर्वाणि वस्तूनि मृत्तिकायां विनश्य विलीयन्ते परं (v) ..... तु कदापि न अपक्षीयते। न इदं गलति न च विलीयते। एवं हि (vi) ..... कृते महती क्षतिः भवति। परं वयं प्रातः जागरणात् आरभ्य रात्रौ निद्रापर्यन्तं प्लस्टिकस्य विविधवस्तूनां प्रयोगं (vii) .....। किमधिकम् इदम् कलमं येन अहं लिखामि, अस्य च मसियष्टिः प्लास्टिकनिर्मिता। कल्पयामि यदि एवमेव प्लास्टिकस्य प्रयोगः वर्धिष्यते तर्हि किं भविष्यति? वस्तुतः पर्यावरणस्य (viii) ..... एव अस्माकम् रक्षणम्। आशासे त्वमपि जागरुकः भूत्वा अन्येभ्यः अपि प्रेरणां प्रदास्यसि। (ix) ..... मम प्रणामाः।

भवतः अभिन्नमित्रम्

(x).....

(मञ्जूषा-कुर्मः, ज्ञातम्, विद्यालये, मातृचरणयोः, प्लास्टिकं, नवदिल्लीतः, पर्यावरणस्य, रक्षणे, रितेशः, अखिलेश!)

9. सर्वोदयविद्यालस्य एकादशकक्षायां प्रवेशार्थं प्रधानाचार्यं प्रति लिखिते प्रार्थनापत्रे मञ्जूषातः समुचित-पदानि चित्वा पत्रं पूरयित्वा पुनः लिखत।

सेवायाम्

श्रीमन् (i) .....

सर्वोदयः विद्यालयः

कृष्णानगरम् दिल्ली।

विषयः एकादशकक्षायां (ii) .....।

महोदय! सविनयं (iii) ..... यत् अहं जनकपुरीस्थितसर्वोदयविद्यालयतः (iv) ..... प्रथमे स्थाने (v) ..... अभवम्। मम पितुः अत्र (vi) ..... जातम्। अतः स्वकीये विद्यालये (vii) ..... प्रवेशं दत्त्वा अनुगृह्णातु (viii) ..... इति प्रार्थ्यते।

(ix) .....।

भवताम् (x) .....

मृदुलः

(मञ्जूषा-स्थानान्तरणं, निवेदयामि, आज्ञाकारी शिष्यः, उत्तीर्णः, एकादशकक्षायाम्, सधन्यवादाः, दशमकक्षायां, प्रवेशार्थम्, प्रधाानाचार्यमहोदयः, भवान्।)

10. शुल्कदण्डक्षमार्थं प्रधानाचार्यं प्रति प्रार्थनापत्रम् मञ्जूषायां प्रदत्तैः उचितशब्दैः पूरयित्वा पुनः लिखत।

(i) .....

श्रीमन् प्रधानाचार्यः महोदयः

सर्वोदयः विद्यालयः

(ii) .....

(iii) ..... निवेद्यते यत् (iv) ..... गुरुवासरे गृहे अत्यावश्यक-कार्यवशात् (v) ..... विद्यालये अनुपस्थितः आसम्। तस्मिन् दिवसे अहम् अवकाशपत्रं (vi) ..... प्रातरेव इन्द्रप्रस्थाय गतः। तेनाऽहं दशरुप्यकशुल्कदण्डेन (vii) ..... अस्मि। मम विद्यार्थिजीवने अयं प्रथम एव एतादृशः (viii) ..... आसीत्। प्रार्थयेऽहमत्रभवन्तं यदपरिहार्यकारणात् जातां इमां (ix) ..... क्षम्यताम्। शुल्कदण्डप्रदानात् अपि च महयं मुक्तिं प्रददातु। अहं कृतज्ञो भविष्यामि।

सधन्यवादम्।

भवदीयः (x) .....

विश्वम्भरः

एकादशी कक्षा

(मञ्जूषा-अहम्, न्यूनतां, अवसरः, सेवायाम् विना, गतसप्ताहस्य, शिष्यः, दण्डितः, महोदय!, सविनयम्)

अभ्यासपत्राणाम् उत्तराणि

प्रथमपत्रम्

(i) गिरीश!	(ii) नमस्ते	(iii) स्वपित्रा
(iv) मम	(v) निर्देशाः	(vi) एकहोरापूर्वम्
(vii) क्षुधायाः	(viii) प्रसन्नमनसा	(ix) त्वदीयम्
(x) नव्यः		

द्वितीयपत्रम्

(i) देवधरतः (ii) पितृमहोदयाः (iii) प्रथमम्

(iv) धावनप्रतियोगितायां (v) करिष्यामि (vi) आयोजयिष्यते

(vii) निमन्त्रणपत्रम् (viii) भवन्तम् (ix) उत्साहवर्धनम्

(x) देवेशः

तृतीयपत्रम्

(i) स्नेहस्निग्धे (ii) पर्यावरणविषये (iii) पर्यावरणरक्षणस्य

(iv) नदीजलेषु (v) जलप्रदूषण-निवारणाय (vi) वृक्षाः

(vii) टङ्कणीयानि (viii) न्यूनतमः (ix) विषये

(x) स्मिता

चतुर्थपत्रम्

(i) मुम्बईतः (ii) सस्नेह नमस्ते। (iii) परीक्षापरिणामः

(iv) विदितः (v) अङ्कान् (vi) संस्कृते

(vii) तव (viii) आत्मनः (ix) वर्धापनम्

(x) अजयः

पंचमपत्रम्

(i) प्रियमित्र (ii) शुभसमाचारं (iii) भगिन्याः

(iv) तारिकायां (v) आगमिष्यति (vi) पूर्वमेव

(vii) त्रिचतुर्दिनानि (viii) आगन्तव्यम् (ix) प्रणामाः

(x) प्रियमित्रम्

षष्ठपत्रम्

(i) पितृमहोदया:! (ii) रक्तदानशिविरम् (iii) शिविरस्य

(iv) स्वरक्तं (v) दशमकक्षाया: (vi) दृष्टवा

(vii) प्रदत्तम् (viii) ज्ञात्वा (ix) अलं

(x) आज्ञाकारी

सप्तमपत्रम्

(i) चरणस्पर्श: (ii) सर्वं (iii) कुशलिन:

(iv) सर्वे (v) प्राचार्य: (vi) सह

(vii) आयोजितवान् (viii) पराजिता: (ix) दर्प:

(x) सौम्या

अष्टमपत्रम्

(i) नवदिल्लीत: (ii) अखिलेश! (iii) विद्यालये

(iv) ज्ञातम् (v) प्लास्टिकं (vi) पर्यावरणस्य

(vii) कुर्म: (viii) रक्षणे (ix) मातृचरणयो:

(x) रितेश:

नवमपत्रम्

(i) प्रधानाचार्यमहोदय: (ii) प्रवेशार्थम् (iii) निवेदयामि

(iv) दशमकक्षायां (v) उत्तीर्ण: (vi) स्थानान्तरणं

(vii) एकादशकक्षायाम् (viii) भवान् (ix) सधन्यवादा:

(x) आज्ञाकारी शिष्य:

दशमपत्रम्

(i) सेवायाम् (ii) महोदय! (iii) सविनयम्

(iv) गतसप्ताहस्य (v) अहम् (vi) विना

(vii) दण्डितः (viii) अवसरः (ix) न्यूनतां

(x) शिष्यः

मञ्जूषापदसहायतया लघुकथायां रिक्तस्थानपूर्तिः

लघु कथाएं छात्रों की किसी भाषा विशेष के प्रति रुचि जागृत करने व नैतिक मूल्यों के प्रति प्रेरित करने में सहायक होती हैं। इसी उद्देश्य से 11वीं कक्षा में लघु कथाओं को रखा गया है, जिसमें छात्रों को मंजूषा की सहायता से पद चुनकर रिक्त स्थानपूर्ति करना होता है।

सामान्यनिर्देशः-लघु कथा में रिक्त स्थान भरने से पहले कथा को कम से कम दो बार अवश्य पढ़ें तथा मंजूषा में आए शब्दों का हिंदी अर्थ समझने का प्रयास करें। सभी रिक्त स्थानों को एक बार में ही भरने का प्रयास न करें।

अभ्यासाय काश्चन लघुकथाः

1. एकदा (i) ..... सिद्धार्थः भ्रमणार्थम् उपवनं गतः। सहसा एकं (ii) ..... श्रुत्वा स इतस्ततः अपश्यत्। बाणेन विद्धः एकः हंसः (iii) ..... पतितः आसीत्। एतत् दृष्टवा सिद्ध ार्थस्य चित्तं करुणया (iv) ..... जातम्। सः धावयित्वा हंसस्य (v)..... बाणं निष्कास्य तम् अङ्के अधारयत्। तदैव देवदत्तः धावन् तत्र प्राप्तः। (vi) ..... हस्ते हंसं दृष्ट्वा सः उच्चैः अवदत्-''सिद्धार्थ! एषः मम हंसः। मया बाणेन निपातितः। अतः मह्यं (vii) .....।'' सिद्धार्थः दृढतया अवदत्- ''अहं न दास्यामि। अहम् अस्य रक्षकः अस्मि।'' तदा तौ विवादं कुर्वन्तौ राजसभां गतौ। राजा सर्वं (viii) ..... आकर्ण्य आदिशत्- ''यस्य पार्श्वे हंसः

(ix) ..... तस्यैव भविष्यति।'' हंसः सिद्धार्थस्य समीपं गतवान्। सत्यमिदम्। (x) ..... रक्षकः श्रेयान्।

(मञ्जूषा–देहि, भक्षकात्, राजकुमारः, शरीरात्, वृत्तान्तम्, व्याकुलं, क्रन्दन–ध्वनिं, भूमौ, सिद्धार्थस्य, आगमिष्यति।)

2. एकस्य कृषकस्य (i) ..... पुत्राः आसन्। ते चत्वारोऽपि भ्रातरः परस्परं (ii) ..... कुर्वन्ति स्म। तेषां चतुर्णां भ्रातॄणां कलहं दृष्ट्वा सः (iii) ..... दुःखी आसीत्। एकदा सः शुष्ककाष्ठानि एकत्रीकृत्य तानि (iv) ..... बद्ध्वा पुत्राणां समक्षम् अस्थापयत्। तान् पुत्रान् अवदत् च एतानि काष्ठानि त्रोटयत, पुत्रेषु एकः अपि तानि (v) ..... समर्थः नाभवत्। तदा सः पृथक्कृत्य पुत्राणां समक्षं पुनः (vi) .....। सर्वे पुत्राः (vii) ..... सर्वाणि काष्ठानि अत्रोटयन्। सः (viii) ..... अकथयत्– यदि इत्थमेव यूयमपि परस्परं मिलित्वा (ix) ..... तर्हि कोऽपि युष्मान् हन्तुं समर्थः न भविष्यति। यतो हि (x) ..... शक्तिः कलौ युगे।

(मञ्जूषा–निवत्स्यथ, चत्वारः, कृषकः, त्रोटयितुम्, कलहम्, संघे, अस्थापयत्, रज्ज्वा, पुत्रान्, सरलतया।)

3. एकदा एकः (i) ..... नृपस्य भवनम् अगच्छत्। नृपः तस्य हार्दिकं स्वागतम् अकरोत् समुचितभोजनप्रदानादिभिश्च (ii) ..... अकारयत्। संन्यासिना सह वार्तालापप्रसङ्गे राजा तम् अपृच्छत्– 'हे महात्मन् मम कृते सर्वाधिकं करणीयं कार्यम् किम् अस्ति येन अहं (iii) ..... प्राप्तुं शक्नुयाम?' स्पष्टवक्ता संन्यासी अवदत्– ''हे राजन्! यदि भवान् पुण्यं प्राप्तुमिच्छति तर्हि (iv) ..... शयनं करोतु।' नृपः विस्मयेन अपृच्छत्–भवता एतत् कीदृशं करणीयम् (v) .....? अधिकाधिकशयनेन अधिकाधिकं पुण्यं प्राप्यते किम्? अहम् तु एतद् (vi) ..... सर्वथा असमर्थोऽस्मि' संन्यासी विहस्य अवदत्–यावदधिकं भवान् स्वप्स्यति, तावदधिकमेव (vii) ..... तव अत्याचारेभ्यः मुक्ताः भविष्यन्ति। भवतः पापानामपि तावान् (viii) ..... भविष्यति। एतदुक्त्वा संन्यासी बहिरगच्छत् नृपस्तु प्रजानाम् (ix) ..... अनुभवन् आत्मानं समीक्षमाणः (x) ..... कर्तुमारभत। अहो! महात्मनाम् प्रभावः!''

(मञ्जूषा–पीडाम्, अधिकाधिकं, क्षयः, अवगन्तुं, संन्यासी, अतिथिसत्कारम्, पुण्यं, पश्चात्तापं, उपदिश्यते, प्रजाः।)

4. (i) ..... नाम प्रायशः श्रुतपूर्वमेव। अस्य जन्म शान्तिनिकेतने अभवत्। शान्तिनिकेतनस्य (ii) ..... गुरुदेवः रवीन्द्रनाथठाकुरः अस्य नामकरणं कृतवान्। बालकस्य (iii) ..... कुर्वन् सः उक्तवान् आसीत्– 'अमर्त्यसेनः' इत्येतत् पदं संस्कृतमूलम्। (iv) ..... वसन् अमर्त्यसेनः संस्कृताभ्यासं कृतवान्। सः 'स्वपितामहः श्री क्षितीशमोहनसेन इव संस्कृतस्य (v) ..... विद्वान् भवेयम्' इति इच्छति स्म। उच्चशिक्षाप्राप्त्यर्थं स (vi) ..... अगच्छत् तत्र 'अर्थशास्त्रस्य' विशदम् अध्ययनं कृत्वा (vii) ..... अभवत्। अध्यापन–समये सः अर्थशास्त्रविषयकी महतीं गवेषणाम् अकरोत्। अध्यापन–कार्यं समाप्य श्री अमर्त्यसेनः (viii) ..... प्रत्यावर्तत। भारतसर्वकारेण तस्मै (ix) ..... इति सम्मानं दत्तम्। प्रशंसनीयः एषः (x) ..... अर्थशास्त्री च।

(मञ्जूषा–प्रसिद्धः, अमर्त्यसेनः, आंग्लदेशम्, संस्कृतपुत्रः, संस्थापकः, प्राध्यापकः नामकरणं, भारतं, शान्तिनिकेतने, 'भारतरत्नम्'।)

5. एकदा एकः (i) ..... काष्ठान्यानेतुं वनमगच्छत्। तत्र सहसैव वृक्षध्वनिं (ii) ..... तिष्ठति। वृक्षः समीपस्थं कर्तितं वृक्षं दृष्ट्वा रुदन्निव वदति स्म, ह्यः एकः काष्ठहारः काष्ठाय (iii) ..... मित्रस्य शरीरमच्छिनत्। छेदनेनास्य शरीरे व्रणान् दृष्ट्वा अतीव दुःखितोऽहम्। (iv) ..... नीत्वा सः तु आपणं गतवान् परं अत्र कोऽपि नास्ति योऽस्य व्रणानामुपचारं करोतु। किमर्थं (v) ..... जनाः यदस्माकं शरीरं न केवलं काष्ठविक्रयणाय एवास्ति अपितु वायोः (vi) ....., कूहानाशनाय, आतपेन श्रान्तेभ्यः पथिकेभ्यः, पशुभ्यश्च छायाप्रदानाय, खगेभ्यः (vii) ....., व्याधितेभ्यः औषधये, बुभुक्षितेभ्यः फलप्रदानाय चाप्यस्ति। काष्ठविक्रयेण तु केवलमेकवारमेव एकस्यैव लाभः जायते परमनेन चिरकालपर्यन्तं विविधाः प्राणिनः (viii) . ..... भवन्ति। फलौषधीनां प्राप्तिरपि दुर्लभा भवति। एवमेव एकैकं कृत्वाऽस्माकं सर्वेषां कर्तनेन वसन्तादीनां (ix) ..... महत्त्वमपि विलुप्तं भविष्यति। इदं (x) ..... श्रुत्वा खिन्नमनः काष्ठहारः वृक्षकर्तनात् विरम्य वृक्षारोपणम् आरब्धवान्।

(मञ्जूषा–मम, विस्मरन्ति, ऋतूनां, निराश्रिताः, काष्ठहारः, निवासाय, सर्वं, काष्ठानि, श्रुत्वा, शुद्धीकरणाय।)

6. एकदा एकः (i) ..... आसीत्। सः अनेकवर्णाः टोपिकाः (ii) .....। एकस्मिन् दिने श्रान्तः स एकस्य वृक्षस्य (iii) ..... उपाविशत्। शनैः शनैः सः निद्रावशीभूतः (iv) ....., स पुटकं शिरस्तले निधाय अस्वपत्। वृक्षे स्थिताः वानराः (v) ..... टोपिकाः दृष्ट्वा अधः अवातरन्। शनैः शनैः ते पुटकात् टोपिकाः निष्कास्य (vi) ..... धारयित्वा वृक्षम् आरोहन्। प्रबुद्धः भूत्वा टोपिकाविक्रेता यदा उपरि पश्यति तदा रक्तनीलवर्णाः टोपिकाः धारयतः (vii) ..... पश्यति। ''हा दैव! नष्टाः मे सर्वाः टोपिकाः!'' इति विलपन् सः आत्मनः शिरसि धारितां टोपिकाम् अपि वेगेन (viii) ..... क्षिपति कथयति च– 'रे दुष्टाः! सर्वाः टोपिकाः तु गृहीताः। एताम् अपि नयन्तु।' प्रकृत्या अनुकरणशीलाः वानराः अपि स्वस्वटोपिकाः भूमौ (ix) .....। आश्चर्यचकितः सः सर्वाः टोपिकाः विचित्य, स्वपुटके स्थापयित्वा प्रसन्नः स्वं गृहं प्रति अचलत्। सत्यं (x) ..... कदापि धैर्यं न त्यक्तव्यम्।

(मञ्जूषा–जातः, समस्यायां, टोपिकाविक्रेता, प्रक्षिप्तवन्तः, छायायाम्, शिरसि, भूमौ, विक्रीणाति स्म, वानरान्, विविधवर्णयुक्ताः।)

7. एकस्याः नद्याः तटे एकः विशालवृक्षः आसीत्। तस्मिन् वृक्षे स्वपरिश्रमेण (i) ..... निर्माय अनेके खगाः निवसन्ति स्म। (ii) ..... एकः वानरः अपि वसति स्म। एकदा महती (iii) ..... अभवत्। सः वानरः (iv) ..... अतीव आर्द्रः कम्पितः च अभवत्। खगाः (v) ..... कम्पमानम् वानरम् अवदन्–भो वानर! त्वम् कष्टम् (vi) .....। तत् कथम् गृहस्य (vii) ..... न करोषि। यदा सः कपिः एतत् अशृणोत् तदा सः अचिन्तयत् यत् एते (viii) ..... खगाः माम् निन्दन्ति। अतः सः वानरः खगानाम् नीडानि वृक्षात् (ix) ..... अपातयत्। खगानां नीडैः सह तेषाम् अण्डानि अपि (x) .....। सत्यमेव उक्तं केनचित् दुष्टः परामर्शयोग्यः न भवति।

नीडानि, अनुभवसि, अधः, शीतेन, निर्माणम्, क्षुद्राः वृक्षतले, वृष्टिः, नष्टानि, वृष्टिजलेन।

8. प्राचीनकाले (i) ..... जनपदे गौतमी नाम्नी एका विधवा नारी निवसति स्म। एकदा (ii) ..... सह सा गहनं वनम् अगच्छत्। तस्याः बालकः (iii) ..... फलानि खादन् अतीव प्रसन्नः अभवत्। अत्रान्तरे, वने इतस्ततः भ्रमन्तं बालकं सहसा एकः (iv) ..... दंष्टवान्। दंशसमकालमेव सः प्राणान् अत्यजत्। स्वप्रियं पुत्रं मृतं वीक्ष्य गौतमी तारस्वरेण (v) ..... आरब्धवती। गभीरं मानसिकं दुःखं सोढुमसमर्था सा भगवतः बुद्धस्य (vi) ..... गत्वा मृतं पुत्रं पुनः उज्जीवयितुं प्रार्थितवती। बुद्धस्तु तां (vii) ..... सत्यम् उपदिशन् अकथयत् यत् जातस्य हि ध्रुवो (viii) .....। एतस्मात् कारणात् अयं (ix) ..... मर्त्यलोकः कथ्यते। अतः त्वं शोकं मा कुरु। मृतः (x) ..... न कदापि पुनः जीवति।

(मञ्जूषा–कृष्णसर्पः, लोकः, आश्रमं, दाक्षिणात्ये, प्राणी, रोदितुम्, शाश्वतं, स्वपुत्रेण, मधुराणि, मृत्युः।)

9. एकदा (i) ..... अङ्गेषु विवादः जातः। सर्वाणि अङ्गानि स्व स्व (ii) ..... कर्तुम् आरभन्त। पादौ अवदताम्–आवां चलावः, गन्तव्यं (iii) ..... च नयावः। नेत्रे अकथयताम्–आवां (iv) ..... कुर्वः। नासिका अवदत्– अहं घ्रात्वा सूचयामि किं ग्रहणीयं किं च न। (v) ..... अवदताम्– आवां सर्वविधान् शब्दान् शृणुवः। हस्तौ अवदताम्– आवां विना संसारः पङ्गुः स्यात्। किन्तु इदम् (vi) ..... सर्वदा विश्राममम् एव करोति। इदं निष्क्रियम्। अस्मै भोजनदानं वृथा एव। इत्थम् सर्वाणि अङ्गानि उच्चैः अघोषयन्–वयम् उदराय (vii) ..... न दास्यामः। विना भोजनम् उदरस्य त्रीणि दिनानि गतानि। तदा (viii) ..... अङ्गानि शक्तिहीनानि कार्यकरणे च असमर्थानि अभवन्। अधुना तैः उदरस्य (ix) ..... ज्ञातं यत् भुक्तस्य अन्नस्य रसनिर्माणं कृत्वा सर्वेभ्यः अंगेभ्यः शक्तिं ददाति। इत्थं तेषां (x) ..... नष्टः सर्वैः पूर्ववत् कार्यं च आरब्धम्।

(मञ्जूषा–कर्णौ, भोजनं, शरीरस्य, अहंकारः, उदरं, सर्वाणि, प्रशंसां, महत्त्वं, स्थानं, मार्गदर्शनं।)

10. एकदा एकः (i) ..... नगररक्षकः आसीत्। इतस्ततः भ्रमन् सः एकम् अशीतिवर्षीयं (ii) ..... अपश्यत्। सः आम्रवृक्षस्य (iii) ..... लग्नः आसीत्। इदं दृष्ट्वा नगररक्षकः तं महापुरुषम् अवदत्- अवलोकनेन प्रतीयते यत् यदा एषः (iv) ..... फलिष्यति तदा तु भवान् जीवितः न भविष्यति। अतः किमर्थं वृथा (v) ..... करोति भवान्? महापुरुषः हसित्वा अवदत्- पश्यन्तु एतान् (vi) ..... वृक्षान्। एतेषाम् आरोपणं मया न कृतं परं फलानि अहं (vii) ..... संतुष्टः भवामि। अतः यदा मम आरोपितस्य वृक्षस्य फलानि अन्ये (viii) ....., अहं पुनः प्रसन्नः भविष्यामि। महापुरुषस्य (ix) ..... श्रुत्वा तं च नमस्कृत्य नगररक्षकः उक्तवान्- सज्जनता (x) ..... खलु। सः प्रसन्नः भूत्वा ततः प्रस्थितः।

(मञ्जूषा-आरोपणे, फलयुक्तान्, खादिष्यन्ति, अनुकरणीया, कर्तव्यनिष्ठः, खादित्वा, वृक्षः, परिश्रमं, महापुरुषम्, वचनं।)

लघुकथानाम् उत्तराणि

1. (i) राजकुमारः (ii) क्रन्दन-ध्वनिं (iii) भूमौ
(iv) व्याकुलं (v) शरीरात् (vi) सिद्धार्थस्य
(vii) देहि (viii) वृत्तान्तम् (ix) आगमिष्यति
(x) भक्षकात्

2. (i) चत्वारः (ii) कलहम् (iii) कृषकः
(iv) रज्ज्वा (v) त्रोटयितुम् (vi) अस्थापयत्
(vii) सरलतया (viii) पुत्रान् (ix) निवत्स्यथ
(x) संघे

3. (i) संन्यासी (ii) अतिथिसत्कारम् (iii) पुण्यं

(iv) अधिकाधिकं (v) उपदिश्यते (vi) अवगन्तुं

(vii) प्रजाः (viii) क्षयः (ix) पीडाम्

(x) पश्चात्तापं

4. (i) अमर्त्यसेनः (ii) संस्थापकः (iii) नामकरणं

(iv) शान्तिनिकेतने (v) प्रसिद्धः (vi) आंग्लेदशम्

(vii) प्राध्यापकः (viii) भारतं (ix) 'भारतरत्नम्'

(x) संस्कृतपुत्रः

5. (i) काष्ठहारः (ii) श्रुत्वा (iii) मम

(iv) काष्ठानि (v) विस्मरन्ति (vi) शुद्धीकरणाय

(vii) निवासाय (viii) निराश्रिताः (ix) ऋतूनां

(x) सर्वं

6. (i) टोपिकाविक्रेता (ii) विक्रीणाति स्म (iii) छायायाम्

(iv) जातः (v) विविधवर्णयुक्ताः (vi) शिरसि

(vii) वानरान् (viii) भूमौ (ix) प्रक्षिप्तवन्तः

(x) समस्यायां

7. (i) नीडानि (ii) वृक्षतले (iii) वृष्टिः

(iv) वृष्टिजलेन (v) शीतेन (vi) अनुभवसि

(vii) निर्माणम् (viii) क्षुद्राः (ix) अधः

(x) नष्टानि

8. (i) दाक्षिणात्ये (ii) स्वपुत्रेण (iii) मधुराणि
(iv) कृष्णसर्पः (v) रोदितुम् (vi) आश्रमं
(vii) शाश्वतं (viii) मृत्युः (ix) लोकः
(x) प्राणी

9. (i) शरीरस्य (ii) प्रशंसां (iii) स्थानं
(iv) मार्गदर्शनं (v) कर्णौ (vi) उदरं
(vii) भोजनं (viii) सर्वाणि (ix) महत्त्वं
(x) अहंकारः

10. (i) कर्तव्यनिष्ठः (ii) महापुरुषम् (iii) आरोपणे
(iv) वृक्षः (v) परिश्रमं (vi) फलयुक्तान्
(vii) खादित्वा (viii) खादिष्यन्ति (ix) वचनं
(x) अनुकरणीया

वार्तालापे एकपक्षपूर्णम्

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज में व्यवहार करने के लिए भाषा एक सशक्त माध्यम है। बच्चों की संस्कृतभाषागत दक्षता को बढाने के उद्देश्य से ही 11वीं कक्षा में वार्तालाप को रखा गया है।

वार्तालाप में एकपक्ष पूर्ण करने के लिए दिए गए पक्ष को ध्यानपूर्वक पढ़ें व अर्थ को समझने का प्रयास करें। दिए गए पक्ष के वाक्यों तथा कर्तृक्रियान्विति का ध्यान रखते हुए वार्तालाप में रिक्तस्थानों को भरें।

अभ्यासाय कतिचन वार्तालापाः

प्रथमः वार्तालापः

दीपकः- मित्र! भवान् कुत्र निवसति?

अमनः-1 .....।

दीपकः- देहल्यां तु प्रदूषणस्य समस्या सुरसामुखमिव वर्धते।

अमनः-2 .....।

दीपकः- सत्यम्! मित्र! अत एव प्रदूषणनियंत्रणस्य उपायाः चिन्तनीयाः।

अमनः-3 .....।

दीपकः- वयं बहु किमपि कर्तुं शक्नुमः। यथा यात्रायै सार्वजनिकावाहनानां प्रयोगः, वृक्षारोपणम् इत्यादि।

अमनः-4 .....।

दीपकः- सर्वकारः अपि स्वपक्षतः अनेकान् उपायान् करोति यथा समविषमनियमानां प्रयोगैः वाहनयातायातं न्यूनीकरणम्। परम् अस्माभिरपि विषयेऽस्मिन् स्वकर्तव्यं न विस्मरणीयम्।

अमनः-5 .....।

दीपकः पुनः मिलाप।

द्वितीयः वार्तालापः

पिताः- पुत्र! त्वम् अधुना किं पठसि?

आदित्यः- .....।

पिता:- संस्कृतस्य काऽपि परीक्षा वा?

आदित्य:- पित:! 2 .....।

पिता:- श्लोकगायनप्रतियोगिता अतीवशोभनम्! अभ्यासं कृत्वा सोत्साहं स्पर्धायां भागग्रहणं कुरु।

आदित्य:- 3 .....।

पिता:- चिन्तां मा कुरु श्लोकानाम् अर्थान् अवबुध्य स्मरणं कुरु। येन विस्मरणं न भवति।

आदित्य:- 4 .....।

पिता:- न जानासि। आगच्छ पुत्र! अहम् सर्वेषां श्लोकानाम् अर्थान् अवबोधयामि, सस्वरवाचनं च शिक्षयामि।

आदित्य:- (प्रसन्नतया) 5 .....।

तृतीयः वार्तालापः

मनस्वी:- मात:! गृहात् बहिः अवकरः प्रक्षिप्तः अस्ति। कः प्रक्षिप्तवान् अवकरम्?

माता:- 1 .....।

किमभवत्? त्वं किमर्थं पृच्छसि?

मनस्वी:- मात:! भवती एवं कथं कर्तुं शक्नोति? अतः किं गृहाभ्यन्तरं मार्जनेन एव स्वच्छताकार्यं समाप्यते खलु?

माता:- 2 .....।

मनस्वी:- मात:! सत्यमिदं यत् सर्वे स्वगृहमेव स्वच्छीकुर्वन्ति मार्गमुभयतः अवकराणां पर्वत इव दृश्यते, तस्य मालिन्यम् अस्माकं श्वासे अवरोधं जनयति। अत एव अस्माभिः अस्माकं परिवेशः स्वच्छः करणीयः।

माता:- 3 .....।

मनस्वी:- भवती एकाकिनी न, मार्गस्य परिकरणे शनैः शनैः अन्येऽपि सहयोगं करिष्यन्ति।

माता:- 4 .....।

मनस्वी:- अयं विचारः सहसा न आगतः। अद्य अस्माकम् आचार्या अस्मान् स्वच्छतायाः विषये प्रबोधितवती।

माता:- 5 .....।

मनस्वी - सत्यम्। स्वच्छतायै संकल्पः आवश्यकः।

चतुर्थः वार्तालापः

माहिनी:- वन्दने मया सह आपणं चलति किम्?

वन्दना:- .....।

मोहिनी:- परिक्षासमयः नातिदूरम् अतः कतिचन अभ्यासपुस्तिकाः अपेक्षन्ते।

वन्दना:- .....।

मोहिनी:- शोभनं... तर्हि तु भवती अपि मया सह एव अभ्यासपुस्तिकाः आनयतु।

वन्दना:- .....।

मोहिनी:- अस्तु... भवत्याः मातुलः अद्य कस्मिन् समये आगमिष्यति?

वन्दना:- .....।

मोहिनी:- तदा तु समस्या एव नास्ति यतो हि आवां सायंकालात् पूवमेव आगमिष्यावः।

वन्दना:- .....।

(उभे गच्छतः)

पञ्चमः वार्तालापः

प्रथमः शिक्षकः- महोदय! चिन्तित इव प्रतीयसे? किं कारणं खलु?

अपरः शिक्षकः- 1 .....।

अहम् तस्य व्यवहारेण उद्विग्नतामनुभवामि।

प्रथमः शिक्षकः- किम् सः आरम्भतः एव उद्दण्डः आसीत्?

अपरः शिक्षकः- 2 .....।

न जाने इदानीं सः किमर्थम् एवम् आचरति?

प्रथमः शिक्षकः- पूर्वं विनयशीलः आसीत् तर्हि किं भवान् तस्य परिवर्तितस्य व्यवहारस्य कारणं ज्ञातवान्?

अपरः शिक्षकः- 3 .....।

प्रथमः शिक्षकः- सत्यम्, कक्षायाम् अनेके बालकाः सर्वेषामुपरि अवधानं न संभवम्। परं यदि कोऽपि असामान्यमाचरति, तर्हि तस्य व्यवहारेऽपि तु अवधानं दातव्यमेव।

अपरः शिक्षकः- सत्यं कथयसि 4 .....।

प्रथमः शिक्षकः- एतदेव समीचीनं खलु। तस्य व्यवहारस्य कारणं जानातु। अस्तु मित्र! पुनः मिलावः।

अपरः शिक्षकः- 5 .....।

प्रथमः शिक्षकः- स्वागतं मित्र। एष मम परामर्शः तव सहायकः भवेत्।

षष्ठः वार्तालापः

शिक्षकः- विनय! किं त्वं स्वजीवनलक्ष्यं निर्धारितवान्?

विनयः आम् श्रीमन्। 1 .....।

शिक्षकः- शोभनम्, तर्हि चिकित्सको भूत्वा जनसेवां करिष्यसि।

विनयः- 2 .....।

शिक्षकः- विनय! किं भारते अध्ययनं कृत्वा विदेशे सेवां करिष्यसि?

विनयः- 3 .....।

शिक्षकः- मन्ये विदेशेषु अधिकं धनं सुखसुविधाः च सन्ति। परं किम् धनार्जनाय विदेशगमनमेव तव जीवनोद्देश्यम्?

विनयः- 4 .....।

शिक्षकः- पुत्र! स्वप्रतिभाप्रयोगं कृत्वा सुविधाकांक्षा समीचीना परं स्वदेशं प्रति स्वकर्तव्यस्य उपेक्षा न करणीया एव।

विनयः- 5 .....।

शिक्षकः- क्षमा न अपेक्षिता। पुत्रः! पुन एवं न चिन्तय।

सप्तमः वार्तालापः

देवेशः- ऋषिः भवान् कुत्र वसति?

ऋषिः- 1 .....।

देवेशः मणिपुरतः, दिल्लीनगरं भवान् कदा आगच्छत्?

ऋषिः- 2 .....।

देवेशः- अहो! अस्मिन् मासे एव। परं मणिपुरं त्यक्त्वा भवान् किमर्थम् आगतवान्।

ऋषिः- 3 .....।

देवेशः- किं मणिपुरे उच्चशिक्षायाः व्यवस्था नास्ति?

ऋषिः- 4 .....।

देवेशः- सत्यमेमद् दिल्लीनगरे उच्चशिक्षायाः व्यवस्था उत्तमा अस्ति अस्तु, कल्याणकारिणी भवतु दिल्ली तव कृते।

ऋषिः- 5 .....।

देवेशः- स्वागतम्।

अष्टमः वार्तालापः

महाराजः- (एकं वृदधं दृष्ट्वा) भो! किं करोषि? किं रोपयसि?

वृद्धः- 1 .....।

महाराजः- आम्रवृक्षान्, त्वम् इदानीमपि एवं श्रमं करोषि? कतिवर्षीयः भवान्?

वृद्धः- 2 .....।

महाराजः- अहो अशीतिवर्षीयः किमेतेषाम् आम्रफलानि स्वजीवने खादितुं शक्नोषि?

वृद्धः- (सर्वान् वृक्षान् दर्शयन्) 3 .....।

महाराजः- सत्यं कथितम्, वयमपि अन्यारोपितानां वृक्षाणां फलानि खादामः। प्रसन्नोऽहम्। गृहाण एतत् सुवर्णपूरितं धनस्यूतम् इति।

वृद्धः- 4 .....।

महाराजः- यदि धनस्य इच्छा नास्ति तर्हि किमपि अन्यत् वरं याच।

वृद्धः- 5 .....।

महाराजः- नूनं धन्यो भवान् यः लोभं त्यक्त्वा सर्वहिताय कार्यं करोषि।

नवमः वार्तलापः

मृदुलः- सोहम! अद्य भवान् अल्पाहारार्थं किम् आनीतवान्?

सोहमः- 1 .....।

मृदुलः- पिज्जा... अरे! भवान् तु सर्वदा एतादृशं भोजनम् आनयति।

सोहमः- 2 .....।

मृदुलः- नहि मित्र! 'फास्ट-फूड' तुभ्यं रोचते परं स्वास्थ्याय बहुहानिप्रदं भवति।

सोहमः- 3 .....।

मृदुलः- न अहम् तु स्वास्थ्यनाशकं भोजनं न कदापि करोमि, अल्पाहरार्थं च द्विदलं दधि ओदनं च आनीतवान्?

सोहमः- 4 .....।

मृदुलः- मित्र! द्विदलादिकं न रोचते? तथापि सदैव स्मरणीयं तथ्यमिदं यत् रुचिकरं भोजनं सर्वदा स्वास्थ्यवर्धकं न भवति।

सोहमः- 5 .....।

मृदुलः- शोभनम् एतदेव उपयुक्तम्। पुनः फास्टफूडं न खादतु।

दशमः वार्तालापः

नवीनः- भवत्याः पितुः नाम किम्?

श्रेयांशः- 1 .....।

नवीनः- तस्य आजीविकायाः साधनं किम्?

श्रेयांशः- 2 .....।

नवीनः- सः कस्मिन् विद्यालये शिक्षयति?

श्रेयांशः- 3 .....।

नवीनः- सः कं विषयं पाठयति?

श्रेयांशः- 4 .....।

नवीनः- तस्य परीक्षापरिणामः कीदृशः भवति?

श्रेयांशः- 5 .....।

उत्तरतालिका

प्रथमः वार्तालापः

1. अहं देहल्यां निवसामि।

2. अतः प्रदूषणनियन्त्रणस्य उपायाः चिन्तनीया।

3. विषयेऽस्मिन् वयं किं कर्तुं शक्नुमः?

4. सर्वकारः अस्मिन् विषये किं करोति?

5. सत्यं वदसि मित्र!

द्वितीयः वार्तालापः

1. अधुना तु अहं श्लोकान् कण्ठस्थीकरोमि।

2. परीक्षा न अपितु श्लोकगायनप्रतियोगिता अस्ति।

3. परं पितः! श्लोकानां स्मरणमेव न भवति।

4. पितः! अहं श्लोकानाम् अर्थं न जानामि।

5. बहुशः धन्यवादाः। इदानीं मे सिद्धता उत्तमा भविष्यति।

तृतीयः वार्तालापः

1. मया एव गृहस्वच्छतां सम्पाद्य बहिः अवकरः क्षिप्तः।

2. सर्वे स्वगृहमेव स्वच्छीकुर्वन्ति।

3. सत्यं वदसि। परं किमहम् एकाकिनी एवं मार्गस्य परिष्करणं करवाणि।

4. कथं सहसैव आगतः अयं विचारः।

5. शोभनं वत्स। तर्हि अद्य प्रभृतिः एव स्वच्छतासंकल्पं कुर्मः।

चतुर्थः वार्तालापः

1. किम् आनेतव्यमस्ति आपणात्?

2. अभ्यासपुस्तिकाः तु मया अपि आनेतव्याः।

3. परमद्य गृहे मे मातुलः आगमिष्यति।

4. मम मातुलः सायंकाले आगमिष्यति।

5. आगच्छतु तदा तु शीघ्रमेव चलावः।

पञ्चमः वार्तालापः

1. द्वित्राभ्यां मासाभ्यां एकः छात्रः उद्दण्ड इव आचरति।

2. न, न, सः तु अतीव विनयशीलः आसीत्।

3. कक्षायां अनेके बालकाः, सर्वेषामुपरि तु व्यक्तिगतावधानं न संभवम्।

4. अहं तस्य व्यवहारस्य कारणं ज्ञास्यामि।

5. धन्यवादः मित्र! भवतः परामर्शाय।

षष्ठः वार्तालापः

1. अहं चिकित्साविज्ञानं पठित्वा चिकित्सकः भविष्यामि।

2. अहं तु चिकित्सको भूत्वा विदेशे जीवनं यापयिष्यामि, इति मम मनसि इच्छा अस्ति।

3. विदेशेषु अधिकं धनं सुखसुविधाः च सन्ति।

4. नहि श्रीमन्! परं किं स्वप्रतिभाप्रयोगं कृत्वा सुविधाकांक्षा नोचिता।

5. सत्यं वदति भवान्। क्षन्तव्योऽहम् एतादृशचिन्तनाय।

सप्तमः वार्तालापः

1. अहं मणिपुरे एव निवसामि।

2. अत्र ममागमनम् अस्मिन् मासे एव अभवत्।

3. उच्चशिक्षाग्रहणार्थम् अहं दिल्लीनगरम् आगतवान्।

4. मणिपुरे उच्चशिक्षायाः तादृशी व्यवस्था नास्ति यादृशी अत्र।

5. बहुशः धन्यवादाः मित्र!

अष्टमः वार्तालापः

1. अहं विजयः। आम्रवृक्षान् रोपयामि।

2. अशीतिवर्षीयः। श्रमं विना च जीवनं व्यर्थमेव।

3. वयम् येषां फलानि खादामः तेऽपि कैश्चित् रोपिताः स्युः।

4. किं करिष्यामि धनेन? नास्ति मे धनप्राप्तिः अभिलाषा।

5. किमपि प्राप्तुं मम इच्छा नास्ति।

नवमः वार्तालापः

1. अद्य तु अहम् अल्पाहारार्थं पिज्जा आनीतवान्।

2. आम् मित्र! मह्यं तु 'फास्ट-फूड' बहु रोचते।

3. किं भवान् 'फास्ट-फूड' कदापि न खादति।

4. परं मह्यं तु द्विदलादिकं न रोचते।

5. सत्यं वदसि भवान्। पुनः 'फास्टफूड' न खादिष्यामि।

दशमः वार्तालापः

1. मम पितुः नाम श्रीमान् वैंकटेशः अस्ति।

2. सः एकः शिक्षकः अस्ति।

3. सः सर्वोदय-विद्यालये पाठयति।

4. सः संस्कृतविषयं पाठयति।

5. तस्य परीक्षापरिणामः शतप्रतिशतं भवति।

संवादानाम् अन्यानि संभावित उतराणि अपि भवितुं शक्नुवन्ति।

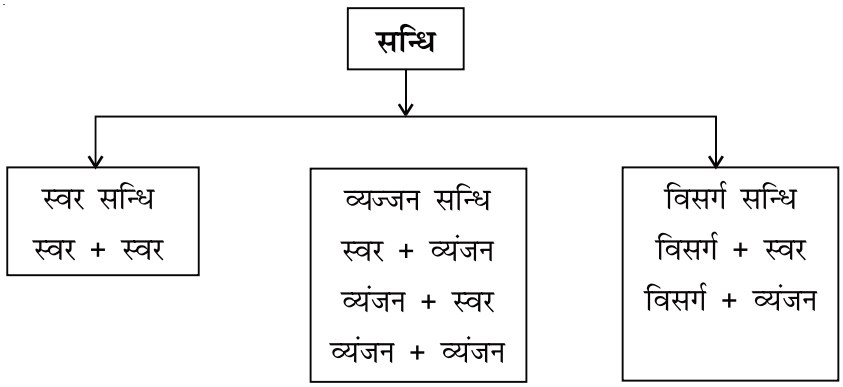
भाग-ग (अनुप्रयुक्त व्याकरणम्)

1. सन्धिः

दो वर्णों के परस्पर मेल से उत्पन्न विकार (परिवर्तन) को सन्धि कहते हैं।

सन्धि-विच्छेद- सन्धि युक्त पदों को अलग (विच्छेद) करने की विधि सन्धि-विच्छेद कहलाती है।

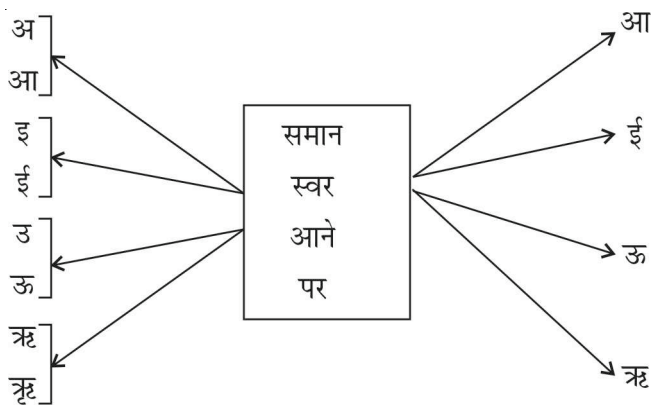
सन्धि के भेद- सन्धि के तीन भेद हैं-



सन्धिनियमाः -

स्वरसन्धि के भेद- स्वरसन्धिः - अच् सन्धिः

(क) **दीर्घ सन्धि**- अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ के सामने समान वर्ण आने पर क्रमशः दीर्घ आ, ई, ऊ तथा ॠ हो जाता है। (अकः सवर्णे दीर्घः)



जैसे- वेद + अन्तः = वेदान्तः

विद्या + अर्थी = विद्यार्थी

मुनि + इन्द्रः = मुनीन्द्रः

वधू + उत्सवः = वधूत्सवः

पितृ + ऋणम् = पितॄणम्

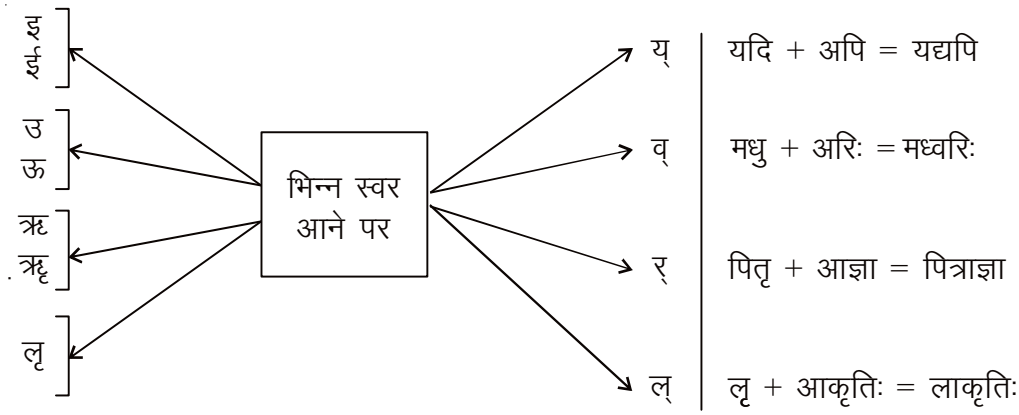
(ख) **गुणसन्धिः** - अ, आ के बाद इ-ई, उ-ऊ, ऋ-ॠ अथवा ऌ आए तो उसके स्थान पर क्रमशः ए, ओ, अर् और अल् हो जाते हैं। (अदेङ् गुणः) (आद् गुणः)

अ, आ	→	इ, ई	→ ए	उप + इन्द्रः = उपेन्द्रः
अ, आ	→	उ, ऊ	→ ओ	तव + ऊर्मिः = तवोर्मिः
अ, आ	→	ऋ	→ अर्	देव + ऋषिः = देवर्षिः
अ, आ	→	ऌ	→ अल्	तव + ऌकारः = तवल्कारः

(ग) **वृद्धि सन्धिः** - अ, आ के बाद ए, ऐ हो तो दोनों के मेल से ऐ हो जाता है तथा अ, आ के बाद ओ, औ हो तो दोनों के मेल से औ हो जाता है। (वृद्धिरेचि)

अ, आ	→	ए, ऐ	→ ऐ	सदा + एव = सदैव
अ, आ	→	ओ, औ	→ औ	महा + औदार्यम् = महौदार्यम्

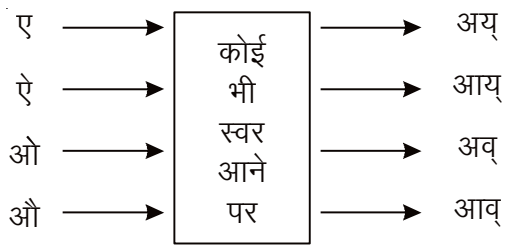
(घ) **यण् सन्धिः** - इक् (इ-ई, उ-ऊ, ऋ, ऌ) के बाद कोई भी असमान अच् (स्वर) हो तो इवर्ण को य्, उवर्ण को व्, ऋवर्ण को र् और ऌ को ल् हो जाता है। (इको यणचि)



(ङ) **अयादि सन्धिः** - ए, ऐ, ओ, औ के बाद कोई भी स्वर आने पर क्रम से अय्, आय्, अव्, आव् हो जाते हैं। (एचोऽयवायावः)

जैसे- ने + अनम् = नयनम्, नै + अकः = नायकः

पो + अनम् = पवनम् पौ + अकः = पावकः



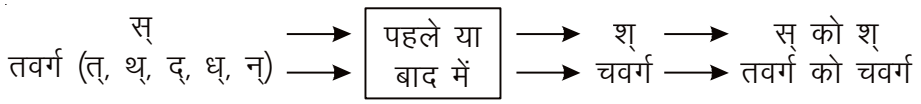
(च) **प्रकृतिभाव सन्धिः** यदि किसी शब्द या धातु के द्विवचन के रूप के अन्त में दीर्घ ई, ऊ अथवा ए हो और उसके बाद स्वर वर्ण हो तो कोई भी सन्धि नहीं होगी। इसी को प्रकृतिभाव कहते हैं। (ईदूदेद् द्विवचनं प्रगृह्यम्)

जैसे- हरी + इमौ = हरी इमौ (दीर्घ-निषेध)

गङ्गे + अमू = गङ्गे अमू (अय्-निषेध)

व्यञ्जन (हल्) सन्धिः

(क) श्चुत्व सन्धिः – सकार और तवर्ग से पहले या बाद में शकर या चवर्ग कोई भी हो तो स् को श् और तवर्ब को चवर्ग हो जाता है। (स्तो श्चुना श्चुः)



जैसे– तपस् + चिनोति = तपश्चिनोति

सत् + चरित्रम् = सच्चरित्रम्

उत् + ज्वलम् = उज्ज्वलम्,

याच् + ना = याच्ञा

नोट– श् के बाद तवर्ग रहे तो तवर्ग को चवर्ग नहीं होता। **जैसे–** विश् + नः = विश्नः

(ख) ष्टुत्व सन्धिः– स् या तवर्ग (त्, थ्, द्, ध्, न्) से पूर्व अथवा बाद में ष् या टवर्ग (ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण्) का कोई भी वर्ण हो तो स् को ष् और तवर्ग को टवर्ग हो जाता है। (ष्टुनाष्टुः)

जैसे– रामस् + षष्ठः = रामष्षष्ठः

तत् + टीका = तट्टीका,

कृष् + तः = कृष्टः

(ग) जश्त्व सन्धिः– पद के अन्त में झल् (वर्ग का प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ) वर्ण तथा उष्म (श्, ष्, स्, ह्) वर्ण विद्यमान हो तो जश्त्व हो जाता है (जश्त्व = अपने वर्ग का तृतीय या चतुर्थ वर्ण) (झलां जशोऽन्ते)

जैसे– दिक् + अन्तः = दिगन्तः, दिक् + गजः = दिग्गजः,

अच् + अन्तः = अजन्तः, बुध् + धिः = बुद्धिः

(घ) छत्व सन्धिः – वर्ग के पदान्त प्रथम चार वर्णों के परे यदि श् हो और 'श्' के बाद (स्वर तथा य्, व्, र्, ह्) हो तो 'श्' को विकल्प से 'छ्' हो जाता है छ् होने पर पूर्ववर्ती त् रहे तो 'त्' को श्चुत्व 'च्' हो जाता है।

जैसे– तत् + शिवः = तच्छिवः, तत् शिवः।

जगत् + शरण्यः = जगच्छरण्यः, जगत् शरण्यः

(ङ) अनुस्वार सन्धिः– पदान्त 'म्' के बाद कोई भी व्यंजन वर्ण हो तो म् को अनुस्वार (ं) हो जाता है।

जैसे– धनम् + याचते = धनं याचते

पुस्तकम् + पठति = पुस्तकं पठति

(च) परसवर्णसन्धिः– पदमध्यस्थ अनुस्वार के बाद वर्ग का कोई अक्षर अथवा य्, र्, ल्, व् हो तो अनुस्वार को परसवर्ण (वर्ग का पंचम वर्ण) हो जाता है।

जैसे– आशं + कते = आशङ्कते

गुं + फितः = गुम्फितः

नोट– पदान्त में यह परसवर्ण (पंचम वर्ण) विकल्प से होता है। जैसे– त्वं + करोषि = त्वङ्करोषि, त्वं करोषि

विसर्ग सन्धिः

1. (क) विसर्गस्थाने स्, श्, ष् – (सत्व सन्धिः)

यदि विसर्ग के बाद त्, थ्, च्, छ्, या ट्, ठ्, रहे तो विसर्ग के स्थान पर क्रमशः, स्, श्, ष्, हो जाता है।

विसर्ग (:) – त् या थ् – स्

: – च् या छ् – श्

: – ट् या ठ् – ष्

(ख) यदि विसर्ग के बाद क्, ख् या प्, फ् रहे तो विसर्ग ही रह जाता है।

जैसे– देवः + करोति = देवः करोति

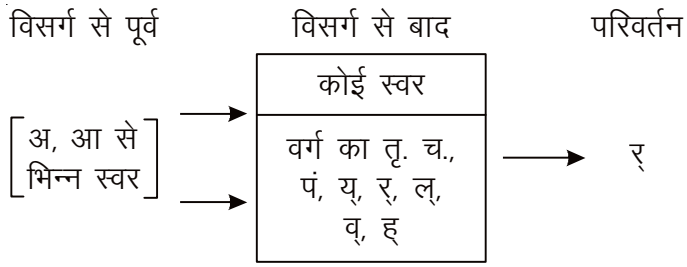
वृक्षः + फलति = वृक्षः फलति

(ग) यदि विसर्ग के बाद श्, ष्, स् रहे तो विसर्ग के स्थान पर श्, ष्, स् अथवा विसर्ग ही रह जाता है। जैसे– हरिः + शेते = हरिश्शेते, हरिः शेते

2. रुत्व सन्धिः – यदि विसर्ग से पहले अ, आ को छोड़कार कोई और स्वर हो तथा विसर्ग से परे कोई स्वर या किसी वर्ग का तृतीय, चतुर्थ, पंचम वर्ण तथा य्, र्, ल्, व्, ह् इनमें से कोई एक वर्ण हो तो विसर्ग को 'र्' हो जाता है।

जैसे– भानुः + अयम् = भानुरयम्

साधुः + गतः = साधुर्गतः



3. उत्वसन्धिः

(i) यदि विसर्ग से पहले अ हो और बाद में किसी वर्ग का तृतीय, चतुर्थ एवं पंचम वर्ण हो तथा य्, र्, ल्, व्, ह् हो तो विसर्ग को 'उ' हो जाता है तथा 'अ + उ' को ओ गुण हो जाता है।

जैसे– मनः + हरिः = मनोहरिः, छात्रः + वदति = छात्रो वदति

मनः + रथः = मनोरथः

(ii) विसर्ग से पहले और बाद में अ होने पर विसर्ग को उ हो जाता है तथा 'अ + उ' का गुण 'ओ' होकर अगले 'अ' के स्थान पर पूर्वरूप चिह्न 'ऽ' लगा दिया जाता है।

जैसे– कः + अपि = कोऽपि, कः + अयम् = कोऽयम्

सः + अगच्छत् = सोऽगच्छत्

4. लोप सन्धिः–

(i) विसर्ग के पहले 'अ' हो और विसर्ग से परे 'अ' को छोड़कर कोई ओर स्वर हो तो विसर्ग का लोप हो जाता है।

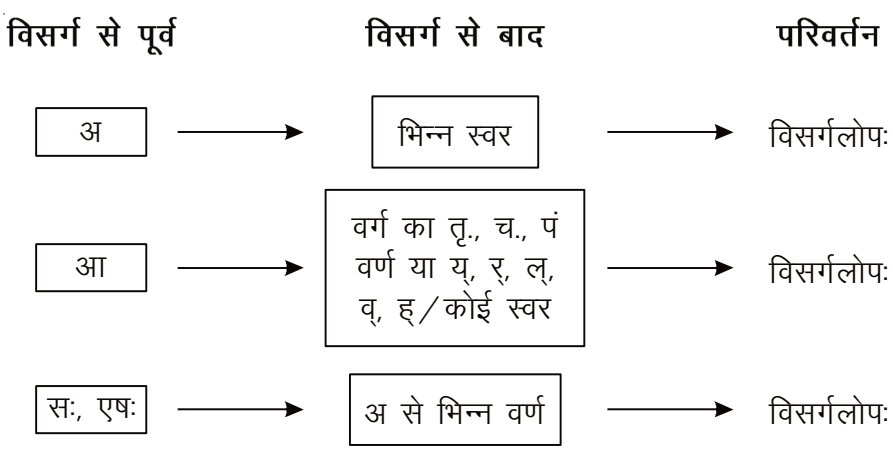
जैसे– अतः + एव = अतएव

(ii) विसर्ग से पहले 'आ' हो और बाद में वर्ग का तृतीय, चतुर्थ, पंचम वर्ण या य्, र्, ल्, व्, ह् अथवा कोई स्वर हो तो विसर्ग का लोप हो जाता है।

जैसे– नराः + आयान्ति = नरा आयान्ति, देवाः + गच्छन्ति = देवा गच्छन्ति

(iii) 'एषः' और 'सः' शब्दों से परे 'अ' को छोड़कर कोई अन्य वर्ण हो तो इन शब्दों के विसर्ग का लोप हो जाता है।

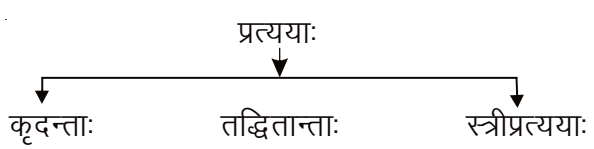
जैसे– सः + वदति = स वदति, एषः + जयति = एष जयति



2. प्रत्ययः

जो वर्णसमूह किसी धातु या शब्द के अन्त में जुड़कर नए अर्थ की प्रतीति कराते हैं, उस वर्ण समूह को प्रत्यय कहते हैं।

प्रत्यय के प्रकार –



'कृत्' प्रत्ययः– जिन प्रत्ययों को धातुओं में जोड़कार संज्ञा, विशेषण या अव्यय आदि पद बनाए जाते हैं उन्हें कृत् प्रत्यय कहते हैं।

(i) अव्यय बनाने के लिए प्रत्यय – 'क्त्वा' 'ल्यप्', तुमुन्

(ii) विशेषण बनाने के लिए प्रत्यय – शतृ, शानच्, तव्यत्

(iii) भूतकालिक क्रिया बनाने के लिए – अनीयर्, यत् क्त, क्तवतु

1. 'क्त' प्रत्ययः-नियमाः

1. क्त प्रत्यय का प्रयोग भूतकालिक कर्मवाच्य वाक्य में होता है।
2. क्त प्रत्यय का पुल्लिंग में 'तः' स्त्रीलिंग में 'ता' तथा नपुंसकलिंग में 'तम्' जुड़ता है।
3. क्त प्रत्यय का प्रयोग करते समय प्रायशः धातु से पूर्व 'इ' (ि) का प्रयोग होता है।
4. यदि धातु का अन्तिम अक्षर म् / न् हो तो इसका लोप हो जाता है और वहाँ 'इ' का प्रयोग नहीं होता है।
5. क्त प्रत्यय में कर्म प्रथमा विभक्ति में कर्ता (प्रथमा विभक्ति) तृतीया विभक्ति में बदल जाता है।

उदाहरण–

धातु + क्त = पुल्लिंग	**स्त्रीलिंग**	**नपुंसकलिंग**
चल् + क्त = चलितः	चलिता	चलितम्
नम् + क्त = नतः	नता	नतम्
दृश् + क्त = दृष्टः	दृष्टा	दृष्टम्
गम् + क्त = गतः	गता	गतम्

प्रयोग विधि–

1. रामः विद्यालयम् अगच्छत्।

   रामेण विद्यालयः गतः।

2. छात्राः उत्तराणि अलिखन्।

   छात्राभिः उत्तराणि लिखितानि।

3. शिक्षकः बालिकाम् अपाठयत्।

   शिक्षकेन बालिका पाठिता।

2. 'क्तवतु' प्रत्ययः–नियमाः

1. क्तवतु प्रत्यय का प्रयोग भूतकालिक कर्तृवाच्य वाक्य में होता है।
2. क्तवतु प्रत्यय का पुल्लिंग में 'तवान्' स्त्रीलिंग में 'तवती' और नपुसंकलिंग में 'तवत्' जुड़ता है।
3. कर्ता (प्रथमा विभक्ति) के लिंङ्ग व वचन के अनुसार क्रिया का लिङ्ग-वचन होता है।
4. क्तवतु प्रत्यय में पुल्लिंग के रूप 'भवत्' के, स्त्रीलिंग में 'नदी' के समान तथा नपुंसकलिंग में 'जगत्' के समान चलते हैं।

उदाहरण–

धातु + क्तवतु	=	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग
धाव् + क्तवतु	=	धावितवान्	धावितवती	धावितवत्
हस् + क्तवतु	=	हसितवान्	हसितवती	हसितवत्

प्रयोग विधि–

1. रामः विद्यालयं अगच्छत्।

   रामः विद्यालयम् गतवान्।

2. शिक्षिका छात्रान् अपाठयत्।

   शिक्षिका छात्रान् पाठितवती।

3. सा लेखम् अलिखत्।

   सा लेखम् लिखितवती।

3. तव्यत् प्रत्ययः–नियमाः

1. तव्यत् प्रत्यय का प्रयोग वर्तमानकालिक कर्मवाच्य / भाववाच्य वाक्य में होता है।
2. तव्यत् प्रत्यय का पुल्लिंग में 'तव्य' स्त्रीलिंग में 'तव्या' तथा नपुसंकलिंग में 'तव्यत्' हो जाता है।
3. कर्तृपद (प्रथमा विभक्ति) तृतीया विभक्ति में तथा कर्मपद (द्वितीया विभक्ति) प्रथमा विभक्ति में बदल जाता है।
4. प्रथमा विभक्ति के लिंग वचन के अनुसार क्रिया का लिंग-वचन होता है।
5. 'तव्यत्' प्रत्यय में पुल्लिंग में रूप 'राम' के, स्त्रीलिंग में 'लता' के समान तथा नपुसंकलिंग में 'फल' के समान चलते हैं।
6. यदि वाक्य में कर्मपद न हो तो कर्तृपद नियमानसुार परिवर्तित होगा परन्तु क्रियापद नपुंसकलिंग-एकवचन का ही होगा।

उदाहरण–

चल् + तव्यत्	=	चलितव्यः	चलितव्या	चलितव्यम्
पा + तव्यत्	=	पातव्यः	पातव्या	पातव्यम्

प्रयोग विधि–

1. भक्ताः ईश्वरं नमेयुः।

   भक्तैः ईश्वरः नन्तव्यः।

2. यूयम् हसेत।

   युष्माभिः हसितव्यम्।

'अनीयर्' प्रत्ययः - नियमाः

1. अनीयर् प्रत्यय का प्रयोग वर्तमानकालिक कर्मवाच्य/भाववाच्य वाक्य में होता है।
2. अनीयर् प्रत्यय का पुल्लिंग में 'अनीय' स्त्रीलिंग में 'अनीया' तथा नपुसंकलिंग में 'अनीयम्' हो जाता है।
3. कर्तृपद (प्रथमा विभक्ति) तृतीया विभक्ति में तथा कर्मपद (द्वि.वि.) प्रथमा विभक्ति में बदल जाता है।
4. प्रथमा विभक्ति के लिङ्ग व वचन के अनुसार क्रिया का लिङ्ग-वचन होता है।
5. अनीयर् प्रत्यय में पुल्लिंग के रूप 'राम' के समान, स्त्रीलिंग में 'लता' के समान तथा नपुसंकलिंग में 'फल' के समान चलते हैं।
6. धातु से अनीयर् प्रत्यय होने पर धातु के स्वर (इ, उ, ऋ, लृ) को गुण अर्थात् (ए, ओ, अर्, अल्) हो जाता है।

उदाहरण–

धातु + अनीयर्	=	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	नपुसंकलिंग
लिख् + अनीयर्	=	लेखनीयः	लेखनीया	लेखनीयम्
धाव् + अनीयर्	=	धावनीयः	धावनीया	धावनीयम्
दृश् + अनीयर्	=	दर्शनीयः	दर्शनीया	दर्शनीयम्

प्रयोग विधि–

1. जनाः पशून् न पीडयेयुः।

   जनैः पशवः न पीडनीयाः।

2. शिक्षिका बालिकां पाठयेत्।

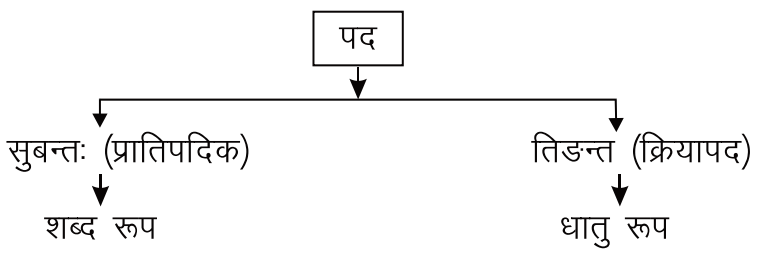
   शिक्षिकया बालिका पाठनीया।

सामान्य निर्देशः-

1. क्त और क्तवतु प्रत्यय भूतकाल के लिए प्रयोग किए जाते हैं।
2. 'तव्यत्' और 'अनीयर्' प्रत्यय का प्रयोग 'चाहिए' अर्थ में किया जाता है।

3. शब्दरूपाणि

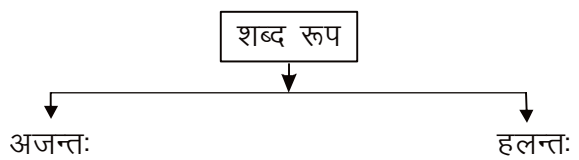
पदम् (सुप्तिङन्तं पदम्)



सुप् प्रत्ययः– प्रतिपादिक + सुप् प्रत्ययः

यथा– राम + सु = रामः

विभक्ति	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	सु	औ	जस्
द्वितीया	अम्	औट्	शस्
तृतीया	टा	भ्याम्	भिस्
चतुर्थी	ङे	भ्याम्	भ्यस्
पंचमी	ङसि	भ्याम्	भ्यस्
षष्ठी	ङस्	ओस्	आम्
सप्तमी	ङि	ओस्	सुप्



1. अजन्तशब्दः – जिन शब्दों के अन्त में अच् (स्वर) आए उन्हें अजन्त शब्द कहते हैं।

अजन्तशब्दः = स्वरान्त शब्दः

जैसे– 1. अजन्त पुल्लिंग शब्दः – राम, मुनि, भानु आदि।

2. अजन्त स्त्रीलिंग शब्दः – लता, मति, धेनु, मातृ आदि।

3. अजन्त नपुसंकलिंग शब्दः – फल, दधि, आदि।

2. हलन्तशब्दः – जिन शब्दों के अन्त में हलन्त व्यंजन वर्ण होता है, वे हलन्त या व्यंजनान्त शब्द कहलाते हैं।

जैसे– विद्वस्, गच्छत्, राजन्, आत्मन् आदि।

हलन्तशब्दाः

जैसे– 1. तकारान्त शब्दाः – भवत्, भगवत्, भूभृत् आदि

2. नकारान्त शब्दाः – राजन्, नामन्, अहन् आदि

3. चकारान्त शब्दाः – वाच् आदि

4. शकारान्त शब्दाः – दिश् आदि

5. सकारान्त शब्दाः – विद्वस्, मनस्, यशस्, तपस्, आदि।

6. हकारान्त नपुसंकलिंग शब्दाः – उपानह् आदि

3. सर्वनाम शब्दः – संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किए जाने वाले शब्दों को सर्वनाम कहते हैं। संस्कृत में कुछ सर्वनाम शब्द इस प्रकार हैं–

तत् (वह), एतत् (यह), इदम् (यह) किम् (क्या, कौन), सर्व (सब), अस्मद् (मैं) युष्मद् (तुम)

- अस्मद् और युष्मद् पुल्लिंग और स्त्रीलिंग दोनों में समान रूप से प्रयुक्त होते हैं।
- अन्य सर्वनामों के रूप तीनों लिंगों में चलते हैं।
- सर्वनाम शब्दरूपों में सम्बोधन नहीं होता है।

4. संख्यावाचक शब्दाः – जिन शब्दों से संख्या (गिनती) का बोध हो उन्हें संख्यावाचक शब्द कहते हैं।

– संख्या का प्रयोग विशेषण के रूप में किया जाता है। यदि विशेष्य पुल्लिंग है तो विशेषण भी पुल्लिंग होता है।

– एक से चार तक के तीनों लिंगों में रूप होते हैं। पाँच से सौ तक के रूप तीनों लिंगों में एक जैसे होते हैं।

संख्यावाचक शब्दः

मूल शब्द	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग
एक	एकः	एका	एकम्
द्वि	द्वौ	द्वे	द्वे
त्रि	त्रयः	तिस्रः	त्रीणि
चतुर्	चत्वारः	चतस्रः	चत्वारि
पञ्च	पञ्च	पञ्च	पञ्च

4. धातुरूपाणि

तिङन्त (क्रियापद) – धातुरूप

लकारः – 10

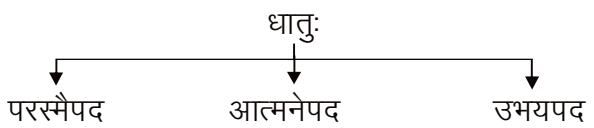
पाठ्यक्रम के अनुसार 5 लकारों का प्रयोग किया गया है।

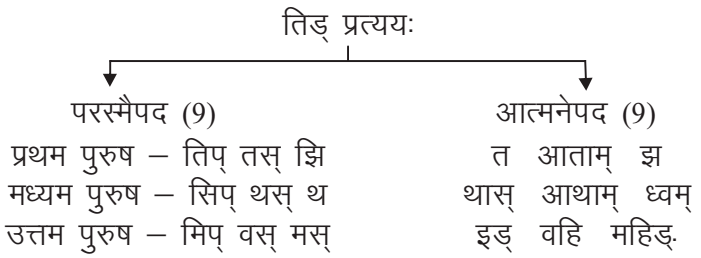
1. लट् लकारः – वर्तमान काल
2. लृट् लकारः – भविष्यत् काल
3. लङ् लकारः – भूतकाल

4. लोट् लकारः – आज्ञार्थक

5. विधिलिङ् लकारः – चाहिए अर्थ में

तिङ् प्रत्ययः – अष्टादश (18)





धातुः– क्रिया के जिस रूप के द्वारा शब्द की मूल उत्पत्ति का ज्ञान होता है वह धातु है।

– जब किसी धातु में प्रत्यय जोड़ दिया जाता है तो उसे क्रिया कहते हैं।

1. परस्मैपदी धातुएँ – जिस धातु का फल अन्य व्यक्ति पर पड़ता है उसे परस्मैदी ध ातु कहते हैं।

जैसे– धातु + प्रत्यय = क्रिया

भू + तिप् = भवति

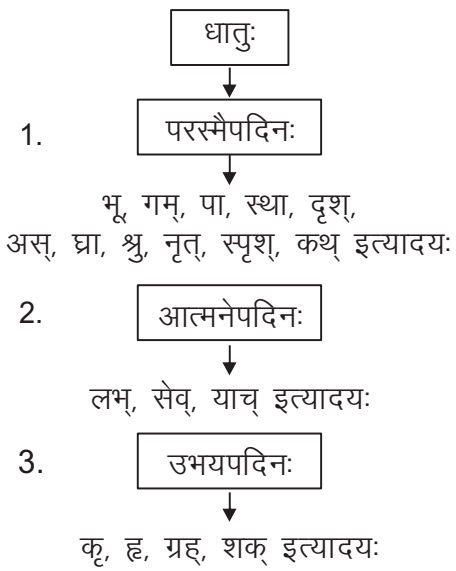
(गच्छ) गम् + तिप् = गच्छति

2. आत्मेनपद – जिस धातु के नीचे अनुदात्त चिह्न व 'ङ्' की इत्संज्ञा हुई हो उसे आत्मेनपदी धातु कहते हैं। जब क्रिया का फल कर्ता पर तो आत्मनेपदी।

3. उभयपदी – कुछ धातुएँ आत्मनेपदी और परस्मैपदी दोनों प्रकार की होती हैं। अर्थात् क्रिया का प्रभाव कर्ता और कर्म दोनों पर होता है।

जैसे– पच् + तिप् = पचति (परस्मैपद)

पच् + त = पचते (आत्मनेपद)



5. उपपदविभक्तिः

उपपद– जो पद के समीप हो।

जैसे– सर्वतः – चारों ओर – उद्यानं सर्वतः वृक्षाः सन्ति।

जिन वाक्यों में किसी विशेष पद के कारण से जो विभक्ति आती है, वह उपपद विभक्ति होती है। उसमें कारक की परिभाषा उपलक्षित नहीं होती हैं। वहाँ कारक से कोई अभिप्राय नहीं होता है।

कारक एवं उपपद विभक्ति

जिन शब्दों का क्रिया के साथ सीधा सम्बन्ध होता है उन्हें कारक कहते हैं। जैसे – रामः पुस्तकं पठति।

कारक के भेद

विभक्ति	**कारक**	**चिन्ह्**
प्रथमा	कर्ता	ने
द्वितीया	कर्म	को
तृतीया	करण	से (के द्वारा)
चतुर्थी	सम्प्रदान	के लिए
पंचमी	अपादान	से (अलग होना)
षष्ठी	सम्बन्ध	का, के, की
सप्तमी	अधिकरण	में, पर
सम्बोधनम्	सम्बोधन	हे, अरे

जितने कारक उतनी ही विभक्तियाँ होती हैं।

उपपदविभक्तिः

विभक्ति के अनुसार उपपद शब्द–

विभक्ति	उपपद शब्द
द्वितीया विभक्तिः	परितः (चारों ओर), उभयतः - दोनों ओर, समया - निकषा (पास) विना-बिना, धिक् (धिक्कार), प्रति (की ओर)

तृतीया विभक्तिः सह / साकम् / सार्धम् / समम् (साथ), विना, अलम्

चतुर्थी विभक्तिः रुच् (अच्छा लगना), दा - (यच्छ), नमः, कुप् (क्रोध)

पंचमी विभक्तिः विना, बहिः (बाहर) भी (डरना) रक्ष् (रक्षा करना), प्रमदः (आलस्य)

षष्ठी विभक्तिः उपरि, अधः पुरतः पृष्ठतः

सप्तमी विभक्तिः स्निह्, निपुणः, विश्वस्, (विश्वास करना), निर्धारणे

वाक्य प्रयोगः –

1. द्वितीया	1. विद्यालयम् उभयतः वृक्षाः सन्ति।
	2. बालकः गुरुकुलं प्रति गच्छति।
2. तृतीया	1. पुत्रः जनकेन सह मन्दिरं गच्छति।
	2. विद्यया विना सुखं नास्ति।
3. चतुर्थी	1. देवाय मोदकं रोचते।
	2. सज्जनः दुर्जनाय कुप्यति / क्रुध्यति।
4. पंचमी	1. गंगा हिमालयात् प्रभवति।
	2. रामः गृहात् बहिः गच्छति।
5. षष्ठी	1. ग्रामस्य समीपं विद्यालयः अस्ति।
	2. वनस्य पुरतः सरोवरः अस्ति।
6. सप्तमी	1. जीवेषु मानवाः श्रेष्ठाः ।
	2. माता पुत्रे स्निहयति।

6. वाच्यपरिवर्तनम्

वाच्य– किसी भी बात को प्रकट करने का तरीका वाच्य कहलाता है।

वाच्य के भेद – वाच्य के प्रमुखत: तीन भेद माने जाते हैं–

1. कर्तृवाच्य 2. कर्मवाच्य 3. भाववाच्य

1. कर्तृवाच्य

- जब किसी वाक्य में क्रिया कर्ता के लिंग / वचन / पुरुष के अनुसार बदलती है तो वह कर्तृवाच्य माना जाता है।
- कर्तृवाच्य में कर्ता की प्रधानता होती है।
- कर्तृवाच्य में कर्ता प्रथमा विभक्ति में और कर्म द्वितीया विभक्ति में लिखा जाता है।
- कर्तृवाच्य में क्रिया कर्ता के लिंग / वचन / पुरुष के अनुसार प्रयुक्त होती है तथा वह अकर्मक व सकर्मक दोनों प्रकार की हो सकती है।

  यथा –

  रामः पाठं पठति ।

  1 2 1

- कर्ता में प्रथमा, कर्म में द्वितीया तथा क्रिया कर्ता के अनुसार

2. कर्मवाच्य

- कर्मवाच्य में क्रिया कर्म के लिंग / वचन / पुरुष के अनुसार प्रयुक्त होती है। तथा वह सदैव सकर्मक ही होती है।

– कर्मवाच्य में कर्म की प्रधानता होती है।

– कर्मवाच्य में कर्ता तृतीया विभक्ति में और कर्म प्रथमा विभक्ति में होता है।

– क्रिया का सम्बंध कर्म से होता है।

यथा –

रामेण लेखः लिख्यते

3 1 1

– कर्ता में तृतीया, कर्म में प्रथमा और क्रिया कर्म के अनुसार

3. भाववाच्य– जहाँ क्रिया का संबंध कर्ता और कर्म से न होकर भाव से होता है; उसे भाववाच्य कहते हैं।

– भावप्रधान होता है।

– कर्ता में तृतीया विभक्ति का प्रयोग किया जाता है।

– क्रिया हमेशा अकर्मक होती है।

– क्रिया हमेशा प्रथम पुरुष एकवचन में ही प्रयोग की जाती है।

यथा –

छात्रेण हस्यते

3 1

विशेष निर्देश–

1. कर्मवाच्य व भाववाच्य की क्रिया बनाने के लिए मूल धातु में य + ते जोड़कर आत्मनेपदी के समान क्रिया बनाई जाती है।

जैसे–

मूल धातु	य + ते	वाच्य
लिख्	य + ते	लिख्यते
गम्	य + ते	गम्यते

2. जिन धातुओं के अंत में 'आ' स्वर होता है तो 'आ' के स्थान पर 'ई' + य + ते जोड़ दिया जाता है।

जैसे–

दा = द् + ई + य + ते = दीयते

3. ए तथा ऐ स्वर को भी 'ई' हो जाता है।

जैसे –गै = ग् + ई + य + ते = गीयते

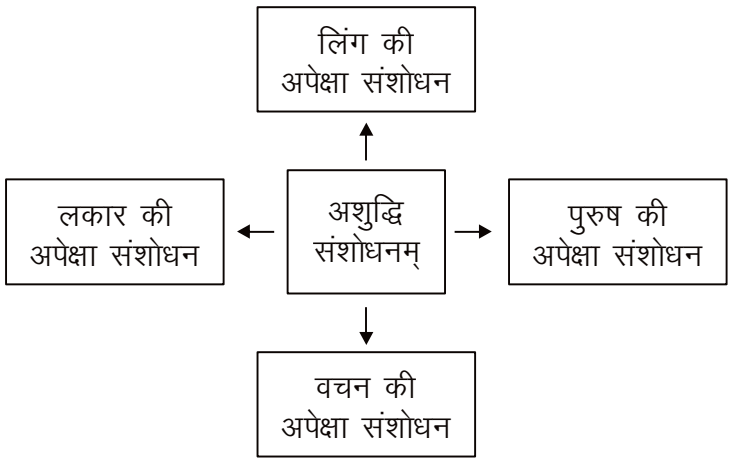
वाच्यों के अनुसार शब्दों के परिवर्तन योग्य रूप

	शब्द रूप	कर्तृवाच्य	कर्मवाच्य / भाववाच्य
1.	तद्	सः / तौ / ते	तेन / ताभ्यां / तैः
2.	अस्मद्	अहं / आवां / वयं	मया / आवाभ्यां / अस्माभिः
3.	एतद्	एषः / एतौ / एते	एतेन / एताभ्यां / एतैः

7. अशुद्धि-संशोधनम्

किसी भी अशुद्ध वाक्य को शुद्ध करना अशुद्धि संशोधन कहलाता है। जैसे – रामः पाठः पठति। यहाँ पाठ शब्द कर्म है इसलिए 'पाठ' में द्वितीया विभक्ति का प्रयोग किया जाएगा। अतः शुद्ध वाक्य होगा – रामः पाठं पठति।

प्रकार:–



1. लिंग की अपेक्षा संशोधन–

(i) पुल्लिंग के स्थान पर स्त्रीलिंग का प्रयोग

- इयं बालक: पठति।

- अयं बालक: पठति।

(ii) स्त्रीलिंग के स्थान पर पुल्लिंग का प्रयोग

- रमा गुणवान् अस्ति।

- रमा गुणवती अस्ति।

(iii) नपुंसकलिंग के स्थान पर पुल्लिंग का प्रयोग

- राम: विनम्रम् अस्ति।

- राम: विनम्र: अस्ति।

2. पुरुष की अपेक्षा संशोधन–

(i) त्वं पुस्तकं पठति। – सः पुस्तकं पठति।

(ii) आवां उच्चैः हसतः। – तौ उच्चैः हसतः।

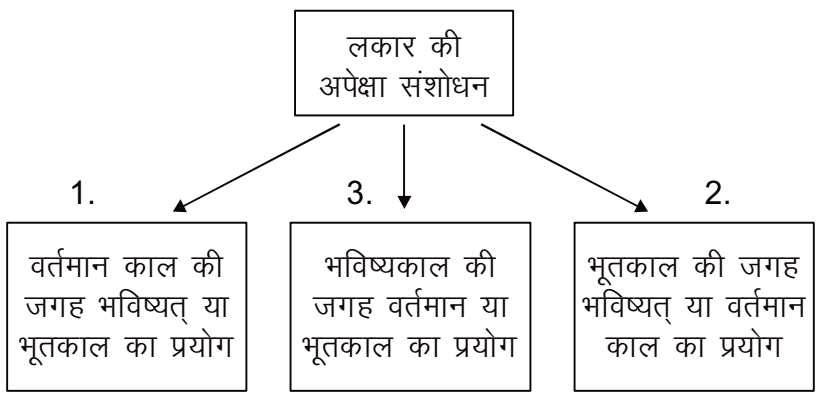
(iii) तानि पुस्तकं सन्ति। – तानि पुस्तकानि सन्ति।

3. कर्ता व क्रियापदों के वचनों में संशोधन

– लेखकः पुस्तकं लिखन्ति।

– लेखकः पुस्तकं लिखति।

4.



यथा

1. सः अद्य अपठत्। – सः अद्य पठति।

2. अहं श्वः गच्छामि। – अहं श्वः गमिष्यामि।

3. त्वं ह्यः हसिष्यसि। – त्वं ह्यः अहसः।

प्रथमः पाठः (कुशलप्रशासनम्)

अनुप्रयुक्तव्याकरणम्

प्रश्नः 1. अधोलिखितानां पदानां समुचितं सन्धिपदं सन्धिविच्छेदं वा कुरूत।

1. प्राञ्जलिम्
2. रामः + दुर्दर्शम्
3. रामस्तम्
4. परि + अपृच्छत्
5. मन्त्रिधुरैरमात्यैः
6. नैषि
7. चिन्तयसि + अर्थनैपुण्यम्
8. महोदयम्
9. एकः + अपि + अमात्यः
10. मतिमान् + शुचिः

प्रश्न 2. रेखांकितपदानां प्रकृति-प्रत्ययसंयोजनं वियोजनं वा प्रदत्तविकल्पेभ्यः चिनुत।

1. प्राञ्जलिं <u>पतितं</u> भुविः।

   (क) पत् + क्त
   (ख) पति + तम्
   (ग) पत् + इतम्

2. कथञ्चिद् <u>अभि + वि + ज्ञा + ल्यप्</u> ।

   (क) अभिज्ञाय
   (ख) अभिविज्ञाल्य
   (ग) अभिविज्ञाय

3. <u>आ + घ्रा + ल्यप्</u> रामस्तम्।

   (क) आघ्राल्यप्
   (ख) आघ्राय
   (ग) आघ्रायप्

4. श्रुतवन्तः जितेन्द्रियाः।

(क) श्रुत + वतुप् (ख) श्रुत + क्त

(ग) श्रुत + तुमुन्

5. कच्चित्ते मन्त्रितः मन्त्रः।

(क) मन्त्र + इतः (ख) मन्त्र् + क्त

(ग) मन्त्र् + शतृ

6. प्राप्येन्महतीं श्रियम्।

(क) महत् + ई (ख) मह + तीं

(ग) महत् + ङीप्

7. भृत्यास्ते तात् युज् + णिच् +क्त ।

(क) योजिताः (ख) युजिताः

(ग) युजणिता

8. धृतिमान् मतिमान् शुचिः।

(क) धृति + मान् (ख) धृति + मतुप्

(ग) धृति + क्तवतु

9. सम्प्राप्तकालं दा + तव्यत्

(क) दातव्यत् (ख) दीतव्यत्

(ग) दातव्यम्

10. कृ + क्त ते तात् मन्त्रिणः।

(क) कृताः (ख) कृत

(ग) कृतम्

3. प्रदत्तविकल्पेभ्यः समुचितं शब्दरूपं चिनुत।

1. ..... जटिलं चीरवसनं भुवि पतितं ददर्श।

(क) रामः (ख) रामम् (ग) रामेण

2. रामः कृशं भ्रातरं ..... पाणिना परिजग्राह।

(क) भरतस्य (ख) भरतम् (ग) भरतेन

3. शूराः श्रुतवन्तः कुलीनाः ..... कृताः।

(क) मन्त्री (ख) मन्त्रिणम् (ग) मन्त्रिणः

4. शास्त्रकोविदैः मन्त्रिधुरैः ..... सुसंवृतः मन्त्रः।

(क) अमात्यैः (ख) अमात्याः (ग) अमात्यस्य

5. अमन्त्रितः मन्त्रः ..... न परिधावति।

(क) राष्ट्रः (ख) राष्ट्रं (ग) राष्ट्रात्

6. ..... मूर्खाणाम् एकं पण्डितम् इच्छसि।

(क) सहस्राय (ख) सहस्रैः (ग) सहस्राणाम्

7. राजानं ..... वा महतीं श्रियं प्रापयेत्।

(क) राजपुत्रं (ख) राजपुत्रेषु (ग) राजपुत्राणाम्

8. अमात्यान् ..... कर्मसु नियोजयसि।

(क) श्रेष्ठस्य (ख) श्रेष्ठेसु (ग) श्रेष्ठेषु

9. धृतिमान् ..... शुचिः दक्षः सेनापतिः कृतः।

(क) मतिवान् (ख) मतिमान् (ग) मतिवन्तः

10. ..... भर्तुः अपि अतिकुप्यन्ति।

(क) भृताः (ख) भृतः (ग) भृतम्

प्रश्न 4. प्रदत्तविकल्पेभ्यः समुचितं धातुरूपं चिनुत।

1. मन्त्रः हि राज्ञां विजयमूलं .....।

(क) भवति (ख) भवतः (ग) भवन्ति

2. त्वम् अपररात्रेषु अर्थनैपुणम् .....।

(क) चिन्तयति (ख) चिन्तयसि (ग) चिन्तयतः

3. अभिमन्त्रितः मन्त्रः राष्ट्रं न .....।

(क) परिधावन्ति (ख) परिधावयामः (ग) परिधावति

4. त्वं क्षिप्रमारभसे कर्म न ..... ।

(क) दीर्घयसि (ख) दीर्घयतः (ग) दीर्घयामि

5. त्वं सहस्राणां मूर्खाणाम् एकं पण्डितम् .....।

(क) इच्छति (ख) इच्छसि (ग) इच्छावः

6. राजानं राजपुत्रं वा महतीं श्रियं .....।

(क) प्रापयामः (ख) प्रापयावः (ग) प्रापयेत्

7. त्वं श्रेष्ठान् अमात्यान् श्रेष्ठेसु कर्मसु .....।

(क) नियोजयसि (ख) नियोजयथः (ग) नियोजयावः

8. भृताः भर्तुः अपि .....।

(क) अतिकुप्यति (ख) अतिकुप्यन्ति (ग) अतिकुप्यथ

9. शुचिः कुलीनः दक्षः च सेनापतिः .....।

(क) कृताः (ख) कृतम् (ग) कृतः

10. त्वं भक्तं वेतनं च सम्प्राप्तकालं .....।

(क) ददासि (ख) ददाति (ग) ददामि

प्रश्न 5. समुचितम् उपपदविभक्तिपदं लिखत

1. कच्चित् ..... सह न मन्त्रयसे। (बुह)

(क) बहुभिः (ख) बहव (ग) बहूनाम्

उत्तराणि

1. सन्धिं सन्धिविच्छेदं वा चिनुत।

1. (क) प्र + आञ्जलिम्

2. (ख) रामो दुर्दशम्

3. (ग) रामः + तम्

4. (क) पर्यपृच्छत्

5. (ख) मन्त्रिधुरैः + अमात्यैः

6. (ग) न + एषि

7. (ग) चिन्तयस्यर्थनैपुण्यम्

8. (क) महा + उदयम्

9. (ख) एकोऽप्यमात्यः

10. (ग) मतिमाञ्छुचिः

2. प्रकृतिप्रत्ययसंयोजनं वियोजनम्

1. (क) पत् + क्त

2. (ग) अभिविज्ञाय

3. (ख) आघ्राय

4. (क) श्रुत् + वतुप्

5. (ख) मन्त्र + क्त

6. (ग) महत् + ङीप्

7. (क) योजिताः

8. (ख) धृति + मतुप्

9. (ग) दातव्यम्

10. (क) कृताः

3. प्रदत्तविकल्पेभ्यः समुचितं शब्दरूपं चिनुत।

1. (क) रामः

2. (ख) भरतम्

3. (ग) मन्त्रिणः

4. (क) अमात्यैः

5. (ख) राष्ट्रम्

6. (ग) सहस्राणाम्

7. (क) राजपुत्रम्

8. (ख) श्रेष्ठेसु

9. (ख) मतिमान्

10. (क) भृताः

4. प्रदत्तविकल्पेभ्यः समुचितं धातुरूपं चिनुत।

1. (क) भवति

2. (ख) चिन्तयसि

3. (ग) परिधावति

4. (क) दीर्घयसि

5. (ख) इच्छसि

6. (ग) प्रापयेत्

7. (क) नियोजयसि

8. (ख) अतिकुप्यन्ति

9. (ग) कृतः

10. (क) ददासि

5. समुचितम् उपपदविभक्तिपदं लिखत।

1. (क) बहुभिः

तृतीयः पाठः (सूक्तिसुधा)

अनुप्रयुक्तव्याकरणम्

प्रश्नः 1. अधोलिखितानां पदानां समुचितं सन्धिपदं सन्धिविच्छेदं वा लिखत।

1. कश्चिद्
2. विद्यागमः
3. यः + तिष्ठति
4. कः + अतिभारः
5. किं दूरं
6. मूर्खः + याति
7. कुसुमस्तबकस्येव
8. सत् + निमित्तम्
9. पुरुषेणेह
10. पुत्रः + अर्थकरी

प्रश्न 2. रेखांकित पदानां प्रकृति-प्रत्ययसंयोजनं वियोजनं वा प्रदत्तविकल्पेभ्यः चिनुत।

1. न <u>वृत्तिः</u> न य बान्धवाः।

   (क) वृत् + क्तिन् (ख) वृत् + ति

   (ग) वृत् + त्तिः

2. आतुरे व्यसने प्र + आप् + क्त।

(क) प्राप्तौ (ख) प्राप्ते

(ग) प्राप्तेन

3. किं दूरं व्यवसायिनाम् ।

(क) व्यवसाय + नाम् (ख) व्यवसायि + नाम्

(ग) व्यवसाय + णिनि

4. धन्ते मरकत + अण् + ङीप् द्युतिम्।

(क) मारकतीम् (ख) मरकतीम्

(ग) मरकतीप्

5. मूर्खो याति प्रवीणताम्।

(क) प्रवीण + ताम् (ख) प्र + वीण + तल्

(ग) प्र + वीणताम्

6. धनानि जीव + क्त चैव।

(क) जीवत: (ख) जीवक्त

(ग) जीवितम्

7. हा + तव्यत् भूतिमिच्छता।

(क) हातव्या: (ख) हातव्यत्

(ग) हातत्वताम्

8. आलस्यं <u>दीर्घसूत्रता</u>।

(क) दीर्घ + सूत्रता (ख) दीर्घसूत्र + तल्

(ग) दीर्घसूत्र + ताम्

9. <u>अर्थकर + ङीप्</u> च विद्या।

(क) अर्थकरीप् (ख) अथकरीणि

(ग) अर्थकरी

10. <u>भूतिम्</u> इच्छता।

(क) भू + क्तिन (ख) भू + तिम्

(ग) भू + ति

3. प्रदत्तविकल्पेभ्यः समुचितं शब्दरूपं चिनुत।

1. यस्मिन् ..... न सम्मानः न वृत्ति न च बान्धवाः

(क) देशे (ख) देशम्

(ग) देशाय

2. राजद्वारे शमशाने च यः तिष्ठति सः .....।

(क) बान्धवान् (ख) बान्धवः

(ग) बन्धुषु

3. कोऽतिभारः .....।

(क) समर्थेषु (ख) समर्थान्

(ग) समर्थानाम्

4. किं दूरं ..... ।

(क) व्यवसायिनाम् (ख) व्यवसायिनम्

(ग) व्यससायिषु

5. को विदेशः .....।

(क) सविद्यायाम् (ख) सविद्यानाम्

(ग) सविद्यानम्

6. कोऽप्रियः .....।

(क) प्रियवादिषु (ख) प्रियवादिने

(ग) प्रियवादिनाम्

7. काञ्चनसंसर्गात् काचः मारकतीं ..... द्यत्ते।

(क) द्युत्तिम् (ख) द्युतिः

(ग) द्युतिनाम्

8. ..... कुसुमुस्तबकस्येव द्वयी वर्त्तिः भवति।

(क) मनस्वी (ख) मनस्विनः

(ग) मनस्विषु

9. ..... जीवितं चैव परार्थे प्राज्ञः उत्सृजेत्।

(क) धनाय (ख) धनात्

(ग) धनानि

10. ..... नियते सति त्यागः वरम्।

(क) विनाशे (ख) विनाशाय

(ग) विनाशात्

प्रश्न 4. समुचितं धातुरूपं प्रदत्तविकल्पेभ्यः चिनुत।

1. यस्मिन् देशे सम्मानः न .....।

(क) स्यात् (ख) स्याताम्

(ग) स्युः

2. यस्मिन् देशे विद्यागमः न ..... ।

(क) भवे (ख) भवेत् (ग) भवेतम्

3. तत्र वासं न .....।

(क) (क) कारयेताम् (ख) कारय (ग) कारयेत्

4. यः ..... सः बान्धवः ।

(क) तिष्ठति (ख) तिष्ठन्ति

(ग) तिष्ठथ

5. समर्थानामतिभारः कः ..... ।

(क) भवन्ति (ख) भवति

(ग) भवसि

6. सत्सन्निधानेन प्रवीणताम् ..... ।

(क) यात (ख) यान्तु (ग) याति

7. मनस्विनः द्वयी वृत्तिः ..... ।

(क) भवति (ख) भवथः (ग) भवामः

8. सर्वेषां मूर्ध्नि वा ..... ।

(क) तिष्ठेताम् (ख) तिष्ठेत् (ग) तिष्ठेयुः

9. पुरुषेण एते षड्दोषाः ..... ।

(क) हातव्यः (ख) हातव्यम्

(ग) हातव्याः

10. जीवलोकस्य षड् सुखानि ..... ।

(क) भवन्ति (ख) भवतः (ग) भवथ

प्रश्न 5. समुचितम् उपपदविभक्तिपदं लिखत।

1. विनाशे ..... सति त्यागः वरम् भवति। (नियत)

उत्तराणि

प्रश्न 1. 1. (क) कः + चित्

2. (ख) विद्या + आगमः

3. (ग) यस्तिष्ठति

4. (क) कोऽतिभारः

5. (ख) किम् + दूरम्

6. (ग) मूर्खो याति

7. (क) कुसुमस्तबकस्य + इव

8. (ख) सन्निमित्तम्

9. (ग) पुरुषेण + इह

10. (क) पुत्रोऽर्थकरी

प्रश्न 2. 1. (क) वृत् + क्तिन्

2. (ख) प्राप्ते

3. (ग) व्यवसाय + णिनि

4. (क) मारकतीम्

5. (ख) प्र + वीण् + तल्

6. (ग) जीवितम्

7. (क) हातव्याः

8. (ख) दीर्घसूत्र + तल्

9. (ग) अर्थकरी

10. (क) भू + क्तिन्

प्रश्न 3. 1. (क) देशे

2. (ख) बान्धवः

3. (ग) समर्थानाम्

4. (क) व्यवसायिनाम्

5. (ख) विद्यानाम्

6. (ग) प्रियवादिनाम्

7. (क) द्युत्तिम्

8. (ख) मनस्विनः

9. (ग) धनानि

10. (क) विनाशे

प्रश्न 4. 1. (क) स्यात्

2. (ख) भवेत्

3. (ग) कारयेत्

4. (क) तिष्ठति

5. (ख) भवति

6. (ग) याति

7. (क) भवति

8. (ख) तिष्ठेत्

9. (ग) हातव्याः

10. (क) भवन्ति

प्रश्न 5. 1. (क) नियते

पञ्चमः पाठः (वीरः सर्वदमनः)

अनुप्रयुक्तव्याकरणम्

प्रश्नः 1. अधोलिखितानां पदानां समुचितं सन्धिपदं सन्धिविच्छेदं वा लिखत।

1. पूर्वावधीरितम्
2. खलु + अयम्
3. अभूमिः + इयम् + अविनयस्य
4. बालेऽस्मिन्
5. इत्यधरम्
6. तम् + अस्य + उपहर
7. अनेन + एव
8. चेष्टितम् + एव + अस्य
9. कुलाङ्कुरेण
10. मातुराख्या

प्रश्न 2. रेखांकितपदानां प्रकृति-प्रत्ययसंयोजनं वियोजनं वा प्रदत्तविकल्पेभ्यः चिनुत।

1. निमित्तं <u>सूचयित्वा</u>

   (क) सूच् + क्त्वा (ख) सूचयि + त्वा

   (ग) सूच + यित्वा

2. पूर्व <u>अव + धृ + णिच् + क्त</u> श्रेयः।

   (क) अवधात (ख) अवधीरितम्

   (ग) अवधाक्त

3. <u>अनु + बन्ध् + शानच्</u> तपस्विनीभ्याम्।

   (क) अनुबन्धानः (ख) अनुबन्धमानः

   (ग) अनुबध्यमानः

4. प्र + क्रीड् + तुमुन् सिंहशिशुम्।

(क) प्रक्रीडितुम् (ख) प्रक्रीडतुमुन्

(ग) प्रक्रीडयितुम्

5. अनपत्यता मां वत्सलयति।

(क) अनपत्य + ता (ख) अनपत्य + तल्

(ग) अनपत + यता

6. खलु भीतः अस्मि।

(क) भी + तः (ख) भी + ता

(ग) भी + क्त

7. वाचामात्रेण वि + रम् + णिच् + तुमुन् ।

(क) विरमयितुम् (ख) विरमणितुम्

(ग) विरमणितुं

8. तापसीं वि + लुक् + ल्यप् हसति।

(क) विलुक्य (ख) विलोक्य

(ग) विलुप्य

9. अयमङ्कात् कृतिनः प्ररुढः।

(क) कृत + नः (ख) कृति + नः

(ग) कृत + इनि

10. बालम् उपलालयन्।

(क) उप + लाल् + शतृ (ख) उप + लाल् + अन्

(ग) उपलाल + अन्

प्रश्न 3. प्रदत्तविकल्पेभ्यः समुचितं शब्दरूपं चिनुत।

1. पूर्वावधीरितं श्रेयः ..... परिवर्तते।

(क) दुःखाय (ख) दुःखेन

(ग) दुःखात्

2. अभूमिः इयम् ..... ।

(क) अविनयम् (ख) अविनयस्य

(ग) अविनयात्

3. ..... ते गणयिष्ये।

(क) दन्तम् (ख) दन्तेषु

(ग) दन्तान्

4. अपत्यनिर्विशेषाणि ..... विप्रकरोषि।

(क) सत्त्वानि (ख) सत्त्वाय

(ग) सत्त्वानाम्

5. बाले ..... औरस इव पुत्रे स्निह्यति।

(क) अस्मात् (ख) अस्मिन्

(ग) अस्य

6. एषा केसरिणी ..... लङ्घयिष्यति।

(क) त्वम् (ख) युवाम्

(ग) त्वाम्

7. एष ..... विरमयितुम् न शक्य।

(क) वाचामात्रेण (ख) वाचामात्राय

(ग) वाचामात्रेषु

8. मदीये ..... मृत्तिकामयूरः तिष्ठति।

(क) उटजम् (ख) उटजे

(ग) उटजः

9. ..... कुलाङ्कुरेण मम गात्रेषु एवं सुखम्।

(क) अस्य (ख) अस्मै

(ग) अनेन

10. मे एष ..... रोचते।

(क) मयूरः (ख) मयूराः

(ग) मयूरम्

प्रश्न 4. प्रदत्तविकल्पेभ्यः समुचितं धातुरूपं चिनुत।

1. बाहो ! वृथा किं ..... ।

(क) स्पन्दसे (ख) स्पन्दे

(ग) स्पन्दथे

2. पूर्वावधीरितं श्रेयः दुःखाय ..... ।

(क) परिवर्ततः (ख) परिवर्तते

(ग) परिवर्तन्ते

3. जृम्भस्व सिंह ! दन्तान् ते ..... ।

(क) गणयिष्यामः (ख) गणयिष्यथः

(ग) गणयिष्ये

4. एषा खलु केसरिणी त्वां ..... ।

(क) लङ्घयिष्यति (ख) लङ्घयिष्यामः

(ग) लङ्घयिष्यावः

5. अहं ते अपरं क्रीडनकं ..... ।

(क) ददाति (ख) दास्यामि

(ग) दास्यति

6. बालः हस्तं ..... ।

(क) प्रसारयसि (ख) प्रसारयामः

(ग) प्रसारयति

7. अहमनेनैव ..... ।

(क) क्रीडिष्यामि (ख) क्रीडिष्यामः

(ग) क्रीडिष्यथः

8. मे एषः मयूरः ..... ।

(क) रोचसे (ख) रोचते

(ग) रोचे

9. आकारसदृशं चेष्टितमेवास्य ..... ।

(क) कथयामि (ख) कथयसि

(ग) कथयति

10. अयं मां न ..... ।

(क) गणयति (ख) गणयतः

(ग) गणयन्ति

प्रश्न 5. समुचितम् उपपदविभक्तिपदं लिखत।

1. बालेऽस्मिन् औरस इव ..... स्निह्यति।

(क) पुत्रे (ख) पुत्राय (पुत्र)

(ग) पुत्रात्

उत्तराणि

1. 1. (क) पूर्व + अवधीरितम्

2. (ख) खल्वयम्

3. (ग) अभूमिरियमविनयस्य

4. (क) बाले + अस्मिन्

5. (ख) इति + अधरम्

6. (ग) तमस्योपहर

7. (क) अनेनैव

8. (ख) चेष्टितमेवास्य

9. (ग) कुल + अङ्कुरेण

10. (क) मातुः + आख्या

2. 1. (क) सूच् + क्त्वा

2. (ख) अवधीरितम्

3. (ग) अनुबध्यमानः

4. (क) प्रक्रीडितुम्

5. (ख) अनपत्य + तल्

6. (ग) भी + क्त

7. (क) विरमयितुम्

8. (ख) विलोक्य

9. (ग) कृत + इनि

10. (क) उप + लाल् + शतृ

3. 1. (क) दुःखाय

2. (ख) अविनयस्य

3. (ग) दन्तान्

4. (क) सत्त्वानि

5. (ख) अस्मिन्

6. (ग) त्वाम्

7. (क) वाचामात्रेण

8. (ख) उटजे

9. (ग) अनेन

10. (क) मयूरः

4. 1. (क) स्पन्दसे

2. (ख) परिवर्तते

3. (ग) गणयिष्ये

4. (क) लङ्घयिष्यति

5. (ख) दास्यामि

6. (ग) प्रसारयति

7. (क) क्रीडिष्यामि

8. (ख) रोचते

9. (ग) कथयति

10. (क) गणयति

5. 1. (क) पुत्रे

षष्ठः पाठः (शुकशावकोदन्तः)

अनुप्रयुक्तव्याकरणम्

प्रश्नः 1. अधोलिखितानां पदानां समुचितं सन्धिपदं सन्धिविच्छेदं वा लिखत।

1. मध्यदेशालङ्कारभूता
2. तस्य + एव + एकस्मिन्
3. सूनुरभवम्
4. अचिराच्च
5. पितुः + उत्सङ्गात् + ईषत् + इव
6. तरोः + अधः + छायायाम्
7. सुचिरम् + आरुरुक्षुः + तम्
8. क्षितावपातयत्
9. यावच्चासौ
10. लुठन् + इतः + ततः

प्रश्न 2. रेखांकितपदानां प्रकृति-प्रत्ययसंयोजनं वियोजनं वा प्रदत्तविकल्पेभ्यः चिनुत।

1. एकस्मिन् कोटरे <u>निवसतः</u>।

   (क) नि + वस् + शतृ (ख) नि + वस् + क्त

   (ग) नि + वस् + शाचच्

2. ममैव <u>जायमानस्य</u> ।

   (क) जन् + मतुप् (ख) जन् + शानच्

   (ग) जन् + श्तुप्

3. फलशकलानि <u>सम् + आ + हृ + ल्यप्</u>।

   (क) समाहृल्य (ख) समाहृल्यप्

   (ग) समाहृत्य

4. मद् उपभुक्त शेषमेवाकरोदशनम्।

(क) उप + भुज् + क्त (ख) उप + भुज + क्त

(ग) उप + भुज + त

5. पितुरुत्सङ्गादीषदिव निस् + क्रम् + ल्यप् ।

(क) निसक्रम्य (ख) निष्क्रम्य

(ग) निश्क्रम्य

6. परिजन-उप + नी + क्त पल्लवासने।

(क) उपनीक्त (ख) उपनयत

(ग) उपनीत

7. आपीत सलिलः।

(क) आ + पी + क्त (ख) आपी + त

(ग) आपी + क्त

8. अपगतासूंश्च कृत्वा क्षितावपातयत्।

(क) कृ + त्वा (ख) कृ + क्त्वा

(ग) कृ + कृत्वा

9. तातस्तु तद् अवलोक्य।

(क) अव + लुक् + य (ख) अव + लुक + यत्

(ग) अव + लोक् + ल्यप्

10. केवलम् अभि + भू + शानच् ।

(क) अभिभूमानः (ख) अभिभवमानः

(ग) अभिभूयमानः

प्रश्न 3. प्रदत्तविकल्पेभ्यः समुचितं शब्दरूपं चिनुत।

1. ..... मेखलेव विन्ध्या नाम अटवी अस्ति।

(क) भुवः (ख) भुवम्

(ग) भूवि

2. तस्य ..... तीरे महाजीर्णः शाल्मलीवृक्षः ।

(क) पश्चिमम् (ख) पश्चिमे

(ग) पश्चिमात्

3. तस्यैव एकस्मिन् ..... निवसतः।

(क) कोटरम् (ख) कोटरात्

(ग) कोटरे

4. ..... समाहृत्य मह्यमदात्।

(क) फलशकलानि (ख) फलशकलाय

(ग) फलशकलात्

5. ..... वने मृगयाकोलाहलध्वनिरुदचरत्।

(क) तेन (ख) तस्मिन्

(ग) तस्मात्

6. ..... वयसि वर्तमान शबरसेनापतिमपश्यत्।

(क) प्रथमम् (ख) प्रथमाय

(ग) प्रथमे

7. मे ..... आसीत्।

(क) मनसि (ख) मनसः

(ग) मनांसि

8. ..... पल्लवासने समुपाविश्त्।

(क) शबरसेनापतिम् (ख) शबरसेनापतिः

(ग) शबरसेनापत्तयः

9. तस्मिन्नेव ..... मुहूर्तमिव व्यलम्बत।

(क) तरुतलम् (ख) तरुतलात्

(ग) तरुतले

10. ..... इव कोटरेभ्यः शुकशावकानग्रहीत्।

(क) फलानि (ख) फलात्

(ग) फलस्य

प्रश्न 4. प्रदत्तविकल्पेभ्यः समुचितं धातुरूपं चिनुत।

1. भुवो मेखलेव विन्ध्यानाम अटवी .....।

(क) अस्ति (ख) सन्ति

(ग) असि

2. तस्य पश्चिमे तीरे महाजीर्णः शल्मलीवृक्षः .....।

(क) आस्ताम् (ख) आसीत्

(ग) आसन्

3. पितुः अहमेव सुनुः ..... ।

(क) अभवत् (ख) अभवन्

(ग) अभवम्

4. मे जननी प्रसववेदनया लोकान्तरम् ..... ।

(क) अगमत् (ख) अगमः

(ग) अगमावः

5. अहं भयविह्वलः पितुः पक्षपुटान्तरम् .....।

(क) अविशत् (ख) अविशम्

(ग) अविशन्

6. प्रथमे वयसि वर्तमानं शबरसेनापतिम् अहम् ..... ।

(क) अपश्यन् (ख) अपश्यतम्

(ग) अपश्यम्

7. ते तदेवोत्खातमूलमशेषतः ..... ।

(क) कुर्वन्ति (ख) करोति

(ग) करोषि

8. शबरसेनापतिः परिजनोपनीतपल्लवासने ..... ।

(क) उपविश्ताम् (ख) उपाविशत्

(ग) उपाविशन्

9. शुकशावकान् अपगतासून् कृत्वा क्षितौ ..... ।

(क) अपातयताम् (ख) अपातय

(ग) अपातयत्

10. तातः मद्रक्षणाकुलः ..... ।

(क) अभवत् (ख) अभवम्

(ग) अभवः

प्रश्न 5. समुचितम् उपपदविभक्तिपदं लिखत।

1. तस्मिन् मृगयाकलकले ..... निष्क्रम्य दिदृक्षु। (पितुरुत्संग)

2. शुष्कपत्रस्य ..... उपरि पतितमपश्यम्। (राशि)

3. तावदहं ..... उपरतम् उत्सृज्य मूलदेशमविशम्। (पितृ)

4. धिक् ..... करूणमतिनिष्ठुरमकृतज्ञम्। (अस्मद्)

5. ..... सह तेनैव पथा उपागमत्। (मुनिकुमार)

उत्तराणि

1. 1. (क) मध्यदेश + अलङ्कारभूता

2. (ख) तस्यैवैकस्मिन्

3. (ग) सूनुः + अभवम् 4. (क) अचिरात् + च

5. (ख) पितुरुत्सङ्गादीषदिव 6. (ग) तरोरधश्छायायाम्

7. (क) सुचिरमारुरुक्षुस्तम् 8. (ख) क्षितौ + अपातयत्

9. (ग) यावत् + च + असौ10. (क) लुठन्नितस्ततो

2. 1. (क) नि + वस् + शतृ

2. (ख) जन् + शानच्

3. (ग) समाहृत्य

4. (क) उप + भुज् + क्त

5. (ख) निष्क्रम्य

6. (ग) उपनीत

7. (क) आ + पी + क्त

8. (ख) कृ + क्त्वा

9. (ग) अव + लोक् + ल्यप्

10. (क) अभिभूयमानः

3. 1. (क) भुवः 2. (ख) पश्चिमे

3. (ग) कोटरे 4. (क) फलशकलानि

5. (ख) तस्मिन् 6. (ग) प्रथमे

7. (क) मनसि 8. (ख) शबरसेनापतिः

9. (ग) तरुतले 10. (क) फलानि

4. 1. (क) अस्ति 2. (ख) आसीत्

3. (ग) अभवम् 4. (क) अगमत्

5. (ख) अविशम् 6. (ग) अपश्यम्

7. (क) कुर्वन्ति 8. (ख) उपाविशत्

9. (ग) अपातयत् 10. (क) अभवत्

5. 1. (क) पितुरुत्संगाात् 2. (ख) राशेः

3. (ग) पितरम् 4. (क) माम्

5. (ख) मुनिकुमारकैः

अष्टमः पाठः (सङ्गीतानुरागी सुबण्णः)

अनुप्रयुक्तव्याकरणम्

प्रश्नः 1. अधोलिखितानां पदानां समुचितं सन्धिपदं सन्धिविच्छेदं वा लिखत।

1. पुनरधिकम्
2. बृहत् + तिलक + अलङ्कारः
3. प्रत्युवाच
4. गायामि + इति
5. शृणुमस्तावत्
6. मेधावी + असि
7. सम्यक् + गातुम्
8. इतः + अपि + अधिकम्
9. भविष्यति + इति + अशंसत्
10. परितुष्टो राजा

प्रश्न 2. रेखांकितपदानां प्रकृति-प्रत्ययसंयोजनं वियोजनं वा प्रदत्तविकल्पेभ्यः चिनुत।

1. पुराणप्रवचनम् आ + रभ् + शानच् ।

   (क) आरभमाणः (ख) रभमाणः

   (ग) आरभशान

2. राजा तत्र सम् + आ + गम् + क्त ।

   (क) समागमः (ख) समागतः

   (ग) समागमत

3. तत् श्रुत्वा तत्रत्याः सर्वे पर्यनन्दन्।

   (क) श्रु + त्वा (ख) श्रुत् + वा

   (ग) श्रु + क्त्वा

4. तं बालकं द्वित्रिवारम् अभिवीक्ष्य ।

(क) अभि + वि + ईक्ष् + ल्यप्(ख) अभि + ईक्ष् + ल्यप्

(ग) अभि + वी + क्ष् + ल्यप्

5. राज शास्त्रिणम् उत् + दिश् + ल्यप् ।

(क) उतितश्य (ख) उद्दिश्य

(ग) उद्दिशल्य

6. एवं राजा परि + तुष् + क्त ।

(क) परितुषक्त (ख) परितुषटा

(ग) परितुष्टः

7. सुष्ठु सङ्गीतं शिक्षं + क्त्वा ।

(क) शिक्षित्वा (ख) शिक्षिक्त्वा

(ग) शिक्षयित्वान्

8. सम्यक् गातुं भवान् अभ्यस्यतु।

(क) गा + तुम् (ख) गै + तुमुन्

(ग) गा + तुमुन्

9. सताम्बूलमुत्तरीयवस्त्रं दत्वा ।

(क) दा + ल्यप् (ख) दी + त्वा

(ग) दा + क्त्वा

10. पुराणप्रवचनं कौतुहलेन शृण्वन्।

(क) श्रु + शतृ (ख) श्रु + शानच्

(ग) श्रु + अन्

प्रश्न 3. प्रदत्तविकल्पेभ्यः समुचितं शब्दरूपं चिनुत।

1. सुब्बण्णस्य ..... सहजाभिलाषः आसीत्।

(क) सङ्गीते (ख) सङ्गीताय

(ग) सङ्गीतम्

2. तत् श्रुत्वा तत्रत्याः ..... पर्यनन्दन्।

(क) सर्वस्मिन् (ख) सर्वे

(ग) सर्वस्मात्

3. पुराणिकशास्त्री ..... प्रवचनमारभमाणम्।

(क) पुराणस्यां (ख) पुनरातनस्य

(ग) पुराणम्

4. अथ किञ्चित् कालानन्तरं तत्र ..... समागत।

(क) राजा (ख) राजानम्

(ग) राज्ञः

5. महाराजस्य ..... सुन्दरम् आसीत्।

(क) मुखात् (ख) मुखम्

(ग) मुखेन

6. राजापि तं ..... द्वित्रिवारम् अपश्यत् ।

(क) बालके (ख) बलाकयोः

(ग) बालकम्

7. अवसिते ..... राजा शास्त्रिणमुद्दिश्य अपृच्छत।

(क) पुराणे (ख) पुराणाभ्याम्

(ग) पुराणस्य

8. स बाल अवदत् ..... पुराणप्रवचनं न करोमि।

(क) त्वम् (ख) अहम्

(ग) ते

9. हे वत्स ..... मेधावी असि।

(क) वयम् (ख) अहम्

(ग) त्वम्

10. ..... चतुरः अस्ति, शिक्षणं सम्यक् क्रियताम्

(क) कुमारः (ख) कुमारम्

(ग) कुमाराय

प्रश्न 4. प्रदत्तविकल्पेभ्यः समुचितं धातुरूपं चिनुत।

1. सङ्गीते सुब्बण्णस्य सहजाभिलाषः ..... ।

(क) आसीत् (ख) आस्ताम्

(ग) आसन्

2. किञ्चित्कालान्तरं राजा ..... ।

(क) समागता (ख) समागतः

(ग) समागतम्

3. एषः बालः भवत्कुमारः इति राजा ..... ।

(क) अपृच्छम् (ख) अपृच्छाव

(ग) अपृच्छत्

4. किं भवान् अपि पितृवत् पुराणप्रवचनं ..... ।

(क) करिष्यति (ख) करिष्यथ

(ग) करिष्यामः

5. अहं पुराणप्रवचनं न ..... ।

(क) करोति (ख) करोमि

(ग) कुर्वन्ति

6. महाराजस्य बहु संतोषः ..... ।

(क) अभवताम् (ख) अभवन्

(ग) अभवत्

7. बालाय पारितोषिकत्वेन राजा ..... ।

(क) परितुष्टः (ख) परितुष्टाः

(ग) परितुष्टम्

8. एषः कुमारः चतुरः ..... ।

(क) अस्मि (ख) अस्ति

(ग) आसम्

9. भवान् अस्य शिक्षणं सम्यक् ..... ।

(क) क्रियेताम् (ख) क्रियन्ताम्

(ग) क्रियताम्

10. हे वत्स ! त्वं मेधावी ..... ।

(क) असि (ख) अस्ति

(ग) अस्मि

प्रश्न 5. समुचितम् उपपदविभक्तिपदं लिखत।

1. पुराणिकशास्त्री राजभवनं ..... साकम् अगमत्। (पुत्र)

2. ..... पार्श्वे सुब्बण्णः उपविष्टः आसीत्। (पितृ)

उत्तराणि

उ॰1. 1. (क) पुनः + अधिकम् 2. (ख) बृहत्तिलकालङ्कारः

3. (ग) प्रति + उवाच 4. (क) गायामीति

5. (ख) शृणुमः + तावत् 6. (ग) मेधाव्यसि

7. (क) सम्यग्गातुम् 8. (ख) इतोऽप्यधिकम्

9. (ग) भविष्यतीत्यशंसत् 10. (क) परितुष्टः + राजा

ॐ 2. 1. (क) आरभमाणः 2. (ख) समागतः

3. (ग) श्रु + क्त्वा 4. (क) अभि + वि + ईक्ष् + ल्यप्

5. (ख) उद्दिश्य 6. (ग) परितुष्टः

7. (क) शिक्षित्त्वा 8. (ख) गै + तुमुन्

9. (ग) दा + क्त्वा 10. (क) श्रु + शतृ

ॐ 3. 1. (क) सङ्गीते 2. (ख) सर्वे

3. (ग) पुराणम् 4. (क) राजा

5. (ख) मुखम् 6. (ग) बालकम्

7. (क) पुराणे 8. (ख) अहम्

9. (ग) त्वम् 10. (क) कुमारः

ॐ 4. 1. (क) आसीत् 2. (ख) समागतः

3. (ग) अपृच्छत् 4. (क) करिष्यति

5. (ख) करोमि 6. (ग) अभवत्

7. (क) परितुष्टः 8. (ख) अस्ति

9. (ग) क्रियताम् 10. (क) असि

ॐ 5. 1. (क) पुत्रेण 2. (ख) पितुः

नवमः पाठः (वस्त्रविक्रयः)

अनुप्रयुक्तव्याकरणम्

प्रश्नः 1. अधोलिखितानां पदानां समुचितं सन्धिपदं सन्धिविच्छेदं वा लिखत।

1. कश्चित्तन्तुवायः
2. विंशति + अधिकम्
3. राजमुद्राङ्किकतम्
4. षड्भिः + मासैः
5. पञ्चाशन्मुद्राः
6. त्रिचतुरान् + तन्तुवायान्
7. बह्वीः + मुद्रा
8. समुन्नतिर्जनकथामात्रे
9. पटान्निर्मामः
10. मिथ्या + एतत्

प्रश्न 2. रेखांकितपदानां प्रकृति-प्रत्ययसंयोजनं वियोजनं वा प्रदत्तविकल्पेभ्यः चिनुत।

1. पटं <u>विक्रेतुं</u> क्रेतुं च तन्तुवायः प्रविशति।

   (क) वि + क्री + तुमुन् (ख) वि + क्री + तुम्

   (ग) वि + क्री + तव्यत्

2. प्रमाणपत्रं <u>दर्शयित्वा</u> भर्त्सयति।

   (क) दर्श + क्त्वा (ख) दृश् + णिच् + क्त्वा

   (ग) दर्श + णिच + ल्यप्

3. अयं पटः <u>परि + श्रम् + ल्यप्</u> निष्पादितः ।

   (क) परिश्रमवान् (ख) परिश्रमः

   (ग) परिश्रम्य

4. पटं निर + मा + ल्यप् मत्समीपम् आनय।

(क) निर्माय (ख) निमीय

(ग) निलीय

5. उभौ तत् दत्तं मूल्यं गृहणीतः ।

(क) दा + तम् (ख) दा + क्त

(ग) दी + तम्

6. पञ्चषैः पटलैः परिवेष्टितम् अपि अपटमेव।

(क) परि + वश् + क्त (ख) परि + वेश + क्त

(ग) परि + विश् + क्त

7. हन् + क्त अस्मद्देशीयं वाणिज्यम्।

(क) हतम् (ख) हुतम्

(ग) हीनम्

8. तेषां वसनं नि + बध् ल्यप् निष्कासयति ।

(क) निबधनाय (ख) निबध्य

(ग) निबध्यमान

9. एते सम + आ + गम् + क्त ।

(क) समागमः (ख) समागक्त

(ग) समागता

10. सर्वान् कशया ताडयितुं भर्त्सयति।

(क) ताड् + तुमुन् (ख) ताडयि + तुम्

(ग) ताडयि + तुमुन्

प्रश्न 3. प्रदत्तविकल्पेभ्यः समुचितं शब्दरूपं चिनुत।

1. ततः प्रविशति कश्चित् ..... ।

(क) तन्तुवायः (ख) तन्तुवायम्

(ग) तन्तुवायात्

2. तन्तुवायः । अस्य ..... मूल्यं किम्।

(क) पटयोः (ख) पटस्य

(ग) पटेषु

3. पश्य राजमुद्राङ्कितं ..... ।

(क) प्रमाणपत्रः (ख) प्रमाणपत्रेण

(ग) प्रमाणपत्रम्

4. कथमेतेन मम ..... भरणपोषणे भविष्यतः।

(क) कुटुम्बस्य (ख) कुटुम्बात्

(ग) कुटुम्बेन

5. ..... युष्मत्कुटुम्बरक्षायै प्रतिज्ञा न कृता।

(क) अहम् (ख) मया

(ग) भवान्

6. नाहं ..... अन्यायं वा जानामि।

(क) न्यायाय (ख) न्यायात्

(ग) न्यायम्

7. एतत् पटयोः सौन्दर्यम् ..... ।

(क) अनिर्वचनीयम् (ख) अनिर्वचनीयः

(ग) अनिर्वचनीयेन

8. एतस्य पञ्चषैः ..... परिवेष्टितमप्यपटमेव।

(क) पटलः (ख) पटलैः

(ग) पटलम्

9. सत्वरं त्रिचतुरान् ..... समानय।

(क) तन्तुवायः (ख) तन्तुवायम्

(ग) तन्तुवायान्

10. अस्य ..... समुन्नतिः जनकथामात्रे समाधीयताम्।

(क) देशस्य (ख) देशात्

(ग) देशाय

प्रश्न 4. प्रदत्तविकल्पेभ्यः समुचितं धातुरूपं चिनुत।

1. ततः तन्तुवायः श्रेष्ठिनौ च ..... ।

(क) प्रविशन्ति (ख) प्रविशति

(ग) प्रविशामि

2. किमहमनेन पटेन ..... ।

(क) करोति (ख) करोमि

(ग) करोषि

3. इमं पटं मह्यं ..... ।

(क) ददासि (ख) ददथः

(ग) देहि

4. गौराङ्गः पञ्चाशन्मुद्रा ..... ।

(क) ददाति (ख) ददासि

(ग) ददमः

5. कथमेतेन मम कुटुम्बस्य भरणपोषणे ..... ।

(क) भविष्यति (ख) भविष्यतः

(ग) भविष्यामि

6. रात्रिन्दिवं परिश्रम्य अयं पटः ..... ।

(क) निष्पादिता (ख) निष्पादितम्

(ग) निष्पादितः

7. अहं किमपि न ..... ।

(क) जानामि (ख) जानासि

(ग) जानन्ति

8. अपरञ्च पटं निर्माय मत्समीपे एव ..... ।

(क) आनयतु (ख) आनय

(ग) आनयामः

9. अहं क्रेतुं न ..... ।

(क) शक्नोति (ख) शक्नोसि

(ग) शक्नोमि

10. अस्य समीपे राज्ञः प्रमाणपत्रम् अयमेव ..... ।

(क) क्रेष्यति (ख) क्रेष्यतः

(ग) क्रेष्यन्ति

प्रश्न 5. समुचितम् उपपविभक्तिपदं लिखत।

1. इमं पटं ..... देहि। (अस्मद्)

(क) मह्यम् (ख) माम्

(ग) मया

2. ..... समीपे राज्ञः प्रमाणपत्रम् अस्ति। (अदस्)

(क) अस्मात् (ख) अस्य

(ग) अनेन

3. यूयं निर्मितान् पटान् ..... दत्त। (अस्मद्)

(क) मयि (ख) मया

(ग) मह्यम्

उत्तराणि

उ॰ 1. 1. (क) कः + चित् + तन्तुवायः

2. (ख) विंशत्यधिकम् 3. (ग) राजमुद्रा + अङ्कितम्

4. (क) षड्भिर्मासैः 5. (ख) पञ्चाशत् + मुद्राः

6. (ग) त्रिचतुरांस्तन्तुवायान् 7. (क) बह्वीर्मुद्रा

8. (ख)सम् + उन्नतिः + जनकथामात्रे

9. (ग) पटान् + निर्मामः 10. (क) मिथ्यैतत्

उ॰ 2. 1. (क) वि + क्री + तुमुन् 2. (ख) दृश् + णिच् + क्त्वा

3. (ग) परिश्रम्य 4. (क) निर्माय

5. (ख) दा + क्त 6. (ग) परि + विश् + क्त

7. (क) हतम् 8. (ख) निबध्य

9. (ग) समागता 10. (क) ताड् + तुमुन्

उ॰ 3. 1. (क) तन्तुवायः 2. (ख) पटस्य

3. (ग) प्रमाणपत्रम् 4. (क) कुटुम्बस्य

5. (ख) मया 6. (ग) न्यायम्

7. (क) अनिर्वचनीयम् 8. (ख) पटलैः

9. (ग) तन्तुवायान् 10. (क) देशस्य

ॐ **4.** 1. (क) प्रविशन्ति 2. (ख) करोमि

3. (ग) देहि 4. (क) ददाति

5. (ख) भविष्यतः 6. (ग) निष्पादितः

7. (क) जानामि 8. (ख) आनय

9. (ग) शक्नोमि 10. (क) क्रेष्यति

ॐ **5.** 1. (क) मह्यम् 2. (ख) अस्य

3. (ग) मह्यम्

दशमः पाठः (यद्भूतहितं तत्सत्यम्)

अनुप्रयुक्तव्याकरणम्

प्रश्नः 1. अधोलिखितानां पदानां समुचितं सन्धिपदं सन्धिविच्छेदं वा लिखत।

1. ग्रामोपान्ते
2. पङ्क + उद्धारः
3. बहिरागत्य
4. अस्मिन् + अवसरे
5. यथेच्छम्
6. एकः + महान्
7. मत्स्य + अन्वेषणम्
8. बन्धच्छेदम्
9. प्रातः +आगत्य
10. जलेऽस्मिन्

प्रश्न 2. रेखांकितपदानां प्रकृति-प्रत्ययसंयोजनं वियोजनं वा प्रदत्तविकल्पेभ्यः चिनुत।

1. तस्या एव जलम् आनीय पिबन्ति।

   (क) आ + नी + य (ख) आ + नीय

   (ग) आ + नी + ल्यप्

2. इमे जनाः बुध् + णिच् + तव्यत्।

   (क) बुधयितव्यः (ख) बोधयितव्याः

   (ग) बुधयितव्या

3. पुष्करिणी + तसिल् पङ्काद्धारो न भवति।

   (क) पुष्करिणीतः (ख) पुष्करिणीतसिल्

   (ग) पुष्करिणीतसि

4. प्रदूषितं जलं पीत्वा रुग्णा भवन्ति।

(क) प्र + दुष् + क्त (ख) प्र + दूष् + त

(ग) प्र + दूष + क्तवतु

5. कथं च इमे वृ + णिच् + अनीयर्।

(क) वारणीयर् (ख) वरणीयर्

(ग) वारणीया:

6. सद्य अस्मान् प्रतारितवान् ।

(क) प्र + णिच् + तुमुन् (ख) प्र + तृ + णिच् + तुमुन्

(ग) प्र + तृ + क्तवतु

7. करं धृ + क्त्वा आश्रमम् आनीतवान्।

(क) धृक्त्वा (ख) धृष्टवा

(ग) धृत्वा

8. ग्राम्यजना: अवश्यं शिक्ष् + णिच् + तव्यत्।

(क) शिक्षयितव्या: (ख) शिक्ष्तव्यत्

(ग) शिक्षयितव्यत्

9. पुष्करिणीं दृष्ट्वा किमपि कथय।

(क) दृश + ट्वा (ख) दृश् + क्त्वा

(ग) दृश + तुमुन्

10. तत् क्षणं कृष्णः उक्तवान्।

(क) उक्त + वान् (ख) उक्त + क्तवतु

(ग) वच् + क्तवतु

प्रश्न 3. प्रदत्तविकल्पेभ्यः समुचितं शब्दरूपं चिनुत।

1. ग्रामोपान्ते पद्मिनी ..... एका पुष्करिणी आसीत्।

(क) नाम्नी (ख) नाम्ना

(ग) नाम्ने

2. तत्र ग्रामस्य ..... स्नानं कुर्वन्ति।

(क) जनः (ख) जनाः

(ग) जनम्

3. पुष्करिणीं परितः नाना ..... सन्ति।

(क) वृक्षः (ख) वृक्षैः

(ग) वृक्षाः

4. मुनिः चिन्तामग्नः केन ..... इमे जनाः बोधायितव्या।

(क) प्रकारेण (ख) प्रकारस्य

(ग) प्रकाराणाम्

5. प्रतिदिनं जलं ..... भवति।

(क) प्रदूषितः (ख) प्रदूषिता

(ग) प्रदूषितम्

6. बालकः ..... कम्पते क्रन्दति च ।

(क) भयम् (ख) भयाय

(ग) भयेन

7. अयमेव समुचितः ..... ।

(क) समयः (ख) समयेन

(ग) समयात्

8. अस्मिन् ..... ग्राम्यजनाः अवश्यं शिक्षयितव्याः।

(क) अवसराय (ख) अवसरे

(ग) अवसराभ्याम्

9. इमां ..... दृष्ट्वा किमपि कथय।

(क) पुष्करिणी (ख) पुष्करिणीम्

(ग) पुष्करिणे

10. बालकः ..... प्रसन्नः सञ्जातः।

(क) कृष्णः (ख) कृष्णस्य

(ग) कृष्णम्

प्रश्न 4. प्रदत्तविकल्पेभ्यः समुचितं धातुरूपं चिनुत।

1. पद्मिनी नाम्नी एका पुष्करिणी ..... ।

(क) आसीत् (ख) आसताम्

(ग) आसन्

2. तत्र ग्रामस्य जनाः वसनं ..... ।

(क) क्षालयतः (ख) क्षालयन्ति

(ग) क्षालयसि

3. जनाः तस्या एव जलमानीय ..... ।

(क) पिबति (ख) पिबसि,

(ग) पिबन्ति

4. पुष्करिणीं परितः नाना वृक्षाः .....।

(क) सन्ति (ख) अस्ति

(ग) अस्मि

5. तत्र एकः मुनिः ..... ।

(क) निवसतः (ख) निवसति

(ग) निवससि

6. सः मुनिः जनान् वारं वारम् ..... ।

(क) उपदिशतः (ख) उपदिशन्ति

(ग) उपदिशति

7. केचन जनाः एकं बालकं ..... ।

(क) ताडयन्ति (ख) ताडयसि

(ग) ताडयथः

8. बालकं भयेन कम्पते ..... च ।

(क) क्रन्दतः (ख) क्रन्दति

(ग) क्रन्दन्ति

9. एषः सदैव मिथ्याभाषणं ..... ।

(क) करोमि (ख) कुर्मः

(ग) करोति

10. मुनिः आश्रमं प्रति बालकम् .....।

(क) आनीतवान् (ख) आनीतवन्तः

(ग) आनीतम्

प्रश्न 5. समुचितम् उपपदविभक्तिपदं लिखत।

1. ग्रामोपान्ते पद्मिनी ..... पुष्करिणी आसीत्। (नाम)

2. ..... परितः नाना वृक्षाः सन्ति। (पुष्करिणी)

उत्तराणि

उ॰ 1. 1. (क) ग्राम + उपान्ते 2. (ख) पङ्कोद्धारः

3. (ग) बहिः + आगत्य 4. (क) अस्मिन्नवसरे

5. (ख) यथा + इच्छम् 6. (ग) एको महान्

7. (क) मत्स्यान्वेषणम् 8. (ख) बन्ध + छेदम्

9. (ग) प्रातरागत्य

10. (क) जले + अस्मिन्

ॐ **2.** 1. (क) आ + नी + ल्यप् 2. (ख) बोधयितव्याः

3. (ग) पुष्करिणीतः 4. (क) प्र + दुष् + क्त

5. (ख) वारणीयाः 6. (ग) प्र + तृ + णिच् + तुमुन्

7. (क) धृत्वा 8. (ख) शिक्षयितव्याः

9. (ग) दृश् + क्त्वा 10. (क) वच् + क्तवतु

ॐ **3.** 1. (क) नाम्नी

2. (ख) जनाः

3. (ग) वृक्षाः

4. (क) प्रकारेण

5. (ख) प्रदूषितम्

6. (ग) भयेन

7. (क) समयः

8. (ख) अवसरे

9. (ग) पुष्करिणीम्

10. (क) कृष्णः

ॐ **4.** 1. (क) आसीत्

2. (ख) क्षालयन्ति

3. (ग) पिबन्ति

4. (क) सन्ति

5. (ख) निवसति

6. (ग) उपदिशति

7. (क) ताडयन्ति

8. (ख) क्रन्दति

9. (ग) करोति

10. (क) आनीतवान्

उ० 5. 1. (क) नाम्नी

2. (ख) पुष्करिणीम्

एकादशः पाठः (स मे प्रियः)

अनुप्रयुक्तव्याकरणम्

प्रश्नः 1. अधोलिखितानां पदानां समुचितं सन्धिपदं सन्धिविच्छेदं वा लिखत।

1. क्लेशः + अधिकतरः + तेषाम्
2. अनन्येनैव
3. श्रेयो हि
4. ज्ञानात् + ध्यानम्
5. अभ्यासे + अपि + असमर्थः + असि
6. मानापमानयोः
7. मत् + योगम् + आश्रितः
8. शुचिर्दक्षः
9. मयि + एव
10. स्थिरमतिः + भक्तिमान्

प्रश्न 2. रेखांकितपदानां प्रकृति-प्रत्ययसंयोजनं वियोजनं वा प्रदत्तविकल्पेभ्यः चिनुत।

1. सर्वाणि कर्माणि मयि <u>संन्यस्य</u> मत्पराः।

   (क) सम् + नि + अस् + ल्यप्(ख) स + अस् + ल्यप्

   (ग) स + नि + ल्यप्

2. मयि <u>बुद्धिं</u> निवेशय।

   (क) बुद्ध + द्वि (ख) बुध् + क्तिन्

   (ग) बुद्ध + हि

3. सर्वभूतहिते <u>रम् + क्त</u> ।

   (क) रमा (ख) रसाः

   (ग) रताः

4. सन्नियम्य इन्द्रियग्रामं सर्वत्र।

(क) सम् + नि + यम् + ल्यप् (ख) सम् + नि + ल्यप्

(ग) सम् + यम् + ल्यप्

5. अथ चित्तं मयि स्थिरं समाधातुं न शक्नोषि।

(क) सम् + धा + तुमुन् (ख) सम् + आ + धा + तुमुन्

(ग) सम् + आ + तुमुन्

6. ततः माम् अभ्यासयोगेन आप् + तुमुन् इच्छा।

(क) आप्तम् (ख) आप्तः

(ग) आप्तुम्

प्रश्न 3. प्रदत्तविकल्पेभ्यः समुचितं शब्दरूपं चिनुत

1. अनन्येन ..... माम् एव ध्यायन्तः उपासते।

(क) योगेन (ख) योगस्य

(ग) योगात्

2. ते ..... एव प्राप्नुवन्ति।

(क) मम (ख) माम्

(ग) मया

3. ..... ज्ञानं श्रेयः भवति।

(क) अभ्यासः (ख) अभ्यासैः

(ग) अभ्यासात्

4. ज्ञानात् ..... विशिष्यते।

(क) ध्यानम् (ख) ध्यानस्य

(ग) ध्यानाय

5. शत्रौ ..... मानापमानयोः समः स्यात्।

(क) मित्रात् (ख) मित्रे

(ग) मित्राय

प्रश्न 4. प्रदत्तविकल्पेभ्यः समुचितं धातुरूपं चिनुत।

1. त्वं मयि एव ..... ।

(क) निवसिष्यसि (ख) निवसिष्यथः

(ग) निवसिष्यामः

2. त्यागात् अनन्तरं शान्तिं ..... ।

(क) प्रोप्नोमि (ख) प्राप्यते

(ग) प्राप्नुयेम

3. त्वम् अभ्यासेऽपि असमर्थः ..... ।

(क) अस्मि (ख) आसीत्

(ग) असि

4. अहं मृत्युसागरात् समुद्धर्ता ..... ।

(क) भवामि (ख) भवन्ति

(ग) भवसि

5. त्वं चित्तं मयि स्थिरं कर्तुं न ..... ।

(क) शक्नोति (ख) शक्नोषि

(ग) शक्नोमि

प्रश्न 5. समुचितम् उपपदविभक्तिपदं चिनतु।

1. अभ्यासत् ..... श्रेयः। (ज्ञान)

2. ज्ञानात् ..... विशिष्यते। (ध्यान)

3. ..... अनन्तरं शान्तिः प्राप्यते। (त्याग)

उत्तराणि

प्रश्न 1. 1. (क) क्लेशोऽधिकतरस्तेषाम् 2. (ख) अनन्येन + एव

3. (ग) श्रेयः + हि 4. (क) ज्ञानाद्ध्यानम्

5. (ख) अभ्यासेऽप्यसमर्थोऽसि6. (ग) मान + अपमानयोः

7. (क) मद्योगमाश्रितः 8. (ख) शुचिः + दक्षः

9. (ग) मय्येव 10. (क) स्थिरमतिर्भक्तिमान्

प्रश्न 2. 1. (क) सम् + नि + अस् + ल्यप्

2. (ख) बुद्ध + क्तिन्

3. (ग) रताः

4. (क) सम् + नि + यम् + ल्यप्

5. (ख) सम् + आ + धा + तुमुन्

6. (ग) आप्तुम्

प्रश्न 3. 1. (क) योगेन 2. (ख) माम्

3. (ग) अभ्यासात्

4. (क) ध्यानम् 5. (ख) मित्रे

प्रश्न 4. 1. (क) निवसिष्यसि 2. (ख) प्राप्यते

3. (ग) असि 4. (क) भवामि

5. (ख) शक्नोषि

प्रश्न 5. 1. (क) ज्ञानम् 2. (ख) ध्यानम्

3. (ग) त्यागात्

वाच्य

कर्तृवाच्य – जब वाक्य में क्रिया द्वारा कर्ता वाच्य हो तो वाक्य कर्तृवाच्य कहलाता है। कर्तृवाच्य वाक्य में कर्ता में प्रथमा विभक्ति लगती है। क्रिया के वचन तथा पुरुष कर्ता के अनुसार होते हैं। जैसे–

छात्रः पुस्तकम् पठति । (छात्र पुस्तक पढ़ता है।)

छात्रौ पुस्तके पठतः। (दो छात्र दो पुस्तक पढ़ते हैं।)

छात्राः पुस्तकानि पठन्ति। (छात्र पुस्तकें पढ़ते हैं।)

कर्तृवाच्य	**कर्मवाच्य / भाववाच्य**
छात्रः जलं पिबति।	छात्रेण जलं पीयते।
सः पुस्तकं पठति।	तेन पुस्तकं पठ्यते।
सा ग्रन्थं पश्यति।	तया ग्रन्थः दृश्यते।
अहं तंम वदामि।	मया सः उद्यते।
रमा तां ब्रवीति।	रमया सा उच्यते।
वीरः शत्रुं हन्ति।	वीरेण शत्रुः हन्यते।
सः कुत्र वसति।	तेन कुत्र उष्यते।
लता पत्रं लिखति।	लतया पत्रं लिख्यते।
छात्रः पुस्तके क्रीणति।	छात्रेण पुस्तके क्रीयेते।
शीला पुष्पे स्पृशति।	शीलया पुष्पे स्पृश्येते।
रामः पथिकौ पश्यति।	रामेण पथिकौ दृश्येते।
सः चौरौ मुञ्चति।	तेन चौरौ मुच्येते।

देवः तौ वदति	देवेन तौ उद्येते।
कृषकः धेनू नयति।	कृषकेण धेनू नीयेते
नृपः वस्त्राणि यच्छति।	नृपेण वस्त्राणि दीयन्ते।
रमा पुष्पाणि चिनोति।	रमया पुष्पाणि चीयन्ते।
नृपः शत्रून् जयति।	नृपेण शत्रवः जीयन्ते।
छात्रः पुस्तकानि क्रीणाति।	छात्रेण पुस्तकानि क्रीयन्ते।
लोकाः गीतानि शृण्वन्ति।	लोकैः गीतानि श्रूयन्ते।
छात्राः पठान् स्मरन्ति।	छात्रैः पाठाः स्मर्यन्ते।
अहं त्वां कथयामि।	मया त्वं कथ्यसे।
सः त्वां वदति।	तेन त्वं उद्यसे।
सा युवां ब्रवीति।	तया युवां उच्येथे।
नृपः युवां ताडयति।	नृपेण युवां ताड्येथे।
नृपः युष्मान् आदिशति।	नृपेण यूयम् आदिश्यध्वे।
सः युष्मान् पश्यति।	तेन यूयं दृश्यध्वे।
त्वं मां किं कथयसि।	त्वया अहं किम् कथ्ये।
सः मां त्यजति।	तेन अहं त्यज्ये।
सा आवां ददाति।	तया आवां दीयावहे।
सः आवां नमति।	तेन आवां नम्यावहे।
मुनिः अस्मान् उपदिशति।	मुनिना वयम् उपदिश्यामहे।
मित्राणि अस्मान् मिलन्ति।	मित्रैः वयं मिल्यामहे।

सः तिष्ठति।	तेन स्थीयते।
तौ हसतः।	ताभ्याम् हस्यते।
ते वसन्ति।	तैः उष्यते।
नृपः जीवति।	नृपेण जीव्यते।
बालौ क्रीडतः।	बालाभ्याम् क्रीड्यते।
छात्राः पठन्ति।	छात्रैः पठ्यते।
त्वं गच्छसि।	त्वया गम्यते।
युवां हसथः।	युवाभ्यां हस्यते।
यूयं तिष्ठथः	युष्माभिः स्थीयते।
सः तिष्ठति।	तेन स्थीयते।
तौ हसतः।	ताभ्याम् हस्यते।
ते वसन्ति।	तैः उष्यते।
नृपः जीवति।	नृपेण जीव्यते।
बालौ क्रीडतः।	बालाभ्याम् क्रीड्यते।
छात्राः पठन्ति।	छात्रैः पठ्यते।
त्वं गच्छसि।	त्वया गम्यते।
युवां हसथः।	युवाभ्यां हस्यते।
यूयं तिष्ठथः।	युष्माभिः स्थीयते।
अहं पिबामि।	मया पीयते।
आवां शृणुवः।	आवाभ्यां श्रूयते।
वयं स्मरामः।	अस्माभिः स्मर्यते।

अभ्यास प्रश्नाः

1. ..... गृहं गम्यते। (त्वं / त्वया)

2. ..... पुस्तकं पठ्यते। (तेन / सः)

3. ..... ग्रन्थं पठ्यते। (अहं / मया)

4. ..... शत्रुः हन्यते। (वीरः , वीरेण)

5. ..... पत्रं लिख्यते। (रमया / रमा)

6. तेन चौरौ ..... । (मुच्यते / मुच्येते)

7. नृपेण वस्त्राणि .....। (दीयते / दीयन्ते)

8. रमया ..... चीयन्ते। (पुष्पं / पुष्पाणि)

9. ..... शत्रवः जीयन्ते। (वयं / अस्माभिः)

10. छात्रैः .....स्मर्यभ्ते । (पाठः / पाठाः)

11. मया त्वं ..... । (कथ्यते / कथ्यसे)

12. ..... अहं त्यज्ये। (तेन / सः)

13. तेन ..... । (तिष्ठति / स्थीयते)

14. तैः ..... । (स्थीयते / स्थीयन्ते)

15. देवैः गीतानि .....। (गीयते / गीयन्ते)

16. नरैः वस्त्राणि ..... । (धार्यते / धार्यन्ते)

17. रामेण पाठः .....। (पठ्यते / पठ्येते)

18. ..... चन्द्र दृश्यते । (अहं / मया)

19. तेन रूप्यकाणि .....। (गण्यन्ते / गण्यते)

20. ..... ज्ञानं प्राप्यते (वयं / अस्माभिः)

21. गुरूभिः किं न ..... ? (ज्ञायन्ते / ज्ञायते)

22. उद्याने ..... पुष्पते। (पुष्पाणि / पुष्पैः)

23. तेन किं ..... । (खाद्यते / खादति)

24. ..... फलानि खाद्यन्ते। (सीता / सीतया)

25. सः अजां ग्रामं ..... । (नयति / नीयते)

उत्तरमाला

1. त्वया	2. तेन	3. मया
4. वीरेण	5. रमया	6. मुच्येते
7. दीयन्ते	8. पुष्पाणि	9. अस्माभिः
10. पाठाः	11. कथ्यसे	12. तेन
13. स्थीयते	14. स्थीयते	15. गीयन्ते
16. धार्यन्ते	17. पठ्यते	18. मया
19. गण्यन्ते	20. अस्माभिः	21. ज्ञायते
22. पुष्पैः	23. खाद्यते	24. सीतया
25. नयति		

लट् लकार में कर्तृवाच्य के उदाहरण

1. अहं विद्यालयं गच्छामि।
2. सः माम् वदति।
3. त्वं फले खादसि।
4. सा पुष्पे स्पृश्यति।

5. रामः रावणं हन्ति।
6. त्वं गृहं गच्छसि।
7. सः पुस्तकं पठति।
8. माता दुग्धं यच्छति।
9. शिशु दुग्धं पिबति।
10. ते गीतानि गायन्ति।
11. सः हसति।
12. अहं हसामि।
13. त्वम् हससि।
14. यूयं हसथ।
15. वयम् हसावः।
16. रामः कृष्णं पृच्छति।
17. भिक्षुकः धनिकं धनं याच्यते।
18. नृपः वातां श्रृणोति।
19. सैनिकाः राजधानी परितः तिष्ठन्ति।
20. पश्चात्तापः पापानि क्षालयति।
21. भृत्याः भारं वहन्ति।
22. नृपः प्रजानां दुःखानि हरति।
23. महाराजः मम वचनं श्रुणोति।
24. त्वं गीतम् अपि गायसि।
25. त्वं व्याकरणं पठसि।

अशुद्धि संशोधनम्

अधोलिखतेषु रिक्तस्थानेषु शुद्धं पदं चित्वा लिखत्–

पाठ–1

1. अङ्के ..... आरोप्य पर्यपृच्छत सादरम्।

   (क) भरतम्

   (ख) भरताय

   (ग) भरतस्य

2. आघ्राय ..... तं मूर्ध्नि परिष्वज्य च राघवम्।

   (क) रामाः

   (ख) रामौ

   (ग) रामः

3. कच्चिते मन्त्रितो मन्त्रो राष्ट्रं न ..... ।

   (क) परिधावन्ति

   (ख) परिधावति

   (ग) परिधावसि

4. कालाति ..... चैव भक्तवेतनयोर्भृताः।

   (क) क्रमणेन

   (ख) क्रमणात्

   (ग) क्रमस्य

5. मन्त्रो विजयमूलं हि ..... भवति राघव।

(क) राज्ञि

(ख) राज्ञां

(ग) राज्ञा

पाठ–3

1. सत्सन्निधानेन मूर्खः प्रवीणतां .....।

(क) याति

(ख) यान्ति

(ग) याताः

2. आतुरे ..... प्राप्ते दुर्भिक्षे शत्रुसंकटे।

(क) व्यसनाय

(ख) व्यसने

(ग) व्यसनाभ्याम्

3. राजद्वारे श्मशाने च यः ..... स बान्धवः।

(क) तिष्ठति

(ख) तिष्ठसि

(ग) तिष्ठामि

4. ..... पुरुषेणेह हातव्या भूतिमिच्छता।

(क) षड्दोषाः

(ख) षड्दोष

(ग) षड्दोषौ

5. यस्मिन् देशे न सम्मानो न वृत्तिर्न च ..... ।

(क) बान्धवैः

(ख) बान्धवाः

(ग) बान्धवेषु

पाठ–5

1. अहं ते अपरं क्रीडनकं .....।

(क) दास्यति

(ख) दास्यन्ति

(ग) दास्यामि

2. ..... न मां गणयति।

(क) अयं

(ख) अनेन

(ग) इमाः

3. अनेन एव तावत् अहं .....।

(क) क्रीडिष्यति

(ख) क्रीडिष्यामि

(ग) क्रीडिष्यसि

4. ..... अस्याः पुत्रं कथं न मुञ्चसि?

(क) अहम्

(ख) भवान्

(ग) त्वम्

5. मदीये उटजे मृत्तिका ..... तिष्ठति।

(क) मयूरः

(ख) मयूरौ

(ग) मयूराः

पाठ–6

1. भुवो मेखलेव मध्यदेशालङ्कारभूता विन्ध्याटवी .....।

(क) अस्ति

(ख) अस्मि

(ग) सन्ति

2. तस्य पश्चिमे तीरे ..... शाल्मलीवृक्षः।

(क) महाजीर्णाः

(ख) महाजीर्णः

(ग) महाजीर्णौ

3. सहसैव ..... वने कोलाहलध्वनिः उदचरत्।

(क) तस्यां

(ख) तस्मिन्

(ग) सः

4. प्रायेण अकारणमित्राणि अतिकरुणार्द्राणि च .....।

(क) भवति

(ख) भवतः

(ग) भवन्ति

5. सः अभिषेकावसाने मां गृहीत्वा ..... अगच्छत्।

(क) तपोवने

(ख) तपोवनम्

(ग) तपोवनस्य

पाठ–8

1. सुब्बण्णस्य सङ्गीते सहजाभिलाषः .....।

(क) आसीत् (ख) स्तः (ग) सन्ति

2. अहं पुराणप्रवचनं न .....।

(क) करोति (ख) कुर्मः (ग) करोमि

3. सुब्बण्णः श्रीराघवमित्यादि ..... सङ्गीतमार्गेण अश्रावयत्।

(क) श्लोकं (ख) श्लोकेन (ग) श्लोकस्य

4. भोः शास्त्रिणः ..... चतुरोऽस्ति।

(क) कुमाराः (ख) कुमारौ (ग) कुमारः

5. ..... बालकाय ताम्बूलमुत्तरीयवस्त्रं दत्तवान्।

(क) राजा (ख) राजानौ (ग) राजानः

पाठ–9

1. गृह्णीष्व ..... पञ्चाशन्मुद्राः।

(क) इमाः (ख) इदम् (ग) इमानि

2. रात्रिन्दिवं परिश्रम्य निष्पादितो अयं .....।

(क) पटों (ख) पटाः (ग) पटः

3. अहं न्यायम् अन्यायं वा न .....।

(क) जानाति (ख) जानन्ति (ग) जानामि

4. कथम् अस्मद् देशीयानां पटानां विक्रयो .....।

(क) भविष्यति (ख) भविष्यन्ति

(ग) भविष्यामि

5. अयं पटः ..... पटलैः परिवेष्टितम् अस्ति।

(क) पञ्चषैः (ख) पञ्चषत् (ग) पञ्चषः

पाठ–10

1. पुष्करिण्यां ग्रामस्य जनाः स्नानं .....।

(क) करोति (ख) कुरुतः (ग) कुर्वन्ति

2. केन प्रकारेण इमे ..... बोधयितव्याः?

(क) जनः (ख) जनौ (ग) जनाः

3. ..... ग्रामस्य प्रतिमार्गं जनान् अवदत्।

(क) कृष्णः (ख) कृष्णौ (ग) कृष्णाः

4. एकस्मिन् ग्रामोपान्ते पद्मिनी नाम्नी ..... पुष्करिणी आसीत्।

(क) एकः (ख) एका (ग) एकम्

5. यत् कल्याणकरं ..... तदपि सत्यम् एव भवति।

(क) वचनं (ख) वचनानि (ग) वचांसि

पाठ–11

1. ये तु ..... कर्माणि मयि संन्यस्य मत्पराः।

   (क) सर्वाणि (ख) सर्वे (ग) सर्वान्

2. ..... हि गतिः दुःखं देहवद्भिरवाप्यते।

   (क) अव्यक्तं (ख) अव्यक्ता (ग) अव्यक्तः

3. मययेव मन आधत्स्व मयि ..... निवेशय।

   (क) बुद्धों (ख) बुद्धिं (ग) बुद्धया

4. ..... प्राप्नुवन्ति मामेव सर्वभूतहिते रताः।

   (क) तौ (ख) सः (ग) ते

5. मृत्युसंसारसागरात् अहं तेषां समुद्धर्ता .....।

   (क) भवति (ख) भवसि (ग) भवामि


शिष्य प्रकर्षो यशसे गुरूणाम्
शिष्य की उन्नति (उत्कर्ष) भी गुरु का यश ही फैलाता है।
पठिताश
अवबोधनम्
1. पद्यांश
2. गद्यांश
3. सार्थकं अर्थ
4. शुद्धभावार्थः
5. अन्वयः
6. सार्थक संयोजनम्

भाग-घ (पठितांशावबोधनम्)

पाठ्य पुस्तकम् - भास्वती (प्रथमो भागः)

(पठित-अवबोधनम्)

प्रथमः पाठः (कुशल-प्रशासनम्)

पाठपरिचयः- अयं पाठः आदिकाव्य-रामायणस्य अयोध्याकाण्डात् संकलितः। रामायणस्य रचयिता आदिकविः वाल्मीकिः अस्ति। अस्मिन् पाठे रामः राज्यव्यवस्थायाः सम्यक् संचालनविषये भरतं सम्बोधयति।

मूलपाठा

प्रथमः मूलपाठः

जटिलं चीरवसनं प्राञ्जलिं पतितं भुवि।

ददर्श रामो दुर्दर्शं युगान्ते भास्करं यथा ।।1।।

अन्वयः- यथा युगान्ते भास्करं (तथा) रामः जटिलं चीर वसनं प्राञ्जलिं, भुवि पतितं दुर्दर्शं (भरतं) ददर्श।

प्रश्नाः

1. एकपदेन उत्तरत-

   (क) भुवि पतितः कः आसीत्?

   (ख) जटिलं चीरवसनं भरतं कः ददर्श?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत-

   (क) रामः कीदृशं भरतं ददर्श?

   (ख) युगान्ते भास्करं इव कः आसीत्?

3. भाषिक कार्यम्-निर्देशानुसारम् उत्तराणि लिखत।

(क) 'चीरवसनं भरत' इत्यनयोः पदयोः विशेष्यपदं किमस्ति?

(ख) 'पृथिव्याम्' इति पदस्य किं पर्यायपदं श्लोके प्रयुक्तम्?

(ग) 'रामः युगान्ते भास्करं यथा ददर्श' अस्मिन् वाक्ये कर्तृपदं किमस्ति?

(घ) 'दुर्दर्शम्' इति पदं विशेषणमस्ति अस्य विशेष्यपदं किम्?

द्वितीयः मूलपाठः

कथञ्चिदभिविज्ञाय विवर्णवदनं कृशम्।

भ्रातरं भरतं रामः परिजग्राह पाणिना।।2।।

अन्वयः- कथञ्चिद् विवर्णवदनं कृशं भ्रातरं भरतम् अभिविज्ञाय रामः (भरतं) पाणिना परिजग्राह।

प्रश्नाः

1. एकपदेन उत्तरत-

(क) भरतं कः परिजग्राह?

(ख) विवर्णवदनं कः आसीत्?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत-

(क) रामः भरतं केन परिजग्राह?

(ख) रामः कीदृशं भरतं पाणिना परिजग्राह?

3. भाषिककार्यम्-निर्देशानुसारम् उत्तरत-

(क) 'रामः भरतं पाणिना परिजग्राह' अस्मिन् वाक्ये क्रियापदं किम् अस्ति?

(ख) 'भ्रातरं भरतं' इत्यनयोः पदयोः विशेषणपदं किमस्ति?

(ग) 'स्थूलम्' पदस्य किं विलोमपदं श्लोके प्रयुक्तम्?

(घ) 'हस्तेन' पदस्य किं पर्यायपदं श्लोके प्रयुक्तम्?

तृतीयः मूलपाठः-

आघ्राय रामस्तं मूर्ध्नि परिष्वज्य च राघवम्।

अङ्के भरतमारोप्य पर्यपृच्छत सादरम् ।।3।।

प्रश्नाः

1. एकपदेन उत्तरत-

(क) रामः भरतं कुत्र आरोपितवान्?

(ख) भरतं कः सादरं पर्यपृच्छत?

2. पूर्णवाक्येन उत्तर-

(क) रामः कस्य आलिङ्गनं कृतवान्?

(ख) भरतम् अङ्के आरोप्य रामः किं कृतवान्?

3. भाषिक-कार्यम् – निर्देशानुसारम् उत्तरत-

(क) 'राघवम्' इति पदं कस्मै प्रयुक्तम्?

(ख) 'रामः भरतं सादरं पर्यपृच्छत' अस्मिन् वाक्ये क्रियापदं किमस्ति?

(ग) 'राघवं भरतम्' इत्यनयोः पदयोः विशेषणपदं किमस्ति?

(घ) 'रामस्तं मूर्ध्नि आघ्राय पर्यपृच्छत' अत्र 'तं' इति सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्?

चतुर्थः मूलपाठः-

कच्चिदात्मसमाः शूराः श्रुतवन्तो जितेन्द्रियाः।

कुलीनाश्चेङ्गितज्ञाश्च कृतास्ते तात मन्त्रिणः।।4।।

अन्वयः- तात! ते मन्त्रिणः कच्चित् आत्मसमाः, शूराः, श्रुतवन्तः, जितेन्द्रियाः, कुलीनाः, इङ्गितज्ञाः च कृताः।

प्रश्नाः

1. एकपदेन उत्तरत-

   (क) आत्मसमाः शूराः के नियुक्ताः?

   (ख) रामस्य अनुसारं कुलीनाः मन्त्रिणः केन नियुक्ताः?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत-

   (क) मन्त्रिणः कीदृशाः भवेयुः?

   (ख) 'तात' इति पदं कस्मै प्रयुक्तम्?

3. भाषिककार्यम्-निर्देशानुसारम् उत्तराणि लिखत-

   (क) 'जितेन्द्रियाः मन्त्रिणः' अनयोः विशेषणपदं किम्?

   (ख) 'कृतास्ते तात मन्त्रिणः' अत्र 'ते' इति सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्?

   (ग) 'अमात्याः' पदस्य पर्यायपदं किम् अस्ति?

   (घ) 'कातराः' पदस्य विलोमपदं किं प्रयुक्तम्?

पंचमः मूलपाठः-

मन्त्रो विजयमूलं हि राज्ञां भवति राघव!।

सुसंवृतो मन्त्रिधुरैरमात्यैः शास्त्रकोविदैः।।5।।

अन्वयः- राघव! हि शास्त्रकोविदैः मन्त्रिधुरैः अमात्यैः सुसंवृतो मन्त्रो राज्ञां विजयमूलं भवति।

प्रश्नाः

1. एकपदेन उत्तरत–

   (क) मन्त्रः केषां विजयमूलं भवति?

   (ख) कीदृशः मन्त्रः विजयमूलं भवति?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत–

   (क) राज्ञां विजयमूलं किं भवति?

   (ख) कीदृशैः अमात्यैः सुसंवृतः मन्त्रः राज्ञां विजयमूलं भवति?

3. भाषिककार्यम्– (लघूत्तरात्मकम्)

   (क) 'शास्त्रज्ञैः' पदस्य पर्यायपदं किं प्रयुक्तम्?

   (ख) 'राघव!' इति पदं कस्मै प्रयुक्तम्?

   (ग) 'शास्त्रकोविदैः अमात्यैः' इत्यनयोः पदयोः विशेष्यपदं किं प्रयुक्तम्?

   (घ) 'मन्त्रो विजयमूलं भवति' इत्यस्मिन् वाक्ये कर्तृपदं किम्?

षष्ठः मूलपाठः–

कच्चिन्निद्रावशं नैषि कच्चित्कालेऽवबुध्यसे।

कच्चिच्चापररात्रेषु चिन्तयस्यर्थनैपुणम्।।6।।

अन्वयः– कच्चित् निद्रावशं न एषि, कच्चित् काले अवबुध्यसे। कच्चित् च अपररात्रेषु अर्थनैपुणम् चिन्तयसि।

प्रश्नाः-

1. एकपदेन उत्तरत–

   (क) त्वं अपररात्रेषु किं चिन्तयसि?

   (ख) त्वं कस्याः वशं न एषि?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत-

   (क) त्वं काले किं करोषि?

   (ख) त्वं अर्थनैपुणम् कदा चिन्तयसि?

3. भाषिककार्यम्- (लघूत्तरात्मकम्)

   (क) 'अर्थनैपुणम् चिन्तयसि' अस्मिन् वाक्ये क्रियापदं किमस्ति?

   (ख) 'जागरणं करोषि' पदस्य पर्यायपदं किं प्रयुक्तम्?

   (ग) 'शयनं' पदस्य पर्यायपदं किं प्रयुक्तम्?

   (घ) श्लोकात् एकं क्रियापंद चित्वा लिखत

सप्तमः मूलपाठः-

कच्चिन्मन्त्रयसे नैकः कच्चिन्न बहुभिः सह।

कच्चित्ते मन्त्रितो मन्त्रो राष्ट्रं न परिधावति।।7।।

अन्वयः- कच्चित् एकः कच्चित् बहुभिः सह न मन्त्रयसे कच्चित् ते मन्त्रितः मन्त्रः राष्ट्रं न परिधावति।

प्रश्नाः

1. एकपदेन उत्तरत-

   (क) त्वं एकेन सह किं न करोषि?

   (ख) त्वं कैः सह न मन्त्रयसे?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत-

(क) मन्त्रः किं न परिधावति?

(ख) कीदृशः मन्त्रः राष्ट्रं न परिधावति?

3. भाषिककार्यम्- (लघूत्तरात्मकम्)

(क) 'मन्त्रो राष्ट्रं न परिधावति' अस्मिन् वाक्ये क्रियापदं किम्?

(ख) 'मन्त्रितो मन्त्रो' इत्यनयोः विशेषणपदं किमस्ति?

(ग) 'मन्त्रणां करोषि' इत्यस्मिन् अर्थे किं पदं प्रयुक्तम्?

(घ) 'ते मन्त्रितो मन्त्रः' अत्र 'ते' इति सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्?

अष्टमः मूलपाठः-

कच्चिदर्थं विनिश्चित्य लघुमूलं महोदयम्।

क्षिप्रमारभसे कर्म न दीर्घयसि राघव!।।8।।

अन्वयः- राघव! कच्चिद् लघुमूलं महोदयम् अर्थं विनिश्चित्य क्षिप्रं कर्म आरभसे न दीर्घयसि।

प्रश्नाः-

1. एकपदेन उत्तरत-

(क) त्वं किं विनिश्चित्य कर्म आरभसे?

(ख) त्वं क्षिप्रं किं आरभसे?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत-

(क) राघव! त्वं क्षिप्रं कीदृशं कर्म आरभसे?

(ख) त्वं कर्म-प्रारम्भे किं न करोषि?

3. भाषिककार्यम्- (लघूत्तरात्मकम्)

(क) 'महोदयं कर्म' इत्यनयोः विशेष्यपदं किमस्ति?

(ख) 'शीघ्रं' पदस्य पर्यायपदं किं प्रयुक्तम्?

(ग) 'समाप्तं करोषि' पदस्य विलोमपदं किं प्रयुक्तम्?

(घ) 'क्षिप्रं कर्म आरभसे' अत्र क्रियापदं किं प्रयुक्तम्?

नवमः मूलपाठः-

कच्चित्सहस्रान्मूर्खाणामेकमिच्छसि पण्डितम्।

पण्डितो ह्यर्थकृच्छ्रेषु कुर्यान्निः श्रेयसं महत्।।9।।

अन्वयः- कच्चित् मूर्खाणां सहस्रात् एकं पण्डितम् इच्छसि हि पण्डितः अर्थकृच्छ्रेषु महत् निःश्रेयसं कुर्यात्।

प्रश्नाः-

1. एकपदेन उत्तरत-

(क) त्वं एकं कं इच्छसि?

(ख) त्वं केषां सहस्रात् एकं पण्डितम् इच्छसि?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत-

(क) पण्डितः किं कुर्यात्?

(ख) पण्डितः कदा महत् निःश्रेयसं कुर्यात्?

3. भाषिककार्यम्- (लघूत्तरात्मकम्)

(क) 'महत् निःश्रेयसं' इत्यनयोः पदयोः विशेषणपदं किमस्ति?

(ख) 'एकं पण्डितं इच्छसि' अत्र क्रियापदं किमस्ति?

(ग) 'मूर्खः' पदस्य विलोमपदं किं प्रयुक्तम्?

(घ) 'कल्याणम्' पदस्य पर्यायपदं किं प्रयुक्तम्?

दशमः मूलपाठः-

एकोऽप्यमात्यो मेधावी शूरो दक्षो विचक्षणः।

राजानं राजपुत्रं वा प्रापयेन्महतीं श्रियम्।।10।।

अन्वयः- एकः अपि मेधावी, शूरः, दक्षः, विचक्षणः अमात्यः राजानं राजपुत्रं वा महतीं श्रियम् प्रापयेत्।

प्रश्नाः-

1. एकपदेन उत्तरत-

   (क) मेधावी कः श्रियम् प्रापयेत्?

   (ख) कीदृशो ·मात्यः श्रियम् प्रापयेत्?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत-

   (क) राजानं मेधावी अमात्यः कीदृशीं श्रियं प्रापयेत्?

   (ख) अमात्ये के के गुणाः भवेयुः?

3. भाषिककार्यम्- (लघूत्तरात्मकम्)

   (क) 'महतीं श्रियम्' इत्यनयोः पदयोः विशेष्यपदं किं प्रयुक्तम्?

   (ख) 'निपुणः' पदस्य पर्यायपदं किं प्रयुक्तम्?

   (ग) 'प्रापयेन्महतीं श्रियम्' अत्र क्रियापदं किम्?

   (घ) 'मेधावी अमात्यः' इत्यनयोः विशेषणपदं किं प्रयुक्तम्?

एकादशः मूलपाठः-

कच्चिन्मुख्या महत्स्वेव मध्यमेषु च मध्यमाः।

जघन्याश्च जघन्येषु भृत्यास्ते तात योजिताः।।11।।

अन्वयः- तात! कच्चित् महत्सु मुख्या, मध्यमेषु मध्यमाः, जघन्येषु च जघन्याः भृत्याः ते योजिताः।

प्रश्नाः-

1. एकपदेन उत्तरत-

   (क) महत्सु कीदृशाः भृत्याः योजिताः?

   (ख) जघन्याः भृत्याः केषु योजिताः?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत-

   (क) मध्यमेषु मध्यमाः के योजिताः?

   (ख) केषु कीदृशाः च भृत्याः योजिताः?

3. भाषिककार्यम्- (लघूत्तरात्मकम्)

   (क) 'भृत्यास्ते तात योजिताः' अत्र 'ते' इति सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्?

   (ख) 'मध्यमेषु मध्यमाः भृत्याः योजिताः' अत्र क्रियापदं किम्?

   (ग) 'उत्तमाः' पदस्य विलोमपदं किं प्रयुक्तम्?

   (घ) 'भृत्याः योजिताः' अत्र कर्तृपदं किम्?

द्वादशः मूलपाठः-

अमात्यानुपधातीतान्पितृपैतामहाञ्छुचीन्।

श्रेष्ठाञ्छ्रेष्ठेषु कच्चित्त्वं नियोजयसि कर्मसु।।12।।

अन्वयः- कच्चित् त्वं उपधातीतान् पितृपैतामहान् शुचीन्, श्रेष्ठेषु श्रेष्ठान् अमात्यान् कर्मसु नियोजयसि।

प्रश्नाः-

1. एकपदेन उत्तरत-

   (क) त्वं कान् कर्मसु नियोजयसि?

   (ख) त्वं अमात्याान् केषु नियोजयसि?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत-

   (क) त्वं कीदृशान् अमात्याान् कर्मसु नियोजयसि?

   (ख) केषु श्रेष्ठान् अमात्यान् कर्मसु नियोजयसि?

3. भाषिककार्यम्- (लघूत्तरात्मकम्)

   (क) 'त्वं अमात्यान् कर्मसु नियोजयसि? अस्मिन् वाक्ये कर्तृपदं किम्?

   (ख) 'श्रेष्ठान् अमात्यान्' इत्यनयोः विशेषणपदं किम् अस्ति?

   (ग) 'पवित्रान्' पदस्य पर्यायपदं किमस्ति?

   (घ) 'त्वं कर्मसु नियोजयसि' अत्र क्रियापदं किमस्ति?

त्रयोदशः मूलपाठः-

कच्चिद्धृष्टश्च शूरश्च धृतिमान्मतिमाञ्छुचिः।

कुलीनश्चानुश्क्तश्च दक्षः सेनापतिः कृतः।।13।।

अन्वयः- कच्चित् धृष्टः, शूरः, धृतिमान्, मतिमान्, शुचिः, कुलीनः, अनुरक्तः, दक्षः च सेनापतिः कृतः।

प्रश्नाः-

1. एकपदेन उत्तरत-

   (क) शूरः, दक्षः च कः कृतः (नियोजितः)?

   (ख) धृतिमान् कः कृतः?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत-

   (क) कीदृशः सेनापतिः कृतः?

3. भाषिककार्यम्- (लघूत्तरात्मकम्)

   (क) 'दक्षः सेनापतिः' अनयोः पदयोः विशेष्यपदं किं प्रयुक्तम्?

   (ख) 'बुद्धिमान्' पदस्य पर्यायपदं किं प्रयुक्तम्?

   (ग) 'अशुचिः' पदस्य विलोमपदं किं प्रयुक्तम्?

चतुर्दशः मूलपाठः-

कच्चिद्बलस्य भक्तं च वेतनं च यथोचितम्।

सम्प्राप्तकालं दातव्यं ददासि न विलम्बसे।।4।।

अन्वयः- कच्चित् बलस्य यथोचितं भक्तं वेतनं च सम्प्राप्तकालं दातव्यं ददासि विलम्बसे न।

प्रश्नाः-

1. एकपदेन उत्तरत-

   (क) कस्य वेतनं दातव्यम्?

   (ख) बलस्य यथोचितं किं दातव्यम्?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत-

(क) बलस्य भक्तं वेतनं च कदा दातव्यम्?

(ख) भक्तं वेतनं च प्रदाने किं न करणीयम्?

3. भाषिककार्यम्- (लघूत्तरात्मकम्)

(क) 'वेतनं ददासि' अत्र क्रियापदं किं प्रयुक्तम्?

(ख) 'भक्तं च वेतनं च' अत्र अव्ययपदं किं प्रयुक्तम्?

(ग) 'शीघ्रं करोषि' पदस्य विलोमपदं किं प्रयुक्तम्?

(घ) 'सैनिकः' पदस्य पर्यायपदं किं प्रयुक्तम्?

पञ्चदशः मूलपाठः-

कालातिक्रमणाच्चैव भक्तवेतनयोर्भृताः।

भर्तुरप्यतिकुप्यन्ति सोऽनर्थः सुमहान्स्मृतः।।15।।

अन्वयः- भक्तवेतनयोः कालातिक्रमणात् भृताः अपि भर्तुः अति-कुप्यन्ति सः सुमहान् अनर्थः स्मृतः।

प्रश्नाः-

1. एकपदेन उत्तरत-

(क) कयोः कालातिक्रमणात् भृताः कुप्यन्ति?

(ख) कदा भृताः कुप्यन्ति?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत-

(क) सुमहान् अनर्थः कदा स्मृतः?

3. भाषिककार्यम्– (लघूत्तरात्मकम्)

(क) 'भृताः भर्तुः अतिकुप्यन्ति? अत्र कर्तृपदं किं प्रयुक्तम्?

(ख) 'सुमहान् अनर्थः' अनयोः विशेष्यपदं किं प्रयुक्तम्?

(ग) 'प्रसन्नाः भवन्ति' पदस्य विलोमपदं किं प्रयुक्तम्?

(घ) 'सः सुमहान् अनर्थः स्मृतः' अत्र 'सः' इति सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्?

प्रश्न 1.अधोलिखितवाक्येषु रेखांकितपदानां प्रसंगानुसारं सार्थकं अर्थं लिखत।

(क) ददर्श रामो युगान्ते भास्करं यथा।

(ख) रामः भरतं अङ्के आरोप्य सादरम् पर्यपृच्छत।

(ग) एको ऽप्यमात्यो मेधावी शूरो दक्षो विचक्षणः।

(घ) रामः भरतं पाणिना परिजग्राह।

(ङ) पण्डितः अर्थकृच्छ्रेषु कुर्यान्निः श्रेयसं महत्।

(च) जघन्याः भृताः ते योजिताः।

(छ) चिन्तयसि अर्थनैपुणम्।

प्रश्न 2. प्रत्येकम् अंशस्य प्रदत्त भावार्थत्रयात् शुद्धं भावार्थं चित्वा लिखत।

(क) मन्त्रो विजयमूलं हि राज्ञां भवति राघव!

(i) राजानः विजयप्राप्त्यर्थं मन्त्रं वदन्ति।

(ii) गुप्तमन्त्रणाद्वाराराजानः निश्चयेन विजयं प्राप्नुवन्ति।

(iii) राघवः राज्ञां विजयस्य कारणं अस्ति।

(ख) पण्डितो ह्यर्थकृच्छ्रेषु कुर्वन्ति निःश्रेयसं महत्।

(i) मूर्खः समृद्धौ सहाय्यं करोति।

(ii) विद्वान् अर्थकाठिन्येषु महत् कल्याणं कुर्वन्ति।

(iii) सम्बन्धिनः धनप्राप्त्यर्थं सहायतां कुर्वन्ति।

(ग) क्षिप्रमारभसे कर्म न दीर्घयसि राघव!।

(i) हे भरत! त्वं कार्यं शीघ्रं करोषि अथवा विलम्बेन।

(ii) यदा इच्छसि तदैव कार्यं कुरु।

(iii) कार्यं विलम्बेन करणीयं शीघ्रं न।

(घ) मन्त्रितो मन्त्रो राष्ट्रं न परिधावति।

(i) मन्त्रः राष्ट्रात् बहिः गच्छति।

(ii) सुरक्षिता मन्त्रणा राष्ट्रात् बहिः न प्रसरति।

(iii) राजा स्वकीयं राष्ट्रं न परिधावति।

प्रश्न 3. भावार्थलेखनम्

अधोलिखितपद्यस्य प्रदत्तं भावार्थं मञ्जूषाप्रदत्तपदैः पूरियत्वा पुनः लिखत।

(क) कच्चिदर्थं विनिश्चित्य लघुमूलं महोदयम्।

क्षिप्रमारभसे कर्म न दीर्घयसि राघव!

भावार्थः–हे राघव! त्वं लघुनिमितं महत् (i) _____ सम्यक् विचार्य शीघ्रतया (ii)_____ करोषि, प्रारम्भे (iii) _____न करोषि (iv) _____।

मञ्जूषा–प्रारम्भं, कदाचन, कार्यं, विलम्बं

(ख) कञ्चिद् बलस्य भक्तं च वेतनं च यथोचितम्।

सम्प्राप्तकालं दातव्यं ददासि न विलम्बसे।

भावार्थः-सैनिकेभ्यः (i) _____, (ii) _____ च उचित समये (iii) _____। भोजनवेतनयोः प्रदाने (iv) _____ न करोषि।

मञ्जूषा-ददासि, भोजनं, विलम्बं, वेतनं

प्रश्न 4. अधोलिखित श्लोकस्य प्रदत्तान्वये मञ्जूषाप्रदत्तपदैः रिक्तस्थानापूर्तिं कृत्वा पुनः लिखत।

(क) कच्चिदात्मसमाः शूराः श्रुतवन्तो जितेन्द्रियाः।

कुलीनाश्चेङ्गितज्ञाश्च कृतास्ते तात मन्त्रिणः।।

अन्वयः-तात! ते (i) _____ कच्चित् आत्मसमाः, (ii)_____, श्रुतवन्तः, जितेन्द्रियाः, (iii) _____, इङ्गितज्ञाः च (iv) _____।

मञ्जूषा-कुलीनाः, शूराः, कृताः, मन्त्रिणः

(ख) कथञ्चिदभिविज्ञाय विवर्णवदनं कृशम्।

भ्रातरं भरतं रामः परिजग्राह पाणिना।।

अन्वयः-कथञ्चिद् विवर्णवदनं, (i) _____ भ्रातरं, (ii)_____ अभिविज्ञाय (iii) _____ पाणिना (भरतं) (iv) _____।

मञ्जूषा- भरतं, कृशं, परिजग्रह, रामः

प्रश्न 5. प्रदत्तवाक्यांशानां सार्थकं संयोजनम्

अधोलिखितानां 'क' स्तम्भस्य वाक्यांशानां 'ख' स्तम्भस्य वाक्यांशैः सह सार्थकं मेलनं कृत्वा वाक्यानि पुनः लिखत।

	क		**ख**
(i)	कच्चिच्चापररात्रेषु	(क)	राज्ञां भवति राघव!
(ii)	राजानं राजपुत्रं वा	(ख)	सोऽनर्थः सुमहान्स्मृतः।
(iii)	भर्तुरप्यतिकुप्यन्ति	(ग)	प्रापयेन्महतीं श्रियम्
(iv)	मन्त्रो विजयमूलं हि	(घ)	चिन्तयस्यर्थनैपुणम्

उत्तरमाला

प्रथमः पाठः (कुशलप्रशासनम्)

मूलपाठाः-

उत्तराणि

श्लोक 1. 1. एकपदेन उत्तरत- (क) भरतः (ख) रामः

2. पूर्णवाक्येन उत्तरतः (क) रामः जटिलं, चीरवसनं, प्राञ्जलिं, भुवि पतितं दुर्दर्श भरतं ददर्श।

(ख) युगान्ते भास्करं इव भरतः आसीत्।

3. भाषिककार्यम्- (क) भरतम् (ख) भुवि

(ग) रामः (घ) भरतं

श्लोक 2. 1. एकपदेन उत्तरत- (क) रामः (ख) भरतः

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत-(क) रामः भरतं पाणिना परिजग्राह।

(ख) रामः विवर्णवदनं कृशं भ्रातरं भरतं पाणिना परिजग्राह।

3. भाषिककार्यम्- (क) परिजग्राह (ख) भ्रातरं

(ग) कृशम् (घ) पाणिना

श्लोक 3. 1. एकपदेन- (क) अङ्के (ख) रामः

2. पूर्णवाक्यम्- (क) रामः भरतस्य आलिङ्गनं कृतवान्।

(ख) रामः भरतं अङ्के आरोप्य सादरं पर्यपृच्छत।

3. भाषिककार्यम्-(क) भरताय (ख) पर्यपृच्छत

(ग) राघवम् (घ) भरताय

श्लोक 4. 1. एकपदम्- (क) मन्त्रिणः (ख) तातेन (भरतेन)

2. पूर्णवाक्यम् (क) मन्त्रिणः शूराः, श्रुतवन्तः, जितेन्द्रियाः, कुलीनाः, इङ्गितज्ञाः च भवेयुः।

(ख) 'तात' इति पदं भरताय प्रयुक्तम्।

3. भाषिककार्यम्-(क) जितेन्द्रियाः (ख) भरताय

(ग) मन्त्रिणः (घ) शूराः

श्लोक 5. 1. एकपदम्- (क) राज्ञाम् (ख) सुसंवृतः

2. पूर्णवाक्यम्- (क) सुसंवृतो मन्त्रो राज्ञां विजयमूल भवति।

(ख) शास्त्रकोविदैः मन्त्रिधुरैः अमात्यैः सुसंवृतो मन्त्रः राज्ञां विजयमूलं भवति।

3. भाषिककार्यम्-(क) शास्त्रकोविदैः (ख) भरताय

(ग) अमात्यैः (घ) मन्त्रो

श्लोक 6. 1. एकपदम्- (क) अर्थनैपुणम् (ख) निद्रायाः/निद्रावशं

2. पूर्णवाक्यम् (क) त्वं काले अवबुध्यसे।

(ख) त्वम् अपररात्रेषु अर्थनैपुणम् चिन्तयसि।

3. भाषिककार्यम्-(क) चिन्तयसि (ख) अवबुध्यसे

(ग) निद्रा

(घ) अवबुध्यसे/एषि/चिन्तयसि

श्लोक 7. 1. एकपदम्- (क) न मन्त्रयसे (ख) बहुभिः

2. पूर्णवाक्यम् (क) मन्त्रो राष्ट्रं न परिधावति।

(ख) मन्त्रितः मन्त्रः राष्ट्रं न परिधावति।

3. भाषिककार्यम्-(क) परिधावति (ख) मन्त्रितः

(ग) मन्त्रयसे (घ) भरताय

श्लोक 8. 1. एकपदम्- (क) महोदयम् (ख) कर्म

2. पूर्णवाक्यम् (क) त्वं क्षिप्रं लघुमूलं महोदयं कर्म आरभसे।

(ख) त्वं कर्म-प्रारम्भे न दीर्घयसि।

3. भाषिककार्यम्-(क) कर्म (ख) क्षिप्रम्

(ग) आरभसे (घ) आरभसे

श्लोक 9. 1. एकपदम्- (क) पण्डितम् (ख) मूर्खाणाम्

2. पूर्णवाक्यम् (क) पण्डितः महत् निःश्रेयसं कुर्यात्।

(ख) पण्डितः अर्थकृच्छ्रेषु महत् निःश्रेयसं कुर्यात्।

3. भाषिककार्यम्-(क) महत् (ख) इच्छसि

(ग) पण्डितः (घ) निःश्रेयसम्

श्लोक 10. 1. एकपदम्- (क) अमात्यः

(ख) मेधावी/शूरः/दक्षः/विचक्षणः

2. पूर्णवाक्यम् (क) मेधावी अमात्यः राजानं महतीं श्रियं प्रापयेत्।

(ख) अमात्यः मेधावी, शूरः, दक्षः, विचक्षणः च भवेत्।

3. भाषिककार्यम्-(क) श्रियम् (ख) विचक्षणः

(ग) प्रापयेत् (घ) मेधावी

श्लोक 11. 1. एकपदम्- (क) मुख्याः (ख) जघन्येषु

2. पूर्णवाक्यम् (क) मध्यमेषु मध्यमाः भृत्याः योजिताः

(ख) महत्सु मुख्याः, मध्यमेषु मध्यमाः, जघन्येषु च जघन्याः भृत्याः योजिताः।

3. भाषिककार्यम्-(क) भरताय

(ख) योजिताः

(ग) जघन्याः

, (घ) भृत्याः

श्लोक 12. 1. एकपदम्- (क) अमात्यान् (ख) कर्मसु

2. पूर्णवाक्यम् (क) त्वम् उपधातीतान् पितृपैतामहान् शुचीन्, श्रेष्ठेषु श्रेष्ठान् अमात्यान् कर्मसु नियोजयसि।

(ख) श्रेष्ठेषु श्रेष्ठान् अमात्यान् कर्मसु नियोजयसि।

3. भाषिककार्यम्-(क) त्वम् (ख) श्रेष्ठान्

(ग) शुचीन् (घ) नियोजयसि

श्लोक 13. 1. एकपदम्- (क) सेनापतिः (ख) सेनापतिः

2. पूर्णवाक्यम् (क) धृष्टः, शूरः, धृतिमान्, मतिमान्, शुचिः, कुलीनः, अनुरक्तः, दक्षः च सेनापतिः कृतः।

3. भाषिककार्यम्-(क) सेनापतिः (ख) मतिमान्

(ग) शुचिः

श्लोक 14. 1. एकपदम्- (क) बलस्य (ख) भक्तं/वेतनम्

2. पूर्णवाक्यम् (क) बलस्य भक्तं वेतनं च सम्प्राप्तकालं दातव्यम्।

(ख) भक्तं वेतनं च प्रदाने न विलम्बसे/विलम्बं न करणीयम्।

3. भाषिककार्यम्-(क) ददासि (ख) च

(ग) विलम्बसे (घ) बलः

श्लोक 15. 1. एकपदम्- (क) भक्तवेतनयोः (ख) कलातिक्रमणात्

2. पूर्णवाक्यम् (क) भक्तवेतनयोः कालातिक्रमणात् भृताः भर्तुः अतिकुप्यन्ति सः सुमहान् अनर्थः स्मृतः।

3. भाषिककार्यम्-(क) भृताः (ख) अनर्थः

(ग) अतिकुप्यन्ति (घ) अनर्थ

प्रश्न 1.

उत्तर 1. पदानाम् अर्थलेखनम्-

(क) सूर्यः (ख) क्रोडे (ग) मन्त्री

(घ) हस्तेन (ङ) कल्याणम् (च) निंदनीयाः

(छ) निपुणताम्

उत्तर 2. (क) (i) गुप्तमन्त्रणाद्वारा राजानः निश्चयेन विजयं प्राप्नुवन्ति।

(ख) (ii) विद्वान् अर्थकाठिन्येषु महत् कल्याणं कुर्वन्ति।

(ग) (iii) हे भरत! त्वं कार्यं शीर्घं करोषि अथवा विलम्बेन।

(घ) (iv) सुरक्षिता मन्त्रणा राष्ट्रात् बहिः न प्रसरति।

उत्तर 3. (क) (i) कार्यं (ii) प्रारम्भं

(iii) विलम्बं (iv) कदाचन

(ख) (i) भोजनं (ii) वेतनं (iii) ददासि

(iv) विलम्बं

उत्तर 4. (क) (i) मन्त्रिणं (ii) शूराः

(iii) कुलीनाः (iv) कृताः

(ख) (i) कृशं (ii) भरतम्

(iii) रामः (iv) परिजग्राह

उत्तर 5. (i) (घ) (ii) (ग)

(iii) (ख) (iv) (क)

तृतीयः पाठः (सूक्तिसुधा)

पाठपरिचयः– प्रस्तुतपाठः चाणक्येन विरचितात् 'चाणक्यनीति' इत्यस्मात् ग्रन्थात्, नारायणपण्डितेन विरचितात् 'हितोपदेशः' इत्यस्मात् ग्रन्थात् च संकलितः। अस्मिन् पाठे प्रयुक्तानि नीतिपरकपद्यानि जीवनं सुसंस्कृतं सार्थकं च कर्तुं शक्ष्यन्ति।

मूल पाठः –

1. यस्मिन् देशे न सम्मानो न वृतिर्न च बान्धवाः।

न च विद्यागमः कश्चिद् वासं तत्र न कारयेत् ॥1॥

अन्वयः- यस्मिन् देशे न सम्मानः, न वृत्तिः, न च बान्धवाः, न च विद्यागमः तत्र वासं न कारयेत्।

प्रश्नाः

1. एकपदेन उत्तरत–

(क) यस्मिन् देशे सम्मानो न तत्र किं न कारयेत्?

(ख) कुत्र/कस्मिन् सम्मानाभावे वासं न कारयेत्?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(क) कीदृशे देशे वासं न कारयेत्?

3. भाषिक कार्यम्– (लघूत्तरात्मकम्)

(क) 'यस्मिन् देशे' अत्र 'यस्मिन्' इति सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम् ?

(ख) 'कश्चित् वासं न कारयेत्' अस्मिन् वाक्ये क्रियापदं किं प्रयुक्तम् ?

(ग) 'विद्याप्राप्तिः' पदस्य किं पर्यायपदं प्रयुक्तम् ?

(घ) 'असम्मानः' पदस्य किं विलोमपदं अत्र प्रयुक्तम्?

2. आतुरे व्यसने प्राप्ते दुर्भिक्षे शत्रुसंकटे।

राजद्वारे श्मशाने च यस्तिष्ठति स बान्धवः ॥2॥

अन्वयः– यः (जनः) आतुरे व्यसने प्राप्ते, दुर्भिक्षे, शत्रुसंकटे, राजद्वारे श्मशाने च तिष्ठति स (एव) बान्धवः।

कोऽतिभारः समर्थानां किं दूरं व्यवसायिनाम्।

को विदेशः सविद्यानां कोऽप्रियः प्रियवादिनाम् ॥3॥

अन्वयः– समर्थानां कः अतिभारः (अस्ति) व्यवसायिनाम् किं दूरं (अस्ति) सविद्यानां कः विदेशः, प्रियवादिनाम् कः अप्रियः (अस्ति)।

प्रश्नाः

1. एकपदेन उत्तरत्–

(क) शत्रुसंकटे यः तिष्ठति सः कः अस्ति?

(ख) केषां कृते कोऽपि विदेशः न अस्ति?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(क) बान्धवः कदा सह तिष्ठति?

(ख) केषां कृते कोऽपि अप्रियः नास्ति?

3. भाषिक कार्यम्– (लघूत्तरात्मकम्)

(क) 'यः तिष्ठति सः बान्धवः' अत्र क्रियापदं किं प्रयुक्तम्?

(ख) 'कटुभाषिणाम्' पदस्य विलोमपदं किं प्रयुक्तम्?

(ग) 'उद्योगिनाम्' पदस्य पर्यायपदं किं प्रयुक्तं तृतीये श्लोके?

(घ) 'यः तिष्ठति सः बान्धवः' अत्र 'सः' इति सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्?

3. काचः काञ्चनसंसर्गाद् धत्ते मारकतीं द्युतिम्।

तथा सत्सन्निधानेन मूर्खो याति प्रवीणताम् ॥4॥

अन्वयः– काञ्चनसंसर्गात् काचः मारकतीं द्युतिम् धत्ते तथा सत्सन्निधानेन मूर्खः प्रवीणतां याति।

कुसुमस्तबकस्येव द्वयी वृत्तिर्मनस्विनः।

सर्वेषां मूर्ध्नि वा तिष्ठेत् विशीर्येत वनेऽथवा ॥5॥

अन्वयः– मनस्विनः कुसुमस्तबकस्य इव द्वयी वृत्तिः (भवति)

सर्वेषां मूर्ध्नि वा तिष्ठेत् अथवा वने विशीर्येत।

प्रश्नाः

1. एकपदेन उत्तरत्–

(क) काचः कदा मारकतीं द्युतिं धत्ते?

(ख) सत्सन्निधानेन मूर्खः कां याति?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(क) मनस्विनः कीदृशी द्वयी वृत्तिः भवति ?

(ख) कुसुमस्तबकस्य इव कस्य वृत्तिः भवति ?

3. भाषिककार्यम्– (लघूत्तरात्मकम्)

(क) 'मूर्खो याति प्रवीणताम्' अत्र किं कर्तृपदं प्रयुक्तम् ?

(ख) 'विशीर्येत वनेऽथवा' अत्र किं क्रियापदं प्रयुक्तम् ?

(ग) 'कान्तिम्' पदस्य पर्यायपदं किं प्रयुक्तम् ?

(घ) 'विद्वान्' पदस्य किं विलोमपदं प्रयुक्तम् ?

4. धनानि जीवितं चैव परार्थे प्राज्ञ उत्सृजेत्।

सन्निमितं वरं त्यागो विनाशे नियते सति ॥6॥

अन्वयः– प्राज्ञः धनानि जीवितं च परार्थे एव उत्सृजेत्। विनाशे नियते सति सन्निमितं त्यागः वरम् (भवति)।

षड्दोषाः पुरुषेणेह हातव्या भूतिमिच्छता।

निद्रा तन्द्रा भयं क्रोध आलस्यं दीर्घसूत्रता ॥7॥

अन्वयः– इह भूतिमिच्छता पुरुषेण निद्रा, तन्द्रा, भयं, क्रोधः, आलस्यं, दीर्घसूत्रता (च इति एते) षड्दोषाः हातव्या।

प्रश्नाः

1. एकपदेन उत्तरत्–

   (क) परार्थे धनानि जीवितं च कः उत्सृजेत् ?

   (ख) भूतिमिच्छता पुरुषेण कति दोषाः हातव्या ?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत–

   (क) पुरुषेण के षड्दोषाः हातव्या?

   (ख) सन्निमितं त्यागः कदा वरं भवति?

3. भाषिककार्यम्– (लघूत्तरात्मकम्)

   (क) 'प्राज्ञ धनानि जीवितं उत्सृजेत्' अस्मिन् वाक्ये किं क्रियापदं प्रयुक्तम् ?

   (ख) 'निर्भयम्' पदस्य विलोमपदं किं प्रयुक्तम् ?

   (ग) 'ऐश्वर्यम्' पदस्य किं पर्यायपदं प्रयुक्तम् ?

   (घ) 'भूतिमिच्छता पुरुषेण' अनयोः विशेषणपदं किं प्रयुक्तम् ?

5. अर्थागमो नित्यमरोगिता च प्रिया च भार्या प्रियवादिनी च ।

वश्यश्च पुत्रोऽर्थकरी च विद्या षड् जीवलोकस्य सुखानि राजन् ॥8॥

अन्वयः– राजन्! अर्थागमो, नित्यमरोगिता च प्रिया च भार्या प्रियवादिनी च वश्यः च पुत्रः अर्थकरी च विद्या (एतानि) जीवलोकस्य षड्सुखानि सन्ति।

प्रश्नाः

1. एकपदेन उत्तरत्–

(क) भार्या कीदृशी स्यात् ?

(ख) का अर्थकरी भवेत् ?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(क) कस्य षड् सुखानि भवन्ति?

(ख) जीवलोकस्य षड्सुखानि कानि सन्ति?

3. भाषिककार्यम्– (लघूत्तरात्मकम्)

(क) 'धनप्राप्तिः' पदस्य पयार्यपदं किं प्रयुक्तम्?

(ख) 'रोगिता' पदस्य विलोमपदं किं प्रयुक्तम्?

(ग) 'अर्थकरी विद्या' इत्यनयोः विशेष्यपदं किं प्रयुक्तम्?

(घ) 'वश्यः पुत्रः' इत्यनयोः विशेषणं पदं किं प्रयुक्तम्?

प्रश्न 1. अधोलिखितवाक्येषु रेखांकितपदानां प्रसंगानुसारं सार्थकम् अर्थं लिखत–

(क) यस्मिन् देशे न सम्मानो न च <u>बान्धवाः</u>।

(ख) सन्निधानेन मूर्खो याति <u>प्रवीणताम्</u> ।

(ग) धनानि जीवितं चैव <u>परार्थे</u> प्राज्ञ उत्सृजेत्।

(घ) प्रिया च भार्या प्रियवादिनी च।

(ङ) सर्वेषां मूर्ध्नि वा तिष्ठेत्।

प्रश्न 2. प्रत्येकं अंशस्य प्रदत्तभावार्थत्रयात् शुद्धं भावार्थं चित्वा लिखत

(क) कोऽप्रियः प्रियवादिनाम्।

(i) प्रियवादी जनः सर्वेषां शत्रुः भवति।

(ii) सदा प्रियमेव वक्तव्यम्।

(iii) ये जनाः प्रियं वदन्ति तेषां कृते कोऽपि अप्रियः (शत्रुः) न भवति।

(ख) सन्निमितं वरं त्यागो विनाशे नियते सति।

(i) सर्वेषां विनाशः निश्चितः भवति।

(ii) यदि विनाशः नियतो भवति तर्हि सन्निमिताय कृतः त्यागः श्रेष्ठो भवति।

(iii) विनाशः कदापि न भविष्यति अतः त्यागः न करणीयः।

अथवा

प्रश्न 3. अधोलिखितपद्यस्य प्रदत्तभावार्थं मञ्जूषाप्रदतपदैः पूरयित्वा पुनः लिखत–

(क) काचः काञ्चनसंसर्गाद् धत्ते मारकतीं द्युतिम्।

तथा सन्निधानेन मूर्खो याति प्रवीणताम् ।।

भावार्थः– यथा सुवर्णस्य संसर्गात् (i) _____ अपि दीप्यमानं भवति तथैव (ii) _____ संगेन (iii) _____ अपि (iv) _____ प्रयाति।

मञ्जूषा– सज्जनानां, कुशलतां, काचः, मूर्खः

(ख) अर्थागमो नित्यमरोगिता च प्रिया च भार्या प्रियवादिनी च

वश्यश्च पुत्रोऽर्थकरी च विद्या षड् जीवलोकस्य सुखानि राजन् ।।

भावार्थः– हे राजन् ! धनस्य प्राप्तिः, सदैव (i) _____, प्रियदर्शिनी (ii) _____ च पत्नी, (iii) _____ पुत्रः, धनप्रदायिनी (iv) _____ च इमानि षड्सुखानि यस्य पार्श्वे भवन्ति, सः अस्मिन् संसारे सुखी जनः अस्ति।

मञ्जूषा– पितृभक्तः, विद्या, स्वास्थ्यलाभः, मधुरभाषिणी

प्रश्न 4. अधोलिखितपद्यस्य अन्वये रिक्तस्थानपूर्तिं कृत्वा अन्वयं पुनः लिखत–

(क) यस्मिन् देशे न सम्मानो न वृत्तिर्न च बान्धवाः।

न च विद्यागमः कश्चित् वासं तत्र न कारयेत् ।।

अन्वयः– यस्मिन् देशे न सम्मानः न (i) _____ न च (ii) _____ न च (iii) _____ तत्र कश्चित् (iv) _____ न कारयेत्।

(ख) कुसुमस्तबकस्येव द्वयी वृत्तिर्मनस्विनः।

सर्वेषां मूर्ध्नि वा तिष्ठेत् विशीर्येत वनेऽथवा।।

अन्वयः– मनस्विनः (i) _____ इव द्वयी (ii) _____ (भवति)

सर्वेषां (iii)_____ वा तिष्ठेत् अथवा (iv) _____ विशीर्येत।

प्रश्न 5. अधोलिखितानां 'क' स्तम्भस्य वाक्यांशानां 'ख' स्तम्भस्य वाक्यांशैः सह सार्थकं मेलनं कृत्वा वाक्यानि पुनः लिखत।

क	**ख**
1. षड्दोषाः पुरुषेणेह	(क) यस्तिष्ठति स बान्धवः
2. धनानि जीवितं चैव	(ख) कोऽप्रियः प्रियवादिनाम्
3. को विदेशः सविद्यानां	(ग) हातव्या भूतिमिच्छता
4. राजद्वारे श्मशाने च	(घ) परार्थे प्राज्ञ उत्सृजेत्

तृतीयः पाठः (सूक्तिसुधा)

(उत्तरमाला)

मूलपाठः–1

1. (क) वासं (ख) देशे

2. (क) यस्मिन् देशे सम्मानः वृतिः बान्धवाः विद्यागमः च न भवति तत्र वासं न कारयेत्।

3. (क) देशाय (ख) कारयेत् (ग) विद्यागमः (घ) सम्मानः

मूलपाठः–2

1. (क) बान्धवः (ख) सविद्यानाम्

2. (क) बान्धवः आतुरे व्यसने प्राप्ते दुर्भिक्षे शत्रुसंकटे राजद्वारे श्मशाने च सह तिष्ठति।

   (ख) प्रियवादिनां कृते कोऽपि अप्रियः नास्ति।

3. (क) तिष्ठति (ख) प्रियवादिनाम् (ग) व्यवसायिनाम्

   (घ) बान्धवाय

मूलपाठः–3

1. (क) काञ्चनसंसर्गाद (ख) प्रवीणताम्

2. (क) मनस्विनः कुसुमस्तबकस्य इव सर्वेषां मूर्ध्नि तिष्ठेत् अथवा वने विशीर्येत इति द्वयी वृत्तिः भवति।

   (ख) कुसुमस्तबकस्य इव मनस्विनः वृत्तिः भवति।

3. (क) मूर्खः (ख) विशीर्येत (ग) द्युतिम् (घ) मूर्ख

मूलपाठः–4

1. (क) प्राज्ञ (ख) षड्

2. (क) पुरुषेण निद्रा, तन्द्रा, भयं, क्रोधः, आलस्यं, दीर्घसूत्रता चेति षड्दोषाः हातव्या।

   (ख) विनाशे नियते सति सन्निमितं त्यागः वरं भवति।

3. (क) उत्सृजेत् (ख) भयं (ग) भूतिम् (घ) भूतिमिच्छता

मूलपाठः–5

1. (क) प्रियवादिनी (ख) विद्या

2. (क) जीवलोकस्य षड् सुखानि भवन्ति।

   (ख) अर्थागमो, नित्यमरोगिता, प्रिया, प्रियवादिनी भार्या, वश्यः पुत्रः अर्थकरी च विद्या एतानि जीवलोकस्य षड्सुखानि सन्ति।

3. (क) अर्थागमः (ख) अरोगिता (ग) विद्या (घ) वश्यः

उत्तर–1(क) मित्राणि (ख) कुशलताम् (ग) परहिताय (घ) पत्नी

(ङ) शिरसि

उत्तर–2(क) (iii) ये जनाः प्रियं वदन्ति तेषां कृते कोऽपि अप्रियः (शत्रुः) न भवति।

(ख) (ii) यदि विनाशः नियतो भवति तर्हि सन्निमित्ताय कृतः त्यागः श्रेष्ठो भवति।

उत्तर–3(क) (i) काचः (ii) सज्जनानां (iii) मूर्खः (iv) कुशलताम्

(ख) (i) स्वास्थ्यलाभः (ii) मधुरभाषिणी (iii) पितृभक्तः (iv) विद्या

उत्तर–4(क) (i) वृत्तिः (ii) बान्धवाः (iii) विद्यागमः (iv) वासं

(ख) (i) कुसुमस्तबकस्य (ii) वृत्तिः (iii) मूर्ध्नि (iv) वने

उत्तर–5 1. (ग), 2. (घ), 3. (ख), 4. (क)

पंचमः पाठः (वीरःसर्वदमनः)

पाठपरिचयः– प्रस्तुतः पाठः 'महाकविना कालिदासेन' विरचितात् 'अभिजानशाकुन्तलम्' नाटकस्य सप्तम्-अंङ्कात् संकलितोऽस्ति। अस्मिन् पाठे शकुन्तलादुष्यन्तयोः पुत्रस्य सर्वदमनस्य शैशवावस्थायाः चित्रणम् अस्ति। शैशवे सर्वदमनः अतीव वीरः आसीत्। तस्य वीरतायाः वर्णनमस्मिन् पाठे कृतम्।

मूलपाठाः 1.

दुष्यन्तः (निमित्तं सूचयित्वा)

मरोरथाय नाशंसे किं बाहो स्पन्दसे वृथा।

पूर्वावधीरितं श्रेयो दुःखाय परिवर्तते ।।1।।

(नेपथ्ये)

मा खलु चापलं कुरु। कथं गत एवात्मनः प्रकृतिम्?

अन्वयः- हे बाहो ! वृथा किं स्पन्दसे, मनोरथाय न आंशसे, पूर्वम् अवधीरितं श्रेयः दुःखाय परिवर्तते।

प्रश्नाः

1. एकपदेन उत्तरत्–

(क) दुष्यन्तः कस्मै नाशंसे?

(ख) वृथा कः स्पन्दते?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(क) पूर्वावधीरितं श्रेयः कस्मै परिवर्तते?

(ख) आत्मनः कां गतः?

3. भाषिककार्यम्– (लघूत्तरात्मकम्)

(क) 'सुखाय' पदस्य किं विलोमपदं प्रयुक्तम्?

(ख) 'श्रेयः दुःखाय परिवर्तते' अस्मिन् वाक्ये किं क्रियापदं प्रयुक्तम्?

(ग) 'किं बाहो स्पन्दसे वृथा' अत्र किं अव्ययपदं प्रयुक्तम्?

(घ) 'पूर्वावधीरितं श्रेयः' अत्र विशेष्यपदं किं प्रयुक्तम्?

मूलपाठः 2.

दुष्यन्तः – (कर्णं दत्त्वा)

अभूमिरियमविनयस्य। को नु खल्वेष निषिध्यते।

(शब्दानुसारेणावलोक्य सविस्मयम्) अये, को नु खल्वयम् अनुबध्यमानस्तपस्विनीभ्याम् अबालसत्त्वो बालः।

अर्धपीतस्तनं मातुरामर्दकिलष्टकेसरम्।

प्रकीडितुं सिंहशिशुं बलात्कारेण कर्षति ।।2।।

अन्वयः- मातुः अर्धपीतस्तनं आभर्दक्लिष्टकेसरं सिंहशिशुं प्रकीडितुं बलात्कारेण कर्षति।

प्रश्नाः

1. एकपदेन उत्तरत्–

(क) अयं बालः काभ्याम् अनुबध्यमानः ?

(ख) इयं कस्य अभूमिः ?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(क) बालः कीदृशं सिंहशिशुं कर्षति ?

(ख) बालः सिंहशिशुं कथं कर्षति ?

3. भाषिककार्यम्– (लघूत्तरात्मकम्)

(क) 'अर्धपीतस्तनं सिंहशिशुं' अत्र विशेषणपदं किं प्रयुक्तम् ?

(ख) 'बालः सिंहशिशुं कर्षति' अत्र किं क्रियापदं प्रयुक्तम् ?

(ग) 'विनयस्य' विलोमपदं किं प्रयुक्तम् ?

(घ) 'अयं तपस्विनीभ्याम् अनुबध्यमानः' अत्र कर्तृपदं किं प्रयुक्तम् ?

मूलपाठः 3.

बालः –जृम्भस्व सिंह ! दन्ताँस्ते गणयिष्ये।

प्रथमा –अविनीत ! किं नोऽपत्यर्निविशेषाणि षत्त्वानि विप्रकरोषि ? हन्त ! वर्धते ते संरम्भः। स्थाने

खलु ऋषिजनेन सर्वदमन इति कृतनामधेयोऽसि।

दुष्यन्तः – किं न खलु बालेऽस्मिन् औरस इव पुत्रे स्निह्यति

मे मनः ? नूनमनपत्यता मां वत्सलयति।

द्वितीया–एषा खलु केसरिणी त्वां लङ्घयिष्यति यद्यस्याः

पुत्रकं न मुञ्चसि।

बालः –(सस्मितम्) अहो बलीयः खलु भीतोऽस्मि।

(इत्यधरं दर्शयति) ।

प्रथमा –वत्स ! एनं बालमृगेन्द्रं मुञ्च, अपरं ते क्रीडनकं दास्यामि।

बालः –कुत्र, देहि तत् (इति हस्तं प्रसारयति)

द्वितीया–सुव्रते ! न शक्य एष वाचामात्रेण विरमयितुम्।

गच्छ त्वम्। मदीये उटजे मृत्तिकामयूरस्तिष्ठति।

तमस्योपहर।

प्रश्नाः

1. एकपदेन उत्तरत्–

   (क) अपत्यनिर्विशेषाणि कानि विप्रकरोषि?

   (ख) केन "सर्वदमनः" इति नामधेयः कृतः?

   (ग) ते अपरं किं दास्यामि?

   (घ) उटजे कः तिष्ठति?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत–

   (क) दुष्यन्तस्य मनः कुत्र/कस्मिन् स्निह्यति?

   (ख) बालः सिंहं किं कथयति?

   (ग) केसरिणी बालं किमर्थं लङ्घयिष्यति?

   (घ) एषः केन विरमयितुं न शक्यः?

3. भाषिककार्यम्– (लघूत्तरात्मकम्)

   (क) 'अपत्यनिर्विशेषाणि षत्त्वानि' इत्यनयोः विशेष्यपदं किं प्रयुक्तम्?

   (ख) 'पुत्रे स्निह्यति मे मनः' अत्र किं कर्तृपदं प्रयुक्तम्?

   (ग) 'कथनमात्रेण' पदस्य पर्यायपदं किं प्रयुक्तम्?

   (घ) 'विनीत !' पदस्य विलोमपदं किं प्रयुक्तम्?

मूलपाठः 4.

बालः – अनेनैव तावत् क्रीडिष्यामि। (इति तापसीं विलोक्य हसति)

तापसी – भवतु । न मामयं गणयति। (राजानमवलोक्य) भद्रमुख! मोचयानेन बाध्यमानं बालमृगेन्द्रम्।

दुष्यन्तः – आकारसदृशं चेष्टितमेवास्य कथयति। (आत्मगतम्)

अनेन कस्यापि कुलाङ्कुरेण

स्पृष्टस्य गात्रेषु सुखं ममैवम्।

कां निर्वृत्तिं चेतसि तस्य कुर्याद्

यस्यायमङ्कात् कृतिनः प्ररूढः ।।3।।

अन्वयः– कस्यापि स्पृष्टस्य अनेन कुलाङ्कुरेण मम गात्रेषु एवं सुखं यस्य कृतिनः अङ्कात् अयं प्ररूढः तस्य चेतसि कां निर्वृत्तिं कुर्यात्।

प्रश्नाः

1. एकपदेन उत्तरत्–

   (क) भद्रमुख ! अनेन कं मोचय?

   (ख) अस्य चेष्टितं कीदृशम् अस्ति?

   (ग) मम केषु सुखम्?

   (घ) यस्य कृतिनः कस्मात् अयं प्ररूढः?

   (ङ) अयं कां न गणयति?

   (च) बालः कां विलोक्य हसति?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत–

   (क) दुष्यन्तस्य गात्रेषु सुखं कथं जातम्?

   (ख) दुष्यन्तः आत्मगतं किं कथयति?

   (ग) अयं बालः कस्य चेतसि निवृत्तिं कुर्यात्?

3. भाषिककार्यम्– (लघूत्तरात्मकम्)

(क) 'मनसि' पदस्य पर्यायपदं किं प्रयुक्तम् ?

(ख) 'तस्य चेतसि निवृत्तिं कुर्याद्' अत्र क्रियापदं किं प्रयुक्तम्?

(ग) भद्रमुख ! इति पदं कस्मै प्रयुक्तम्?

(घ) 'प्रकाशम्' पदस्य किं विलोमपदं अत्र प्रयुक्तम्?

मूलपाठः 5.

(बालमुपलालयन्) प्रकाशम्

दुष्यन्तः - अथ कोऽस्य व्यपदेशः?

तापसी – पुरुवंशः।

दुष्यन्तः – (आत्मगतम्) कथमेकान्वयो मम? (प्रविश्य)

तापसी – वत्स सर्वदमन ! शकुन्तलावण्यं प्रेक्षस्व।

बालः – कुत्र वा मामम्बा?

दुष्यन्तः – (आत्मगतम्) किं वा शकुन्तलेत्यस्य मातुराख्या?

बालः – रोचते मे एषः मयूरः। (इति क्रीडनकमादत्ते)

प्रश्नाः

1. एकपदेन उत्तरत–

(क) अस्य कः व्यपदेशः?

(ख) वत्स ! किं प्रेक्षस्व?

(ग) बालाय कः रोचते?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(क) पुरुवंशः कस्य व्यपदेशः?

(ख) दुष्यन्तः (आत्मगतम्) बालस्य मातुः विषये किं चिन्तयति?

3. भाषिककार्यम्– (लघूत्तरात्मकम्)

(क) 'व्यपदेशः' पदस्य किं पर्यायपदं अत्र प्रयुक्तम्?

(ख) 'रोचते मे एषः मयूरः' अत्र कर्तुपदं किं प्रयुक्तम्?

(ग) 'पश्य' पदस्य पर्यायपदं किं प्रयुक्तम्?

(घ) 'निर्गत्य' पदस्य किं विलोमपदं अत्र प्रयुक्तम्?

प्रश्न 1. अधोलिखितेषु वाक्येषु रेखांकितपदानां प्रसंगानुसारं सार्थकम् अर्थं लिखत–

(क) तस्य चेतसि निवृत्तिं कुर्यात्।

(ख) बालेऽस्मिन् औरस इव पुत्रे स्निह्यति मे मनः।

(ग) यस्यायमङ्कात् कृतिनः प्ररूढः।

(घ) शकुन्तलावण्यं प्रेक्षस्व।

(ङ) नूनमनपत्यता मां वत्सलयति।

प्रश्ना 2. प्रत्येकं अंशस्य प्रदत्तभावार्थत्रयात् शुद्धं भावार्थं चित्वा लिखत–

(क) वत्स सर्वदमन ! शकुन्तलावण्यं प्रेक्षस्व

(i) वत्स ! सर्वदमनः शकुन्तलायाः पुत्रः अस्ति।

(ii) वत्स सर्वदमन ! अस्य पक्षिणः सौन्दर्यं पश्य।

(iii) मम वत्सः सर्वदमनः शकुन्तलां पश्यति।

(ख) किं नोऽपत्यर्निविशेषाणि सत्त्वानि विप्रकरोषि ?

(i) त्वं अस्माकं पुत्रवत् पालितानां जीवानां कृते किमर्थं उद्वेगं जनयसि।

(ii) त्वं अस्माकं पुत्रान् पालयसि।

(iii) किमर्थं मम सन्ततिः विशेषसत्त्वानि सन्ति।

प्रश्न 3. अधोलिखितपद्यस्य प्रदत्तं भावार्थं मञ्जूषाप्रदतपदैः पूरयित्वा पुनः लिखत–

(क) मनोरथाय नाशंसे किं बाहो स्पन्दसे वृथा।

पूर्वावधीरितं श्रेयो दुःखाय परिवर्तते।।

भावार्थः– हे मम बाहो ! अहं मनोरथपूर्तेः (i) _____ न करोमि। त्वं व्यर्थमेव (ii) _____ करोषि। पूर्वस्मिन् काले (iii) _____ कल्याणं (iv) _____ कारणं भवति।

मञ्जूषा – स्पन्दनं, तिरस्कृतं, कामनां, दुःखस्य

(ख) अनेन कस्यापि कुलाङ्कुरेण

स्पृष्टस्य गात्रेषु सुखं ममैवम्।

कां निर्वृत्तिं चेतसि तस्य कुर्याद्

यस्यायमङ्कात् कृतिनः प्ररूढः।।

भावार्थः– अनेन अन्यस्मिन् कुले (i) _____ बालकस्य (ii) _____ यदि मम शरीरे सुखस्य (iii) _____ भवति तर्हि अस्य पित्रोः अङ्के यदा एषः गमिष्यति तदा कीदृशम् (iv) _____ भविष्यति।

मञ्जूषा – स्पर्शेन, अनुभूतिः, उत्पन्नस्य, आनन्दम्

प्रश्न 4. अधोलिखितस्य श्लोकद्वयस्य प्रदत्तान्वये रिक्तस्थानपूर्तिं कृत्वा अन्वयं पुनः लिखत–

(क) अर्धपीतस्तनं मातुरामर्दक्लिष्टकेसरम्।

प्रकीडितुं सिंहशिशुं बलात्कारेण कर्षति।।

अन्वयः– मातुः (i) _____ आमर्द (ii) _____ सिंहशिशुं (iii) _____ बलात्करेण (iv) _____ ।

(ख) मनोरथाय नांशसे किं बाहो स्पन्दसे वृथा।

पूर्वावधीरितं श्रेयो दुःखाय परिवर्तते।।

अन्वयः– हे बाहो ! वृथा किं (i) _____ , (ii) _____ न आंशसे, पूर्वम् (iii)_____ श्रेयः (iv) _____ परिवर्तते।

प्रश्न 5. अधोलिखितानां 'क' स्तम्भस्य वाक्यांशानां 'ख' स्तम्भस्य वाक्यांशैः सह सार्थकं मेलनं कृत्वा वाक्यानि पुनः लिखत।

क	**ख**
1. प्रकीडितुं सिंहशिशुं	(क) अपरं ते क्रीडनकं दास्यामि
2. एनं बालमृगेन्द्रं मुञ्च	(ख) मृत्तिकामयूरस्तिष्ठति
3. स्थाने खलु ऋषिजनेन	(ग) बलात्कारेण कर्षति
4. मदीये उटजे	(घ) सर्वदमन इति कृतनामधेयोऽसि

पंचमः पाठः (वीरःसर्वदमनः)

(उत्तरमाला)

मूलपाठः–1

1. (क) मनोरथाय (ख) बाहुः

2. (क) पूर्वावधीरितं श्रेयः दुःखाय परिवर्तते।

   (ख) आत्मनः प्रकृतिं गतः।

3. (क) दुःखाय (ख) परिवर्तते (ग) वृथा (घ) श्रेयः

मूलपाठः–2

1. (क) तपस्विनीभ्याम् (ख) अविनयस्य

2. (क) बालः अर्धपीतस्तनं मातुः आमर्दक्लिष्टकेसरं सिंहशिशुं कर्षति।

   (ख) बालः सिंहशिशुं बलात्कारेण कर्षति।

3. (क) अर्धपीतस्तनम् (ख) कर्षति (ग) अविनयस्य (घ) अयम्

मूलपाठः–3

1. (क) सत्त्वानि (ख) ऋषिजनेन

   (ग) क्रीडनकं (घ) मृत्तिकामयूरः

2. (क) दुष्यन्तस्य मनः बालेऽस्मिन् औरस इव पुत्रे स्निह्यति।

   (ख) बालः सिंहं कथयति यत् जृम्भस्व सिंह ! दन्तास्ते गणयिष्ये।

   (ग) यद्यस्याः पुत्रकं न मुञ्चति तर्हि केसरिणी बालं लङ्घयिष्यति।

   (घ) एषः वाचामात्रेण विरमयितुं न शक्यः।

3. (क) सत्त्वानि (ख) मनः (ग) वाचामात्रेण (घ) अविनीत !

मूलपाठः–4

1. (क) बालमृगेन्द्रम् (ख) आकारसदृशम्

   (ग) गात्रेषु (घ) अङ्कात्

   (ङ) माम् / तापसीम् (च) तापसीम्

2. (क) अनेन कस्यापि कुलाङ्कुरेण स्पृष्टस्य दुष्यन्तस्य गात्रेषु सुखं जातम्।

   (ख) दुष्यन्तः आत्मगतं कथ्यति यत् आकारसदृशं चेष्टितम् अस्य।

   (ग) अयं बालः यस्य कृतिनः अङ्कात् प्ररूढः तस्य चेतसि निर्वृत्तिं कुर्यात्।

3. (क) चेतसि (ख) कुर्याद् (ग) राज्ञे (घ) आत्मगतम्

मूलपाठः–5

1. (क) पुरुवंशः (ख) शकुन्तलावण्यं (ग) मयूरः

2. (क) पुरुवंशः बालस्य व्यपदेशः।

   (ख) दुष्यन्तः (आत्मगतम्) बालस्य मातुः विषये चिन्तयति यत् किं वा शकुन्तलेत्यस्य मातुराख्या।

3. (क) अन्वयः (ख) मयूरः (ग) प्रेक्षस्व (घ) प्रविश्य

उत्तर–1 (क) आनन्दः (ख) आत्मीयः (ग) उत्पन्नः (घ) पक्षी

(ङ) सन्तानहीनता

उत्तर–2(क) (ii) वत्स सर्वदमन ! अस्य पक्षिणः सौन्दर्यं पश्य।

(ख) (i) त्वम् अस्माकं पुत्रवत् पालितानां जीवानां कृते उद्वेगं जनयसि।

उत्तर–3(क) कामनां (ii) स्पन्दनं (iii) तिरस्कृतं (iv) दुःखस्य

(ख) (i) उत्पन्नस्य (ii) स्पर्शेन (iii) अनुभूतिः (iv) आनन्दम्

उत्तर-4 (क) (i) अर्धपीतस्तनं (ii) क्लिष्टकेसरम् (iii) प्रकीडितुं (iv) कर्षति

(ख) (i) स्पन्दसे (ii) मनोरथाय (iii) अवधीरितं (iv) दुःखाय

उत्तर-5 1. (ग) 2. (क) 3. (घ) 4. (ख)

षष्ठः पाठः (शुकशावकोदन्तः)

ग्रन्थः – कादम्बरी

कविः – बाणभट्टः

प्रथमः मूलपाठः – अस्ति मध्यदेशालङ्कारभूता मेखलेव भुवो विन्ध्याटवी नाम। तस्यां च पम्पाभिधानं पद्मसरः। तस्य पश्चिमे तीरे महाजीर्णः शाल्मलीवृक्षः। तस्यैवैकस्मिन् कोटरे निवसतः कथमपि पितुरहमेव सूनुरभवम्। ममैव जायमानस्य प्रसववेदनया जननी मे लोकान्तरमगमत्। तातस्तु सुतस्नेहादन्तर्निगृह्य शोकं मत्संवर्धनपर एवाभवत्। परनीडनिपतिताभ्यः शालिवल्लरीभ्यस्तण्डुलकणान् शुककुलावदलितानि च फलशकलानि समाहृत्य मह्यमदात्। मदुपभुक्तशेषमेवाकरोदशनम्।

प्रश्नाः

1. एकपदेन उत्तरत्–

   (क) किम् अभिधानं पद्मसरः?

   (ख) शाल्मलीवृक्षः कुत्र आसीत्?

   (ग) का लोकान्तरमगमत्?

   (घ) कः मत्संवर्धनपरः अभवत्?

   (ङ) तातः फलशकलानि कस्मै अदात्?

   (च) तातः किम् अश्नाति।

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत–

   (क) पम्पाभिधानं पद्मसरः कुत्र आसीत्?

   (ख) तातः कानि समाहृत्य मह्यम् अदात्?

   (ग) मम जननी कथं लोकान्तरमगमत्?

3. भाषिककार्यम्– (लघूत्तरात्मकम्)

(क) 'मे जननी लोकान्तरमगमत्' अत्र 'मे' इति सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम् ?

(ख) 'पुत्रः' पदस्य पर्यायपदं किं प्रयुक्तम् ?

(ग) 'अशेषम्' पदस्य किं विलोमपदमत्र प्रयुक्तम् ?

(घ) 'महाजीर्णः शाल्मलीवृक्षः' अनयोः पदयोः विशेष्यपदं किं प्रयुक्तम् ?

द्वितीय मूलपाठः - एकदा तु प्रत्यूषसि सहसैव तस्मिन् वने मृगयाकोलाहलध्वनिरुदचरत्। आकर्ण्य च तमहमुपजातवेपथुरर्भकतया भयविह्वलः पितुः पक्षपुटान्तरमविशम्। अचिराच्च प्रशान्ते तस्मिन् क्षोभितकानने मृगयाकलकले पितुरुत्सङ्गादीषदिव निष्क्रम्य कोटरस्थ एव शिरोधरां प्रसार्य किमिदमिति दिदृक्षुरभिमुखमापतच्छबरसैन्यमद्राक्षम्। मध्ये च तस्य प्रथमे वयसि वर्तमानं शबरसेनापतिमपश्यम्।

प्रश्नाः

1. एकपदेन उत्तरत्–

(क) कुत्र मृगयाकोलाहलध्वनिरुदचरत्?

(ख) भयविह्वलः शुकशावकः कस्य पक्षपुटान्तरमविशम्?

(ग) शुकशावकः कां प्रसार्य अपश्यत्?

(घ) शुकशावकः शबरसेनायाः मध्ये कम् अपश्यत्?

(ङ) सः कुतः ! कस्मात् निष्क्रम्य शबरसैन्यमद्राक्षत्?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(क) एकदा प्रत्यूषसि तस्मिन् वने किम् अभवत्?

(ख) कीदृशः शुकशावकः पितुः पक्षपुटान्तरपविशत्?

(ग) शुकशावकः कदा शिरोधरां प्रसार्य शबरसैन्यमद्राक्षत्?

3. भाषिककार्यम्– (लघूत्तरात्मकम्)

(क) 'अन्तिमेवयसि' पदस्य किं विलोमपदं अत्र प्रयुक्तम्?

(ख) 'क्षोभितः' पदस्य विलोमपदं किं प्रयुक्तम्?

(ग) 'शबरसेनापतिमपश्यम्' अत्र किं क्रियापदं प्रयुक्तम्?

(घ) 'प्रथमे वयसि' इत्यनयोः पदयोः किं विशेषणपदम् प्रयुक्तम्?

तृतीयः मूलपाठः – आसीच्च मे मनसि - 'अहो मोहप्रायमेतेषां जीवितम्। आहारो मधुमांसादिः, श्रमो मृगया, शास्त्रं शिवारुतं प्रज्ञा शकुनिज्ञानम्। यस्मिन्नेव कानने निवसन्ति तदेवोत्खातमूलमशेषतः कुर्वन्ति। इति चिन्तयत्येव मयि शबरसेनापतिः स आगत्य तस्यैव तरोरधश्छायायां परिजनोपनीतपल्लवासने समुपाविशत्। आपीतसलिलो भुक्तमृणालिकश्चोत्थायापगतश्रमः सकलेन सैन्येन सहाभिमतं दिशमयासीत्।'

प्रश्नाः

1. एकपदेन उत्तरत–

(क) शबराणां जीवितं कीदृशम् आसीत् ?

(ख) पल्लवासने कः उपाविशत् ?

(ग) शबराः यस्मिन् कानने निवसन्ति तत्र किं कुर्वन्ति ?

(घ) अपगतश्रमः शबरसेनापतिः केन सहाभिमतं दिशमयासीत्?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(क) शबरसेनापतिः कुत्र उपाविशत् ?

(ख) कीदृशः सेनापतिः अभिमतं दिशमयासीत् ?

3. भाषिककार्यम्– (लघूत्तरात्मकम्)

(क) 'वृक्षस्य' इति पदस्य पर्यायपदं किं प्रयुक्तम् ?

(ख) 'श्रान्तः' पदस्य विलोमपदं किं प्रयुक्तम् ?

(ग) 'शबरसेनापतिः तरोरधः छायायाम् उपाविशत्' अत्र कर्तृपदं किं प्रयुक्तम् ?

(घ) 'आपीतसलिलः शबरसेनापतिः' इत्यनयोः विशेषणपदं किं प्रयुक्तम्

चतुर्थः मूलपाठः – एकतमस्तु जरच्छबरस्तस्मिन्नेव तरुतले मुहूर्तमिव व्यलम्बत। अन्तरिते च सेनापतौ स सुचिरमारुरुक्षुः तं वनस्पतिमामूलादपश्यत्। उत्क्रान्तमिव तस्मिन् क्षणे तदालोकनभीतानां शुककुलानामसुभिः। किमिव हि दुष्करमकरुणानाम्। यतः स तमयत्नेनैव पादपमारुह्य फलानीव तस्य वनस्पतेः कोटरेभ्यः शुकशावकानग्रहीत् अपगतासूंश्च कृत्वा क्षितावपातयत्।

प्रश्नाः

1. एकपदेन उत्तरत्–

(क) कः तरुतले मुहूर्तमिव व्यलम्बत ?

(ख) सः कं आमूलादपश्यत् ?

(ग) केषां कृते किमपि दुष्करं न अस्ति ?

(घ) सः केभ्यः शुकशावकान् अग्रहीत् ?

(ङ) अपगतासून् शुकशावकान् कुत्र अपातयत् ?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(क) जरच्छबरः शुकशावकान् कथम् अग्रहीत् ?

(ख) जरच्छबरः वनस्पतिं कदा अपश्यत् ?

3. भाषिककार्यम्– (लघूत्तरात्मकम्)

(क) 'वृक्षम्' पदस्य पयार्यपदं किं प्रयुक्तम् ?

(ख) 'सुकरम्' पदस्य विलोमपदं किं प्रयुक्तम् ?

(ग) 'स शुकशावकान् अग्रहीत्' अत्र किं क्रियापदं प्रयुक्तम् ?

(घ) 'तं वनस्पतिमामूलादपश्यत्' अत्र 'तं' इति सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम् ?

पंचमः मूलपाठः – तातस्तु तदवलोक्य विषादशून्यामश्रुजलप्लुतां दृशमितस्ततो विक्षिपन् पक्षसंपुटेनाच्छाद्य मां स्नेहपरवशो मद्रक्षणाकुलोऽभवत्। असावपि पापः क्रमेण शाखान्तरैः सञ्चरमाणो मत्कोटरद्वारमागत्य भुजङ्गभीषणं प्रसार्य बाहुं मुहुर्मुहुर्दत्तचञ्चुप्रहारमुत्कूजन्तमाकृष्य तातमपगतासुमकरोत् मां तु स्वल्पत्वात् कथमपि नालक्षयत्। उपरतं च तमवनितलेऽमुञ्चत्। अहमपि तच्चरणान्तराले प्रवेशितशिरोधरो निभृतमङ्कनिलीनस्तेनैव सह पवनवशसम्पुञ्जितस्य शुष्कपत्रराशेरुपरि पतितमात्मानमपश्यम्। यावच्चासौ तरुशिखरान्नावतरति तावदहं पितरमुपरतमुत्सृज्य नृशंस इव स्नेहरसानभिज्ञो भयेनैव केवलमभिभूयमानो लुठन्नितस्ततो नातिदूरवर्तिनस्तमालपादपस्य मूलदेशमविशम्।

प्रश्नाः

1. एकपदेन उत्तरत्–

(क) तातः केन आच्छाद्य मां अरक्षत्?

(ख) असौ पापः कीदृशं बाहुं प्रसार्य तातम् अपगतासुम् अकरोत्?

(ग) सः कम् अवनितलेऽमुञ्चत्?

(घ) शुकशावकः आत्मानं कुत्र पतितम् अपश्यत्?

(ङ) शुकशावकः कस्य मूलदेशस्य अविशत्?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(क) असौ पापः तातं कथं अपगतासुम् अकरोत्?

(ख) शुकशावकः किं कृत्वा नृशंस इव तमालपादपस्य मूलदेशम् अविशत्?

3. भाषिककार्यम्– (लघूत्तरात्मकम्)

(क) 'अश्रुजलप्लुतां दृशम्' इत्यनयोः विशेष्यपदं किं प्रयुक्तम्?

(ख) 'भुजङ्गभीषणं बाहुं' इत्यनयोः पदयोः किं विशेषणपदम्?

(ग) 'अहमपि शुष्कपत्रराशेरुपरि पतितमात्मानमपश्यम्' अत्र कर्तृपदं किं प्रयुक्तम् ?

(घ) 'आम्रवृक्षः' पदस्य पर्यायपदं किं प्रयुक्तम् ?

(ङ) 'आरोहति' पदस्य विलोमपदं किं प्रयुक्तम् ?

षष्ठः मूलपाठः - अजातपक्षतया च मुहुर्मुहुर्मुखेन पततः स्थूल-स्थूलं श्वसतो धूलिधूसरितस्य संसर्पतो मम समभून्मनसि नास्ति जीवितादन्यदभिमततरमिह जगति सर्वजन्तूनाम्। एवमुपरतेऽपि ताते यदहं जिजीविषामि। धिङ्मामकरुणमतिनिष्ठुरमकृतज्ञम्। खलं हि खलु मे हृदयम्। तातेन यत्कृतं सर्वं तदेकपदे मया विस्मृतम्। सर्वथा न कञ्चिन्न खलीकरोति जीवनाशा यदीदृगवस्थमपि मामायासयति जलाभिलाषः। दिवसस्य चेयमतिकष्टा दशा वर्तते। आतपसन्तप्तपांसुला भूमिः। पिपासावसन्नानि गन्तुमनल्पमपि मे नालमङ्गकानि। अप्रभुरस्म्यात्मनः। सीदति मे हृदयम्। अन्ध-कारतामुपयाति मे चक्षुः। अपि नाम खलो विधिरनिच्छतोऽपि मे मरणमद्यैवोपपादयेत्।

प्रश्नाः

1. एकपदेन उत्तरत्-

(क) शुकशावकः कथं श्वसति?

(ख) केषां कृते जीवनम् अभिमततरम् अस्ति?

(ग) शुकशावकस्य हृदयं कीदृशम् अस्ति?

(घ) का कमपि खलीकरोति?

(ङ) दिवसस्य कीदृशी दशा वर्तते?

(च) शुकशावकः आत्मनः कः अस्ति?

(छ) कस्य हृदयं सीदति?

(ज) शुकशावकस्य चक्षुः काम् उपयाति?

(झ) कः अनिच्छतोऽपि शुकशावकस्य मरणं निश्चितं करोति?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत-

(क) कीदृशं मां धिक्?

(ख) केन कारणेन शुकशावकः मुहुर्मुहुमुखेन पतति?

(ग) शुकशावकेन किं विस्मृतम्?

3. भाषिककार्यम्- (लघूत्तरात्मकम्)

(क) 'सर्वथा न कञ्चिन्न खलीकरोति जीवनाशा' अत्र किं कर्तृपदं प्रयुक्तम्?

(ख) 'धिक् माम् अकरुणम्' अत्र किं विशेषणपदं प्रयुक्तम्?

(ग) 'प्रभुः' पदस्य विलोमपदं किं प्रयुक्तम्?

(घ) 'संसारे' पदस्य पयार्यपदं किं प्रयुक्तम्?

सप्तमः मूलपाठः – इत्येवं चिन्तथत्येव मयि हारीतनामा जाबालमुनितनयः सवयोभिरपरैर्मुनिकुमारकैः सह तेनैव पथा तदेव कमलसरः सिस्नासुरुपागमत्। प्रायेणाकारणमित्राण्यतिकरुणार्द्राणि च भवन्ति सतां चेतांसि। यतः स तदवस्थमवलोक्य मां सरस्तीरमानाययत्, स्वयं चादाय सलिलबिन्दूनपाययत्। समुपजातप्राणं मां छायायां निधायाकरोत् स्नानविधिम्। अभिषेकावसाने सकलेन मुनिकुमारकदम्बकेनानुगम्यमानो मां गृहीत्वा तपोवनमगच्छत्।

प्रश्नाः

1. एकपदेन उत्तरत्–

(क) हारीतः कस्य पुत्रः आसीत् ?

(ख) केषां चेतांसि करुणार्द्राणि भवन्ति ?

(ग) सः मां कुत्र आनाययत् ?

(घ) शुकशावकं छायायां निधाय हारीतः किम् अकरोत् ?

(ङ) हारीतः शुकशावकं गृहीत्वा कुत्र अगच्छत् ?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(क) सतां चेतांसि कीदृशानि भवन्ति?

(ख) हारीतः शुकशावकम् अवलोक्य किम् अकरोत्?

(ग) हारीतः कदा तपोवनम् अगच्छत्?

3. भाषिककार्यम्– (लघूत्तरात्मकम्)

(क) 'पद्मसरः' पदस्य पर्यायपदं किं प्रयुक्तम्?

(ख) 'शत्रवः' पदस्य विलोमपदं किं प्रयुक्तम् ?

(ग) 'मां गृहीत्वा तपोवनमगच्छत्' अत्र क्रियापदं किं प्रयुक्तम् ?

(घ) 'करुणार्द्राणि चेतांसि' इत्यनयोः पदयोः किं विशेष्यपदं अत्र प्रयुक्तम् ?

प्रश्न 1. अधोलिखितवाक्येषु रेखांकितपदानां प्रसंगानुसारं सार्थकम् अर्थं लिखत–

(क) मदुपभुक्तमशेषमेवाकरोदशनम्।

(ख) आकर्ण्य च तमहमुपजातवेपथुः

(ग) शुककुलानामसुभिः

(घ) उपरतं च तमवनितलेऽमुञ्चत्

(ङ) आतपसन्तप्तपांसुला भूमिः।

(च) कमलसरः सिस्नासुरुपागमत्।

प्रश्न 2. प्रत्येकम् अंशस्य प्रदत्तभावार्थत्रयात् शुद्धं भावार्थं चित्वा लिखत–

(क) सर्वथा न कञ्चिन्न खलीकरोति जीवनाशा।

(i) जीवनस्य आशा सर्वं खलीकरोति।

(ii) जीवनेच्छा सर्वं विनाशयति।

(iii) जीवनस्य आशा सर्वथा कञ्चित् जनं न खलीकरोति।

(ख) नास्ति जीवितादन्यदभिमतरमिह जगति सर्वजन्तूनाम्।

(i) सर्वप्राणिनां कृते किमपि अभीष्टं न अस्ति।

(ii) अस्मिन् संसारे सर्वेषां जन्तूनां कृते जीवितात् अन्यद् अभिमतं किमपि न अस्ति।

(iii) सर्वे जनाः जीवनं न वाञ्छन्ति।

प्रश्न 4. अधोलिखितानां 'क' स्तम्भस्य वाक्यांशानां 'ख' स्तम्भस्य वाक्यांशैः सह सार्थकं मेलनं कृत्वा वाक्यानि पुनः लिखत।

क	ख
1. एकदा तु प्रत्यूषसि सहसैव	(क) मेखलेव भुवो विन्ध्याटवी नाम
2. किमिव हि दुष्करम्	(ख) मे चक्षुः
3. अन्धकारताम् उपयाति	(ग) मां गृहीत्वा तपोवनमगच्छत्
4. मुनिकुमारकदम्बकेनानुगम्यमानो	(घ) अकरुणानाम्
5. अस्ति मध्यदेशालङ्कारभूता	(ङ) तस्मिन् वने मृगयाकोलाहलध्वनिरुदचरत्।

षष्ठः पाठः (शुकशावकोदन्तः)

(उत्तरमाला)

मूलपाठः–1

1. (क) पम्पाभिधानम् (ख) पश्चिमे तीरे (ग) जननी
   (घ) तातः (ङ) मह्यम्
   (च) मदुपभुक्तशेषम्
2. (क) पम्पाभिधानं पद्मसरः विन्ध्याट्व्यां आसीत्।
   (ख) तातः शुककुलावदलितानि फलशकलानि समाहृत्य मह्यम् अदात्।
   (ग) मम जायमानस्य प्रसववेदनया मे जननी लोकान्तरम् अगमत्।
3. (क) शुकशावकाय (ख) सुतः (ग) शेषम् (घ) शाल्मलीवृक्षः

मूलपाठः–2

1. (क) वने (ख) पितुः (ग) शिरोधरां
   (घ) शबरसेनापतिम् (ङ) पितुरुत्सङ्गात्

2. (क) एकदा प्रत्यूषसि तस्मिन् वने मृगयाकोलाहलध्वनिरुदचरत्।

(ख) उपजातवेपथुः अर्भकतया भयविह्वलः शुकशावकः पितुः पक्षपुटान्तरमविशत्।

(ग) प्रशान्ते तस्मिन् क्षोभितकानने मृगयाकलकले शुकशावकः कोटरस्थ एव शिरोधरां प्रसार्य शबरसैन्यमद्राक्षत्।

3. (क) प्रथमे वयसि (ख) प्रशान्तः (ग) अपश्यम् (घ) प्रथमे

मूलपाठः–3

1. (क) मोहप्रायम् (ख) शबरसेनापतिः

(ग) उत्खातमूलमशेषतः कुर्वन्ति (घ) सैन्येन

2. (क) शबरसेनापतिः तरोरधश्छायायां परिजनोपनीपल्लवासने उपाविशत्।

(ख) आपीतसलिलः भुक्तमृणालिकः अपगतश्रमः सेनापतिः अभिमतं दिशम् अयासीत्।

3. (क) तरोः (ख) अपगतश्रमः (ग) शबरसेनापतिः

(घ) आपीतसलिलः

मूलपाठः–4

1. (क) जरच्छबरः (ख) वनस्पतिम्

(ग) अकरुणानाम् (घ) कोटरेभ्यः

(ङ) क्षितौ

2. (क) जरच्छबरः अयत्नेनैव पादपमारुह्य फलानीव तस्य वनस्पतेः कोटरेभ्यः शुकशावकानग्रहीत्।

(ख) अन्तरिते च सेनापतौ जरच्छबरः वनस्पतिम् अपश्यत्।

3. (क) तरुः (ख) दुष्करम् (ग) अग्रहीत् (घ) वनस्पतये

मूलपाठः–5

1. (क) पक्षसंपुटेन (ख) भुजङ्गभीषणम्

   (ग) तातम् / तम्

   (घ) शुष्कपत्रराशेरुपरि (ङ) तमालपादपस्य

2. (क) असौ पापः क्रमेण शाखान्तरैः सञ्चरमाणः मत्कोटरद्वारामागत्य भुजङ्गभीषणं बाहुं प्रसार्य उत्कूजन्तं तातमाकृष्य अपगतासुमकरोत्।

   (ख) शुकशावकः उपरतं पितरम् उत्सृज्य नृशंस इव इतस्ततः लुण्ठन् तमालपादपस्य मूलदेशम् अविशत्।

3. (क) दृशम् (ख) अहम्

   (ग) भुजङ्गभीषणम् (घ) तमालपादपः

   (ङ) अवतरति

मूलपाठः–6

1. (क) स्थूलं स्थूलं (ख) सर्वजन्तूनाम् (ग) खलं

   (घ) जीवनाशा (ङ) अतिकष्टा (च) अप्रभुः

   (छ) मे / शुकशावकस्य (ज) अन्धकारताम् (झ) विधिः

2. (क) अकरुणमतिनिष्ठुरम् अकृतज्ञं मां धिक्।

   (ख) अजातपक्षतया शुकशावकः मुहुर्मुहुः मुखेन पतति।

   (ग) तातेन यत्कृतं तत्सर्वं एकपदे एव शुकशावकेन विस्मृतम्।

3. (क) जीवनाशा (ख) अकरुणम् (ग) अप्रभुः (घ) जगति

मूलपाठः–7

1. (क) जाबालमुनेः (ख) सतां (ग) सरस्तीरम्

(घ) स्नानविधिम् (ङ) तपोवनम्

2. (क) सतां चेतांसि प्रायेण अकारणमित्राणि अतिकरुणार्द्राणि च भवन्ति।

(ख) हारीतः तदवस्थं शुकशावकमवलोक्य तं सरस्तीरम् आनाययत् स्वयं चादाय सलिलबिन्दून् अपाययत्।

(ग) हारीतः अभिषेकावसाने तपोवनम् अगच्छत्।

3. (क) कमसलसरः (ख) मित्राणि (ग) अगच्छत् (घ) चेतांसि

उत्तर–1 (क) भोजनं (ख) कम्पमानः

(ग) प्राणः (घ) क्षितौ

(ङ) धूलधूसरिता (च) स्नातुम्

उत्तर-2 (क) (iii) जीवनस्य आशा सर्वथा कञ्चित् जनं न खलीकरोति।

(ख) (ii) अस्मिन् संसारे सर्वेषां जन्तूनां कृते जीवितात् अन्यद् अभिमतं किमपि न अस्ति।

उत्तर-3 1. (ङ), 2. (घ), 3. (ख), 4. (ग), 5. (क),

अष्टमः पाठः (संगीतानुरागी सुब्बण्णः)

उपन्यासः – सुब्बण्णः

साहित्यकारः – 'मास्ति वेङ्कटेश अय्यङ्गारः'

पाठ परिचयः– प्रस्तुत पाठे सुब्बण्णस्य शैशवावस्थायाः एका घटना वर्णिता।

प्रथमः मूलपाठः – सुब्बण्णस्य संगीते यः सहजाभिलाषः आसीत्, स एकदा राजभवने संवृत्तया संगत्या पुनरधिकं दृढीबभूव। एकस्मिन् दिने पुत्रेण साकं पुराणिकशास्त्री राजभवनमेत्य तत्रान्तः पुरस्त्रीजनसमक्षे पुराणप्रवचनमारभमाण आदौ स्वपुत्रेण शुक्लाम्बरधरमित्यादि श्लोकं गापयामास। तच्छ्रुत्वा तत्रत्याः सर्वे पर्यनन्दन्। अथ किञ्चित्कालानन्तरं तत्र समागतो राजा समुपविश्य पुराणमाकर्णयति स्म।

प्रश्नाः

1. एकपदेन उत्तरत–

   (क) कस्य संगीते सहजाभिलाषः आसीत्?

   (ख) राजभवनं कः गतः?

   (ग) पुराणिकशास्त्री केन साकं राजभवनं समागतः?

   (घ) किं श्रुत्वा सर्वे पर्यनन्दन्?

   (ङ) कः पुराणम् आकर्णयति स्म?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत–

   (क) सुब्बण्णस्य संगीते सहजाभिलाषः कथं दृढीबभूव?

   (ख) पुराणिकशास्त्री स्वपुत्रेण किं गापयामास?

3. भाषिककार्यम्– (लघूत्तरात्मकम्)

   (क) 'राजभवने संवृत्तया संगत्या' अत्र किं विशेषणपदं प्रयुक्तम्?

(ख) 'एकस्मिन् दिने पुत्रेण साकं' अत्र 'सह' पदस्य अर्थे किं पदं प्रयुक्तम्?

(ग) 'राजा पुराणम् आकर्णयति स्म' अत्र किं क्रियापदं प्रयुक्तम्?

(घ) 'पुनरधिकं दृढीबभूव' अत्र 'न्यूनम्' पदस्य किं विलोमपदं प्रयुक्तम्?

द्वितीयः मूलपाठः

पितुः पार्श्वे उपविष्टः सुब्बण्णः पुराणप्रवचनं कुतूहलेन शृण्वन्नेव मध्ये महाराजमपि सविस्मयं पश्यति स्म। महाराजस्य सुन्दरं मुखम्, मुखे बृहत्तिलकालङ्कारः, तत्रापि विशालस्य गण्डस्थलस्य शोभावहं श्मश्रुकूर्चम् इत्यादि सर्वमपि तस्य विस्मयकारणमासीत्। राजापि तं बालकं द्वित्रिवारमभिवीक्ष्य चतुरोऽयं बाल इत्यमन्यत। एवमवसिते पुराणे राजा शास्त्रिणमुदिदश्य भोः, एष बालः भवत्कुमारः किम् ? इत्यपृच्छत्। आम् महाप्रभो, इति शास्त्री प्रत्युवाच।

प्रश्नाः

1. एकपदेन उत्तरत–

(क) सुब्बण्णः कं सविस्मयं पश्यति स्म ?

(ख) महाराजस्य मुखं कीदृशं आसीत् ?

(ग) शमश्रुकूर्चम् कस्य शोभां वर्धयति ?

(घ) राजा बालं कीदृशम् अमन्यत ?

(ङ) सुब्बण्णः कस्य पार्श्वे उपविशति स्म ?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(क) सुब्बण्णस्य विस्मयकारणं किं किम् आसीत् ?

(ख) अवसिते पुराणे राजा शास्त्रिणं किम् अपृच्छत् ?

3. भाषिककार्यम्– (लघूत्तरात्मकम्)

(क) 'आम् महाप्रभो, इति शास्त्री प्रत्युवाच' अत्र कर्तृपदं किं प्रयुक्तम् ?

(ख) 'एवमवसिते पुराणे राजा शास्त्रिणमपृच्छत्' अत्र 'प्रारम्भे' पदस्य किं विपर्ययपदमत्र प्रयुक्तम्?

(ग) 'पितुः पार्श्वे उपविष्टः सुब्बण्णः' अत्र विशेषणपदं किं प्रयुक्तम् ?

(घ) 'विशालस्य गण्डस्थलस्य' अत्र 'कपोलभागस्य' इति पदस्य अर्थे किं पदम् अत्र प्रयुक्तम्?

तृतीयः मूलपाठः

पुनः स्मयपूर्वकं राजा बालं सम्बोध्य अये वत्स, किं भवानपि पितृवत् पुराणप्रवचनं करिष्यति! इति पर्यपृच्छत्। तदा स बालः – अहं पुराणप्रवचनं न करोमि। संगीतं गायामीति व्याहरत्। तदा राजा-आह, तथा ननु। तर्हि एकं गानं शृणुमस्तावत् इत्यवदत्। अनुपदमेव सुब्बण्णः श्रीराघवं दशरथात्मजमित्यादिश्लोकं संगीतमार्गेण अश्रावयत् तदन्ते पुनः सः कस्तूरीतिलकमित्यादि श्लोकोऽपि मम कण्ठस्थोऽस्तीत्यगदत्।

प्रश्नाः

1. एकपदेन उत्तरत्–

(क) बालः किं गायाति?

(ख) बालः किं कर्तुं न इच्छति?

(ग) श्रीराघवं दशरथात्मजमित्यादि श्लोकं कः अश्रावयत्?

(घ) राजा स्मयपूर्वकं कं सम्बोध्य अपृच्छत्?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(क) कः श्लोकः बालकं कण्ठस्थः आसीत्?

(ख) सुब्बण्णः कं श्लोकं संगीतमार्गेण अश्रावयत्?

3. भाषिककार्यम्– (लघूत्तरात्मकम्)

(क) 'अहं पुराणप्रवचनं न करोमि' अत्र क्रियापदं किं प्रयुक्तम्?

(ख) 'स्मितपूर्वकम्' पदस्य किं पर्यायपदमत्र प्रयुक्तम्?

(ग) 'अनुपदमेव सुब्बण्णः श्रीराघवम्' अत्र 'तत्क्षणमेव' इति पदस्य किं पर्यायपदमत्र प्रयुक्तम्?

(घ) 'भवानपि पुराणप्रवचनं करिष्यति' अत्र किं कर्तृपदं प्रयुक्तम्?

चतुर्थः मूलपाठः–

महाराजस्य बहु सन्तोषोऽभवत्। एवं परितुष्टो राजा पारितोषिकत्वेन बालाय सताम्बूलमुत्तरीयवस्त्रं दत्वा, हे वत्स, त्वं मेधाव्यसि सुष्ठु संगीतं शिक्षित्वा सम्यग्गातुं भवान् अभ्यस्यतु। इतोऽप्यधिकं पारितोषिकं भवते वयं दास्याम इति बालकमुक्त्वा पुनश्च शास्त्रिणमुद्दिश्य भो शास्त्रिणः कुमारः चतुरोऽस्ति। शिक्षणं सम्यक् क्रियताम्। प्रायः महाकुशलो भविष्यतीत्यशंसत्। तदनन्तरं शास्त्री च पुत्रश्च स्वगृहाय संन्यवर्तेताम्।

प्रश्नाः

1. एकपदेन उत्तरत–

(क) कस्य बहु सन्तोषोऽभवत्?

(ख) राजा बालाय इतोऽप्यधिकं किं दास्याति?

(ग) कस्य कुमारः चतुरोऽस्ति?

(घ) किं सम्यक् क्रियताम्?

(ङ) शिक्षणेन बालः कीदृशः भविष्यति?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(क) परितुष्टो राजा बालाय किं दत्तवान्?

(ख) पारितोषिकं दत्वा राजा किं कथितवान्?

3. भाषिककार्यम्– (लघूत्तरात्मकम्)

(क) 'एवं परितुष्टो राजा बालाय वस्त्रं दत्तवान्' अत्र 'दुःखितः' पदस्य किं विलोमपदमत्र प्रयुक्तम्?

(ख) 'अधिकं पारितोषिकं भवते वयं दास्यामः' अत्र कर्तृपदं किं प्रयुक्तम्?

(ग) 'त्वं मेधाव्यसि सुष्ठु संगीतं शिक्षित्वा' अत्र 'बुद्धिमान्' पदस्य अर्थे किं पदमत्र प्रयुक्तम्?

(घ) 'शास्त्रिणः कुमारः चतुरोऽस्ति' अत्र किं विशेषणपदं प्रयुक्तम्?

प्रश्न 1. अधोलिखितवाक्येषु रेखांकितपदानां प्रसंगानुसारं सार्थकम् अर्थं लिखत–

(क) सुब्बण्णस्य संगीते सहजाभिलाषः आसीत्।

(ख) सुब्बण्णः पुराणप्रवचनं कुतूहलेन श्रृणोति स्म।

(ग) अहं पुराणप्रवचनं न करोमि।

(घ) संवृत्तया संगत्या पुनरधिकं दृढीबभूव।

प्रश्न 2.प्रत्येकम् अंशस्य प्रदत्तभावार्थत्रयात् शुद्धं भावार्थं चित्वा लिखत–

(क) तत्र समागतो राजा समुपविश्य पुराणमाकर्णयति स्म।

(i) तदा तत्र नृपः समागतः।

(ii) राजा पुराणप्रवचनं करोति स्म।

(iii) तत्र समागतः राजा समुपमुपविश्य पुराणप्रवचनं श्रृणोति स्म।

(ख) महाराजस्य बहु सन्तोषोऽभवत्।

(i) महाराजः सन्तुष्टः नाभवत्।

(ii) राजा दुःखं प्राप्तवान्।

(iii) राज्ञः अतीव सन्तुष्टिः अभवत्।

प्रश्न 3. अधोलिखितानां 'क' स्तम्भस्य वाक्यांशानां 'ख' स्तम्भस्य वाक्यांशैः सह सार्थकं मेलनं कृत्वा वाक्यान्ति पुनः लिखत।

क	**ख**
(i) राजापि तं बालकं द्वित्रिवारमभिवीक्ष्य	(क) भोः शास्त्रिणः कुमारः चतुरोऽस्ति।
(ii) तत्रापि विशालस्य गण्डस्थलस्य	(ख) सम्यग्गातुं भवान् अभ्यस्यतु
(iii) सुष्ठु संगीतं शिक्षित्वा	(ग) स्वगृहाय संन्यवर्तेताम्
(iv) तदनन्तरं शास्त्री च पुत्रश्च	(घ) शोभावहं श्मश्रुकूर्चम्
(v) पुनश्च शास्त्रिणमुद्दिश्य	(ङ) चतुरोऽयं बाल इत्यमन्यत

अष्टमः पाठः (संगीतानुरागी सुब्बण्णः)

(उत्तरमाला)

मूलपाठः–1

1. (क) सुब्बण्णस्य (ख) पुराणिकशास्त्री (ग) पुत्रेण
   (घ) श्लोकम् (ङ) राजा
2. (क) सुब्बण्णस्य संगीते सहजाभिलाषः राजभवने संवृत्तया संगत्या अधिकं दृढ़ीबभूव।
   (ख) पुराणिकशास्त्री स्वपुत्रेण शुक्लाम्बरधरमित्यादिश्लोकं गापयामास।

3. (क) संवृत्तया (ख) साकम् (ग) आकर्णयति स्म

(घ) अधिकम्

मूलपाठः–2

1. (क) महाराजम् (ख) सुन्दरम्

(ग) गण्डस्थलस्य (घ) चतुरः (ङ) पितुः

2. (क) महाराजस्य सुन्दरं मुखं, मुखे बृहत्तिलकालङ्कारः, विशालस्य गण्डस्थलस्य शोभावहं श्मश्रुकूर्चम् इत्यादि सर्वं सुब्बण्णस्य विस्मयकारणमासीत्।

(ख) अवसिते पुराणे राजा शास्त्रिणमपृच्छत् – भोः एषः बालः भवत्कुमारः किम् ?

3. (क) शास्त्री (ख) अवसिते

(ग) उपविष्टः (घ) गण्डस्थलस्य

मूलपाठः–3

1. (क) संगीतम् (ख) पुराणप्रवचनं

(ग) सुब्बण्णः (घ) बालम्

2. (क) कस्तूरीतिलकमित्यादिश्लोकः बालकस्य कण्ठस्थः आसीत्।

(ख) सुब्बण्णः श्रीराघवं दशरथात्मजमित्यादिश्लोकं संगीतमार्गेण अश्रावयत्।

3. (क) करोमि (ख) स्मयपूर्वकम् (ग) अनुपदमेव (घ) भवान्

मूलपाठः–4

1. (क) महाराजस्य (ख) पारितोषिकं

(ग) शास्त्रिणः (घ) शिक्षणं

(ङ) महाकुशलः

2. (क) परितुष्टो राजा बालाय पारितोषिकत्वेन सताम्बुलमुत्तरीयवस्त्रं दत्तवान्।

(ख) पारितोषिकं दत्वा राजा कथितवान्–हे वत्स ! त्वं मेधावी असि सुष्ठु संगीतं शिक्षित्वा सम्यग् गातुं भवान् अभ्यस्यतु।

3. (क) परितुष्टः (ख) वयम्

(ग) मेधावी (घ) चतुरः

उत्तर–1 (क) स्वाभाविकी इच्छा (ख) उत्सुकतया

(ग) पुराणस्य कथां (घ) प्रबला जाता

उत्तर-2 (क) (iii) तत्र समागतः राजा समीपमुपविश्य पुराणप्रवचनं शृणोति स्म।

(ख) (iii) राज्ञः अतीव सन्तुष्टिः अभवत्।

उत्तर-3 (i) (ङ) (ii) (घ) (iii) (ख) (iv) (ग) (v) (क)

नवमः पाठः – वस्त्रविक्रयः (कपड़ा बेचना)

अयं पाठः महामहोपाध्याय पं. मथुरा-प्रसाद-दीक्षितेन लिखितात् भारतविजयनाटकस्य प्रथम अंकात् उद्धृतोऽस्ति। शाहजहाँनाम्नः मुगलशासकस्य अग्निना ज्वलितायाः पुत्र्याः उपचारं कृत्वा वैदशिकेन पश्चिमबङ्गप्रान्ते निवासार्थं भूमिवस्त्रयोः व्यापारार्थं प्रमाणपत्रं प्राप्तम्। भारतस्य तन्तुवायाः स्वनिर्मितानि वस्त्राणि विक्रेतुम् आपणं गच्छन्ति। आपणे तेषां वणिग्भिः सह वार्तालापः भवति। तस्मिन् समये वैदेशिकगौराङ्गस्य प्रवेशः भवति, यस्य हस्ते राजमुद्राङ्कितं प्रमाणपत्रं वर्तते। सः स्वप्रमाणपत्रं दर्शयित्वा अत्यल्पे मूल्ये वस्त्राणि अक्रीणत्, तन्तुवायान् कशया ताडयति। अस्य नाटकांशस्य अयमेव मूलमस्ति। अस्मिन् वैदेशिकैः कृतं शोषणं वर्णितम्।

परीक्षोपयोगी प्रश्नाः

प्रश्नः 1. अधोलिखितान् गद्यांशान् पठित्वा प्रदत्त-प्रश्नान् संस्कृतेन उत्तरत–

(ततः प्रविशन्ति पटं विक्रेतुं क्रेतुं च कश्चित्तन्तुवायः श्रेष्ठिनौ च)

श्रेष्ठी–तन्तुवाय ! किमस्य पटस्य मूल्यम् ?

तन्तुवायः– विंशत्यधिकं शतम्।

श्रेष्ठी– नहि, नहि किञ्चिदधिकमेतत्। शतं मूल्यं गृहाण (ततः प्रविशति सानुचरो वैदेशिको गौराङ्गः। स राजमुद्राङ्कित-प्रमाणपत्रं दर्शयित्वा श्रेष्ठिनौ तन्तुवायञ्च भर्त्सयति)।

वै.गौराङ्गः– तन्तुवाय ! पश्य राजमुदाङ्कितं प्रमाणपत्रम्। न त्वं विक्रेतुं प्रभुः।

तन्तुवायः– तर्हि किमहमेनं पटं कुर्याम् ?

वै.गौराङ्गः– इमं पटं मह्यं देहि, अहमेनं पटं विक्रेष्ये, गृहाण इमाः पञ्चाशन्मुद्राः। (इति पञ्चाशन्मुद्रा ददाति)।

एकपदेन उत्तरत –

(i) विंशत्यधिकं किम् अस्ति?

(ii) श्रेष्ठिनौ तन्तुवायञ्च कः भर्त्सयति?

पूर्णवाक्येन उत्तरत –

(i) कः राजमुद्राङ्कितं प्रमाणपत्रम् दर्शयति।

(ii) पटस्य मूल्यम् किम् आसीत् ?

भाषिककार्यम- (लघूत्तरात्मकम्)

(i) 'दास' शब्दस्य किं विलोमपदं प्रयुक्तम् ?

(ii) 'राजमुद्राङ्कितं प्रमाणपत्रं' अनयोः पदयोः <u>विशेषणपदं</u> किम् ?

(iii) 'कुर्याम्' इति क्रियापदस्य कर्तृपदं किम् ?

(iv) 'इमं पटं मह्यं देहि'। अत्र 'मह्यम्' इति सर्वनाम शब्दः कस्मै प्रयुक्तः।

2. तन्तवायः–(साश्चर्यमिव पश्यन्) किमिदं विधीयते ? कथमेतेन मम कुटुम्बस्य भरणपोषणे भविष्यतः। षड्भिर्मासैः कथमपि रात्रिन्दिवं परिश्रम्य निष्पादितोऽयं पटः।

वै० गौराङ्गः- इमा मुद्रा गृह्णीष्व, नाहं किमपि जानामि। मौनमास्स्व, गच्छ। अपरञ्च पटं निर्माय मत्समीपे एवानय। युष्मत्कुटुम्बररक्षायै न प्रतिज्ञा कृता मया। कथं रक्षा भवेदेतत् त्वं जानीहि व्रजाधुना।।

(सः मुद्रा न गृह्णाति अथापरस्तन्तुवायः पटविक्रयार्थं प्रविश्य पटक्रयार्थं श्रेष्ठिनं लक्षयति।)

तन्तुवायः– श्रेष्ठिन् । गृहाण पटम्।

श्रेष्ठी–(भ्रूसंज्ञया) अयं क्रेष्यति। नाहं क्रेतुं शक्नोमि।

तन्तुवायः– कस्मात् ?

वै० गौराङ्गः- इत आगच्छ । (तन्तुवायमाह्वयति, प्रमाणपत्रं दर्शयति। पटं गृह्णाति) गृहाणेमाश्चत्वारिंशन्मुद्राः। (इति मुद्रा ददाति।)

एकपदेन उत्तरत –

(i) अपरञ्च किम् निर्माय मत्समीपे एवानय ?

(ii) कः कथयति यत् नाहं क्रेतुं शक्नोमि ?

(iii) गौराङ्गः कति मुद्राः ददाति ?

पूर्णवाक्येन उत्तरत –

(i) गौराङ्गेन कस्य रक्षायै प्रतिज्ञा न कृता ?

(ii) नाहं क्रेतुं शक्नोमि ? इति कः कं कथयति ?

(iii) गौराङ्गः काम् आह्वयति किं च दर्शयति ?

भाषिककार्यम- (लघूत्तरात्मकम्)

(i) अस्य समीपे राज्ञः प्रमाणपत्रम्। अयमेव क्रेष्यति। अत्र 'अयमेव' पदं कस्मै प्रयुक्तम्?

(ii) 'राजमुद्राङ्कितम् प्रमाणपत्रम्' अनयोः पदयोः विशेष्यपदं किम्?

(iii) नाहं किमपि जानामि ? अत्र 'अहं' इति कर्तृपदस्य क्रियापदं किं प्रयुक्तम्?

3. तन्तुवायः – महाराज! किमिदं विधीयते ? किमयमेव न्यायः?

वै० गौराङ्गः-गच्छ गच्छ। नाहं न्यायमन्यायं वा जानामि। यन्मया निश्चीयते दीयते च तदेव मूल्यम्।

उभौ तन्तुवायौ– नातः परं पटं निर्मास्यावः (इत्युक्त्वा गच्छतः)

वै० गौराङ्गः-(अनुचरमुद्दिश्य)पश्य (1) एताभ्यां बह्वीमुद्रां ग्रहीष्ये। अनिर्वचनीयम् एतत्पटयोः सौन्दर्यम्। अतिसूक्ष्मतरोऽयं पटः। पश्य, एतस्य पञ्चषैः पटलैः परिवेष्टितमप्यपटमेव-प्रतीयतेऽङ्गम्। आः कथमेतत्समक्षमस्मद्देशीयानां पटानां विक्रयो भविष्यति, इति हतमस्मद्देशीयं वाणिज्यम्। (पुनर्विचिन्त्य)

एतत्सूक्ष्मपटस्य निर्मितिविधेरुन्मूलनेऽहं क्षमो

निर्मातॄनिह दण्डताडनपरस्तान् मोचयिष्याम्यतः।

कौशल्यं ह्रियतामधस्तदधिकं वाणिज्यमत्युन्नतं

देशस्यास्य समुन्नतिर्जनकथामात्रे समाधीयताम्।।

एकपदेन उत्तरत –

(i) न्यायमन्यायं कः न जानाति?

(ii) कस्य सौन्दर्यम् अनिर्वचनीयम्?

(iii) नातः परं किं निर्मास्यावः?

पूर्णवाक्येन उत्तरत –

(i) गौराङ्गः कस्य निर्मितिविधेरून्मूलने क्षमः अस्ति।

(ii) कस्य देशस्य समक्षमस्मद्देशीयानां केषां विक्रयो न भविष्यति?

(iii) किं समाधीयताम्?

भाषिककार्यम- (लघूत्तरात्मकम्)

(i) 'अतिसूक्ष्मतरोऽयं पटः' अनयोः पदयोः विशेषणपदं किं?

(ii) 'क्रयः' इति पदस्य विलोमपदं किं प्रयुक्तम्?

(iii) नाहं न्यायमन्यायं वा जानामि। अत्र 'अहं' इति सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्?

4. दौवारिकः– (प्रविश्य) जयतु जयतु देवः।

वै० गौराङ्गः- दौवारिक ! सत्वरं त्रिचतुरांस्तन्तुवायान् समानय।

दौवारिकः– यद्देव आज्ञापयति। (बहिर्गत्वा त्रीन् तन्तुवायान् समानीय प्रविशति)

वै० गौराङ्गः-(तन्तुवायानुद्दिश्य) भो भो ! यूयं निर्मितान् पटान् मह्यं दत्त।

तन्तुवायाः– न वयमयोग्यमूल्यत्वात् पटं निर्मामः।

वै० गौराङ्गः- अस्तु, शोभनं पटं निर्माय मह्यं दत्त, योग्यं मूल्यं भविष्यति। गृहाण इमाः मुद्राः। (इति पञ्चदशमुद्रा ददाति, ते न गृह्णन्ति, हठात्तेषां वसने निबध्य गलहस्तेन निष्कासयति)।

तन्तुवायाः– (द्वारि स्थिताः) महाराज ! न वयं शतमूल्यं पटं पञ्चदशभिरेव मुद्राभिर्निमास्यामः एकपदेन उत्तरत –

(i) सत्वरं कान् समानय?

(ii) कः जयतु?

पूर्णवाक्येन उत्तरत –

(i) वयं तन्तुवायाः किमर्थं पटं न निर्मामः।

(ii) दौवारिकः बहिर्गत्वा किं करोति?

(iii) गौराङ्गः तन्तुवायान् किं कथयति

भाषिककार्यम- (लघूत्तरात्मकम्)

(i) 'त्रीन् तन्तुवायान्' अनयोः पदयोः विशेष्यपदं किम्?

(ii) अस्तु, शोभनं पटं निर्माय मह्यं दत्त। अत्र 'मह्यं' इति सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्?

(iii) 'वस्त्रम्' इति पदस्य पर्यायपदं किम् प्रयुक्तम्?

(iv) 'अन्तः' इति पदस्य विलोमपदं किं प्रयुक्तम्

5. **वै० गौराङ्गः**-(साक्षेपम्) क इमे कोलाहलं कुर्वन्ति (द्वारि गत्वा सामर्षम्, कशया तांस्ताडयति।) गच्छत अपरं शोभनं पटं निर्माय समानयत (मुद्राः प्रक्षिप्य ते गच्छन्ति।)

वै० गौराङ्गः- (अनुचरमुद्दिश्य) भो ! भो ! अपरांस्त्रिचतुरांस्तन्तुवायानानयत। (सः निर्गत्य चतुरस्तन्तुवायानानीय) महाराज ! एते समागताः।

वै० गौराङ्गः- (तन्तुवायानभिलक्ष्य) निर्मितान् कौशेयपटान् मह्यं दत्त।

तन्तुवायाः– न वयं पटान्निर्मामः।

वै० गौराङ्गः- मिथ्यैतत् ! यूयं पटान्निर्माय श्रेष्ठिनां सविधे विक्रीणीध्वे। (सर्वान् कशया ताडयितुं भर्त्सयति)

सर्वेः– न वयं निर्मामः । (इति बद्धहस्तपुटाः कम्पन्ते।)

(निष्क्रान्ताः सर्वे)

एकपदेन उत्तरत –

(i) काः प्रक्षिप्य ते गच्छन्ति ?

(ii) अपरं किं निर्माय समानयत ?

(iii) निर्मितान् कान् मह्यं दत्त ?

पूर्णवाक्येन उत्तरत –

(i) गौराङ्गः द्वारि गत्वा किं करोति ?

(ii) ते तन्तुवायाः काः प्रक्षिप्य गच्छन्ति ?

(iii) गौराङ्गः तन्तुवायानभिलक्ष्य कथयति यत्–''निर्मितान् कौशेयपटान् मह्यं दत्तं'' इति।

भाषिककार्यम- (लघूत्तरात्मकम्)

1. 'शोभनं पटं' अनयोः पदयोः विशेषणपदं किम्?

2. 'क्रोधः' इति पदस्य पर्यायपदं किं प्रयुक्तम्?

3. 'इमे कोलाहलं कुर्वन्ति'। इमे शब्दस्य क्रियापदं किं प्रयुक्तम्?

4. 'न वयं निर्मामः' वयं इति सर्वनामपदं केभ्यः प्रयुक्तम्?

प्रश्न 1. प्रत्येकम् अंशस्य प्रदत्तभावार्थत्रयात् शुद्धं भावार्थं चित्वा लिखत–

(अ) 'अपरं शोभनं पटं निर्माय समानयत।'

(i) गौराङ्गः द्वितीयं पटं निर्माय समानयत।

(ii) तन्तुवायाः द्वितीयं पटं निर्माय समानयत।

(iii) द्वारपालः द्वितीयं पटं निर्माय समानयत।

(आ) 'कथमेतेन मम कुटुम्बस्य भरणपोषणे भविष्यतः।'

(i) तन्तुवायस्य परिवारस्य पोषणं न भवति।

(ii) तन्तुवायः वसुधैव कुटुम्बकं मन्यते।

(iii) तन्तुवायस्य परिवारस्य अल्पमूल्येन पालनपोषणे न भविष्यतः।

प्रश्न 2. अधोलिखितस्य 'क' स्तम्भस्य वाक्यांशानां 'ख' स्तम्भस्य वाक्यांशैः सह सार्थकं मेलनं कृत्वा वाक्यानि पुनः लिखत।

क	**ख**
(i) पश्य राजमुद्राङ्कितं	(अ) गृह्णीष्व इमाः पञ्चाशन्मुद्राः
(ii) अहमेनं पटं विक्रेष्ये	(ब) न प्रतिज्ञा कृता मया
(iii) युष्मत्कुटुम्बरक्षायै	(स) मह्यं दत्त
(iv) शोभनं पटं निर्माय	(द) प्रमाणपत्रम्

प्रश्न 3. अधोलिखितेषु वाक्येषु रेखांकितपदानां प्रसंगानुसारं सार्थकम् अर्थं लिखत–

(अ) श्रेष्ठिन्! गृहाण <u>पटम्</u>

(आ) <u>अनिर्वचनीयम्</u> एतत्पटयोः सौन्दर्यम्।

(इ) षड्भिर्मासैः कथमपि <u>रात्रिन्दिवं</u> परिश्रम्य निष्पादितोऽयं पटः।

नवमः पाठः वस्त्रविक्रयः (कपडे बेचना)

उतरमाला

मूलपाठः–1

1. एकपदेन उत्तरत–

   (क) पटस्य मूल्यम् (ख) वैदेशिकः गौराङ्गः

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत–

   (क) गौराङ्गः राजमुद्राङ्कितं प्रमाणपत्रं दर्शयति

   (ख) पटस्य मूल्यं विंशत्यधिकं शतम्

3. भाषिककार्यम्–

   (क) प्रभुः (ख) राजमुद्राङ्कितम्

   (ग) अहम् (घ) गौराङ्गाय

मूलपाठः–2

1. एकपदेन उत्तरत–

   (क) पटम् (ख) श्रेष्ठी

   (ग) चत्वारिंशत्

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत–

   (क) गौराङ्गेन तन्तुवायस्य कुटुम्बरक्षायै प्रतिज्ञा न कृता

   (ख) श्रेष्ठी तन्तुवायं प्रति कथयति

   (ग) गौराङ्गः तन्तवायं आह्वयति, प्रमाणपत्रं च दर्शयति

3. भाषिककार्यम्–

(क) गौराङ्गाय (ख) प्रमाणपत्रम्

(ग) जानामि

मूलपाठः–3

1. एकपदेन उत्तरत–

(क) गौराङ्गः (ख) पटस्य

(ग) पटम्

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(क) गौराङ्गः सूक्ष्मपटस्य निर्मितिविधेरुन्मूलने क्षमः अस्ति।

(ख) अस्य भारतदेशस्य समक्षमस्मद्देशीयानां पटानां विक्रयो न भविष्यति।

(ग) अस्य देशस्य समुन्नतिर्जनकथामात्रे समाधीयताम्।

3. भषिककार्यम्–

(क) अतिसूक्ष्मतरः (ख) विक्रयः

(ग) गौराङ्गाय

मूलपाठः–4

1. एकपदेन उत्तरत–

(क) तन्तुवायान् (ख) देवः

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(क) वयमयोग्यमूल्यत्वात् पटं न निर्माम:।

(ख) दौवारिक: बहिर्गत्वा त्रीन् तन्तुवायान् समानीय प्रविशति।

(ग) गौराङ्ग: कथयति शोभनं पटं निर्माय मह्यं दत्त, योग्यं मूल्यं भविष्यति।

3. भाषिककार्यम्–

(क) तन्तुवायान् (ख) गौराङ्गाय

(ग) पटम् (घ) बहि:

मूलपाठ:–5

1. एकपदेन उत्तरत–

(क) मुद्रा: (ख) पटम्

(ग) कौशेयपटान्

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(क) गौराङ्ग: द्वारि गत्वा सामर्षम्, कशया तांस्ताडयति।

(ख) ते तन्तुवाया: मुद्रा: प्रक्षिप्य गच्छन्ति।

(ग) गौराङ्ग: कथयति यत् 'निर्मितान् कौशेयपटान् मह्यं दत्त' इति।

3. भाषिककार्यम्–

(क) शोभनम् (ख) समर्षम्

(ग) कुर्वन्ति (घ) तन्तुवायेभ्य:

उत्तर 1.

(क) तन्तुवायाः द्वितीयं पठं निर्माय समानयत।

(ख) तन्तुवायस्य परिवारस्य अल्पमूल्येन पालनपोषणे न भष्यितः।

उत्तर 2.

(क) द (ख) अ

(ग) ब (घ) स

उत्तर 3.

(क) वस्त्रम् (ख) अवर्णनीयम्

(ग) निशादिवसश्च

दशमः पाठः– यद्भूतहितं तत्सत्यम्

(जो प्राणियों के लिए हितकर हो, वह सत्य है)

इयं कथा संस्कृतसाहित्यस्य सुप्रसिद्ध-कथाकास्य आचार्य-केशवचन्द्रदासस्य कथासंग्रहात् उद्धृता अस्ति। ईदृशी कथा शिशूनाम् मानसिक-विकासाय सहायकाः भवन्ति। इमाः न केवलं मनोरंजकाः भवन्ति अपितु शैक्षणिक-नैतिक-शिक्षादृष्टया अपि उपयोगिन्यः भवन्ति। अस्याम् कथायाम् सत्यस्य उल्लेखः अस्ति यत् प्राणिनां कृते हितकरं यत् भवति तदेव सत्यम्।

अधोलिखित-गद्यांशान् पठित्वा प्रश्नान् संस्कृतेन उत्तरत–

प्रश्न-1. एकस्मिन् ग्रामोपान्ते पद्मिनी नाम्नी एका पुष्करिणी आसीत्। तत्र ग्रामस्य जनाः स्नानं कुर्वन्ति। वसनं क्षालयन्ति। तस्या एव जलमानीय पिबन्ति, पाकदिकर्म च कुर्वन्तिं तत्रैव गोमेष-च्छागादीनां स्नानमपि सम्पादयन्ति। पुष्करिणीं परितः नाना वृक्षाः सन्ति। केचन वृक्षाः तटसंलग्नाश्च वर्तन्ते पुष्करिण्याः अपरभागे एकः आश्रमः अस्ति। तत्र एको पुनिः निवसित। सोऽपि तर्पणादिकं कर्म तत्र करोति। सः जनान् अनुनयति। वारं वारमपि उपदिशति। परं न कोऽपि तस्य वचनं शृणोति।

प्रश्नाः–

(अ) एकपदेन उत्तरत –

(क) अपरभागे एकः कः अस्ति ?

(ख) ग्रामापान्ते किं नाम पुष्करिणी असीत्?

(आ) पूर्णवाक्येन उत्तरत –

(क) तत्रैव जनाः किं सम्पादयन्ति?

(ख) पुष्करिणीं परितः काः सन्ति?

(ग) मुनिः अपि तत्र किं कर्म करोति।

(घ) मुनिः कान् अनुनयति?

(इ) यथानिर्देशमुत्तरत–

(क) 'पादपाः' इति पदस्य पर्यायपदं अत्र किं प्रयुक्तम्?

(ख) 'एका पुष्करिणी' अनयोः पदयोः विशेषणपदं किं?

(ग) 'पिबन्ति' इति क्रियापदस्य कर्तृपदं किं प्रयुक्तं?

प्रश्न 2. एकदा मुनिः चिन्तामग्नः – केन प्रकारेण इमे जनाः बोधयितव्याः? पुष्करिणीतः पङ्कोद्धारो न भवति। प्रतिदिनं च जलं प्रदूषितं भवति। तत् प्रदूषितं जलं पीत्वा जना अपि रूग्णा भवन्ति। कथं च इमे वारणीयाः? सहसा कोलाहलः श्रुतः। मुनिः बहिरागत्य अपश्यत्। केचन जनाः एकं बालकं ताडयन्ति। तं च भर्त्सयन्ति। बालकः भयेन कम्पते क्रन्दति च। मुनिः तत्र उपस्थितः। जनान् वारयित्वा अपृच्छत्। किं अभवत्? किमर्थं भवन्तः एवं ताडयन्ति? जनाः अवदन्। एष मिथ्यावादी। सदैव मिथ्याभाषणं करोति। वृथा सर्वान् प्रतारयन्ति। सद्यः अस्मान् प्रतारितवान्।

(अ) एकपदेन उत्तरत –

(क) प्रतिदिनं किम् प्रदूषितं भवति?

(ख) केचन जनाः कं ताडयन्ति?

(ग) कः जनान् वारयित्वा अपृच्छत्?

(आ) पूर्णवाक्येन उत्तरत –

(क) मुनिः जनान् किम् अपृच्छत्?

(ख) बालकः किमर्थं कम्पते क्रन्दति च?

(ग) जनाः कथं रूग्णाः भवन्ति?

(इ) यथानिर्देशमुत्तरत–

(क) 'एकदा मुनिः' अनयोः पदयोः विशेषण पदं किं?

(ख) 'तोयः' इति शब्दस्य पर्यायपदं अत्र किं प्रयुक्तं?

(ग) 'तं च भर्त्सयन्ति' अत्र 'तं' इति सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्?

(घ) 'जनाः' इति कर्तृपदस्य क्रियापदं किं प्रयुक्तम्?

3. मुनिः बालकं अपृच्छत्।

अरं! सत्यं न वदसि? बालकः कम्पितकण्ठेन अवदत्। सत्यं किम्? मुनिः तमश्वासितवान् न जानासि? तर्हि मया सह आगच्छतु। एवम् उक्त्वा तस्यं करं धृत्वा मुनिः आश्रमम् प्रति बालकम् आनीतवान्। मुनिः 'अचिन्तयत् अयमेव समुचितः समयः। अस्मिन्नवसरे ग्राम्यजनाः अवश्यं शिक्षयितव्याः। ततः मुनिः बालकमपृच्छत्। किं तव नाम? नाम्नाऽहं कृष्णः। भवतु, केन प्रकारेण मिथ्या कथयसि? यथेच्छं वदामि।

प्रश्नाः–

(अ) एकपदेन उत्तरत –

(क) कः बालकम् अपृच्छत् ?

(ख) कम्पितकण्ठेन कः अवदत् ?

(आ) पूर्णवाक्येन उत्तरत –

(क) बालकस्य नाम किम् ?

(ख) मुनिः बालकम् कुत्र आनीतवान्?

(ग) अस्मिन्नवसरे किं कर्त्तव्यम् ?

(इ) यथानिर्देशमुत्तरत–

(क) 'पाणि' इति पदस्य पर्यायपदं किं प्रयुक्तम्?

(ख) 'ग्राम्यजनाः' अनयोः पदयोः विशेष्यपदं किम्?

(ग) 'अपृच्छत्' इति क्रियापदस्य कर्तुपदं किं प्रयुक्तं ?

(घ) 'असत्यम्' इति पदस्य विपर्ययम् अत्र किं प्रयुक्तम् ?

4. तर्हि इमां पुष्करिणीं दृष्टवा किमपि कथय। बालकः कृष्णः प्रसन्नः सञ्जातः। सहर्षं च अवर्णयत् जलेऽस्मिन् एको महान् मत्स्यः अस्ति। भोः । जनाः आगच्छत ..... पश्यत ....., कीदृशं सः खेलति। मुनिः अवदत्ः साधु ..... सम्यक् चिन्तितम्। तर्हि श्वः प्रभाते ग्राम्यजनान् साधु एतावद् वद। कृष्णः किञ्चित् कुण्ठितोऽभवत्। नहि, ते मां ताडयिष्यन्ति। अरे, नहि .....। अनन्तरं मामेव साक्षीकरिष्यसि।

(अ) एकपदेन उत्तरत –

(क) कः प्रसन्नः संजातः?

(ख) जलाशये किम् अस्ति?

(आ) पूर्णवाक्येन उत्तरत –

(क) बालकः सहर्षं किम् अवर्णयत्?

(ख) बालकः कृष्णः काम् दृष्टवा किमपि कथयति?

(ग) मुनेः अनुसारं प्रभाते बालकः किं कथयिष्यति?

(इ) यथानिर्देशत्तरत

(क) 'इमां पुष्करिणीं' अनयोः पदयोः विशेष्यं किम्?

(ख) 'असाधु' इति पदस्य विपर्यय किम् प्रयुक्तम्?

(ग) 'क्रीडति' इति पदस्य पर्यायपदं किं प्रयुक्तम्?

(घ) नहि, ते 'मां' ताडयिष्यन्ति। अत्र 'माम्' इति सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्?

5. अपर प्रभाते कृष्णः ग्रामस्य प्रतिमार्गं जनान् अवदत् – पुष्करिण्याम् एको महान् मत्स्यो मया दृष्टः। केचन अवदन् – अरे, त्वं मिथ्यावादी। तव वचने को विश्वासः ? तत् क्षणं कृष्णः उक्तवान्। तदानीं मया सह मुनिः आसीत्। सोऽपि दृष्टवान्। आगच्छ .... तत्र पृच्छ .....। मुनिं साक्षिरुपेण स्वीकृत्य ग्राम्यजनाः अपरदिने मत्स्यान्वेषणं कृतवन्तः। अन्ततः सर्वे मिलित्वा पुष्करिणीं प्रविष्टाः। मत्स्यान् च धृतवन्तः। किन्तु महामत्स्यस्य सन्धानं न प्राप्तम्। दिनपूर्णं ते अन्विष्टवन्तः। सांयकाले नितरां विरक्ताः

अभवन्। मुनिमुपगम्य सरोषमवदन्–किं भवानपि अस्मान् प्रतारयति ? मुनिः धीरभावेन अवदत्। अरे ! महामत्स्यः किं सरलतया धर्तु शक्यते ? तदर्थं श्रमः आवश्यकः। श्वः प्रभाते बन्धनच्छेदं कृत्वा जलं निष्कासयात।

(अ) एकपदेन उत्तरत–

(क) कुत्र एको महान् मत्स्यो दृष्टः?

(ख) बालकेन सह कः आसीत्?

(आ) पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(क) अपरप्रभाते कृष्णः कस्य प्रतिमार्गं जनान् अवदत्?

(ख) अपरदिने ग्राम्यजनाः किम् कृतवन्तः?

(ग) जनाः मुनिमुपगम्य सरोषं किमवदन् ?

(इ) यथानिर्देशमुत्तरत

(क) 'महान् मत्स्यः' अनयोः पदयोः किं?

(ख) 'सन्ध्याकाले' इति पदस्य पर्यायपदं किं प्रयुक्तम्?

(ग) 'मुनिः धीरभावेन अवदत्' अस्मिन् वाक्ये कर्तुपदं किं?

(घ) 'एको महान् मत्स्यो मया दृष्टः'। अस्मिन् वाक्ये 'मया' सर्वनाम् शब्द कस्मै प्रयुक्तम्?

(ङ) 'ह्यः' इति शब्दस्य विलोमपदं किं प्रयुक्तम्?

6. तद्रात्रौ ग्राम्यजनानां नेत्रयोः निद्रा नास्ति ते प्रातरागत्यः तटवर्तिवृक्षाणां छेदनं कृतवन्तः। बन्धच्छेदं कृत्वा जलं च बहिष्कृतवन्तः एवं प्रकारेण कति दिनानि व्यतीतानि। ततः पङ्कोद्वारं कृत्वा पुष्करिणीं गभीरां कृतवन्तः। पङ्कं च आनीय शस्यक्षेत्रे प्रसारितवन्तः – इत्थं निदाघकालः उपगतः। सहसा वृष्टिरभवत्। पुष्करिणी च पूर्णा संजाता। निर्मलं जलं दृष्ट्वा सर्वे प्रसन्नाः अभवन्। तटानां परिष्कारणेन सर्वत्र सौविध्यमनुभूतम्।

(अ) एकपदेन उत्तरत–

(क) केषां नेत्रयोः निद्रा नास्ति?

(ख) प्रथमतः केषां छेदनं कृतवन्तः?

(ग) पङ्कं आनीयं कुत्र प्रसारितवन्तः?

(आ) पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(क) किम् दृष्ट्वा सर्वे प्रसन्नाः अभवन्?

(ख) पङ्कोद्धारं कृत्वा जनाः किं कृतवन्तः?

(ग) केषां परिष्कारेण सर्वत्र सौविध्यमनुभूतम्?

(इ) यथानिर्देशत्तरत–

(क) 'मलं' शब्दस्य विलोपपदं अत्र किं प्रयुक्तम्?

(ख) 'ग्रीष्मकालः' इति पदस्य पर्याय पदं किं प्रयुक्तम्?

(ग) 'निर्मलं जलं' अनयोः पदयोः विशेषणपदं किम्?

(घ) 'संजाता' इति क्रियापदस्य कर्तृपदं किं प्रयुक्तम्?

7. इतः यदि कश्चित् जलं दूषयिष्यति सः दण्ड्यो भविष्यति एकदा मुनिः एकस्मिन् तटे कृष्णं दृष्टवा आकारितवान्। तम् आश्रममानीय अपृच्छत्।

अरे, कृष्ण ! सत्यं किं ज्ञातं न वा ?

न ज्ञातम्।

अरे! सत्यकथनेन केवलं सत्यं न भवति। यत् कल्याणकरं वचनं तदपि सत्यम्।

– पितामही पुलोमजामबोधयत्। अत एव अस्माकं शास्त्रे वर्तते सत्यस्य वचनं श्रेयः सत्यादपि हितं भवेत्। यद्भूतहितमत्यन्तमेतत् सत्यं मतं मम।।

(अ) एकपदेन उत्तरत–

(क) एकदा मुनिः कं आकरितवान्?

(ख) पितामही काम् अबोधयत् ?

(आ) पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(क) मुनिः कथं कृष्णाय सत्यं परिभाषितं?

(ख) अस्माकं शास्त्रे कस्य वचनं श्रेयः?

(ग) कः दण्ड्यो भविष्यति।

(इ) यथानिर्देशमुत्तरत–

(क) 'एकस्मिन् तटे' अनयोः पदयोः विशेषणपदं किं?

(ख) 'असत्यम्' इति पदस्य विलोमपदं किं प्रयुक्तम्?

(ग) 'हितम्' शब्दस्य पर्यायपदं किं प्रयुक्तम्?

प्रश्न 1. यथानिर्देशं प्रश्नद्वयम् उत्तरत–

(क) 'एकदा मुनिः एकस्मिन् तटे कृष्णं दृष्ट्वा आकारितवान्।' इत्यस्या पंक्तेः सन्दर्भग्रन्थस्य लेखकस्य च नाम्नी लिखत।

(ख) अरे! सत्यकथनेन केवल सत्यं न भवति। यत् कल्याणकरं वचनं तदपि सत्यम् इति

प्रश्न 2. अधोलिखितपद्यस्य प्रदत्तभावार्थं मञ्जूषाप्रदतपदैः पूरयित्वा पुनः लिखत–

(क) 'सत्यस्य वचनं श्रेयः सत्यादपि हितं भवेत्।
यदभूतहितमत्यन्तेतत् सत्यं मतं मम।'

भावार्थः– सत्यस्य कथनं (i) _____ सत्यात् अपि लाभः (ii) _____ यत् (iii) _____ अत्यन्तम् (iv) _____ भवति मम विचारे एतत् सत्यं भवति।

मञ्जूषा – हितकारी, भवति, कल्याणकरम्, प्राणिनाम्

अथवा

प्रत्येकम् अंशस्य प्रदत्तभावार्थत्रयात् शुद्धं भावार्थं चित्वा लिखत–

(अ) प्रदूषितं जलं पीत्वा जनाः अपि रूग्णाः भवन्ति।

(i) दूषितं जलं पीत्वा जनाः अस्वस्थाः भवन्ति।

(ii) स्वच्छ जलं पीत्वा जनाः अस्वस्थाः भवन्ति।

(iii) स्वच्छ जलं पीत्वा जनाः स्वस्थाः भवन्ति।

(आ) बालकः कृष्णः प्रसन्नः सञ्जातः।

(i) मुनिः प्रसन्नः सञ्जातः।

(ii) कृष्णः नाम बालकः मुदितं जातः।

(iii) जनाः प्रसन्नः सञ्जातः।

प्रश्न 3. अधोलिखितस्य 'क' स्तम्भस्य वाक्यांशानां 'ख' स्तम्भस्य वाक्यांशैः सह सार्थकं मेलनं कृत्वा वाक्यान्ति पुनः लिखत।

क	**ख**
1. पुष्करिण्याम् एको	(क) सर्वे प्रसन्नाः अभवन्।
2. निर्मलं जलं दृष्टवा	(ख) जलं निष्कासयत्।
3. श्वः प्रभाते बन्धच्छेदं कृत्वा	(ग) पुष्करिणीं प्रविष्टा।
4. अन्ततः सर्वे मिलित्वा	(घ) महान् मत्स्यो दृष्टः।

प्रश्न 4. अधोलिखितवाक्येषु रेखांकितपदानां प्रसंगानुसारं सार्थकम् अर्थं लिखत–

(अ) सदैव मिथ्याभाषणं करोति।

(आ) श्वः प्रभाते बन्धच्छेदं कृत्वा जलं निष्कासयत।

(इ) तद्रात्रौ ग्राम्यजनानां नेत्रयोः निद्रा नास्ति।

(ई) तटवर्तिवृक्षाणां छेदनं कृतवन्तः।

दशमः पाठः

उत्तरमाला

मूलपाठः-1

(अ) एकपदेन उत्तरत–

(क) आश्रमः (ख) पद्मिनी नाम्नी

(आ) पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(क) तत्रैव जनाः गोमेषच्छागादीनां स्नानमपि संपादयन्ति

(ख) पुष्करिणीं परितः नाना वृक्षाः सन्ति।

(ग) मुनिः अपि तत्र तर्पणादिकं कर्म करोति।

(घ) मुनिः जनान् अनुनयति।

(इ) यथानिर्देशमुत्तरत–

(क) वृक्षाः (ख) एका (ग) जनाः

मूलपाठः-2

(अ) एकपदेन उत्तरत–

(क) जलम् (ख) बालकम् (ग) मुनिः

(आ) पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(क) मुनिः जनान् अपृच्छत् यत्-भवन्तः किमर्थम् एनं बालकं ताडयन्ति इति।

(ख) बालकः भयेन कंपते क्रदन्ति च।

(ग) प्रदूषितं जलं पीत्वा जनाः रुग्णाः भवन्ति।

(इ) यथानिर्देशमुत्तरत–

(क) एकदा (ख) जलम्

(ग) बालकम् (घ) अवदन्

मूलपाठः-3

(अ) एकपदेन उत्तरत–

(क) मुनिः (ख) बालकः

(आ) पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(क) बालकस्य नाम कृष्णः अस्तिः

(ख) मुनिः बालकम् आश्रमं प्रति आनीतवान्।

(ग) अस्मिन्नवसरे ग्राम्यजनाः अवश्यं शिक्षयितव्याः।

(इ) यथानिर्देशम् उत्तरत–

(क) करम् (ख) जनाः

(ग) मुनिः (घ) सत्यम्

मूलपाठः-4

(अ) एकपदेन उत्तरत–

(क) कृष्णः (ख) मत्स्यः

(आ) पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(क) बालकः सहर्षम् अवर्णयत् – जलेऽस्मिन् एको महान् मत्स्यः अस्ति।

(ख) बालकः कृष्णः पुष्करिणीं दृष्ट्वा किमपि कथयति।

(ग) मुनेः अनुसारं प्रभाते बालकः साधु कथयिष्यति।

(इ) यथानिर्देशम् उत्तरत–

(क) पुष्करिणी (ख) साधु

(ग) खेलति (घ) बालकाय

मूलपाठः-5

(अ) एकपदेन उत्तरत–

(क) पुष्करिण्याम् (ख) मुनिः

(आ) पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(क) अपरप्रभाते कृष्णः ग्रामस्य प्रतिमार्गं जनान् अवदत्।

(ख) अपर दिने ग्राम्य जनाः मत्स्यान्वेषणं कृतवन्तः।

(ग) जनाः मुनिमुपगम्य सरोषम् अवदन् – किं भवानपि अस्मान् प्रतारयति इति।

(इ) यथानिर्देशम् उत्तरत–

(क) मत्स्यः (ख) सायंकाले

(ग) मुनिः (घ) श्वः

मूलपाठः-6

(अ) एकपदेन उत्तरत–

(क) ग्राम्यजनानाम् (ख) तटवर्तिवृक्षाणाम्

(ग) शस्यक्षेत्रे

(आ) पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(क) निर्मलं जलं दृष्ट्वा सर्वे प्रसन्नाः अभवन्।

(ख) पंकोद्धारं कृत्वा जनाः पुष्करिणीम् गभीरां कृतवन्तः।

(ग) तटानां परिष्कारेण सर्वत्र सौविध्यमनुभूतम्।

(इ) यथानिर्देशमुत्तरत–

(क) निर्मलम् (ख) निदाघकालः

(ग) निर्मलम् (घ) पुष्करिणी

मूलपाठः-7

(अ) एकपदेन उत्तरत–

(क) कृष्णम् (ख) पुलोमजाम्

(आ) पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(क) सत्यकथनेन केवलं सत्यं न भवति। यत् कल्याणकरं वचनं तदपि सत्यम्।

(ख) अस्माकं शास्त्रे सत्यस्य वचनं श्रेयः।

(ग) कश्चित् जलं दूषयिष्यति स दण्ड्यो भविष्यति।

(इ) यथानिर्देशमुत्तरत–

(क) एकस्मिन् (ख) सत्यम्

(ग) कल्याणकरम्

प्रश्न 1.

(क) सन्दर्भग्रन्थस्य नाम–कथासंग्रहः, लेखकस्य नाम–केशवचन्द्रदासः।

(ख) मुनिः बालकं कृष्णं प्रति कथयति।

प्रश्न 2.

(क) कल्याणकरम् (ख) भवति

(ग) प्राणिनाम् (घ) हितकारी

अथवा

(अ) (i) दूषितं जलं पीत्वां जनाः अस्वस्थाः भवन्ति।

(आ) (ii) कृष्णः नाम बालः मुद्रित जातः।

प्रश्न 3.

(1) घ (2) क (3) ग (4) ख

प्रश्न 4.

(क) अनृतम् (ख) अग्रिमदिनम्

(ग) अक्ष्णोः (घ) कर्तनम्

एकादशः पाठः– स मे प्रियः

(वह मुझे प्यारा है)

एतेषां श्लोकानां सङ्कलनं महर्षि वेदव्यासेन प्रणीतायाः श्रीमद्भगवद्गीतायाः द्वादशाध्यायाम् कृतम् । अस्मिन् अध्याये भक्तियोगस्य विस्तृतं वर्णनं विद्यते। अत्र श्रीकृष्णेन सगुणनिर्गुणरूपाभ्यां ईश्वरप्राप्तेः सरलोपायः निर्दिष्टः। वास्तविकतया सङ्कलितश्लोकेषु प्रकटाः विचाराः अद्यतनसमाजाय विशेषरूपेण ज्ञान जिज्ञासुछात्राणां च कृते निश्चयेन समुचिताः तर्कपूर्णाश्च सन्ति। आधुनिक युगस्य मानवः आत्मानं सर्वकर्ता मत्त्वा उन्मत्तो व्याकुलोऽस्ति च। सः धैर्याभ्यासौ विस्मृत्य शीघ्रातिशीघ्रं समस्ताकङ्क्षापूर्त्यर्थं आतुरः वर्तते। अस्य पाठस्य शीर्षकः 'स मे प्रियः' अवबोधयति यत् भगवते ते जनाः रोचन्ते ये स्वार्थं परित्यज्य अपरेभ्यः हिताय समाजस्य विकासाय च अग्रसराः वर्तन्ते।

प्रश्न 1. अधोलिखितान् पद्यान् पठित्वा प्रदत्त प्रश्नान् संस्कृतेन उत्तरत–

1, 2 श्रीभगवानुवाच

क्लेशोऽधिकतरस्तेषामव्यक्तासक्तचेतसाम्।

अव्यक्ता हि गतिर्दुःखं देहवद्भिरवाप्यते॥

ये तु सर्वाणि कर्माणि मयि संन्यस्य मत्पराः।

अनन्येनैव योगेन मां ध्यायन्त उपासते॥

एकपदेन उत्तरत –

(i) कैः दुःखं: अवाप्यते?

(ii) कः उवाच?

(iii) अनन्येनैव योगेन कां ध्यायन्ते?

पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(i) केषाम् अधिकतरः क्लेशोऽस्ति?

(ii) ये तु कानि संन्यस्य ध्यायन्तः उपासते ?

यथानिर्देशात्मकम् – (वस्तुनिष्ठात्मक प्रश्नाः)

(i) 'सर्वाणि कर्माणि' अनयोः पदयोः <u>विशेषणपदं</u> किम् ?

(ii) 'उपासते' इति क्रियापदस्य कर्तृपदं किं प्रयुक्तम् ?

(iii) 'मयि संन्यस्य मत्पराः .....।' अत्र मयि सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्?

(iv) 'परिश्रमः' इति पदस्य पर्यायपदं अत्र किं प्रयुक्तम्?

3, 4. मय्येव मन आधत्स्व मयि बुद्धिं निवेशय।
निवसिष्यसि मययेव अत ऊर्ध्वं न संशयः॥
संनियम्येन्द्रियग्रामं सर्वत्र समबुद्धयः।
ते प्राप्नुवन्ति मामेव सर्वभूतहिते रताः॥

एकपदेन उत्तरत –

(i) मयि किं आधत्स्व?

(ii) बुद्धिं कुत्र निवेशय?

पूर्णवाक्येन उत्तरत –

(i) मामेव (श्रीकृष्णम्ः) के प्राप्नुवन्ति?

(ii) त्वं कुत्र निवसिष्यसि ?

यथानिर्देशात्मक – (वस्तुनिष्ठात्मक प्रश्नाः)

(i) 'अस्थिरम्' इति पदस्य विलोपदं किं प्रयुक्तम्?

(ii) अत्र 'सर्वस्मिन्' इत्यर्थे अत्र किं पदं प्रयुक्तम्?

(iii) 'ते .... मामेव' ते इतिपदस्य क्रियापदं किं प्रयुक्तम् ?

5, 6. अथ चितं समाधातुं न शक्नोषि मयि स्थिरम्।

अभ्यासयोगेन ततो मामिच्छाप्तुं धनंजय॥

श्रेयो हि ज्ञानमभ्यासाद्ज्ञानाद्ध्यानं विशिष्यते।

ध्यानात्कर्मफलत्यागस्त्यागाच्छान्तिरनन्तरम्॥

एकपदेन उत्तरत –

(i) त्वं किं समाधातुं न शक्नोषि ?

(ii) अभ्यासात् किं श्रेयः?

पूर्णवाक्येन उत्तरत –

(i) अर्जुनः ईश्वरम् अभ्यासयोगेन कदा प्राप्तुम् इच्छतु?

(ii) कः कस्मात् श्रेयः?

(iii) शान्तिः कदा प्राप्यते?

यथानिर्देशात्मक – (वस्तुनिष्ठात्मक प्रश्नाः)

(i) 'श्रेष्ठः' इति अर्थे अत्र किं पदं प्रयुक्तम्?

(ii) 'अज्ञानं' इति पदस्य विलोमपदं किं प्रयुक्तम् ?

(iii) 'पार्थः' कृते अत्र किं पदं प्रयुक्तम्?

(iv) 'स्थिरम् चित्तं' अनयोः पदयोः विशेषणपदं किं?

7, 8 अद्वेष्टा सर्वभूतानां मैत्रः करुण एव च।

निर्ममो निरहंकारः समदुःखसुखः क्षमी॥

अभ्यासेऽप्यसमर्थोऽसि मत्कर्मपरमो भव।

मदर्थमपि कर्माणि कुर्वन्सिद्धिमवाप्स्यसि॥

एकपदेन उत्तरत –

(i) केषाम् अद्वेष्टा स्यात् ?

(ii) अर्जुनः कस्मिन् असमर्थः अस्ति?

पूर्णवाक्येन उत्तरत –

(i) अत्र कः श्रीकृष्णस्य प्रियः कथितः?

(ii) त्वं कस्मै अपि कर्माणि कुर्वन् सफलतां प्राप्स्यसि।

यथानिर्देशात्मक – (वस्तुनिष्ठात्मक प्रश्नाः)

(i) 'अंहकार रहितः' इत्यर्थे अत्र किं पदं प्रयुक्तम्?

(ii) 'अरि' इति पदस्य विलोमपदं किं प्रयुक्तम्?

(iii) 'मत्कर्मपरमो भव' अत्र मत् इति सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्?

9,10,11. समः शत्रौ च मित्रे तथा मानापमानयोः।

शीतोष्णसुखदुःखेषु समः सङ्गविवर्जितः॥

अथैतदप्यशक्तोऽसि कर्तुमद्योगमाश्रितः।

सर्वकर्मफलत्यागं ततः कुरु यतात्मवान्॥

तुल्यनिन्दास्तुतिर्मौनी संतुष्टो येन केनचित्।

अनिकेतः स्थिरमतिर्भक्तिमान्मे प्रियो नरः॥

एकपदेन उत्तरत –

(i) कस्मात् विवर्जितः जनः ईश्वरप्रियः?

(ii) पुरुषः कयोः समः स्यात्?

(iii) श्रीकृष्णस्य प्रियः कः ?

पूर्णवाक्येन उत्तरत –

(i) कीदृशः/केषु समः मनुष्यः श्रीकृष्णस्य प्रियः?

(ii) ततः त्वं किम् कुरु? द्वितीयः श्लोके भगवत्प्राप्तेः कः मार्गः?

(iii) कम् आश्रितः जनः कस्य त्यागं कुर्यात्?

यथानिर्देशात्मक – (वस्तुनिष्ठात्मक प्रश्नाः)

(i) 'मनुष्यः' इत्यर्थे किं पदं अत्र प्रयुक्तम्?

(ii) 'प्रियो नरः' अनयोः पदयोः विशेष्यपदं किम्?

(iii) निकेतः (निवास स्थानं) इति पदस्य विलोमपदं किं अस्ति?

(iv) 'मद्योमाश्रितः' अत्र 'मत्' इति सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तं?

12,13. यो न हृष्यति न द्वेष्टि न शोचति न काङ्क्षति।

शुभाशुभपरित्यागी भक्तिमान्यः स मे प्रियः॥

अनपेक्षः शुचिर्दक्षः उदासीनो गतव्यथः।

सर्वारम्भपरित्यागी यो मद्भक्तः स मे प्रियः॥

एकपदेन उत्तरत –

(i) अस्मिन् श्लोके वक्ता कः?

(ii) यो न द्वेष्टि न च किम्?

पूर्णवाक्येन उत्तरत –

(i) प्रथमे श्लोके कीदृश जनः श्रीकृष्णस्य प्रियः?

– शुभाशुभपरित्यागी जनः श्रीकृष्णस्य प्रियः उक्तः।

(ii) भक्तस्य कानि लक्षणनि द्वितीये श्लोके कथितानि?

सिद्धभक्तः अनपेक्षः शुचिः दक्षः उदासीनः गतव्यथः।

सर्वारम्भपरित्यागी इत्यादि लक्षणनि युक्तः भवति।।

यथानिर्देशात्मक – (वस्तुनिष्ठात्मक प्रश्नाः)

(i) 'अशुचि' इति पदस्य विलोमपदं किं प्रयुक्तम्?

(ii) 'अपेक्षारहित' इत्यर्थे अत्र किं पदं प्रयुक्तम्?

(iii) 'स मे प्रियः' अत्र मे इति सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्?

14,15. संतुष्टः सततं योगी यतात्मा दृढनिश्चयः।

मय्यर्पितमनोबुद्धिर्यो मद्भक्तः स मे प्रियः।।

तेषामहं समुद्धर्ता मृत्युसंसारसागरात्।

भवामि नचिरात्पार्थ मय्यावेशितचेतसाम्।।

एकपदेन उत्तरत –

(i) योगी कीदृशः सततम्? (ii) कः समुद्धर्ता भवति ?

(iii) कीदृशः चेतसाम् अहं समुद्धर्ता भवामि?

पूर्णवाक्येन उत्तरत –

(i) श्रीकृष्णः कस्मात् उद्धारं करोति? (ii) कः श्रीकृष्णस्य प्रियः?

यथानिर्देशात्मक – (वस्तुनिष्ठात्मक प्रश्नाः)

(i) 'निरन्तरम्' इत्यर्थे किं पदमत्र प्रयुक्तम्?

(ii) 'भवामि' इति क्रियापदस्य कर्तुपदं किम्?

प्रश्न 2. यथानिर्देशं प्रश्नद्वयम् उत्तरत–

(i) 'तेषामहं समुद्धर्ता मृत्युसंसारसागरात्' अस्याः पंक्तेः संदर्भग्रन्थः लेखकः च कः?

(ii) 'सर्वारम्भपरित्यागी यो मद्भक्तः स मे प्रियः' इति कः कं प्रति कथयति।

प्रश्न 3. अधोलिखितपद्ययोः प्रदत्तं अन्वयं मञ्जूषा प्रदत्तपदैः पूरयित्वा पुनः लिखत–

(क) क्लेशोऽधिकतरस्तेषामव्यक्तासक्तचेतसाम्।

अव्यक्ता हि गतिर्दुःखं देहवद्भिरवाप्यते।।

ये तु सर्वाणि कर्माणि मयि संन्यस्य मत्पराः।

अनन्येनैव योगेन मां ध्यायन्त उपासते।।

अन्वय (क)

(अ) श्रीभगवान् उवाच – अव्यक्तासक्त (i) _____ तेषाम् (ii) _____ अधिकतरः। हि (iii) _____ अव्यक्ता (iv) _____ दुखम् अवाप्यते।

(ब) तु ये (i) _____ कर्माणि मयि (ii) _____ मत्पराः (भूत्वा) (iii) _____ योगेन माम् एव (iv) _____ उपासते।

मञ्जूषा – ध्यायन्तः, संन्यस्य, क्लेशः गतिः देहवद्भिः

चेतषाम्, सर्वाणि, अनन्येन

अन्वयः (ख) श्रेयो हि ज्ञानमभ्यसााद्ज्ञानाद्ध्यानं विशिष्यते।

ध्यानात्कर्मफलत्यागस्त्यागाच्छान्तिरनन्तरम्।।

अद्वेष्टा सर्वभूतानां मैत्रः करुण एव च।

निर्ममो निरहंकारः समदुःखसुखः क्षमी।।

(अ) अभ्यासात (i) _____ , ज्ञानात् (अपि) (ii) _____ विशिष्यते ध्यानात् (iii) _____ (श्रेयः)। हि (iv) _____ अनन्तरं शान्तिः (प्राप्यते)।

(आ) सर्वभूतानाम् (i) _____ मैत्रः (ii) _____ निर्ममः (iii) _____ समदुःखसुख (iv) _____ एव च (मे प्रियः वर्तते)

मञ्जूषा – निरंहकारः, क्षमी, ध्यानं ज्ञानं, अद्वेष्टा, त्यागात्, करुणरु, निरंहकारः।

अन्वयः(ग) मय्येव मन आधस्त्व मयि बुद्धिं निवेशय।

निवसिष्यसि मय्येव अत ऊर्ध्वं न संशयः।।

मयि एव मनः (i) _____ मयि (ii) _____ निवेशय मयि एव (iii) _____ अतः (iv) _____ संशयः न अस्ति।

मञ्जूषा – (ऊर्ध्वम्, बुद्धिम्, आधस्त्व, निवसिष्यसि)

प्रश्न 4. अधोलिखित पद्यस्य प्रदत्तं भावार्थं मञ्जूषा प्रदत्तपदैः पूरयित्वा पुनः लिखत–

(क) ये तु सर्वाणि कमांणि मयि संन्यस्य मत्पराः।

अनन्येनैव योगेन मां ध्यायन्त उपासते।।

भावार्थः ये (पुरुषाः) समस्तानि (i) _____ श्रीकृष्णं (ii) _____ कृष्णपरायणाः भवन्ति अभ्यास (iii) _____ कृष्णस्य ध्यानं कुर्वन् (iv) _____ ।

मञ्जूषा– (समर्पयित्वा, उपासनां कुरुते, योगेन, कार्याणि)

अथवा

(ख) प्रत्येकम् अंशस्य प्रदत्तभावार्थत्रयात् शुद्धं भावार्थं चित्वा लिखत्–

(अ) भवामि नचिरात्पार्थं मय्यावेशितचेतसाम्।।

(i) अर्जने आवेशितं चित्तं।

(ii) भक्ते आवेशितं चित्तं उद्धारं भवति।

(iii) श्रीकृष्णे आवेशितं चित्तंस्य अहं (श्रीकृष्णः) शीघ्रं उद्धारं करोमि।

(आ) सर्वारम्भपरित्यागी

(i) सर्वेषां कर्मणाम् आरम्भस्य त्यक्ता।

(ii) कर्मणाम् अधिष्ठाता

(iii) अकर्मणाम् सेवी

उत्तर– सर्वेषां कर्मणाम् आरम्भस्य त्यक्ता।

प्रश्न 5. अधोलिखितानां 'क' स्तम्भस्य वाक्यांशानां 'ख' स्तम्भस्य वाक्यांशैः सह सार्थकं मेलनं कृत्वा वाक्यान्ति पुनः लिखत।

क	**ख**
(i) निर्ममः निरहंकारः	(क) मद्भक्तः स मे प्रियः।
(ii) समः शत्रौः च मित्रे च	(ख) संतुष्टो येन केनचित्।
(iii) तुल्यनिन्दास्तुतिर्मौनी	(ग) तथा मानापमानयोः।
(iv) सर्वारम्भपरित्यागी यो	(घ) समदुःखसुख क्षमी।

प्रश्न 6. अधोलिखित वाक्येषु रेखांकितपदानां प्रसंगानुसारं सार्थकम् अर्थ चित्वा लिखत–

(अ) ये तु सर्वाणि कर्माणि मयि <u>संन्यस्य</u> मत्पराः।

(i) नीत्वा

(ii) संलग्नः

(iii) समर्पयित्वा

– समर्पयित्वा

(आ) निर्ममो निरहंकारः समदुःखसुख क्षमी।

(i) ममतारहितं

(ii) मातारहितं

(iii) मोह रहितं

– ममतारहितं

(इ) भवामि नाचिरात्पार्थ मय्यावेशितचेतसाम्।।

(i) कृष्णः

(ii) सुदामा

(iii) अर्जुनः

– अर्जुनः

एकादशः पाठः

उत्तरमाला

पद्यांशः–

(अ) एकपदेन उत्तरत–

(क) देहवद्भिः

(ख) श्रीभगवान्

(ग) श्रीकृष्णम्

(आ) पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(क) तेषाम् अव्यक्तासक्त - चेतसाम् अधिकतरः क्लेशः अस्ति।

(ख) ये तु सर्वाणि कर्माणि मयि संन्यस्य अनंन्येन एव योगेन माम् ध्यायन्त उपासत।

(इ) यथानिर्देशात्मक–

(क) सर्वाणि

(ख) योगीजनाः (योगिनः)

(ग) कृष्णाय

(घ) क्लेशः

3, 4 पद्यांशः–

(अ) एकपदेन उत्तरत–

(क) मनः

(ख) मयि (श्रीकृष्णे)

(आ) पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(क) ये इन्द्रियग्रामं संनियम्य सर्वत्र समबुद्धय (सन्) सर्वभूत हिते रताः (भवन्ति) ते मामेव प्राप्नुवन्ति।

(ख) त्वं मयि एव निवसिष्यसि।

(इ) यथानिर्देशात्मक–

(क) स्थिरम्

(ख) सर्वत्र

(ग) प्राप्नुन्ति

5, 6 पद्यांशः–

(अ) एकपदेन उत्तरत–

(क) चित्तम्

(ख) ज्ञानम्

(आ) पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(क) अर्जुनः अथ चितं मयि स्थिरं समाधातुं न शक्नोषि, ततः माम् अभ्यासयोगेन आप्तुम इच्छुत।

(ख) अभ्यासात् ज्ञानं श्रेयः ज्ञानात् (अपि) ध्यानं विशिष्यते, ध्यानात् कर्मफलत्यागः (श्रेयः)।

(ग) त्यागात् अनन्तरं शान्तिः प्राप्यते।

(इ) यथानिर्देशात्मक–

(क) श्रेयः

(ख) ज्ञानम्

(ग) धनंजय

(घ) स्थिरम्

7, 8 पद्यांशः–

(अ) एकपदेन उत्तरत–

(क) सर्वभूतानाम्

(ख) अभ्यासे

(आ) पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(क) सर्वभूतानाम् अद्वेष्टा मैत्रः करुणः निर्ममः निरहंकारः समदुःखसुखः क्षमी श्रीकृष्णस्य प्रियः कथितः।

(ख) त्वं मदर्थं कर्माणि कुर्वन् अपि सफलतां प्राप्स्यसि।

(इ) यथानिर्देशात्मक–

(क) निरहंकारः

(ख) मैत्रः

(ग) कृष्णाय

9, 10, 11 पद्यांशः–

(अ) एकपदेन उत्तरत–

(क) संगात् विवर्जितः

(ख) मानापमानयोः

(ग) भक्तिमान् नरः

(आ) पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(क) यः शत्रौ च मित्रे च तथा मानापमानयोः समः अस्ति, शीत-उष्ण-सुख दुःखेषु च समः संगात् विवर्जितः सः मनुष्यः कृष्णस्य प्रियः।

(ख) ततः त्वं सर्वकर्मफलत्यागं कुरु।

(ग) मद्योगम् अश्रितः (त्वम्) जनः सर्वकर्मफलं त्यागं कुर्यात्।

(इ) यथानिर्देशात्मक–

(क) नरः

(ख) नरः

(ग) अनिकेतः

(घ) श्रीकृष्णाय

12, 13 पद्यांशः–

(अ) एकपदेन उत्तरत–

(क) श्रीकृष्णः

(ख) शोचति

(आ) पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(क) शुभाशुभपरित्यागी जनः श्रीकृष्णस्य प्रियः उक्तः।

(ख) सिद्धभक्तः अनपेक्षः शुचिः दक्षः उदासीनः गतव्यथः। सर्वारम्भपरित्यागी इत्यादि लक्षणानि युक्तः भवति।

(इ) यथानिर्देशात्मक–

(क) शुचि

(ख) अनपेक्षः

(ग) श्रीकृष्णाय

14, 25 पद्यांशः–

(अ) एकपदेन उत्तरत–

(क) संतुष्ट

(ख) श्रीकृष्णः

(ग) मय्यावेशितचेतसाम्

(आ) पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(क) श्रीकृष्णः मृत्युसंसारसागरात् उद्धारं करोति।

(ख) यः सततं सनतुष्टः योगी, यतात्मा, दृढनिश्चयः सः भक्तः कृष्णास्य प्रियः अस्ति।

1. यथानिर्देशत्मकः–

(क) संततम्

(ख) श्रीकृष्णः

2. यथानिर्देशं–

(क) संदर्भग्रन्थः – श्रीमद्भगवद्गीता (महाभारतम्)

(ख) श्रीकृष्णः अर्जुनं प्रति कथयति।

3. अन्वयः– (क)

(अ) (क) चेतसाम्

(ख) क्लेशः

(ग) देहवद्भिः

(घ) गतिः

(आ) (क) सर्वाणि

(ख) सन्यस्य

(ग) अनन्येन

(घ) ध्यायन्तः

अन्वयः–(ख)

(अ) (क) ज्ञानं

(ख) ध्यानं

(ग) कर्मफलत्यागः

(घ) त्यागात्

(आ) (क) अद्वेष्टा

(ख) करुण

(ग) निरहंकारः

(घ) क्षमी

अन्वयः–(ग)

(अ) (क) आधसत्व

(ख) बुद्धिम्

(ग) निवसिष्यसि

(घ) ऊर्ध्वम्

4. भावार्थ–

(क) कार्याणि

(ख) समर्पयित्वा

(ग) योगेन

(घ) उपासनां कुरुते

अथवा

(क) श्रीकृष्णे आवेशितं चित्तस्य अहं (श्रीकृष्णः) शीघ्रं उद्धारं करोमि।

(ख) सर्वेषां कर्मणाम् आरम्भस्य त्यक्ता।


संस्कृत साहित्य परिचयः
अश्वघोषः
बुद्धचरितम् सौन्दरनन्दम्
भारविः
किरातार्जुनीयम्
मेघदूतम्
ऋतुसंहारम्
कालिदासः
रघुवंशम् कुमारसंभवम्
कृष्ण द्वैपायनः वेदव्यासः
महाभारतम्
वाल्मीकिः
रामायणम्
संस्कृत साहित्य परिचय
वेदः
रामायण
महाभारत
पुराण
गद्य पद्य चम्पू
काव्य

न दाक्षिण्यं न सौशील्यं न कीर्तिः न सेवा नो
दया किं जीवनं ते ।

न दानशीलता है, न सुशीलता है,
न कीर्ति है, न सेवा है, न दया है,
तो तुम्हारे जीवन का क्या लाभ है
अर्थात् जीवन व्यर्थ है"।

5. सार्थकं मेलनम्–

(क)	(ख)
(i)	(घ) समदुःखसुख क्षमी।
(ii)	(ग) तथा मानापमानयोः।
(iii)	(ख) सन्तुष्टो येन केनचित्।
(iv)	(क) मद्भक्तः स मे प्रियः।

6. सार्थक अर्थः

(क) समर्पयित्वा (ख) ममतारहितं

(ग) अर्जुनः

संस्कृत भाषायाः उद्भवः विकासश्च

1. संस्कृतम् इति शब्दस्य का व्युत्पत्तिः?
2. संस्कृतस्य का परिभाषा?
3. 'संस्कृतभाषा' इत्यर्थे प्रमुखाः के-के शब्दाः?
4. संस्कृतभाषायाः साहित्यं कति भागेषु विभक्तम् अस्ति?
5. 'देववाणी, गीर्वाणीभारती, सुभारती, आर्यभाषा' इत्यादयः कस्या भाषायाः नामानि।
6. "संस्कृतम्" कस्य परिवारस्य भाषा अस्ति।
7. सम + कृ + क्त व्युत्पत्तिः अस्ति।
8. का भाषा देववाणी कथ्यते।

उत्तराणि

1. सम् (उपसर्गः) : कृ (धातुः) + क्त (प्रत्ययः) नपु. लिंङ्ग प्र. वि. एकवचन।
2. या भाषा व्याकरण-दृष्ट्या शुद्धं परिष्कृतं वा अस्ति सां 'संस्कृतम्' इति कथ्यते।
3. संस्कृतम् देववाणी, देवभाषा, देवगिरा, दैवीवाक्, सुरभारती, गीर्वाणी, गीर्वाणवाणी इति।
4. लौकिके वैदिके च द्वयोः
5. संस्कृतभाषाः
6. भारत-यूरोपीय
7. संस्कृतस्य
8. संस्कृतभाषाः

संस्कृत साहित्य-परिचयः – लघुत्तरात्मकाः

वैदिक साहित्यम्

प्रश्न-1

1. 'वेद' इति पदस्य कः आशयः? वेदाः कति सन्ति, तेषां नामोल्लेखं कुरूत?
2. ऋग्वेदस्य संक्षिप्त-परिचयं लिखत?
3. यजुर्वेदस्य सामान्यं/संक्षिप्तं परिचयं लिखत?
4. सामवेदस्य सामान्यं/संक्षिप्तं परिचयं लिखत?
5. अथर्ववेदस्य संक्षिप्तं (सामान्यं) परिचयं लिखत?

प्रश्न-2

1. वेदाः कति सन्ति तेषां नामोल्लेखं कुरुत?
2. "वेदत्रयी" इति शीर्षके कति के च वेदाः सन्ति?
3. कः वेदः प्राचीनतमः? कः वेदः अप्रचीनतमः इति रुपेण विख्यातः अस्ति?
4. वैदिकसाहित्यस्य विकास कालः कः मन्यते?
5. कः वेदः स्तुतिप्रधानः वेदः अस्ति?
6. ऋग्वेदे कति मण्डलानि सन्ति?
7. यजुर्वेदस्य कति भेदौ सन्ति?
8. 'यज्ञप्रधानः' वेदः कः अस्ति?
9. सामवेदस्य कति भेदौ स्तः?
10. 'वेदत्रयी' इति शीर्षके कः वेदः न गण्यते?
11. सर्वप्रथमं पद्यं कस्मात् प्राप्यते?
12. सर्वप्रथमं गद्यं प्राप्यते?
13. वास्तुशास्त्रप्रधानः वेदः अस्ति?
14. 'आयुर्वेद' इति शीर्षकेण जायते?
15. 'गायनप्रधानः' वेदः अस्ति?
16. 'यज्ञप्रधान' वेदः अस्ति?
17. ऋग्वेदे कति मण्डलानि सन्ति।

उत्तराणि–

उत्तर-1

1. वेदः ज्ञानार्थकस्य वाचकः अस्ति। प्राचीनतम्-ज्ञान-विज्ञान-संस्कृति आदि विषयाः वेदेषु विद्यन्ते।

2. ऋग्वेदे श्लोकः 'मन्त्र' 'ऋक्' वा इति कथ्यते। अयं वेदः स्तुतिप्रधानः वेद अस्ति। अस्मिन् वेदे दश-मण्डलानि विद्यन्ते।

3. यजुर्वेदः 'यज्ञप्रधानः अस्ति। अतः अस्मिन् वेदे कर्मकाण्ड-विधिः विद्यते। अस्य प्रमुखौ द्वौ भेदौ स्तः– (1) कृष्णयजुर्वेदः (2) शुक्लयजुर्वेदः च।

4. अयं गायनप्रधानः वेद अस्ति। सामन् (साम) शब्दस्य तात्पर्य गायनं/स्वरः/लयः। अस्य अधिकांशतः मन्त्राः ऋग्वेदात् संकलिताः सन्ति। अस्य द्वौ भेदो स्तः– (1) पूर्वार्चिकः (2) उत्तरार्चिकः

5. यज्ञवेदीनिर्माणविषयक-वास्तुशास्त्रप्रधानः वेदः अथर्ववेद कथ्यते।

उत्तर-2

1. वेदा चत्वारः सन्ति– (1) ऋग्वेदः (2) यजुर्वेदः (3) सामवेदः

   (4) अथर्ववेदः च।

2. 'वेदत्रयी' इति शीर्षके ऋग्वेदः, यजुर्वेदः, सामवेद च सन्ति।

3. ऋग्वेदः प्राचीनतमः वेदः अथर्ववेदः अप्राचीनतम इति रुपेण विख्यातः।

4. 200 ई. पू. – 800 ई. पू.।

5. ऋग्वेदः

6. ऋग्वेदे दश (10) मण्डलानि सन्ति।

7. यजुर्वेदस्य द्वौ भेदौ स्तः– (1) कृष्णयजुर्वेदः (2) शुक्लयजुर्वेदः च।

8. यज्ञप्रधानः वेदः यजुर्वेदः अस्ति।

9. सामवेदस्य द्वौ भेदौ स्तः– (1) पूर्वाचिकः (2) उत्तरार्चिकः

10. वेदत्रयी इति शीर्षके अथर्ववेदः न गण्यते।

11. ऋग्वेदात्

12. यजुर्वेदे

13. अथर्ववेदः

14. अथर्ववेदः

15. सामवेदः गायनप्रधानः वेदः अस्ति।

16. यज्ञप्रधानः यजुर्वेदः अस्ति।

17. ऋग्वेदे दश मण्डलानि सन्ति।

सामान्यः परिचयः– रामायणम्, महाभारतम् पुराणानि च

1. रामायणं कः रचितवान्?

2. रामायणस्य नायकस्य नाम लिखत?

3. रामायणस्य अपरं नाम लिखत?

4. रामायणे कति श्लोकाः सन्ति?

5. रामायणे कति काण्डानि सन्ति?

6. रामायणस्य रचनाकालः कः मन्यते?

7. महाभारतस्य लेखकः कः?

8. महाभारतस्य अपरं नाम लिखत?

9. महाभारते कति पर्वाणि सन्ति?

10. महाभारतस्य रचनाकालः कः मन्यते?

11. पुराणानि काति सन्ति?

12. पुराणस्य अर्थः कः अस्ति?

13. "मा निषाद" इत्यादि श्लोकं कः अरचयत्?

14. आदिकविः वाल्मीकिः कस्य लेखकः अस्ति?

15. 'आदिकाव्यं' कस्य अपरं नाम अस्ति?

16. रामायणे कति श्लोकाः सन्ति?

17. रामायणं विभाजितं अस्ति?

18. शतसाहस्त्री संहिता कथ्यते?

19. महाभारते कति पर्वाणि सन्ति?

20. महाभारतस्य रचयिता अस्ति?

21. महभारतस्य रचनाकालः अस्ति?

22. कौरवानां पाण्डवानां च मध्ये युद्धस्य वर्णनं अस्ति?

23. 'प्राचीनवर्णनम्' कस्य विषयः अस्ति?

24. श्रीमद्भगवदगीता कस्य भागः अस्ति?

25. कस्य ग्रन्थस्य विषये कथ्यते 'यन्नेहस्ति न तत् क्वचित्'?

26. पुराणानां संख्या अस्ति?

उत्तराणि– रामायणम्, महाभारतम् पुराणानि च

1. आदिकविः वाल्मीकिः
2. श्रीरामः
3. आदिकाव्यं – चतुर्विंशतिःसाहस्री संहिता।
4. चतुर्विंशतिः सहस्त्र श्लोकाः सन्ति।
5. सप्त
6. 500 ई. पू.
7. कृष्णद्वैपायनः वेदव्यासः।
8. 'शतसाहस्री संहिता'/आर्ष महाकाव्यं।
9. अष्टादश
10. 400 ई. पू.
11. अष्टादश
12. प्राचीनवर्णनम्। पुरातनम् आख्यानम्।
13. वाल्मीकिः
14. रामायणस्य
15. रामायणस्य
16. चतुर्विंशतिसहस्त्राणि
17. काण्डेषु
18. महाभारतं

19. अष्टादश

20. वेदव्यासः

21. 400 ई. पू.

22. महाभारते

23. पुराणस्य

24. महाभारतस्य

25. महाभारतस्य

26. अष्टादश

'घ' भागः (प्रश्नः)

संस्कृत-साहित्येतिहासस्य सामान्यः परिचयः

(क) संस्कृतभाषायाः उद्भवः विकासश्च (लघूत्तरात्मकाः प्रश्नाः)

1. संसारस्य उपलब्धासु भाषासु प्राचीनतमा भाषा का अस्ति?
2. वैज्ञानिकदृष्ट्या संस्कृतभाषा कस्या भाषापरिवारस्य भाषा अस्ति?
3. 'वसुधैव कुटुम्बकम्' कस्याः भाषायाः उद्धोषः अस्ति?
4. यत् संस्कृतसाहित्यं पाणिनीयव्याकरणस्य अनुसरणं करोति तत् किं कथ्यते?
5. संस्कृतव्याकरणस्य सुप्रसिद्धः लेखकः कः?
6. महर्षिणा पाणिनिना विरचितस्य ग्रन्थस्य नाम किम?
7. संस्कृतभाषायाः साहित्यं कति भागेषु विभक्तमस्ति?
8. संस्कृतसाहित्यस्य द्वौ भागौ कौ स्तः?
9. संस्कृतभाषायाः लिपिः का अस्ति?
10. 'अष्टध्यायी' ग्रन्थे कति अध्यायाः सन्ति?
11. ऋग्वेदस्य भाषा का अस्ति?
12. लौकिसंस्कृते विरचितं आदिकाव्यं किमस्ति?
13. शुद्धा परिष्कृता संस्कारयुक्ता भाषा का अस्ति?
14. लौकिकसंस्कृतात् पूर्वं संस्कृतभाषायाः किं नाम आसीत्?
15. संस्कृत-वाङ्मयस्य विशालतमः ग्रन्थः कः?

(ख) वैदिक साहित्यम् (लघूत्तरात्मकम्)

1. 'विद ज्ञाने' इति ज्ञानार्थधातुद्वारा कः शब्दः निष्पद्यते?
2. ब्राह्मेण ग्रन्थानां परिशिष्टरुपाणि कानि सन्ति?
3. 'उपनिषद्' शब्दस्य प्रकृति-प्रत्ययविभागं कुरुत।
4. किं वेदान्तमपि कथ्यते?
5. 'शतपथब्राह्मणः' केन वेदेन सम्बद्धोऽस्ति?
6. वेदस्य अपरं नाम किम्?
7. वेदः कीदृशो भवति?
8. वेदशब्दस्य कः अर्थः?
9. ये ग्रन्थाः वेदानां व्याख्यां कुर्वन्ति ते कथ्यन्ते?
10. 'वेदत्रयी' इत्यस्मिन् को वेदः नास्ति?
11. वेदस्य कति अङ्गानि सन्ति?
12. निरुक्तस्य लेखकः कः?
13. 'सत्यमेव जयते' कस्यां उपनिषदि वर्तते?
14. षड् वेदाङ्गानां नामानि लिखन्तु?
15. शिक्षा वेदस्य किमस्ति?
16. वेदस्य मुखं किं स्मृतम्?
17. यज्ञेषु अशुद्धि-निवारणस्य कार्यं कः करोति?
18. ज्योतिषशास्त्रस्य रचयिता कोऽस्ति।

(ग) रामायण-महाभारत-पुराणसम्बन्धिताः लघूत्तरात्मकाः प्रश्नाः

1. महर्षिणा वेदव्यासेन विरचितस्य महाकाव्यस्य नाम किमस्ति?

2. श्रीमद्भगवद्गीता कस्य ग्रन्थस्य एकः भागोऽस्ति?

3. भगवद्गीतायां कति अध्यायाः सन्ति?

4. महाभारतस्य वास्तविकं नाम किम् अस्ति?

5. महभारते कति पर्वाणि सन्ति?

6. वाल्मीकिना रामायणस्य रचना कस्यां भाषायां कृता।

7. गायत्रीमन्त्रे कति अक्षराणि सन्ति।

8. रामायणे प्रयुक्तस्य छन्दसः नाम किमस्ति?

9. इन्द्रस्य प्रसिद्ध-हस्तिनः नाम किम् आसीत्?

10. दशाननः कः अस्ति?

11. पुराणानां कति लक्षणानि सन्ति?

12. उपपुराणानि कति सन्ति?

13. पुराणस्य शाब्दिकः अर्थः कः?

14. सर्गश्च प्रतिर्सश्च वंशो मन्वन्तराणि च।

    वंशानुचरितं चैव पुराणं पञ्चलक्षणम्।।

    अस्मिन् श्लोके कस्य पञ्चलक्षणम् वर्णितम्?

15. मद्वयं भद्वयं चैव बत्रयं वचतुष्टयम्।

    अनापलिंगकूस्कानि पुराणानि पृथक्-पृथक्।।

अनेन श्लोकेन कति पुराणानि वर्णितानि?

16. बत्रयं मध्ये कानि पुराणानि सन्ति?

उत्तराणि– (क)

1. संस्कृत-भाषा

2. भारोपीयपरिवारस्य

3. संस्कृतभाषाया:

4. लौकिकसाहित्यम्

5. पाणिनि:

6. अष्टध्यायी

7. द्वयो: भागयो:

8. (क) वैदिकसाहित्यम् (ख) लौकिकसाहित्यम्

9. देवनागरी

10. अष्ट

11. वैदिकसंस्कृतम्

12. रामायणम्

13. संस्कृतम्

14. देववाणी

15. महाभारतम्

उत्तराणि– (ख)

1. वेदः

2. आरण्यकाः उपनिषद् च

3. उप + नि + षद् + क्तिन्

4. उपनिषद्

5. शुक्ल-यजुर्वेदेन

6. श्रुतिः

7. अपौरुषेयः

8. ज्ञानम्

9. ब्राह्मणग्रन्थाः

10. अथर्ववेदः

11. षड्

12. यास्कः

13. मुण्डकोपनिषद्

14. (क) शिक्षा (ख) कल्पः (ग) व्याकरणम्

(घ) निरुक्तम् (ङ) छन्दः (च) ज्योतिषः च

15. घ्राणम्

16. व्याकरणम्

17. ब्रह्मा

18. लगधमुनिः

उत्तराणि– (ग)

1. महाभारतम्
2. महाभारतस्य
3. अष्टादश
4. जयसंहिता
5. अष्टादश
6. संस्कृतभाषायाम्
7. चतुर्विंशतिः
8. अनुष्टुप् छन्दः
9. ऐरावतः
10. रावणः
11. पञ्च
12. अष्टादश
13. पुरातनम्
14. पुराणस्य
15. अष्टादश
16. (क) ब्रह्मपुराणम् (ख) ब्रह्मवैवर्तपुराणम् (ग) ब्रह्माण्डपुराणम्

आदर्श प्रश्नपत्रम्-1

कक्षा एकादशी **संस्कृत (केन्द्रिकम्) कोड-322**

समयः-होरात्रयम् **सम्पूर्णांङ्का-80**

सामान्यनिर्देशाः-

- अस्मिन प्रश्नपत्रे चत्वारः भागाः सन्ति।

'क' भागः अपठितावबोधनम्	10 अङ्काः
'ख' भागः रचनात्मककार्यम्	15 अङ्काः
'ग' भागः अनुप्रयुक्त-व्याकरणम्	20 अङ्काः
'घ' भागः (I) पठितावबोधनम्	25 अङ्काः
(II) संस्कृतसाहित्येतिहासस्य सामान्य परिचयः	10 अङ्काः

- प्रश्नसंख्या प्रश्नपत्रानुसारमेव लेखनीया।
- सर्वेषां प्रश्नानामुत्तराणि संस्कृतेन लेखनीयानि।
- उत्तरलेखनात पूर्व प्रश्नक्रमांकः अवश्यमेव लेखनीयः।
- प्रश्नानां निर्देशाः ध्यानेन पठनीया।

भागः-क

अपठितावबोधनम् - 10 अङ्काः

(अनुप्रयुक्तव्याकरणम्)

1. अधोलिखितम् अपठितगद्यांशं पठित्वा प्रश्नान् उत्तरत–

महाकवेः कालिदासस्य नाम को न जानाति। अस्य महाकवेः न केवलं भारतवर्षे अपितु समस्ते विश्वे महती प्रसिद्धिः। अयं हि कविकुलगुरुः कथ्यते। एषः कविः संस्कृतसाहित्यस्य सर्वश्रेष्ठः कविः। आंग्ल-देशवासिनः तं 'शेक्सपीयर' इति कथयन्ति। इटली-देशवासिनः तस्य तुलनां स्वकीय दान्तेवर्जिभ्यां सह कुर्वन्ति। जर्मनीदेशवासिनः तु तं विश्वकविं स्वीकुर्वन्ति।

एषः कविः कदा कुत्र च अभवत् इति स्पष्टरूपेण कथयितुं न श्क्नुमः। परमेतत् कथ्यते यत् अयं राज्ञः विक्रमादित्य नवरत्नेषु सर्वश्रेष्ठः कवि आसीत्। अस्य महाकवेः विषये एका जनश्रुतिः श्रुता यत् स जन्मना महामूर्खः आसीत्। केचित् धूर्ताः पण्डिताः तस्य विवाहः कयापि विदुष्या राजमकन्यया सह अकारयन्।

महाकवेः कालिदासस्य कृतीनां भाषा तु अतीव सरला, सुकोमला स्वाभाविकी चास्ति। महाकविः कालिदासः संस्कृतभाषायाः गौरवं, भारतस्य कवीनां गौरवं, भारतीय-संस्कृतेः च 'गौरवम् अस्ति।

(अ) एकपदेन उत्तरत (केवल प्रश्नदयम्) $1 \times 2 = 2$

(i) कालिदासं विश्वकविम् इति के कथयन्ति?

(ii) आंग्लदेशवासिनः तं किं कथयन्ति?

(iii) इटली देशवासिनः तस्य तुलना काभ्यां सह कुर्वन्ति?

(आ) पूर्णवाक्येन उत्तरत (केवलं प्रश्नद्वयम्) $2 \times 2 = 4$

(i) कालिदासस्य कृतीनां भाषा कीदृशी अस्ति?

(ii) कालिदासः कस्य नवरत्नेषु सर्वश्रेष्ठः कविः आसीत्?

(iii) अस्य महाकवेः विषये का जनश्रुतिः प्रसिद्ध?

(इ) अस्य अनुच्छेदस्य कृते समुचितं शीर्षकं लिखत। $1 \times 1 = 1$

(ई) यथानिर्देशम् उत्तरत (केवलं प्रश्नत्रयम्)

(1) 'अकारयन्' इति क्रियापदस्य कर्तृपदं किम्?

(क) पण्डिताः

(ख) विदुष्या

(ग) राजकन्यया

(घ) विवाहः

(2) 'प्रसिद्धि' इति पदस्य विशेषणपदं किम्?

(क) विश्वे

(ख) महती

(ग) समस्ते

(घ) अपितु

(3) ''महापण्डितः'' इति पदस्य विलोमपदं किं प्रयुक्तम्?

(क) धूर्ताः

(ख) जन्मना

(ग) महामूर्खः

(घ) पण्डिताः

(4) 'किंवदन्ती' इति पदस्य कृते पर्यायपदं किं प्रयुक्त्?

(क) कथा

(ख) सरला

(ग) सुकोमला

(घ) जनश्रुतिः

खण्डः 'ख'

रचनात्मकं कार्यम् (15 अङ्काः)

2. परीक्षासफलतायां विषये मित्रं प्रति लिखितं पत्रं मञ्जूषायां प्रदत्तैः पदैः पूरयित्वा पुनः लिखत। ½ × 10 = 5

(i) .....

(ii) .....

(ii) .....

अत्र कुशलं तत्रास्तु। भवतः परीक्षासफलतापत्रम् अधुनैव (iv) .....। भवतः उत्तीर्णतां ज्ञात्वा मयि अति (v) ..... अस्ति। अहोरात्रं प्रयासं विधाय भवान् 95 प्रतिशतम् (vi) ..... लब्धवान्। त्वं मम् परिवाजनस्य (vii) अर्हसि। पत्रसमाप्तौ तुभ्यं पुनः वर्धापनं (viii) ..... । (xi) ..... सादरं नमः।

भवतः (viii) ..... **भाविकः**

मञ्जूषाः- परीक्षाभवनात्, सन्तोषः, पितृभ्याम्, साधुवादान्, अङ्कान्, प्राप्तम्, प्रियमित्र, कामये, सप्रेमनमस्कार, प्रियमित्रम्।

3. मञ्जूषाप्रदत्तपदैः सहायतया निम्नलिखितां कथां पूरयित्वा पुनः लिखत।

½ × 10 = 5

पुरा दधीचिर्नाम महान (i) ..... बभूव। एकदा राक्षसेः (ii) ..... ददेवाः तत्पार्श्वम्, (iii) .....। देवान् समागतान् दृष्ट्वा दधीचिः तेषाम्, (iv) . ..... पृष्टवान्। ईन्द्रः तम् (v) ..... त् ते दधीचेः अस्थिभ्यः वज्रमेकं निर्मातुं (vi) .....। यतो हि तैः (vii) ..... विनर्मितं वज्रमेव राक्षससान्

(viii) ..... अलम्। एतत् श्रुत्वा दधीचिः योगबलेन (xi) ..... अत्यजत्। एवं देवाः तस्य अस्थीनि (x) ..... वज्रं च निर्मितवन्तः।

मञ्जूषाः– तपस्वी, प्राप्नुवन्, स्वप्राणान्, हन्तुम्, पीडिताः, अगच्छन्, अस्थिभिः, आगमनप्रयोजनम्, अकथयत्, वाञ्छन्ति।

4. अधोलिखितं संवादं पठित्वा उचितपदै रिक्त-स्थानानि पूरयत। $1 \times 5 = 5$

सुप्रिया – भवती प्रातः कति-वादने उत्तिष्ठति?

मालती – (i) .....।

सुप्रिया – त्वया कतिवादने विद्यालयः गम्यते?

मालती – (ii) .....।

सुप्रिया – विद्यालयात् कतिवादने आगच्छति?

मालती – (iii) .....।

सुप्रिया – भवती द्विवादने किं करोति?

मालती – (iv) .....।

सुप्रिया – भवती भोजनान्तरं किं करोति?

मालती – (v) .....।

मञ्जूषाः- भोजनं कृत्वा स्वपिमि। भोजनम्। अहं प्रातः पञ्चवादने उत्तिष्ठामि। अहं ततः द्विवादने आगच्छामि। मया सप्तवादने विद्यालयः गम्यते।

अथवा

अधोलिखितानां वाक्यानां संस्कृतभाषायाम् $1 \times 5 = 5$

अनुवादं करोतु (केचन पञ्चवाक्यानाम्)

1. श्याम विद्यालय जाता है।
2. रमा गीत गाती है।
3. मैं पाठ पढ़ूंगा।
4. तुम दोनों शाम को खेल रहे थे।
5. नगर के दोनों ओर वृक्ष है।
6. वह सुबह दौड़ लगाता है।
7. राम कक्षा में प्रथम आता है।

खण्डः 'ग'

अनप्रयुक्तःव्याकरणम् - 20 अङ्काः

5. **अधोलिखितवाक्येषु रेखाङ्कितपढ़ानां सन्धिं सन्धिविच्छेदं वा कुरुत (केवलं प्रश्नत्रयम्)** $1 \times 3 = 3$

(i) कोऽप्रियःप्रियवादिनाम्।

(ii) वर्जयेदन्नपानानि।

(iii) पूर्वावधीरितं श्रेयः।

(iv) ततस्तीरे सवर्मत्या।

6. **अधोलिखित वाक्येषु रेखाङ्कितपदानां समुचितं संयोजितं विभाजितं वा प्रकृतिप्रत्ययं प्रदन्तेभ्यः विकल्पेभ्यः चिनुत। (केवलं प्रश्नत्रयम्)** $1 \times 3 = 3$

(i) निमित्तं <u>सूचयित्वा</u>।

(क) सूच् + क्त्वा

(ख) सूच् + यित्वा

(ग) सूच् + तवा

(ii) तातस्तु तद् अवलोक्य।

(क) अव + लुक् + य

(ख) अव + लोक + ल्यप्

(ग) अव + लुक + यत्

(iii) समृद्धिः जायते तेषाम्।

(क) सम् + ऋ + क्तिन्

(ख) सम + ऋ + तिन्

(ग) सम् + ऋध् + क्तिन्

(iv) एवं राजा परितुष्टः।

(क) परि + तुष् + क्त

(ख) परि + तुष + ट

(ग) परितुष् + टः

7. **अधोलिखितवाक्येषु प्रदत्तविकल्पेभ्यः समुचितं शब्दं चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत। (केवलं प्रश्नत्रयम्)** $1 \times 3 = 3$

(i) नकुलः ..... निष्क्रम्य मानुष वचनं प्राह।

(क) बिलात् (ख) बिलस्य (ग) बिलेन

(ii) मदीये ..... मृत्तिकामयूरः तिष्ठति।

(क) उटजम् (ख) उटजे (ग) उटजः

(iii) मे ..... आसीत्।

(क) मनसः (ख) मनासि (ग) मनसि

(iv) महाराजस्य ..... सुन्दरम् आसीत्।

(क) मुखम् (ख) मुखेन (ग) मुखात्

8. **अधोलिखितवाक्येषु प्रदत्तविकल्पेभ्यः समुचितं क्रियापदं चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत। (केवलं प्रश्नत्रयम्)** $1 \times 3 = 3$

(i) उत्तमं महत् आश्चर्यम् .....।

(क) अभूत् (ख) अभूताम् (ग) अभूवन्

(ii) बाहो! वृथा किं .....?

(क) स्पन्दे (ख) स्पन्दसे (ग) स्पन्दथे

(iii) पश्चिमे तीरे महाजीर्णः शाल्मली वृक्षः .....।

(क) आस्ताम् (ख) आसन् (ग) आसीत्

(iv) किमहमनेन पटेन .....।

(क) करोमि (ख) करोषि (ग) करोति

9. समुचितम् उपपदविभक्तिरूपं लिखत। (केवलं प्रश्नत्रयम्) 1 × 3 = 3

(i) इमं पटं ..... देहि। (अस्मद्)

(ii) ज्ञानात् ..... विशिष्यते (ध्यान)

(iii) तस्मै ..... नमः (पाणिनि)

(iv) परितः नाना वृक्षाः सन्ति (पुष्करिन्)

10. अधोलिखितवाक्येषु वाच्यानुसारं समुचितं पदं चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत। (केवलं प्रश्नद्वयम्) 1 × 2 = 2

(i) ..... अस्याः पुत्रं कथं न मुञ्चसि?

(क) त्वम् (ख) त्वया (ग) तेन

(ii) पुष्करिष्यां ग्रामस्य जनाः स्नानं .....।

(क) करोति (ख) कुर्वन्ति (ग) कुरुतः

(iii) इमे शुचयः सक्तवः च ..... दत्ताः।

(क) मया (ख) मम (ग) माम्

11. प्रदत्तविकल्पेभ्यः शुद्ध पदं चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत। (केवलं प्रश्नत्रयं) 1 × 3 = 3

(i) अङ्के भरताय आरोप्य पर्यपृच्छात सादरम्।

(क) भरतम् (ख) भरतः (ग) भरतेन

(ii) अश्वमेधे महायज्ञं निवृत्ते पदभूदियो।

(क) महायज्ञाय (ख) महायज्ञे (ग) महायज्ञस्य

(iii) राजद्वारे श्मशाने च यः तिष्ठन्ति सः बान्धवः।

(क) तिष्ठसि (ख) तिष्ठामि (ग) तिष्ठति

(iv) अहं ते अपरं क्रीडनकं दास्यसि।

(क) दास्यामि (ख) दास्यति (ग) दास्यन्ति

खण्डः 'घ'

(1) पठितावबोधनम् – 25 अङ्काः

12. अधोलिखितं गद्यांशं पठित्वा प्रश्नान् उत्तरत। सुब्बण्णस्य संगीते यः सहजाभिलाषः आसीत सः एकदा राजभवने संवृत्तया संगत्या पुनरधिकं दृढ़ीबभूव। एकस्मिन् दिने पुत्रेण साकं पुराणिक शास्त्री राजभवनम् एत्य तत्रान्तः पुरस्त्रीजनसमक्षे पुराणप्रवचनमारभमाण आदौ स्वपुत्रेण शुक्लाम्बरधरमित्यादि श्लोकं गापयामास तत् श्रुत्वा तत्रत्याः सर्वे पर्यनन्दन्। अध किञ्चिन् कालानन्तरं तत्र समागतो राजा समुपविश्य पुराणम् आकर्णयति स्म। पितुः पार्श्वे उपविष्टः सुब्बण्णः पुराणप्रवचनं कुतूहलेन श्रण्वन्नेव मध्ये महाराजमपि सविस्मयं पश्यति स्म्। $\frac{1}{2} \times 2 = 1$

(क) एकपदेन उत्तर (केवलं प्रश्नद्वयम्)

(i) कस्य संगीते सहजाभिलाषः आसीत्?

(ii) पुराणिक शास्त्री केन साकं राजभवनं गतः?

(iii) कः पुराणम् आकर्णयति स्म?

(ख) पूर्णवाक्येन उत्तरत। (केवलं प्रश्नद्वयम्)

(i) पुराणिकशास्त्री स्वपुत्रेण किं गापयामास?

(ii) सुब्बण्णस्य संगीते सहजाभिलाषः कथं दृढीबभूव?

(iii) पुराणप्रवचनंश्रृण्वन् सुब्बणः किं पश्यति स्म?

(ग) भाषिककार्यम् (केवलं प्रश्नद्वयम्)

(i) "उपविष्टः सुब्बण्णः" अत्र विशेषणपदं किम्?

(ii) "राजा पुराणम् आकर्णयति स्म" अत्र कर्तृपदं किम्?

(iii) "न्यूनम्" पदस्य विलोमपदं किं प्रयुक्तम्?

13. अधोलिखितं पद्यांशं पठित्वा प्रश्नान उत्तरत।

यस्मिन देशे न सम्मानो न वृत्तिर्न च बान्धवाः।

न च विद्यागमः कश्चित् वासं तत्र न कारयेत्।।

आतुरे व्यसने प्राप्ते दुर्भिक्षे शत्रुसंकटे।

राजद्वारे श्मशाने च यस्तिष्ठति स बान्धवः।।

(क) एकपदेन उत्तरत। (केवलं प्रश्नद्वयम्)। ½ ×2 = 2

(i) यस्मिन् देशे वृत्तिः न तत्र किं न कोरयेत?

(ii) यस्मिन् देशे विधागमः न तत्र किं न कारयेत्।

(iii) य राजद्वारे तिष्ठति सः कः अस्ति?

(ख) पूर्णवाक्येन उत्तर। (केवलं प्रश्नद्वयम्) 1 ×2 = 2

(i) कुत्र वासं न कारयेत्?

(ii) बान्धवः कः अस्ति?

(iii) सम्मानाभावे कुत्र वासं न कारयेत्।

(ग) भाषिककार्यम। (केवलं प्रश्नद्वयम्) 1 ×2 = 2

(i) "अपमानः" अस्य विलोमपदं किम्?

(ii) 'अकाले' अस्य पर्यायपदं किम्?

(iii) "यः तिष्ठति सः बान्धवः" अत्र क्रियापदं किम्?

14. अधोलिखितं नाट्यांशं पठित्वा प्रश्नान् उत्तरत। (बालमुपलालयन्) प्रकाशम्।

दुष्यन्तः – अथ कोऽस्य व्यपदेशः।

तापसी – पुरुवंशः।

दुष्यन्तः – (आत्मगतम्) कथमेकान्वयो मम? (प्रविश्य)।

तापसी – वत्स सर्वदमन! शकुन्तलावण्यं प्रेक्षस्व।

बालः – कुत्र वा मामम्बा?

दुष्यन्तः – (आत्मगतम्) किं वा शकुन्तलेत्यस्य मातुराख्या?

बालः – रोचते मे एषः मयूरः। (इति क्रीडनकम् आदत्ते)।

(क) एकपदेन उत्तरत। (केवलं प्रश्नद्वयम्) ½ ×2 = 1

(i) दुष्यन्तः कस्य व्यपदेशं पृष्छति?

(ii) बालस्य कः व्यपदेशः?

(iii) बालाय कः रोचते?

(ख) पूर्णवाक्येन उत्तरत। (केवलं प्रश्नद्वयम्) 1 ×2 = 2

(i) "शकुन्तलावण्यं प्रेक्षस्व" इति का कं प्रति कथयति?

(ii) बालस्य मातुः नाम किम् आसीत्?

(iii) दुष्यन्तः बालस्य मातुः विषये किं चिन्तयति?

(ग) भाषिकार्यम्। (केवलं प्रश्नद्वयम्) 1 ×2 = 2

(i) 'एषः मयूरः' अत्र विशेष्यपदं किम्?

(ii) "निगत्य" अस्य विलोमपदं किम्?

(iii) "शकुन्तलावण्यं प्रेक्षस्व" अत्र क्रियापदं किम्?

15. अधोलिखितस्य पधस्य भावार्थं मञ्जूषाप्रदत्तपदैः पूरयित्वा पुनः लिखत।

1 ×3 = 3

मनोरथाय नाशंसे किं बाहो स्पन्दसे वृथा।

पूर्वावधीरितं श्रेयो दुःखाय परिवर्तते।।

भावार्थः–हे मम बाहो! अहं मनोरथपूर्तः (i) ..... न करोमि त्वं वृथा स्पन्दसे। पूर्वस्मिन् काले (ii) ..... कल्याणं (iii) ..... कारणं भवति।

मञ्जूषा–तिरस्कृतम्, दुखस्य, कामना

अथवा

प्रदत्तभावार्थत्रयात् शुद्धं भावार्थं चित्वा लिखत। **1 × 3 = 3**

(क) महाराजस्य बहु सन्तोषोऽभवत्।

(i) राजा अतीव सन्तुष्टोऽभवत्।

(ii) राजा दुःखी अभवत्

(iii) राजा सन्तुष्टः न अभवत्।

(ख) बालकः कृष्णः प्रसन्नः सञ्जातः।

(i) बालकः मुदिो न सञ्जातः।

(ii) बालकः कृष्णः मुदितः जातः।

(iii) मुनिः प्रसन्नः सञ्जातः।

(ग) सर्वारम्भपरित्यागी।

(i) अकर्मणां परित्यक्ता।

(ii) कर्मणामारम्भस्य अपरित्यागी।

(iii) सर्वकर्मणाम् आरम्भस्य त्यक्ता।

16. अधोलिखितान्वये रिक्तस्थानानि पूरयित्वा पुनः लिखत। **1 × 3 = 3**

श्लोकः–

गीती शीघ्री शिरः कम्पी तथा लिखित पाठकः।

अनर्थज्ञोऽल्पकण्ठश्च षड्वेते पाठकाधमाः।।

अन्वयः– गीती शीघ्री शिरः कम्पी तथा (i) ..... ।

अनर्थज्ञः (ii) ..... च एते (iii) ..... पाठकाधमाः।।

मञ्जूषाः षड्, लिखितपाठकाः, अल्पकण्ठः

17. "क" स्तम्भस्य वाक्यानां 'ख' स्तम्भस्य वाक्यांशैः सह मेलनं कुरुत।

½ × 4 = 2

'क' स्तम्भ	**'ख' स्तम्भ**
(i) पुष्करिण्याम् एकः	(क) एतत् सत्यं मतं मम।
(ii) प्रदूषितं जलं पीत्वा	(ख) महान् मत्स्यः दृष्टः।
(iii) निर्मलं जलं दृष्ट्वा	(ग) जनाः रुग्णाः भवन्ति।
(iv) यद्भूतहितमत्यन्तम्	(घ) सर्वे प्रसन्नाः अभवन्।

18. अधोलिखितवाक्येषु रेखाङ्कितपदानां प्रसंगानुसारम् अर्थं लिखत।

½ × 4 = 2

(केवलं प्रश्न चतुष्टयम्)

(i) सदैव मिथ्याभाषणं करोति।

(ii) भवामि नचिरात् पार्थ मय्यावकहशजचकजसाम्।

(iii) शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य।

(iv) पुराणप्रवचनं कुतहलेनशृणोति स्म।

(v) प्रिया च भार्या प्रियवादिनी च।

खण्डः 'घ'

(2) संस्कृत साहित्येतिहासस्य सामान्यः

परिचयः (10 अङ्काः)

19. अधोलिखितप्रश्नानामुत्तराणि लिखत (केवलं प्रश्नत्रयम्) **1 × 3 = 3**

(i) 'संस्कृत' शब्दस्य व्युत्पत्तिं लिखत।

(ii) 'संस्कृत' शब्दस्य कः अर्थः?

(iii) 'संस्कृत' भाषायाः अपरनाम किम्?

(iv) 'मेघदूतम्' कस्यां भाषायां लिखित मस्ति?

20. अधोलिखित प्रश्नानामुत्तराणि लिखत (केवलं प्रश्न चतुष्ट्यम) 1 × 4 = 3

(i) वेदाः कति सन्ति?

(ii) वेदांगानि कति सन्ति?

(iii) 'उपनिषद्' शब्छसय कः अर्थः?

(iv) योगदर्शनस्य रचयित। कः अस्ति?

21. अधोलिखित प्रश्नानामुत्तराणि लिखत (केवलं प्रश्नत्रयम्) **1 × 3 = 3**

(i) आदिकविः कः?

(ii) आदिकाव्यं किम्?

(iii) महाभारते कति श्लोकाः सन्ति?

(iv) रामायणस्य अपरनाम किम्?

अंकतालिका

कक्षा एकादशी

संस्कृत् (केन्द्रिकम्) कोड- 322

भागः 'क'

अपठितावबोधनम्

1. (अ) केवलं प्रश्नद्वयम्। **1 × 2 = 2**

(i) जर्मनीदेशवासिनः

(ii) शेक्सपीयर

(iii) दान्तेवर्जिभ्याम्

(आ) केवलं प्रश्नद्वयम्। **2 × 2 = 4**

(i) कालिदासस्य कृतीनां भाषा तु अतीव सरला सुकोमला स्वाभाविकी चास्ति।

(ii) कालिदासः राज्ञः विक्रमादित्यस्य नवरत्नेषु सर्वश्रेष्ठः कविः आसीत्।

(iii) अस्य महाकवेः विषये जनश्रुतिः प्रसिद्धा यत् स जन्मना महामूर्खः आसीत्।

(इ) महाकविः कालिदासः **1 × 1 = 1**

(ई) केवलं प्रश्नत्रयम् । **1 × 3 = 3**

(i) क - पण्डिताः

(ii) ख - महती

(iii) ग - महामूर्खः

(iv) घ - जनश्रुतिः

भाग : 'ख'

रचनात्मककार्यम्

2. पत्रलेखनम् **1/2 × 10 = 5**

(i) परीक्षाभवनात्

(ii) प्रियमित्र

(iii) सप्रेमनमस्कार

(iv) प्राप्तम्

(v) सन्तोषः

(vi) अङ्कान्

(vii) साधुवादान्

(viii) कामये

(ix) पितृभ्याम्

(x) प्रिय मित्रम्

3. कथालेखनम्। **1/2 × 10 = 5**

(ii) तपस्वी

(ii) पीडिताः

(iii) अगच्छन्

(iv) आगमनप्रयोजनम्

(v) अकथयत्

(vi) वाञ्छन्ति

(vii) अस्थिभिः

(vii हन्तुम्

(ix) स्वप्राणान्

(x) प्राप्नुवन्

4. संवादलेखनम्। **1 × 5 = 5**

(ii) अहं प्रातः पञ्चवादने उत्तिष्ठामि।

(ii) मया सप्तवादने विद्यालयं गम्यते।

(iii) अहं ततः द्विवाछने आगच्छामि।

(iv) भोजनम्।

(v) भोजनं कृत्वा स्वपिमि।

अथवा

भागः 'ग'

अनुप्रयुक्त-व्याकरणम्

5. सन्धिकार्यम् (केवलं प्रश्नत्रयम्) **1 × 3 = 3**

(i) कः + अप्रियः

(ii) वर्जयेत् + अन्नपानानि

(iii) पूर्व + अवधीरितम्

(iv) ततः + तीरे

6. प्रत्ययकार्यम् (केवलं प्रश्नत्रयम्) **1 × 3 = 3**

(i) क – सूच् + क्त्वा

(ii) ख – अव + लोक् + ल्यप्

(iii) ग – सम् + ऋध् + क्तिन्

(iv) क – परि+ तुष् + क्त

7. समुचितं शब्दरूपम्। (केवलं प्रश्नत्रयम्) **1 × 3 = 3**

(i) क – बिलात्

(ii) ख – उटजे

(iii) ग – मनसि

(iv) क – मुखम्

8. समुचितं धातुरूपम् (केवलं प्रश्नत्रयम्) **1 × 3 = 3**

(i) क – अभूत्

(ii) ख – स्पन्दसे

(iii) ग – आसीत्

(iv) क – करोमि

9. उपपदविभक्तिः। (केवलं प्रश्नत्रयम्) **1 × 3 = 3**

(i) क – मह्यम

(ii) ख – ध्यानम्

(iii) ग – पाणिनये

(iv) क – पुष्करिणीम्

10. वाच्यकार्यम्। (केवलं प्रश्नद्वयम्) **1 × 2 = 2**

(i) क - त्वम्

(ii) ख - कुर्वन्ति

(iii) क - मया

11. शुद्धं विभक्तिपदम्। (केवलं प्रश्नत्रयम्) **1 × 3 = 3**

(i) क - भरतम्

(ii) ख - महायज्ञे

(iii) ग - तिष्ठति

(iv) क - दास्यामि

भागः 'घ'

(i) पठितावबोधनम्

12. गद्यांशः

(क) केवल प्रश्नद्वयम्। **1/2 × 2 = 1**

(i) सुबण्णस्य

(ii) पुत्रेण

(iii) राजा

(ख) केवलं प्रश्नद्वयम्। **1 × 2 = 2**

(i) पुराणिकशास्त्री स्वपुत्रेण शुक्लाम्बरधरम् इत्यादि श्लोकं गापयामास।

(ii) सुब्बण्णस्च संगीते सहजाभिलाषः राजभवने संकृत्तया संगत्या दृढीबभूव।

(iii) पुराण प्रवचनं शृण्वन् सुब्बण्णः कुठहलेन महाराजम् अपि पश्यति स्म।

(ग) केवलं प्रश्नद्वयम्। **1 × 2 = 2**

(i) उपविष्टः

(ii) राजा

(ii) अधिकम्

13. पद्यांशः

(क) केवलं प्रश्नद्वयम्। **1/2 × 2 = 1**

(i) वासम्

(ii) वासम्

(iii) बान्धवः

(ख) केवलं प्रश्नद्वयम् **1 × 2 = 2**

(i) यस्मिन् देशे ..... तत्र वासं न कारयेत्।

(ii) आतुरे व्यसने ..... यः तिष्ठति सः बान्धवः।

(iii) सम्मानाभावे देशे वासं न कारयेत।

(ग) केवलं प्रश्नद्वयम्। **1 × 2 = 2**

(i) सम्मानः

(ii) दुर्भिक्ष

(iii) तिष्ठति

14. नाटयांशः

(क) केवलं प्रश्नद्वयम् **1/2 × 2 = 1**

(i) बालस्य?

(ii) पुरुवंशः

(iii) मयूरः

(ख) केवलं प्रश्नद्वयम् **1 × 2 = 2**

(i) तापसी बालं प्रति कथयति।

(ii) बालस्य मातुः नाम शकुन्तला आसीत्।

(iii) दुष्यन्तः चिन्तयति यत् बालस्य मातुः नाम शकुन्तला वर्तते।

(ग) केवलं प्रश्नद्वयम् **1 × 2 = 2**

(i) मयूरः

(ii) प्रविश्य

(iii) प्रेक्षस्व

15. भावार्थं लिखतु– **1 × 3 = 3**

(i) कामना

(ii) तिरस्कृतम्

(iii) दु:खस्य

अथवा

शुद्धं भावार्थं चित्वा लिखत– **1 × 3 = 3**

(क) 1 – राजा अतीव सन्तुष्टोऽभवत्

(ख) 2 – बालक: कृष्ण: मुदितो जात:।

(ग) 3 – सर्वकर्मणाम् आरम्भस्य त्यक्ता।

16. अन्वय: **1 × 3 = 3**

(i) लिखितपाठका:

(ii) अल्पकण्ठ

(iii) षड्

17. मेलनं कुरुत **1/2 × 4 = 2**

(i) ख – महान् मत्स्य दृष्ट:

(ii) ग – जना: रुग्णा: भवन्ति

(iii) घ – सर्वे प्रसन्ना: अभवन्

(iv) क – एतत् सत्यं मतं मम

18. प्रसङ्गानुसारमर्थलेखनम् (केवलं प्रश्नचतुष्ट्यम्) **1/2 × 4 = 2**

(i) असत्यभाषणम्

(ii) अर्जुन

(iii) नासिका

(iv) उत्सुकतया

(v) पत्नी

भागः 'घ'

(ii) संस्कृत-साहित्येतिहासस्य सामान्य परिचयः।

19. केवलं प्रश्नत्रयम् **1 × 3 = 3**

(i) सम् + कृ + क्त

(ii) संस्कारयुक्तः, परिशुद्धः, निर्मलः, पवित्रः।

(iii) देववाणी, गिर्वाणराणी, अमृतभाषा

(iv) संस्कृत भाषायाम्

20. केवलं प्रश्नचतुष्टयम् **1 × 4 = 4**

(i) वेदाः चत्वारः सन्ति।

ऋग्वेदः, यजुर्वेद, सामवेदः, अथर्ववेदः।

(ii) वेदाङ्गानि षट् भवन्ति।

शिक्षा, कल्पः, व्याकरणम्, निरुक्तम्, छन्दः ज्योतिषम्।

(iii) उप + नि + सद्।

गुरोः समीपे आसनम्।

(iv) उपवेदाः चत्वारः सन्ति।

(v) पतञ्जलिः।

21. केवलं प्रश्नत्रयम् **1 × 3 = 3**

(i) वाल्मीकिः

(ii) रामायणम्

(iii)एक लक्षम्

(iv) चतुर्विंशतिसाहस्री संहिता

आदर्श प्रश्नपत्रम् - 2

कक्षा-एकादशी

संस्कृत (केन्द्रिकम) कोड 322

समयः होरात्रयम् **पूर्णाङ्का 80**

सामान्य निर्देशाः – प्रश्नानां निर्देशाः ध्यानेन पठनीयाः

- कृपया सम्यक्तया परीक्षणं कुर्वन्तु यत् अस्मिन् प्रश्नपत्रे 21 प्रमुखाः प्रश्नाः सन्ति
- सर्वेषां प्रश्नानां संस्कृतेन उत्तराणि लेखनीयानि
- प्रश्नपत्रे चत्वारो भागाः सन्ति
- 'क' भागः - अपठित अवबोधनम् - 10 अङ्का
- 'ख' भागः - रचनात्मक कार्यम् - 15 अङ्का
- 'ग' भागः - अनुप्रयुक्त व्याकरणम् - 20 अङ्का
- 'घ' भागः -

  (1) पठितावबोधनम् - 25 अङ्का

  (2) संस्कृत-साहित्येतिहासस्य सामान्यः परिचय - 10 अङ्का

भागः 'क'

अपठितांशवबोधनम्

1. अधोलिखितं गद्यांशं पठित्वा प्रदत्त-प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतेन लिखत–

सेवायाः अयम् एव अभिप्रायः यद् मानवः सम्यक्तया परस्परं साहाय्यं कुर्यात्। सर्वे

हि विविधरूपेण क्षमा। स्वक्षमतया परेभतः सहयोगप्रदानं हि जीवनस्य सार्थक्यं भवति। सेवा भवति द्विविधा। पारमार्थिकी, लौकिकी च। पारमार्थक सेवया महात्मानः जनेभयः ज्ञानं यच्छन्ति। तेषां दोषनिवारणार्थं पारस्परिकं वैमनस्यं च दूरीकर्तं प्रयतन्ते। सांसारिक सम्बन्धेषु लौकिकसेवायाः अपि महत्त्वम् अस्ति। एकस्य असाहास्य सेवा लौकिकी सेवा भवति। अनया समाजे शोभनाः सम्बन्धाः जायन्ते। जनानां समस्यानां समाधानम् अपि भवति। जनाः सदैव एतदेव चिन्तयन्तु यद् यावद् वयं स्वरथाः सक्षमाः तावद् अस्माकं स्वस्थता सक्षामता एवं परेषां सेवायां तत्परा भवेत।

(अ) एकपदेन उत्तरत (केवलं प्रश्नद्वयम् **1 × 2 = 2**

(i) 'मानवः साहायं कुर्यात्' अयं कस्याः अभिप्रायः?

(ii) महात्मानः जनेभ्ययः किं यच्छन्ति?

(iii) सांसारिक सम्बन्धेषु कस्याः महत्त्वम् अस्ति?

(आ) पूर्णवाक्येन उत्तरत (केवलं प्रश्नद्वयम्) **2 × 2 = 4**

(i) महात्मनः जनानां किं चिन्तयन्तु?

(ii) जनाः सदैव किं चिन्तयन्त?

(iii) असाहायस्य सहायता का भवति?

(इ) अस्य अनुच्छेदस्य कृते उचित शीर्षकं संस्कृते लिखत।

(ई) यथानिर्देशम् उत्तरत – (केवलं प्रश्नत्रयम्) **1 × 3 = 3**

(क)'अनया समाजे सम्बन्धाः जायन्ते' अत्र अनया इति सर्वनामपदं कस्यै प्रयुक्तम्?

(i) सर्व

(ii) सर्वो

(iii) सेवया:

(iv) सेवा:

(ख) अक्षम: अस्य कर्तृपद किम्?

(i) सक्षम

(ii) अभय

(iii) सक्षमता

(iv) भवेत्।

(ग) 'चिन्तयन्तु' क्रियाया: कर्तृपदं किम्?

(i) क:

(ii) जना:

(iii) सदैव

(iv) समाधानम्

भागः 'ख'

रचनात्मक कार्यम्

2. भवान नवेन्दुः जन्मदिवसोत्सवे कालघटिकां वाच्छति। पितरं प्रति लिखितं पत्रं मञ्जूषायाः रिक्तस्थानानि पूरयित्वा पत्रं पुनः लिखतु। **1/2 × 10 = 5**

(ii).....

दिनांक :

परमादरणीयाः पितृमहाभागाः

सादरं प्रणमामि।

(ii) ..... कुशलं तत्रास्तु। भवता स्वपत्रे पृष्टं यत् जन्मदिवस्य (iii)..... अहं किम् वाञ्छामि? अहं तु (iv)..... कालघटिकाम् इच्छामि। छात्रावासे सर्वाणि कार्याणि (v) भवन्ति परं निश्चितसमयात् भोजनव्यवस्था न वर्तते। प्रातः (vi)..... जागरणम् अत्यावश्यकम्। अतः नियमपालनायक (vii)..... अत्यावश्यकी। अनया (viii) ..... अपि दैनिककार्येषु नियमितः भविष्यामि शेषं सर्वं कुशलम्। मम जनन्यै अग्रजाय च सादरं (ix).....।

भवदीयः प्रियपुत्रः

मञ्जूषा

अत्र, यथासमयम्, प्रणायाः छात्रावासः, उपहाररूपेण एकां, अन्येषु, नवेन्दु पञ्चवादने, घटिका

3. मञ्जूषाप्रदत्तशब्दानां सहायतया अधोलिखितां कथां पूरयित्वा पुनः लिखत–

1/2 × 10 = 5

एकदा देवराजइन्द्रः इन्द्रसभायां देवैः सह प्रथिव्याः विषये (ii) ..... अकरोत् सर्वे देवाः पृथिव्याः जीवनमूल्यानि च अवर्णयन्। इन्द्रोऽवतत्:–'अहं पृथिव्याः (iii) ..... जीवन समस्याः ज्ञात्वा (iv) ..... दूरीकरिष्यामि। देवाः अवदन् यद् धरायाः निवासिनः कुरूपान् (v) ..... दृष्ट्वा व्यग्राः भवन्ति। इन्द्रेण तेषां कुरूपाणां स्वरूपं परिवर्तितुं देवाः आदिष्टाः। भूमिवात्सव्याः सर्वान् असुन्दरान् पदार्थान् सुन्दरान् अकारयन् (vi) ..... इन्द्रः अघोषयत्-द्रष्टव्यं तावत् कोऽपि अनया सुविधया (vii) ..... तु नास्ति। तदा देवैः ज्ञातम् एकः साधुः स्वकुट्यां किमपि (viii)..... अकारयत् पृष्ठे सति साधुः अब्रवीत् 'मानवजीवनाद् अन्यत् नास्ति किमपि (ix).....? आत्मोद्धारातनापि श्रेयान् कोऽपि साधोः वचनानि श्रुत्वा देवाः बहु प्रासीदन् तस्य आन्तरिकं सौन्दर्य च भूयोभूयः प्राशंसन्।

शब्दसूची - सुन्दरम्, विचारम्, पुनः, आनन्दः पदार्थान, समस्याः, वञ्चितः परिवर्तनम्, ताः, सर्वाः

4. वार्तालापे शब्द सूची साहाय्येन रिक्तस्थान पूरयत–

प्रभातः सन्ध्ये। अभिज्ञान शाकुन्तस्य रचयिता कः?

सन्ध्याः (i) .....

प्रभातः आर्य तस्य जन्स्थानं किं मन्यते?

सन्ध्याः (ii) .....

प्रभातः तस्य श्रेष्ठं महाकाव्यं किम अस्ति?

सन्ध्याः (iii) .....

प्रभातः–तस्य जन्मकालः कस्यां शताब्द्यां मन्यते?

सन्ध्याः (iv) .....

प्रभातः 'लघुत्रयी' इति ग्रन्थत्रये के के ग्रन्थाः सन्ति?

सन्ध्याः (v) .....

1. रघुवंशम्।

मञ्जूषा 2. उज्जयिनी।

3. कालिदासः।

4. कुमारसम्भवम्, मेघदूतम रघुवंशम् च।

5. ई.पू. प्रथमशताब्द्याम्।

6. प्रथमशताब्द्याम्।

भागः 'ग'

अनुप्रयुक्त व्याकरणम्

5. अधोलिखितवाक्येषु रेखांकितपदानां सन्धिं सन्धिविच्छेदं वा कुरुत। (केवलं प्रश्नत्रयम्)

1 × 3 = 3

(i) कच्चिदृष्टश्च शूरश्च धृतिमान्।

(ii) किं न खलु बालेऽस्मिन् औरस इव पुत्रे स्निह्यति।

(iii) अहो बलीयः खलु भीतोऽस्मि।

(iv) तातेन यत् + कृतम् सर्वं तदेकपदे मया विस्मृतम।

6. अधोलिखितवाक्येषु रेखाङ्कित पदाभ्यः प्रकृतिप्रत्ययोः प्रकृति प्रत्ययानां वा चयनं शुद्धं कृत्वा लिखत–(केवलं प्रश्नत्रयम्) **1 × 3 = 3**

(क) फलशकलानि च समहाहृत्य मह्यमदात्।

(i) समा + हत + ल्यप्

(ii) सम् + आ + हृ + ल्यप्

(iii) सः + आहृत्य

(iv) समाहृत + य

(ख) अनिर्वचनीयम् एतत्पदयोः सौन्दर्ययम्।

(i) अ + निः + वच् + अनीयर

(ii) अनिर्वचन + यम्

(iii) अनिर्वच + अनीयर

(iv) अ + निर्वचनीयम्

(ग) भतुः अपि अतिकुप्यन्ति सोऽनर्थः सुमहान् स्मृक्तः

(i) समरण

(ii) स्मृत

(iii) स्मृतः

(iv) स्मृक्त

(घ) आतुरे व्यसने प्र + आप + क्त दुर्भिक्षे शत्रुसकते–

(i) प्रापते

(ii) प्राप्ते

(iii) प्रआपते

(iv) प्रआक्त

(ङ) कुसुमस्तबकस्येव द्वर्या वृत + क्तिन् मनस्विः

(i) वृत्त : न्

(ii) वृतनि

(iii) वृत्तिः

(iv) वृतः

7. अधोलिखितवाक्येषु प्रदत्तविकल्पेभ्यः समुचितश चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत्।
(केवलं प्रश्नत्रयम्) **1 × 3 = 3**

(1) अमन्त्रितः मन्त्रो ..... न परिधावति।

(क) राष्ट्र

(ख) राष्ट्रं

(ग) राष्ट्रान्

(2) पुत्रे स्निह्यति मे .....।

(क) मन

(ख) मनौः

(ग) मनः

(3) राजानं ..... वा महती श्रियं प्राप्यते

(क) राजपुत्रम्

(ख) राजपुत्रेषु

(ग) राजपुत्राणाम्

(4) ततः विप्रः तस्य ..... तुष्टा अभवत्।

(क) साधोः

(ख) साधुम

(ग) साधुना

8. अधोलिखितवाक्येषु प्रदत्तविकल्पेभ्यः समुचित-क्रियापदं चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत्। (केवल प्रश्नत्रयम्) $1 \times 3 = 3$

(1) त्वं सहस्राणां मूर्खाणाम् एकं पण्डितम् .....।

(क) इच्छति

(ख) इच्छसि

(ग) इच्छावा

(2) किं भवान् अपि पित्रवत् पुराण प्रवचनं .....।

(क) करिष्यति

(ख) करिण्यथ

(ग) करिष्यामः

(3) हे वत्स! त्वं मेधावी .....।

(क) असि

(ख) अस्ति

(ग) अस्मि।

(4) त्यागात् अनन्तरं शन्तिं .....।

(क) प्रोप्नोमि

(ख) पाप्यते

(ग) प्राप्नुयेम।

9. समुचितं उपपदविभक्तिरूपं चिनुत–(केवल प्रश्नत्रयम्) **1 × 3 = 3**

(1) धिक् ..... करुणमतिनिष्ठुरमकृतज्ञान् (अस्मद्)

(2) ..... समीपे राज्ञः प्रमाणपत्रम् अस्ति। (अस्य)

(1) तस्मै ..... नमः – (पाणिनये, पाणिनिः)

(2) सः वृद्धः ..... सह तपसि स्थितः (पुत्र)

10. अधोलिखितवाक्येषु वाच्यानुसारं रिक्तस्थानानि पूरयत–(केवल प्रश्नद्वयम्)

1 × 2 = 2

(1) पुत्रणे जनकः .....।

(क) सेव्यति

(ख) सेव्यते

(ग) सेवते

(2) विनोदेन ग्रामः .....।

(क) गम्यते

(ख) गच्छति

(ग) गम्येते

11. प्रदत्तविकल्पेभ्यः शुद्धं पदं चित्वा लिखत। (केवल प्रश्नत्रयम) 1 × 3 = 3

(1) न वयं निर्मामि

(क) अर्निमति

(ख) निर्मासि

(ग) निर्मामः

(2) त्वम् प्रकारेण मिथ्या कथायामि

(क) कथयसि (ख) कथयामि (ग) कथय।

(31) अहं पुराणप्रवचनं न करोति।

(क) करोसि (ख) करोमि (ग) करोथः।

(4) नाहं केतु शक्नोसि।

(क) शक्नोसि (ख) शक्नुवन्ति (ग) शक्नोति

भागः 'घ'

पठित-अवबोधन

11. अधोलिखितं गद्यांश पठित्वा तदाधारित प्रश्नान उत्तराणि संस्कृतेन लिखत।

अस्ति मध्यदेशालंकार भूता मेखलेव भुवो विन्ध्याटवी नाम। तस्यां च पम्पाभिधानं पद्मसरः तस्य पश्चिमे तीरे महाजीर्ण शाल्मलीवृक्षः। तस्य एकस्मिन् कोटरे निवसतः कथमपि पितुरहमेव सूनुरभवम। ममैव जायमानस्य प्रसववेदनया जनमे लोकान्तरपगमत्। तातस्त सुतस्नेद्वादन्तनिर्गुण शोकं मत्सवर्धव पर एवाभवत्। परनीडनिपतिताम्या शालिवल्लरीभ्यस्तण्डुलकणान् शुक्ललावदलितानि फलशाकलानि समाहृत्य मह्यमदात्। मदुपभुक्त शेषमेवाकरोदशनम्।

(अ) एकपदेन उत्तर (केवलं प्रश्नद्वयम्) **1/2 × 2 = 1**

(i) किं नाम पद्मसरः अस्ति?

(ii) शुकशावकस्य जननी कया लोकान्तरमगमत्

(iii) तातः फलशकलानि कस्मै अदात्

(आ) पूर्णवाक्येन उत्तर–(केवलं प्रश्नद्वयम्) **1 × 2 = 2**

(i) शुकशवकस्य तातस्तु कीदृशः एवाभवत्?

(ii) शाल्मलीवृक्षः कुत्र आसीत्?

(iii) शावकस्य पिता तम् किम् अदात्?

(इ) यथानिर्देशम् उत्तरत–(केवलं प्रश्नद्वयम्) **1 × 2 = 2**

(i) 'महाजीर्णः शाल्मलीवृक्षः' अनयोः पदयोः विशेष्यपदं किम्?

(ii) भोजनम् इति पदस्य पर्यायपदं किं प्रयुक्तम्?

(iii) अभवत् इति क्रियापदस्य कर्तृपदं किं प्रयुक्तम्।

13. अधोलिखितं पद्यांशं पठित्वा तदाधारितान् प्रश्नान् संस्कृतेन उत्तरत–

प्रश्नान् संस्कृतेन उत्तरत–

यस्मिन् देशे न सम्मानो न वृतिर्न च बान्धवाः।

न च विद्यागमः कश्चिद् वासं तत्र न कारयेत्।।

(अ) एकपदेन उत्तरत (केवल प्रश्नद्वयम्) **1/2 × 2 = 1**

(i) यस्मिन देशे सम्मानो न तत्र किं न कारयेत्?

(ii) कुत्र / कस्मिन् सम्मानाभावे वासं न कारयेत?

(iii) कुत्र / कस्मिन् सम्मानाभावे वासं न कारयेत?

(iv) तत्र कं न कारयते?

(आ) पूर्णवाक्येन उत्तरत–केवल प्रश्नद्वयम्) $1 \times 2 = 2$

(i) कीदृशे देशे वासं न कारयेत्?

(ii) कुत्र वासः न कारयेत?

(इ) यथा निर्देशम् उत्तरत (केवलं प्रश्नद्वयम्) $1 \times 2 = 2$

(i) 'असम्मानः' इति पदस्य विलोमपदं किं प्रयुक्तम्?

(ii) 'कश्चित् वासं न कारयेत्' अस्मिन् वाक्ये क्रियापदं किं प्रयुक्तम्?

(iii) 'अत्र' इति पदस्य विपर्ययपदं किं प्रयुक्तम्?

14. अधोलिखितं नाटयांशं पठित्वा तदाधारितान् प्रश्नान् संस्कृतेन उत्तरत–

(बालमुपलालयन) प्रकाशम्

दुष्यन्तः अथ कोऽस्य उपदेश?

तापसी – पुरुवंशः।

दुष्यन्तः – (आत्मगतम्) कथमेकान्वया मम? (प्रवि)

तपसी – वत्स सर्वदमन! शकुन्तलावण्यं प्रेक्षस्व।

बालः – कुत्र वा ममाम्बा?

दुष्यंतः – (आत्मगतम्) किं वा शकुन्तलेत्यस्य मातुराख्या?

बाल – रोचते मे एष मयूरः (इति क्रीडानकमादते)

(अ) एकपदेन उत्तर (केवल प्रश्नद्वयम्) $1/2 \times 2 = 1$

(1) अस्य कः उपदेशः?

(2) बालाय कः रोचते?

(3) अस्य मातुः नाम किम्?

(अ) पूर्णवाक्येन उत्तरत–(केवल प्रश्नद्वयम्) **1 × 2 = 2**

(1) तापसी बालं किं प्रेक्षितु कथयति?

(2) दुष्यन्तः आत्मगतं किं कथयति?

(3) पुरुवंशः कस्य व्यपदेशः?

(इ) यथानिर्देशम् उत्तर–(केवल प्रश्नद्वयम्)

(1) 'जननी इति पदस्य पर्यायपदं किं प्रयुक्तम्?

(2) रोचते मे एषः मयूरः' अत्र कर्तृपदं किं प्रयुक्तत!?

(3) 'पश्य' पदस्य पर्यायपदं किं प्रयुक्तम्?

15. अधोलिखितस्य पद्यस्य भावार्थं मञ्जूषाप्रदत्तपदै पूरयित्वा पुनः लिखत– 1 × 3 = 3

तद्ये चरन्ति धार्मेण प्रजा वा राज्यशासकाः।

समृद्धिर्जायते तेषां मन्येषां तु क्षयो ध्रुवः।।

भावार्थः–अतएव ये (जनाः) (ii)..... अथवा राज्यशासकाः धर्मेण (ii)..... तेषां जनानां उन्नतिः भवति अन्येषां तु ..... निश्चित भवति।

मञ्जूषाः विनाशः, आचरन्ति, जनताः

अथवा

प्रदत्त भावार्थत्रयात् शुद्धं भावार्थं चित्वा लिखत– **1 × 3 = 3**

(क)'पण्डितो द्वयर्थकृच्छ्रेद कुर्यान्निः श्रेयसं महत्'–

(i) विद्वान् अर्थकाठिन्येषु मत् कल्याणं करोति।

(ii) मूर्खः दुर्दिनेषु सहायतां न करोति।

(iii) सम्बन्धिः वित्तसहायतां करोति।

(ख)'अपरं शोभनं पटं निर्माय समानयत'।

(i) गौरांगः द्वितीय पटं निर्माय समानयत।

(ii) तन्तुवायाः द्वितीयं पटं निर्माय समानयत।

(iii) द्वारपालः द्वितीयं पटं निर्माय समानयत्।

(ग) 'क्षिप्रमारभसे कर्म न दीर्घयसि राघव।

(i) कार्य विलम्बेन करोति शीघ्रं करोषि।

(ii) भरत! त्वं कार्यं शीघ्रं करोषि अथवा विलम्बेन।

(iii) त्वं कदापि कार्यं करोषि।

16. अधोलिखितान्वये रिक्तस्थानानि पूरयत– **1/2 × 4 = 2**

कोऽतिभारः समर्थानां किं दूरं व्यवसायिनाम्।

को विदेशः सविद्यानां कोऽप्रियः प्रियवादिनाम्।।

अन्वयः–समर्थानाम् (कृते) (i)..... अतिभारः (ii)..... (कृते) किम् दरम (अस्ति)। सविद्यानाम् (कृते) कः विदेशः प्रियवादिनाम् (च) (कृते) कः (iii) . ..... भवति (न कोऽपि)।

मञ्जूषाः व्यवसायिनाम्, कः अप्रियः

17. अधोलिखितानां 'क' स्तम्भस्य वाक्यांशनां 'ख' स्तम्भस्य वाक्यांशैं, सह सार्थक-मेलनं कुरुत। **1/2 × 4 = 2**

(क)	(ख)
(1) स्वदेशवस्तुनिष्ठा च	(क) सत्यमेववातिरिच्यते
(2) तस्मिन पुण्यनिवासेतद्	(ख) स ह भीरूः पलायिता
(3) करोति मनसा हिंसा	(ग) च निर्भीतरुचिसंयमः
(4) बलं सर्वबलेभ्योऽपि	(घ) यथार्थो हि स आश्रम

18. अधोलिखितवाक्येषु रेखांकितपदानां प्रसंगानुसारं अर्थं लिखित–प्रश्न चतुष्टयम्) **1 × 3 = 3**

(1) ततस्तीरे साबर्मत्या नाम्ना सत्याग्रहाश्रमः।

(2) अहिंसा सत्यमस्तेयं ब्रह्मचर्यापरिग्रहः।

(3) ध्यान् क्लेशान् स्वबन्धनां तद्वितै कपरायणः।

(4) सुकलत्रः शिशुप्रेमी पितेवोश्रमवासिनाम्।

(5) स्वदेशवस्तुनिष्ठा च निर्भीतरुचि संयमः।

भागः 'घ'

(iii) संस्कृत-साहित्येतिहासस्य सामान्यः परिचयः

19. अधोलिखितप्रश्नानाम् उत्तराणि लिखत। (केवलं प्रश्नत्रयम) **1 × 3 = 3**

(1) संस्कृतस्य का परिभाषा?

(2) 'संस्कृतभाषा' इत्यर्थे प्रमुखाः के के शब्दाः प्रचलिता सन्ति?

(3) संस्कृतभाषायाः साहित्यं कति भागेषु विभक्तम् अस्ति?

(4) संसारस्य उपलब्धभाषासु प्राचीनतमा भाषा का अस्ति?

20. अधोलिखितप्रश्नानाम् उत्तराणि लिखत–(केवल प्रश्नचतुष्टयम $1 \times 3 = 3$

(1) वेदाः कति सन्ति?

(2) प्राचीनतमम: वेदः कः अस्ति?

(3) ऋग्वेदे कति मण्डलानि सन्ति?

(4) 'वेदत्रयी' इति शीर्षके कति के च वेदाः सन्ति?

(5) सामवेदे कस्य प्रधानता अस्ति?

21. अधोलिाित प्रश्नानाम् उत्तराणि लिखित। (केवल प्रश्नत्रयम्) $1 \times 3 = 3$

(1) आदिकविः वाल्मीकिः कस्य लेखकः अस्ति?

(2) रामायण ग्रन्थः केषु विभक्तः अस्ति?

(3) महाभारतस्य रचनाकारः कः अस्ति?

(4) पुराणानि मुख्यतः कति सन्ति?

उत्तराणि

अंक योजना, कक्षा एकादशी

(Marking Scheme XI Class)

संस्कृत (कोर-322)

सम्पूर्णङ्का-80

भाग 'क'

1. (अपठितांश अवबोधनम्)

(अ) एकपदेन उत्तरत–(दो प्रश्न) प्रत्येक भाग के लिए **1 × 2 = 2**

(i) सेवायाः

(ii) ज्ञानम्

(iii) लौकिकसेवायाः/लौकिकी सेवायाः

(आ) पूर्णवाक्येन उत्तरत्–(केवल दो प्रश्न) **2 × 2 = 4**

(i) महात्मानः जनानां दोषनिवारणार्थं, पारस्परिकं वैमनस्यं च दूरीकर्तृ प्रयतन्ते।

(ii) जनाः सदैव एतदेव चिन्तयन्तु यद् यावद् वयं स्वस्थाः तावद् अस्माकं स्वस्थता सक्षमता एवं परेषां सेवायां तत्परा भवेत्।

(i) असाहायस्य सेवा लौकिकी-सेवा भवति।

(इ) अनुच्छेदस्य कृते समुचित शीर्षकं संस्कृतेन लिखत जनानां सेवा / परोपकारः / पारमार्थिकी सेवाआदम्ः **2 × 3 = 2**

(ई) यथानिर्देशं उत्तरत–

(i) सेवायाः

(ii) सक्षमः / क्षमः

(iii) जनाः

भागः 'ख'

रचनात्मक कार्यम्

2. पत्रलेखनम्-दस रिक्तस्थान। प्रत्येक भाग के लिए आधा अंक

1/2 × 10 = 5

(i) छात्रावासः (ii) अत्र (iii) उपहाररूपेण

(iv) एकां (v) यथासमयम् (vi) पञ्चवादने

(vii) घटिका (viii) अन्येषु (ix) प्रणामाः

(x) नवेन्दुः।

3. कथालेखनम्-दस रिक्त स्थान। प्रत्येक भाग के लिए आधा अंक

1/2 × 10 = 5

(i) विचारम् (ii) समस्याः (iii) सर्वाः

(iv) ताः (v) पदार्थान् (vi) पुनः

(vii) वञ्चितः (viii) परिवर्तनम् (ix) सुन्दरम्

(x) आनन्दः।

4. उत्तरम्–

(i) कालिदासः

(ii) उज्जयिनिः

(iii) रघुवंशम

(iv) ई.पू. प्रशमशताब्दयाम्

(v) कुमारसम्भवम् मेघदूतम रघुवंशम् च

5. उत्तरम्–

(i) शूरः + च,

(ii) बाले + अस्मिन्।

(iii) गीतः + अस्मि

(iv) यत्कृतं।

6. उत्तर–

(i) सम + आ + हि + ल्यप्।

(ii) अ + निः + वच + 3 अनीयर।

(iii) स्मृतः।

(iv) प्राप्ते।

7. उत्तर–

(i) राष्ट्रं

(ii) मनः

(iii) राजपुत्रम्

(iv) साधोः

8. उत्तर–

(i) इच्छसि

(ii) करिष्यति

(iii) असि

(iv) प्राप्यते

9. उत्तर–

(i) माम्

(ii) अस्य

(iii) पाणिनये

(iv) पुत्रेण

10. उत्तर–

(i) सेव्यते

(ii) गम्यते

11. उत्तर

(i) निर्मामः

(ii) कथयसि

(iii) करोमि

(iv) शक्नोमि

उत्तर- (अ)

(i) पम्पाभिधानम्

(ii) प्रसववेदनया

(iii) मह्यम्

(आ)

(i) शुकशावकस्य तातस्तु सुतस्नेहादन्तर्निगृह्य शोकं मत्संवर्धनपर एवाभवत्।

(ii) पश्चिमे तीरे महाजीर्णः शाल्मलीवृक्षः आसीत्

(iii) शावकस्य पिता तः परनीऽनिपतिताभ्यः शलिवल्लरीभ्यस्तण्डुलकणान् शुककुलावदलितानि च फलशकलानि समाहृत्य अदात्।

(इ)

(i) शाल्यमलीवृक्षः

(ii) अशनम्

(iii) तातः

उत्तर 13 (अ)

(i) वासम्

(ii) देशे

(iii) वासम्

(आ)

(i) यस्मिन् देशे सम्मानः वृत्तिः बान्धवाः

(ii) विद्यागमः च न भवति तत्र वासं न कारयेत।

(iii) यस्मिन् देशे सम्मानः न भवते तत्र वासं न कारयेत।

(इ)

(i) सम्मानः

(ii) कारयेत्

(iii) तत्र।

उत्तर–14 (अ)

(i) पुरुवंश

(ii) मयूरः

(iii) शकुन्तला नाटयांश

(आ)

(i) तापसी बालं शकुन्तलावण्यं प्रेक्षितुं कथयति।

(ii) दुष्यन्तः आत्मगतं कथयति-किं वाशकुन्तलेत्यस्य मातुराख्या'' इति।

(iii) पुरुवंशः बालस्य व्यपदेशः।

(इ)

(i) माता

(ii) मयूरः

(iii) प्रेक्षस्व।

उत्तर 15

(i) जनता

(ii) आचरन्ति

(iii) विनाशः।

भावार्थः

अथवा

(i) (i) (ii) (i) (iii) (ii)

उत्तर 16

(i) कः

(ii) व्यवसायिनाम्

(iii) अप्रियः

उत्तर 17

(1) ग–चनिर्भीतरुचिचिसंयमः

(2) घ–यथार्थे हि स आश्रमः

(3) ख–स हि भीरुः पलायिता

(4) क–सत्यमेववातिरिच्यते

उत्तर 18

(i) तट

(ii) अचौर्यम्

(iii) कष्टान्

(iv) सुपत्नी

(v) निग्रह / नियन्त्रण

उत्तर 19

(1) या भाषा व्याकरण-दृष्ट्या शुद्धं परिष्कृवा अस्ति सा 'संस्कृत' इति कथ्यते।

(2) संस्कृतम् देववाणी देवभाषा, देवगिर। दैवीवाक सुरभारती, भारती, वाङ्मयी गीर्वाणी, गीर्वाणवाणी इति प्रचलिता शब्दाः सन्ति।

(3) लौकिके वैदिके च द्वयोः।

(4) संस्कृत भाषा!

उत्तर 20

(1) वेदाः चवारः सन्ति

(2) ऋग्वेदः

(3) ऋग्वेदे दश (10) मुण्डलानि सन्ति

(4) वेदत्रयी इति शीर्षके ऋग्वेदः, यजुर्वेदः सामवेदः च अस्ति।

(5) गायन प्रधानं वेद अस्ति। सामवेदे गायनस्य प्रधानता अस्तिं।

उत्तर 21

(1) रामायणस्य लेखकः अस्ति।

(2) काण्डेषु।

(3) कृष्णद्वैपायनः वेदव्यासः।

(4) अष्टादश।

आदर्शप्रश्नपत्रम्-3

संस्कृतम् (केन्द्रिकम्)

आदर्श प्रश्नपत्रम-1

कक्षा-एकादशी **संस्कृतम् (केन्द्रिका) कोड संख्या**

समयः-होरात्रयम **सम्पूर्णकाः- 80**

खण्डः 'क'

(अपठित- अवबोधनम्)

1. अधोलिखित गद्यांश पठित्वा प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृति लिखत–

सूर्यः यदा मकरराशौ प्रविशति तदा प्रयागे कुम्भः भवतिः प्रतिवर्ष पौष पूर्णिमातः आरभ्य एकमासं यावत संगमक्षेत्रे कुम्भमेला प्रवर्तते। बहवः भक्ताः एकमासं यावत् सङ्गम क्षेत्रे कल्पवासे तिष्ठन्ति ते प्रतिदिनं द्वयोः पवित्रो - सङ्घामस्थले स्नानं कुर्वन्ति अस्मिन पुण्ये अवसरे त्रीणि प्रमुखानि स्नान-दिनानि भवन्ति । मकर सङ्क्रान्तौ प्रथमं स्नानम्, मौनि अमावस्यायां द्वितीय स्नानं तथा वसन्तपञ्चम्यां तृतीयं स्नानं भवति। एषु स्नानेषु दिनेषु स्नानं भवति तदेव कुम्भस्नानम् इति नाम्ना प्रसिद्धम अस्ति। प्रयागस्य कुम्भमेलायाँ भागं ग्रहीतुं भारतवर्षेस्य अनेकेभ्यः स्थानेभ्यः सामान्यजनाः, साधवः सन्तश्च आगच्छन्ति। अन्य-कुम्भेभ्यः प्रयाग-कुम्भस्य किमपि वैशिष्टयं वर्तते। अन्यानि नगराणि यदि तीर्थक्षेत्राणि भवन्ति तर्हि प्रयागः तीर्थराजः वर्तते। अतएव 'स जयति तीर्थराजः प्रयागः' इति सूक्ति-माध्यसेन अपि प्रयागस्य माहात्म्यं वर्णितमस्ति।

1. एकपदेन उत्तर-(केवलं प्रश्नद्वयम्) **1 × 2 = 2**

(i) कुम्भः कत्र भवति?

(ii) सूर्यः कुत्र प्रविशति?

(iii) तृतीय स्नानं कक्ष भवति?

2. पूर्वावाक्येन उत्तर-(केवलं प्रश्नद्वयम्) **2 × 2 = 4**

(i) कुम्भमेलाां भागं ग्रहीतुं के के आगच्छन्ति?

(ii) प्रयागस्य महात्म्यं केन वर्णितम् अस्ति?

(iii) जनाः प्रतिदिनं कुत्र स्नानं कुर्वन्ति?

(iv) सङ्गमस्थले कदा-कदा स्नानं भवति?

3. अस्य गद्यांशस्य कृते समुचितं शीर्षकं लिखत- **1 × 1 = 1**

4. भाषिक कार्यम (केवलं प्रश्नत्रयम) **1 × 3 = 3**

(क)'बहवः भक्ताः कल्पवासे तिष्ठन्ति' अत्र विशेष्यपदं किमस्ति?

(i) तिष्ठन्ति

(ii) क्ताः

(iii) बहवः

(iv) कल्पवासे

(ख) 'कुम्भमेलायां भागं ग्रहीतुं सामान्यजनाः आगच्छन्ति' अत्र कर्तृपदं किम्?

(i) भागं

(ii) आगच्छन्ति

(iii) सामान्यजनाः

(iv) ग्रहीतुम्

(ग) 'सज्जनाः' पदस्य किं पर्यायपदं गद्यांश प्रयुक्तम्?

(i) दुष्टाः

(ii) अन्याः

(iii) सामान्यजनाः

(iv) सन्तः

(घ) 'ते प्रतिदिनं सङ्गमस्थले स्नानं कुर्वन्ति' अत्र 'ते' इति सर्वनाम पदं केभ्यः प्रयुक्तम्?

(i) साधुभ्यः

(ii) भक्तेभ्यः

(iii) जनेभ्यः

(iv) स्थानेभ्यः

भागः 'ख'

(रचनात्मक-कार्यम्)

2. रुग्णावकाशार्थं प्रधानाचार्य प्रति लिखितं प्रार्थनापत्र मञ्जूषाप्रदत्तपदैः पूरयित्वा पत्र पुनः लिखत– **1/2 × 10 = 5**

1.

प्रधानाचार्याः महाभागाः,

रा० ब. क. मा. विद्यालयः,

नवदेहली।

विषयः दिनद्वयस्य सं. .....प्रार्थनापत्रम्।

(iii) ..... सविनयं निवेदयामि यत् अद्य मम (iv) ..... सम्यक नास्ति। अहं गतरात्रौ (v)..... पीडितः आसम्। अतः अहं (vi) आगन्तुं असमर्थोऽस्मि। कृपया महयम् (vii) रुग्णावकाशं (vii ..... अनुगृहणन्तु (ix).....। सधन्यवादम्।

भवतां

क, ख, ग

अनुक्रमांकः .....

दिनांकः .....

मञ्जूषायां

रुग्णावकाशार्थं, आज्ञाकारी शिष्यः, तीव्रज्वरेण, दिनद्वयस्य, प्रदाय, स्वास्थ्यं, विद्यालयम्, भवन्तः, सेवायाम्,

महोदयाः

3. मञ्जूषायां प्रदत्तपदानां सहायतया लघुकथां पूरयित्वा लिखत–

1/2 × 10 = 5

वस्तुतः भारतीय-शिक्षण परम्परायाः किञ्चितां (i) अस्ति। घने अरण्ये, सुरम्भे नदीतीरे, नशून्यासु पर्वतगुहासु च (ii) ..... निवसन्ति स्म। तेषां निवासस्थानम् (iii) .... इति नाम्ना प्रसिद्धम् आसीत्। तेषु आश्रमेषु गुरुकुलानि अपि प्रचलन्ति स्म। तत्र (iv) ..... ऋषयः आचार्याः च भवन्ति स्म। तेषु कश्चमन (v) ..... कश्चन महर्षिः, कश्चन च (vi) ..... भवति स्म। ते न केबलम आचार्याः अपि तु समाजस्य उन्नायकाः संस्कारकाः च अभवन। वसिष्ठः विश्वामित्रः च प्रसिद्धां (vii) आरताम।

वाल्मीकिः वेदव्यासः च (viii) ..... आताम। तौ भारतस्य प्राचीनतमौ प्रसिद्धी (ix) ..... अपि आस्ताम। अनयोः वाल्मीकिः आदिकविः आसीत् । सः आदिकाव्यं (x) ..... रचितवान्।

मञ्जूषा

रामायणं, ऋषिः, ब्रह्मर्पिः, कवी, वैशिष्टयम् आश्रमः, मन्त्रद्रष्टारः, ऋषयः, ब्रह्मर्षी, महर्षी।

4. अधोलिखिते वार्तालाप रिक्तस्थानानि पूरयत- **1 × 5 = 5**

मोहनः – अम्ब! अहं विद्यालयं गच्छामि।

माता – 1.

मोहनः – न अम्ब! सर्वं स्मरन् रयूते स्थापितवान् अस्मि।

माता – 2

मोहनः – आम्, अद्य तस्य गृहे काऽपि पूजा अस्ति।

माता – अस्तु, 3

मोहनः – अस्तु अम्ब!

माता – 4

मोहनः – पश्यतु अम्ब! धीरजदयः अद्य अत्रैव

मञ्जूषा

(i) अस्तु मार्गे गच्छन् इतस्ततः मा पश्य।

(ii) जल्पन्तः मन्दं गच्छन्तः विलम्ब मा कुरुत

(iii) सर्वाणि पुस्तकानि स्वीकृतवान् खलु।

(iv) कक्षायां पठन अन्यैः सह सम्भाषणे मा कुरु।

(v) अद्य युष्माभिः सह रमेशः न आगच्छति। एवं मनु।

मञ्जूषा

भागः 'ग'

5. अधोलिखित वाक्येषु रेखांकितपदानां समुचितं सन्धिं सन्धिविच्छेदं वा कुरुत (केवलं प्रश्नत्रयम्) **1 × 3 = 3**

(i) प्राञ्जलिं पतितं भुविः।

(ii) षड्दोषाः पुरुषेणेह हातव्याः।

(iii) अभूमिः + इयम् + अविनयस्य खलु।

(iv) अचिराच्च प्रशान्ते तस्मिन् क्षोभितकानने।

6. रेखांकितपदानां प्रकृति-प्रत्ययसंयोजन वियोजनं वा प्रदत्त-विकल्पेभ्यः चिनुत (केवलं प्रश्नप्रयम्) **1 × 3 = 3**

(क) सम्प्राप्तकालं दा + तव्यत्।

(i) दातव्यत्

(ii) दतव्यः

(iii) दातव्यम्

(ख) तत् श्रुत्वा तत्रत्याः सर्वे पर्यनन्दन।

(i) श्रु + कत्वा

(ii) श्रु + त्वा

(iii) श्रु + वा

(ग) अयं पटः परि + श्रम् + ल्यप् निष्पादितः।

(i) परिश्रमः

(ii) परिश्रम्य

(iii) परिश्रल्यप्

(घ) तस्याः एव जलं आनीय पिबन्ति।

(i) आ + नी + य

(ii) आ + नीय

(iii) आ + नी : ल्यप्

7. प्रदत्तविकल्पेभ्यः समुचितं शब्दरूपं चिनुत। **1 × 3 = 3**

(क) ..... मूर्खाणाम् एकं पण्डितम् इच्छसि।

(i) सहस्राय

(ii) सहस्राणाम

(iii) सहस्रैः

(ख) तस्यैव एकस्मिन् ..... निवसतः।

(i) कोटरम्

(ii) कोटरे

(iii) कोटरात्

(ग) महाराजस्य ..... सुन्दरम् आसीत्।

(i) मुखेन

(ii) मुखात्

(iii) मुखम्

(घ) पुष्करिणीं परितः नाना ..... सन्ति।

(i) वृक्षा

(ii) वृक्षः

(iii) वृक्षेण

8. अधोलिखितवाक्येषु प्रदत्तविकल्पेभ्यः समुचित क्रियापद चित्वा रिक्त स्थानानि पूरयत। (केवलं प्रश्नपत्रयम्) **1 × 3 = 3**

(क) अहं ते अपरं क्रीडनकं .....। (दा + लृट् लकारः)

(i) दास्यतः (ii) दास्यावः (iii) दास्यामि

(ख) पितुः अहमेव सुनुः .....। (भू + लङ्लकारः)

(i) अभवत् (ii) अभवम् (iii) अभवः

(ग) एषः कुमारः चतुरः .....। (अस् रु लट्लकारः)

(i) असि (ii) अस्ति (iii) आसम

(घ) जनाः तस्या एव जलमानीय .....।। पिब् + लट्लकारः)

(i) पिबन्ति (ii) पिबामः (iii) पास्यन्ति

9. समुचितं उपपदविभक्तिरूपं प्रभुज्य रिक्तस्थानपूर्तिं कुरुत। (केवलं प्रश्नत्रयम्)

1 × 3 = 3

(i) अभ्यासात् ..... श्रेयः (ज्ञान)

(ii) ..... परितः नाना वृक्षाः सन्ति। (पुष्करिणी)

(iii) ..... सह तेनैव पथा उपागमत्। (मुनिकुमारक)

(iv) बालेऽस्मिन् औरस इव ..... स्निह्यति। (पुत्र)

10. अधोलिखितवाक्येषु वाच्यानुसारं रिक्तस्थानानि पूरयत– (केवलं प्रश्नद्वयम्)

1 × 2 = 2

(क) छात्रेण ..... पीयते। (जल)

(i) जलेन (ii) जलं (iii) जलात्

(ख)..... हस्यते।

(i) सः (ii) तत् (iii) तेन

(ग) लतया पत्रम् .....।

(i) लिखति (ii) लिख्यते (iii) लिखन्ति

11. प्रदत्तविकल्पेभ्यः शुद्धं रूपं चित्वा लिखत (केवलं प्रश्नत्रयम्) **1 × 3 = 3**

(क) मन्त्रो विजयमूलं हि राजेन भवति राघव।

(i) राज्ञां (ii) राज्ञि (iii) राज्ञा

(ख) सत्सन्निधानेन मूर्खः प्रवीणतां यान्ति।

(i) याताः (ii) यान्ति (iii) याति

(ग) अहम् अस्याः पुत्रं कथं न मुञ्चसि?

(i) त्वम् (ii) भवान् (iii) अहम्

(घ) पुष्करिण्यां ग्रामस्य जनाः स्नानं करोति।

(i) करोति (ii) कुर्वन्ति (iii) कुरुत

भागः 'घ'

(i) पठित-अवबोधनम्

12. अधोलिखितं गद्यांश पठित्वा प्रश्नानामुत्तराणि लिखन्तु - आसीच्च मे मनसि– 'अहो मोह प्रायमेतेषां जीवितम। आहारा मधुमांसादिः, श्रमो मृगया, शास्त्रं शिवास्तं, प्रज्ञा शकुनिज्ञानम्। यस्मिन्नेव कानने निवसन्ति तदेवोत्खातमूलम शेषतः कुर्वन्ति। इति-चिन्तयत्येव मथि शबर सेनापतिः स आगत्य तस्यैव तरोरधश्छायायं परिजनोपनीतपल्लवासने समुपाविशत्। आपीतसलिलो भुक्तमृणालिक श्चोत्थायापगतश्रमः सकलेन सैन्येन सहाभिमतं दिशमासीत्।

(अ) एकपदेन उत्तरत (केवलं प्रश्नद्वयम्) **1/2 × 2 = 1**

(i) शवराणां जीवितं कीदृशम् आसीत ?

(ii) पल्लवासने कः उपविशत ?

(iii) अपगतश्रमः शबर सेनापतिः केन सहाभिमतं दिशमायासीत्?

(आ) पूर्णवाक्येन उत्तरत (केवल प्रश्नद्वयम्) **1/2 × 2 = 1**

(i) शबर सेनापतिः कुत्र उपविशत् ?

(ii) कीदृशः सेनापतिः अभिमतं दिशमायासीत् ?

(iii) शबराः यस्मिन् कानने निवसन्ति तत्र किं कुर्वन्ति ?

(इ) भाषिककार्यम् (निर्देशानुसारम उत्तरत) (केवलं प्रश्नद्वयम्) **1 × 2 = 2**

(i) 'श्रान्तः' पदस्य किं विलोमपदं गद्यांशे प्रयुक्त् ?

(ii) 'शबर सेनापतिः तरोरधः छायायाम् उपाविशत्' अत्र कर्तृपदं किमस्ति?

(iii) 'आपीतसलिलः शबरसेनापतिः' इत्यनयोः पदयोः किं विशेषणपदं प्रयुक्तम् ?

13. अधोलिखित पद्यं पठित्वा प्रश्नानामुत्तराणि संस्कृतेन लिखन्तु - अर्थागमो नित्यमरोगिता च प्रिया च भार्या प्रियवादिनी च। वश्यश्च पुत्रोऽर्थकरी च विद्या षड् जीवलोकस्य सुखानि राजन्॥

(अ) एकपदेन उत्तरत (केवलं प्रश्नद्वयम्) **1/2 × 2 = 1**

(i) भार्या कीदृशी स्यात् ?

(ii) का अर्थकरी भवेत् ?

(iii) नित्यं कः भवेत् ?

(आ) पूर्णवाक्येन उत्तरत (केवलं प्रश्नद्वयम्) **1 × 2 = 2**

(i) कस्य षड्सुखानि भवन्ति ?

(ii) जीवलोकस्य षड्सुखानि कानि सन्ति ?

(iii) प्रिया का भवेत् ?

(इ) भाषिककार्यम् (केवलं प्रश्नद्वयम्) **1 × 2 = 2**

(i) धनप्राप्तिः पदस्थ किं पर्यायपदं पद्यांशे प्रयुक्तम् ?

(ii) 'रोगिता' पदस्य विलोमपदं किं प्रयुक्तम् पद्यांशे ?

(iii) 'वश्यः पुत्रः' इत्यनयोः विशेषणपदं किं प्रयुक्तम् ?

14. अधोलिखितं नाट्यांशं पठित्वा तदाधारितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि लिखन्तु–

दुष्यन्तः– (कर्णं दत्वा)

अभूमिरियमविनयस्य। को नु खल्वेष निपिध्यते। (शब्दानुसारेणावलोक्य सविस्मयम्) अये, को नु खल्वयम् अनुबध्यमानस्तपस्विनीभ्याम् अबालसत्त्वो बालः।

अर्धपीतस्तनं मातुरामर्दक्लिष्टकेसरम्।

प्रक्रीडितुं सिंहशिशुं वलात्कारेण कर्षति।।

बालः–जृम्भस्व सिंह! दन्तास्ते मणयिष्ये।

(अ) एकपदेन उत्तर– (केवलं प्रश्नद्वयम्) **1/2 × 2 = 1**

(i) अयं बालः काभ्याम् अनुबध्यमानः ?

(ii) इयं कस्य अभूमिः ?

(iii) बालः कं बलात्कारेण कर्षति ?

(आ) पूर्णवाक्येन उत्तरत (केवलं प्रश्नद्वयम्) **1 × 2 = 2**

(i) बालः कीदृशं सिंहशिशुं कर्षति ?

(ii) बालः सिंहशिशुं कथं कर्षति ?

(iii) बालः सिंहशिशुं किं कथयति ?

(इ) भाषिककार्यम् (केवलं प्रश्नद्वयम्) **1 × 2 = 2**

(i) 'अर्थपीतस्तने सिंहशिशुम्' अत्र विशेषपदं किं प्रयुक्तम् ?

(ii) 'बालः सिंहशिशुं कर्षति' अत्र किं कर्तृपदं प्रयुक्तम् ?

(iii) 'विनयस्य' विलोमपदं किं प्रयुक्तम् ?

15. अधोलिखित पद्यस्य भावार्थं मञ्जूषाप्रदत्त पदैः पूरयित्वाप पुनः लिखत।

कञ्चिद् बलस्य भक्तं च वेतनं च यथोचितम्।

सम्प्राप्तकालं दातव्य ंददासि न विलम्बसे।

भावार्थ : सैनिकेभ्यः भोजनं .....) ..... च उचितसमये (ii). .....।
भोजनवेतनयोः प्रदाने (iii)..... न करोषि।

मञ्जूषा

ददासि, वेतनं, विलम्बम्

(अथवा)

प्रदत्तभावार्थत्रयात् शुद्धं भावार्थं चित्वा लिखत– **1 × 3 = 3**

(क) मन्त्रितो मन्त्रो राष्ट्रं न परिधावति।

(i) मन्त्रः राष्ट्रात् बहिः गच्छति।

(ii) सुरक्षिता मन्त्रणा राष्ट्रात् बहिः न प्रसरति।

(iii) राजा स्वकीयं राष्ट्रं न परिधावति।

(ख) वत्स सर्वद्मन/ शकुन्तलावण्यं प्रेक्षस्व।

(i) वत्स! सर्वदमनः शकुन्तलायाः पुत्रः अस्ति।

(ii) वत्स सर्वदमन ! अस्य पक्षिणः सौन्दर्यं पश्य।

(iii) मम सर्वदमनः शकुन्तलां पश्यति।

(ग) सर्वारम्भपरित्यागी

(i) सर्वेषां कर्मणाम् उत्तरम्भस्य परित्यक्ता।

(ii) कर्मणाम् सेवकः।

(iii) अकर्मणाम् सेवकेः।

16. अधोलिखितान्वये रिक्तस्थानानि पूरयत **1 × 3 = 3**

यस्मिन् देशे न सम्मानो न वृत्तिर्न च बान्धवाः।

न च विद्यागमः कश्चित् वासं तत्र न कारयेत्।।

अन्वयः- यस्मिन् देशे (ii)..... न वृत्तिः न च (ii) न च विद्यागमः तत्र कश्चित् (iii) ..... न कारयेत्।

मञ्जूषा

वासं, सम्मानः, बान्धवाः

17. 'क' स्तम्भस्य वाक्यांशानां 'ख' स्तम्भस्य वाक्यांशैः सह मेलनं कुरुत–

1/2 × 4 = 2

(क)	**(ख)**	
(1) राजानं राजपुत्रं वा	(क)	परार्थे प्राज्ञ उत्सृजेत्
(2) धनानि जीवितं चैव	(ख)	प्रमाणपत्रम्
(3) अन्धकारताम उपयाति	(ग) प्रापयेन्महतीं श्रियम्	
(4) पश्यराजमुद्रांकितं	(घ) मे चक्षुः	

18. अधोलिखितवाक्येषु रेखांकितपदानां प्रसङ्गानुसारं शुद्धमर्थं चित्वा लिखत।

1/2 × 4 = 2

(i) अद्य चित्त समाधातुं न शक्नोषि मयि स्थिरम्।

(ii) तटवर्तिवृक्षाणां छेदनं कृतवन्तः।

(iii) उपरतं च तम् अवनितले अमुञ्चत्।

(iv) रामः भरतं पाणिन। परिजग्राह।

भागः 'घ'

(ii) संस्कृत-साहित्येतिहासस्य सामान्यः परिचयः

19. अधोलिखित प्रश्नानामुत्तराणि लिखत- (केवलं प्रश्नत्रयम्) $1 \times 3 = 3$

(i) संस्कृतभाषायाः व्यात्पत्ति लिखन्तु?

(ii) सर्वे संस्काराः ज्ञान-विज्ञानादि सर्वे विषयाः यस्यां भाषायां सन्ति सा का भाषा अस्ति?

(iii) संस्कृतभाषायाः लिपिः का अस्ति?

20. वैदिक साहितयाधारितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतेन लिखन्तु (केवलं प्रश्नचतुष्ट्यम्) $1 \times 4 = 4$

(i) कति वेदाः सन्ति ?

(ii) यज्ञप्रधानः वेदः कः अस्ति ?

(iii) कति वेदाङ्गानि भवन्ति ?

(iv) 'उपनिषद्' शब्दस्य प्रकृति प्रत्ययविभागं कुरुत।

(v) 'गायत्री मन्त्रस्य उल्लेखः कस्मिन् वेदे अस्ति ?

21. अधोलिखितानां प्रश्नानामुत्तराणि लिखन्तु - (केवलं प्रश्नत्रयम्) $1 \times 3 = 3$

(i) आदिकाव्य - रामायणस्य रचयिता कोऽस्ति ?

(ii) रामायणे कति श्लोकाः सन्ति ?

(iii) कति पुराणानि सन्ति ?

(iv) वेदव्यासेन विरचितस्य ग्रन्थस्य नाम किमस्ति ?

संस्कृतम् (केन्द्रिकम्)

(अंकयोजना)

कक्षा-एकादशी

समयः - होरात्रयम्

भागः 'क'

(अपठित - अवबोधनम्)

1. (i) प्रयागे (ii) मकरराशौ (iii) वसन्तपञ्चम्याम्

2. (i) कुम्भमेलायां मार्ग ग्रहीतुं भारतवर्षस्य अनेकेभ्यः

स्थानेभ्यः सामान्यजनाः, साधवः, सन्तश्च आगच्छन्ति।

(ii) प्रयागस्य महात्म्यं 'सः जयति तीर्थराजः प्रयागः' सूक्तिमाध्यमेन वर्णितम अस्ति।

(iii) जना प्रतिदिनं द्वयोः पवित्रनद्योः सङ्गमस्थले स्नानं कुर्वन्ति।

(iv) सङ्गमस्थले मकर सङ्क्रान्तौ प्रथमं स्नानम्, मौनि अमावस्यां।
द्वितीयं स्नानं तथा बसन्तफचम्यां तृतीयं स्नानं भवति।

3. तीर्थराज प्रयागः।

4. (क)-(i) भक्ताः (ख)(ii) सामान्यजनाः

(ग)- (iv) सन्तः (घ) (iv) भक्तेभ्यः

'ख' भागः

(रचनात्मक कार्यम्)

2. (i) सेवायाम् (ii) रुगावकाशार्थम् (iii) महोदयाः

(iv) स्वास्थ्यम् (v) तीव्रज्वरेण (vi) विद्यालयम्

(vii) दिनद्वयस्य (viii) प्रदाय (ix) भवन्तः

(x) आज्ञाकारी शिष्यः

3. (i) वैशिष्ट्यम (ii) ऋषयः (iii) आश्रमः

(iv) मन्त्रद्रष्टारः (v) ऋषिः (vi) ब्रह्मर्षिः

(vii) ब्रह्मर्षी (viii) महर्षी (ix) कवीं

(x) रामायणम्

4. (i) सर्वाणि पुस्तकानि स्वीकृतवान् खलु।

(ii) अद्य युष्माभिः सह रमेशः ने आगच्छति। एवं ननु ?

(iii) अस्तु, मार्गे गच्छन् इतस्ततः मा पश्य ।

(iv) कक्षायाँ पठन अन्यैः सह सम्भाषणं मा कुरु।

(v) जल्पन्तः मन्दं गच्छन्तः विलम्बं मा कुरुत

भागः 'ग'

(अनुप्रयुक्त-व्याकरणम्)

5. (i) प्र + अञ्जलिम्

(ii) पुरुषेण + इह

(iii) अभूमिरियमविनयस्य

(iv) अचिरात् +च

6. क - (iii) दातव्यम्

ख - (i) प्रु+कत्वा

ग - (ii) परिश्रम्य

घ - (iii) आ+नी+ ल्यप

7. क - (ii) सहस्राणाम

(ii) कोटरे

ख - (iii) मुखम्

घ - (i) वृक्षाः

8. क - (iii) दास्यामि

ख - (ii) अभवम्

ग - (ii) अस्ति

घ - (ii) पिबन्ति

9. (ii) ज्ञानस

(ii) पुष्करिणीम

(iii) मुनिकुमारकैः

(iv) पुत्रे

10. क – (ii) जलम्

ख – (ii) तेन

ग – (ii) लिख्यते

11. क – (ii) राजाम्

ख – (iii) याति

ग – (ii) त्वम्

घ– (ii) कुर्वन्ति

'घ' भागः

(ii) पठित- अवबोधनम्

12. (अ)-(i) मोहप्रायम् (ii) शबर सेनापतिः (iii) सैन्येन

(आ) (i) शवर सेनापतिः तरोरपश्छायायां परिजनोपनीत पल्लवासने उपाविशत।

(ii) आपीत सलिलो मुक्तमृणालिकः अपगतश्रमः सेनापतिः उत्थाय सकलेन सैन्येन सहाभियतं दिशमयासीत्।

(iii) शबराः यस्मिन् कानने निवसन्ति तदेवोत्खातमूलमशेषतः कुर्वन्ति।

(इ) (i) अपगतश्रमः (ii) शबर सेनापतिः

(iii) आपीतस्वलिलः

13. (अ) (ii) प्रियवादिनी (ii) विद्या

(iii) अखेगिला अर्थागमः

(आ) (i) जीवलोकस्य पड्सुखानि भवन्ति।

(ii) जीवलोकस्य षड्सुखानि भवन्ति यथा नित्यम् अर्थागमः, अरोगिता, प्रिया प्रियवादिनी भार्या, वश्यः पुत्रः अर्थकरी विद्या च इति।

(iii) प्रिया आर्या भवेत्।

(इ) (i) अर्थागमः (ii) अरोगिता (iii) वश्यः

14. (अ) (i) तपस्विनीभ्याम् (ii) अविनयस्य (iii) सिंहशिशुम

(आ) (i) बालः अर्धपीत स्तनं मातुरामर्दक्लिष्टर्क सरम् प्रक्रीडितुं सिंहशिशुं बलात्कारण कषति।

(ii) बालः सिंहशिशुं बलात्कारण कर्षति।

(iii) बालः सिंहशिशुं कथयति- जृम्भस्व सिंह! दन्तास्ते गणयिष्ये।

(इ) (ii) अर्धपीतस्तनम् (ii) बालः (iii) अविनयस्य

15. (i) वेतनम (ii) ददासि (iii) विलम्बम्

अथवा

क (ii) सुरक्षिता मन्त्रणा राष्ट्रात् बहिः न प्रसरति।

ख (ii) वत्स सर्वदमन! अस्य पक्षिणः सौन्दर्य पश्य।

ग (ii) सर्वेषां कर्मणाम् आरम्भस्य परित्यक्ता।

16. (i) सम्मानः

(ii) बान्धवाः

(iii) वासम

17. (1) राजानं राजपुत्रं वा (ग) प्रापयेन्महतीं श्रियम

(2) धनानि जीवित चैव (क) परार्थे प्राप्त उत्सृजेत्

(3) अन्धकारताम उपयाति (घ) मे चक्षुः

(4) पश्यराजमुर्दाकितम् (ख) प्रमाणपत्रम्

18. (i) मनः (ii) कर्तनम्

(iii) क्षितौ (iv) हस्तेन

भागः 'घ'

(ii) संस्कृत-साहित्येतिहासस्य सामान्यः परिचयः

19. (i) सम् + कृ + क्त

(ii) संस्कृतभाषाया:

(iii) देवनागरी

20. (i) चत्वार:

(ii) यजुर्वेद:

(iii) षड्

(iv) उप + नि + सद् (सदलृ) + क्विप्

(v) ऋग्वेदे

21. (i) वाल्मीकि:

(ii) चतुर्विंशतिसहस्रश्लोका:

(iii) अष्टादश

(iv) महाभारतत्

कक्षा एकादशी

संस्कृत (केन्द्रिकम)

आदर्श प्रश्नपत्र-4

वार्षिकमूल्याङ्कनाय निर्मिते प्रश्नपत्रे चत्वारो भागाः भविष्यन्ति -

'क' भागः अपठित-अवबोधनम्	10 अङ्काः
'ख' भागः रचनात्मककार्यम्	15 अङ्काः
'ग' भागः अनुप्रयुक्त - व्याकरणम्	20 अङ्का
'घ' भागः	
(i) पठितावबोधनम्	(25 अङ्काः)
(ii) संस्कृत-साहित्येतिहासस्य सामान्यः परिचयः	(10 अङ्काः)

भागः 'क'

अपठित अवबोधनम् -

1. अधोलिखितं अपठितगद्यांशं पठित्वा प्रश्नान् उत्तरत–

प्रकृतिः सर्वेषां जननी। प्रकृत्या अस्मभ्यं शुद्धं पवित्रञ्च वातावरणं प्रदतम्। परं मानवैः। स्वकुकृत्यैः इदं प्रदूषितं कृतम् प्रदूषणसमस्यायाः विषये अद्य सम्पूर्णः विश्वः चिन्ताकुलः अस्ति। तन्निमित्तम् उपायाश्च चिन्तनीयाः प्रदूषणनिवारणस्य उपायेषु 'वृक्षारोपणं' सर्वोत्कृष्टम् अस्ति। प्रदूषणसमस्या तदैव उपस्थिता यदा मानवेन स्वार्थसिद्धये वनकर्तनम् आरब्धम् । वृक्षाः मानवजीवनस्य प्राणभूताः सन्ति। तेषामभावे विषाक्तवायुः, अतिवृष्टिः, अनावृष्अिः भूक्षरणञ्च भवति। प्रकृतौ संतुलनस्थापनार्थ वृक्षरक्षणं, वृक्षारोपणम् च आवश्यकम्।

विषाक्तवायोः शोषणस्य सामर्थ्यं वृक्षेषु एवास्ति। येन वातावरणं शुद्धं भवति। नष्टप्रायाणां पशुपक्षिणां जातीनाञ्च रक्षा अपि अनेनैव संभवा। अतः अधिकाधिकवृक्षारोपणं कर्तव्यम् यतौ हि 'वृक्षो रक्षति रक्षितः।

(अ) एकपदेन उत्तरात (केवलं प्रश्नद्वयम्) **1 × 2 = 2**

(i) प्रदूषणनिवारणस्य उपायेषु किं सर्वोत्कृष्टम् ?

(ii) वृक्षाः कस्य प्राणभूताः?

(iii) विषाक्तवायौः शोषणस्य सामर्थ्यं केषु अस्ति?

(आ) पूर्णवाक्येन उत्तरत (केवलं प्रश्नद्वयम्) **2 × 2 = 4**

(i) प्रदूषणसमस्यायाः विषये अद्य कः चिन्ताकुलः अस्ति?

(i) प्रदूषणसमस्या कदा उपस्थिता ?

(iii) वृक्षाणाम् अभावे किम् भविष्यति ?

(इ) अस्य अनच्छेदस्य समुचितं शीर्षकं लिखत। **1 × 1 = 1**

(ई) यथानिर्देशम् उत्तरत (केवलं प्रश्नत्रयम्) **1 × 3 = 3**

(i) सम्पूर्णः 'इति विशेषणषदस्य किं विशेष्यपदम् ?

(1) विषाक्तवायुः (2) वृक्षरक्षणं

(3) विश्वः (4) प्रदूषित

(ii) 'सम्पूर्णः विश्वः चिन्ताकुलः अस्ति' इत्यत्र 'अस्ति क्रियायाः कर्तृपदं किम् ?

(1) सम्पूर्णः (2) विश्वः

(3) चिन्ताकुलः (4) अस्ति

(iii) 'स्वच्छम्' इत्यस्य किं पर्यायपदमत्र प्रयुक्तम् ?

(1) सुन्दरम् (2) शुद्धं

(3) सामर्थ्य (4) प्रदूषितं

(iv) 'मानवैः स्वकुकृत्यैः इदं प्रदूषितं कृतम् अत्र 'इदमिति' सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम् ?

(1) पर्यावरणाय (2) मानवाय

(3) प्रदूषणाय (4) कर्मणे

भागः 'ख'

रचनात्मककार्यम्

2. भवतः नाम रविः अस्ति। भवान् स्वमित्रम् अरुणं स्वभगिन्या विदाहे निमन्त्रणं दातुम् इच्छति। मञ्जूषायाः उचितपदैः पत्रं पूरयित्वा पुनः लिखत।

1/2 × 10 = 5

काशीनगरतः

(ii) ..... अरुण।

सस्नेह नमोनमः

अज कुशलं तत्रास्तु। इदं (ii) ..... भवन्तं सूचयित्वा अहम् आनन्दम् अनुभवामि यत् मम (iii)..... विवाहः अस्य मासस्य दशम्यां (iv) ..... रविवासरे निश्चितः जातः। वरयात्रा रामनगरात् (v) ..... । त्वं मम प्रियं मित्रम् इतिकृत्वा (vi) ..... एव ज्ञापयामि येन त्वम् अत्र (vii ..... पूर्वमेव आगच्छेः। भवता पितृभ्यां सह अत्र अवश्यमेव (vii ..... आदरणीयाभ्यां स्वपितृभ्यां मम (ix)..... निवेदनीयाः।

भवतः (x).....

रविः

(मञ्जूषा–भगिन्याः आगमिष्यति, प्रियमित्र, प्रणामाः, आगन्तव्यम्, शुभसमाचार, पूर्वमेव, त्रिचतुर्दिनानि प्रियमित्रम्, तारिकायां)

3. मञ्जूषाप्रदत्तपद सहायतया अधोलिखितां कथां पूरयत **1/2 × 10 = 5**

एकस्या नट्याः तटे एकः विशालवृक्षः आसीत्। तस्मिन् वृक्षे स्वपश्रिमेण (i) .... निर्माय अनेके खगाः निवसन्ति स्म। (ii)..... एक वानरः अपि वसति स्म। एकदा महती (iii) ..... अभवत्। सः वानरः (vi) ..... अतीव आर्द्रः कम्पितः च अभवत्। खगाः (vi) ..... कम्पमानं वानरम् अवदन् भो वानर। त्वं कष्टम् (vi) ....। तत् कथं गृहस्य (vii) ..... न करोषि ? यदा सः कपिः एतत् अशृणोत् तदा सः अचिन्तयत् यत् एते (vii) ..... खगाः मां निन्दन्ति अतः सः वानरः खगानां नीडानि वृक्षात् (ix) ..... अपातयत्। खगानां नीडैः सह तेषाम् अण्डानि अपि (x) ..... । सत्यमेव दुष्टः कदापि परामर्शयोग्यः न भवति।

(मञ्जूषा–नीडानि, अनुभवसि, अध, शीतेन, निर्माणम्, क्षुद्रा वृक्षतले वृष्टि, नष्टानि वृष्टिजलेन)

4. अधोलिखितसंवादे रिक्तस्थानानि पूरयत। **1 × 5 = 5**

मोहिनी मया वन्दने मया सह आपणं चलति किम्?

वन्दना (i) .....

मोहिनी–परिक्षासमयः नातिदूरम् अतः कतिचन अभ्यासपुस्तिकाः अपेक्षन्ते।

वन्दना (ii) .....

मोहिनी–शोभनम्। भवती अपि मया सह एवं अभ्यासपुस्तिकाः आनयतु।

वन्दना (iii) .....

मोहिनी–अस्तु। भवत्याः मातुलः अद्य कस्मिन् समये आगमिष्यति?

वन्दना (iv) ----------

मोहिनी–तदा तु समस्या एव नास्ति यतो हि आवां सायंकालात् पूर्वमेव आगमिष्यावः।

वन्दना (v) .....

भागः 'ग'

अनुप्रयुक्त-व्याकरणम्

5. अधोलिखितवाक्येषु रेखांकितपदानां सन्धिं सन्धिविच्छेदं वा कुरुत

(केवलं प्रश्नत्रयम्) **1 × 3 = 3**

(i) तात ते <u>महत्स्वेव</u> मुख्याः भृत्याः योजिताः।

(ii) <u>कः + अतिभारः</u> समर्थानाम्।

(iii) आम् महाप्रभो। इति शास्त्री <u>प्रति+उवाच</u>।

(iv) सः श्रेष्ठिनौ <u>तन्तुवायञ्च</u> भर्त्सयति।

6. अधोलिखितवाक्येषु रेखांकितपदानां समुचितं संयोजितं विभाजितं वा प्रकृतिप्रत्ययं प्रदत्तविकल्पेभ्यः चिनुत- केवलं प्रश्नत्रयम्) **1 × 3 = 3**

(i) बलस्य यथोचितं द्वा+तव्यत् भक्तं वेतनं च ददासि।

(क) दातव्यम्

(ख) दातिव्यः

(ग) ददातु

(घ) दातव्यः

(ii) कथम् आत्मनः प्रकृतिमेव गतः अयं बालः।

(क) गम् + तुमुन्

(ख) गन्तव्ययत्

(ग) गम् + क्त

(घ) गम् + त

(iii) मुनिः आश्रमं प्रति बालकम् आनीतवान्।

(क) आ नी + क्त

(ख) आ नी + क्तवतु

(ग) आ नी + तवान्

(घ) आ नी + क्तवा

(iv) पितुः पार्श्वे (उप विश् + क्त) सुब्वण्णः सविस्मयं पश्यति स्म।

(क)उपविश्य

(ख) उपविष्टः

(ग) उपविशन्

(घ) उपविशः

7. अधोलिखितवाक्येषु प्रदत्तविकल्पेभ्यः समुदितशब्दं चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत।

(केवलं प्रश्नत्रयम्) **1 × 3 = 3**

(i) वत्स। एनं (बालमृगेन्द्र) मुञ्च।

(क) बालमृगेन्द्रस्य

(ख) बालमृगेन्द्रे

(ग) बालमृगेन्द्रं

(घ) बालमृगेन्द्राय

(i) अपरञ्च (पट) निर्माय मत्समीपमेवानय।

(क) पटस्य

(ख) पटात्

(ग) पटे

(प) पटम्

(iii) माम् (अकरुण) धिक्।

(क) अकरुणे

(ख) अकरुणं

(ग) अकरुणया

(घ) अकरुणान्

(iv) बालकः (मुनिः) सह गच्छति।

(क) मुनिम्

(ख) मुनिना

(ग) मुनये

(घ) मुनिः

8. अधोलिखितवाक्येषु प्रदत्तविकल्पेभ्यः समुचितक्रियापदं चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत।

(केवलं प्रश्नत्रयम्) **1 × 3 = 3**

(i) त्वं उटजं .....। (गम् धातुः, लोट् लकारः)

(क) गच्छति

(ख) गच्छामि

(ग) गच्छ

(घ) गच्छथ

(ii) वयम् इतोऽप्यधिकं पारितोषिकं .....। (दा धातुः लृट लकारः)

(दा धातुः लृट लकारः)

(क) दधः

(ख) दास्यामः

(ग) ददामि

(घ) ददातु

(iii) जनाः मुनिम् उपगम्य .....। (वद् धातुः, लङ्लकारः)

(क) अवदः

(ख) अवदत्

(ग) अवदन्

(घ) अवदत्

(iv) अरे! त्वं सत्यं न ..... । (वद् धातु. लट्लकारः)

(क) अवदत्

(ख) वदसि

(ग) वदेत्

(घ) वदेत्

9. समुचितं उपपदविभक्तिरूपं चिनुत- (केवलं प्रश्नत्रयम्) **1 × 3 = 3**

(i) शुकः उपरि पतति। (शुष्कपत्रराशि)

(i) पौराणिकशास्त्री ..... साकम् आगच्छत् (पुत्र)

(iii) ..... परितः नाना वृक्षाः सन्ति। (पुष्करिणी)

(iv) एषः मयूरः ..... रोचते। (अस्मद्)

10. अधोलिखितवाक्येषु वाच्यानुसारं रिक्तस्थानानि पूरयत-(केवलं प्रश्नद्वयम्)

1 × 2 = 2

(i) सत्सन्निधानेन मूर्खः याति .....। (प्रवीणता)

(क) प्रवीणतां

(ख) प्रवीणताः

(ग) प्रवीणतायाः

(घ) प्रवीणतस्य

(ii) कः नु खल्वेष .....। (नि + षिध् धातु)

(क) निषिधितः

(ख) निषिध्यते

(ग) निषिधितः

(घ) निषितः

(iii) किं सरलतया धर्तु शक्यते (महामत्स्य)

(क) महामत्स्यः

(ख) महामत्स्यम्

(ग) महामत्स्यया

(घ) महामत्स्येन

11. प्रदत्तविकल्पेभ्यः शुद्धं पदं चित्वा लिखत (केवलं प्रश्नत्रयम्) $1 \times 3 = 3$

(i) राजद्वारे श्मशाने च यः तिष्ठतः स बान्धवः।

(क) अतिष्ठत्

(ख) तिष्ठति

(ग) तिष्ठन्ति

(घ) तिष्ठन्ति

(ii) नाहं न्यायमन्यायं वा जानाति।

(क) अजानन्

(ख) जानीवः

(ग) जानामि

(घ) जानीतः

(iii) महाराजस्य सुन्दरः मुखम्।

(क) सुन्दरी

(ख) सुन्दरम्

(ग) सुन्दरे

(घ) सुन्दरम्

(iv) जीवलोकस्य षट् सुखम् सन्ति।

(क) सुखे

(ख) सुखाः

(ग) सुखानि

(घ) सुखे

'घ' भागः

(ii) पठितावबोधनम्

12. अधोलिखितं गंदयाशं पठित्वा तदाधारितान् प्रश्नान् संस्कृतेन उत्तरत– 5

सुबण्णस्य सङ्गीते यः सहजाभिलाषः आसीत् स एकदा राजभवने संवृत्या संगत्या पुनरधिकं दृढ़ीबभूव। एकस्मिन् दिने पुत्रेण साकं पुराणिकशास्त्री राजभवनमेत्य तत्रान्तः पुरस्त्रीजनसमक्षे पुराणप्रवचनमारभमाणं आदौ स्वपुत्रेण शुक्लाम्बरधरमित्यादिश्लोकं गापयामास तच्छ्रुत्वा तत्रत्याः सर्वे पर्यनन्दन्। अथ किञ्चित्कालानन्तरं तत्र समागतो राजा समुपविश्य पुराणमाकर्णयति स्म।

(अ) एकपदेन उतरत (केवल प्रश्नद्वयम्)

(i) सुब्वण्णस्य सहजाभिलाषः कुत्र आसीत् ?

(ii) पुराणिकशास्त्री केन साकं राजभवनम् आगतवान् ?

(iii) पुराणिकशास्त्री स्वपुत्रेण किं गापयामास ?

(आ) पूर्णवाक्येन उत्तरत (केवलं प्रश्नद्वयम्)

(i) सुबण्णस्य सहजाभिलाषः क्या दृढ़ीवभूर ?

(ii) किं श्रुत्वा तत्रत्याः सर्वे पर्यनन्दन् ?

(iii) किञ्चित्कालानन्तरं तत्र समागतो राजा किं करोति स्म।

(इ) निर्देशानुसारम् उत्तरत- (केवलं प्रश्नद्वयम्)

(i) श्तच्छ्रुत्वा तत्रत्याः सर्वे पर्यनन्दन् इत्यत्र क्रियापदं किम् ?

(ii) 'सह इत्यस्य पर्यायपदं किम् ?

(iii) 'संगत्या' इत्यस्य विशेषणपदं किम् ?

13. अधोलिखितं पद्यं पठित्वा तदाधारितान् प्रश्नान् संस्कृतेन उत्तरत–

काचः काञ्चनसंसर्गाद् मारकती द्युतिम।

तथा सत्सन्निधानेन मूर्खो याति प्रवीणताम्।।

(अ) एकपदेन उत्तरत् (केवल प्रश्नद्वयम्) **1/2 × 2 = 1**

(i) काचः कस्मात मारकतीं दयुतिं धते?

(ii) काचः कीदृशीं दयुतिं धते?

(iii) सत्सन्निधानेन कः प्रवीणतां याति?

(आ) पूर्णवाक्येन उत्तरत (केवलं प्रश्नद्वयम्) **1 × 2 = 2**

(i) काचः काञ्चनससर्गात् किं धते?

(ii) मूर्खः कथं प्रवीणता याति?

(iii) कः काञ्चनसंसर्गाद् मारकतीं दयुतिम् धते।

(इ) निर्देशानुसारम् उत्तरत - 'केवलं प्रश्नद्वयम्) **1 × 2 = 2**

(i) 'यातिः' क्रियायाः कर्तृपदं किम्?

(ii) 'दयुतिम्' इत्यस्य कं विशेषणपदम् अत्र प्रयुक्तम्?

(iii) 'निपुणताम्' इत्यस्य पर्यायपदं किम्?

14. अधोलिखित नाट्यांशं पठित्वा तदाधारिताम् प्रश्नान् संस्कृतेन उत्तरत- **5**

वै० गौरांग - (तन्तुवायानुद्दिश्य) भो भो। यूयं निमितान् पदान् मह्यं दत्त।

तन्तुवाया- न वयमयोग्यमूल्यत्वात् परं निर्मामः।

वै० गौरांग- अस्तु शोभनं परं निर्माय महयं दत्त, योग्य मूल्य भविष्यति गुणाः (इति पञ्चदशमुद्रादाति तेन गृहणन्ति तेषां हठातेषां वसने निबध्य गलहस्तेन निष्कासयति।)

तन्तुवायाः - (द्वारि स्थिताः) महाराजा न वयं शतमूल्य परं पञ्चदशभिरेव मुद्राभिनिमास्यामः।

वै० गौरांग- (साक्षेपन) क हमें कोलाहलं कुर्वन्ति द्वारा गत्वा सामर्झाम्, कशया तांस्ताइयति।) गच्छत अपरं शोभनं पटं निर्माय समानयत (मुद्राः प्रखिप्य ते गच्छन्ति।)

(अ) एकपदेन उत्तरत (केवलं प्रश्नद्वयम्) **1/2 × 2 = 1**

(i) तन्तुवायाः कुत्र स्थिता प्रार्थनां कुर्वन्ति?

(ii) वैः गौरांगः कति मुद्राः ददाति?

(iii) के मुद्राः प्रक्षिप्य गच्छन्ति?

(आ) पूर्णवाक्येन उत्तर (केवलं प्रश्नद्वयम्) **1 × 2 = 2**

(i) तन्तुवायाः किमर्थं पटं न निर्मान्ति?

(ii) वै. गौरांगः तन्तुवायान् कथं निष्कासयति?

(iii) वै. गौरांगः तान् कथं ताडयति?

(इ) निर्देशानुसारम् उत्तसरत - (केवलं प्रश्नद्वयम्) **1 × 2 = 2**

(i) 'योग्यम्' इति कस्य विशेषणपदम्?

(ii) निर्मास्यामः 'इति क्रियायाः कर्तृपदं किम्?

(iii) मध्यम् इति सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम् ?

15. अधोलिखितस्य भावार्थं मन्जूषाप्रदत्त पूरयित्वा पुनः लिखत- $1 \times 3 = 3$

एकोऽप्यमात्यो मेधावी शूरो दक्षो विचक्षणः।

राजानं राजपुत्रं वा प्रापयेन्महतीं श्रियम् ॥

भावार्थः- श्लोकेऽस्मिन् योग्यमन्त्रिणः गुणाः महत्वं च (ii).....। एकः बुद्धिमान् शूरवीर कुशलश्च एकः मन्त्री अपि (ii) ..... महती श्रियं (iii) ..... शक्नोति।

मञ्जूषाः

(राजपरिवारं वर्णितम्, प्रापयितुं)

अथवा

प्रदत्तभावार्थत्रयात् शुद्ध भावार्थं चित्वा लिखत- $1 \times 3 = 3$

(क) शुभाशुभपरित्यागी भक्तिमान् यः स मे प्रियः।

(i) शुभाशुभकर्मफलत्यागकर्ता भक्तियुक्तः नरः ईश्वरस्य प्रियः ।

(ii) शुभाशुभकर्मणां त्यागं करोति नरः।

(iii) भक्तियुक्तः नरः शुभं अशुभञ्च कर्म न करोति।

(ख) सन्निमितं वरं त्यागो विनाशे नियते सति।

(i) यदि विनाशः निश्चितः तर्हि श्रेष्ठनिमित्ताय त्यागः वरम् भवति।

(ii) सन्निमितं त्यागः न कदापि करणीयः।

(iii) विनाशे सति किं निमित्तं त्यागः करणीयः।

(ग) षड्दोषाः पुरुषेण हातव्या भूतिमिच्छता।

(i) सुपुरुषेण सर्वे दोषाः त्यक्तव्याः।

(ii) कल्याणकारिणा पुरुषेण सर्वे दोषाः त्यक्तव्याः।

(iii) यदि मानवः स्वकल्याणं इच्छति तर्हि तेन षड् दोषाः त्यक्तव्याः।

16. अधोलिखितान्वये रिक्तस्थानानि पूरयत– **1 × 3 = 3**

तद् ये चरन्ति धर्मेण प्रजा वा राज्यशासकाः।

समृद्धिर्जायते तेषामन्येषां तु क्षयो ध्रुवः।।

अन्वयः – तत् ये (i)..... प्रजा वा धर्मेण (ii)..... तेषां समृद्धिः (iii)..... अन्येषां तु क्षयो ध्रुवः।

17. 'क' स्तम्भस्य वाक्यांशानां 'ख' स्तम्भस्य वाक्यांशैः सह मेलनं कुरुत–

1/2 × 4 = 2

क भागः	**ख भागः**
(1) कुसुमस्तबकस्येव	(क) आलस्य दीर्घसूत्रता
(2) निद्रा तन्द्रा भयं क्रोधः	(ख) भृत्यास्ते तात योजिताः
(3) मन्त्रो विजयमूलं हि	(ग) दवयी वृतिर्मनस्विनः
(4) जधन्याश्य जघन्येषु	(घ) राजां भवति राघव

18. अधोलिखितवाक्येषु रेखांकितपदानां प्रसंगानुसारं अर्थ लिखत- (प्रश्नचतुष्ट्यम्)

1/2 × 4 = 2

(i) धनानि जीवितं चौव परार्थे प्राज्ञः उत्सृजेत्।

(ii) करोति मनसा हिंसा सः हि भीरुः पलायिता।

(iii) अथ चितं समाधातुं न शक्नोषि मयि स्थिरम्।

(iv) इह जगति सर्वजन्तूनाम्।

(v) एवम् अवसिते पुराणे राजा शास्त्रिणमुद्दिश्य प्राह।

भागः 'घ'

(ii) संस्कृत-साहित्येतिहासस्य सामान्यः परिचयः

19. अधोलिखितप्रश्नानाम् उत्तराणि लिखत। (केवलं प्रश्नत्रयम्) **1 × 3 = 3**

(i) 'देववाणी' इति कस्याः भाषायाः नाम?

(ii) 'संस्कृत- शब्दस्य व्युत्पतिं लिखत।

(iii) संस्कृतभाषा कस्य भाषापरिवारस्य भाषा?

(iv) 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' कस्यां भाषायां लिखतं वर्तते?

20. अधोलिखितप्रश्नानाम् उत्तराणि लिखत। (केवलं प्रश्नचतुष्टयम्) **1 × 4 = 4**

(i) वेदाः कति सन्ति?

(ii) 'कृष्णयजुर्वेदः' कस्य वेदस्य रूपं वर्तते।

(iii) सङ्गीतशास्त्रस्य उद्भवः कस्मात् वेदात् स्वीक्रियते ?

(iv) वेदाङ्गानि कति सन्ति ?

(v) वैदिक साहित्यस्य ज्ञानप्रधानाः आध्यात्मिक ग्रन्था के ?

21. अधोलिखितप्रश्नानाम् उत्तराणि लिखत। (केवल प्रश्नत्रयम्) $1 \times 3 = 3$

(i) रामायणे कति श्लोकाः सन्ति ?

(ii) रामाणस्य रचयिता कः?

(iii) 'शतसाहस्त्री' इति कस्य नाम?

(iv) महाभारते कति पर्वाणि सन्ति?

अंकतालिका

कक्षा एकादशी

संस्कृतम् (केन्द्रिकम्) कोड-322

सम्पूर्णाहकाः-80 **समयः होरात्रयम्**

अपठितावबोधनम्

1. (अ) (i) वृक्षारोपणं (ii) मानवजीवस्य

(iii) वृक्षेषु

(आ) (i) प्रदूषणसमस्यायाः विषये अदय सम्पूर्ण विश्वः चिन्ताकुलः अस्ति।

(ii) प्रदूषणसमस्या तदैव उपस्थिता यदा मानवेन स्वार्थसिद्धये वनकर्तनम् आरब्ध म्।

(iii) वृक्षाणाम् अभावे विषाक्तवायुः, अतिवृष्टिः, अनावृष्टिः, भूक्षरणञ्च भवति।

(इ) वृक्षो रक्षति रक्षितः', 'वृक्षाणा महत्त्वम्

(ई) (i) विश्वः

(ii) सम्पूर्ण विश्वः

(iii) शुद्ध

(iv) पर्यावरणाय

2. (i) प्रियमित्र

(ii) शुभसमाचारं

(iii) भगिन्याः

(iv) तारिकारां

(v) आगमिष्यति

(vi) पूर्वमेव

(vii) त्रिचतुर्दिना

(vii) आगन्तव्यम्

(ix) प्रणामाः

(x) प्रियमित्रम्

3. (i) नीडानि

(ii) वृक्षतले

(iii) वृष्टिः

(iv) वृष्टिजलेन

(v) शीतेन

(vi) अनुभवसि

(vii) निर्माणम्

(vii) क्षुद्राः

(ix) अधः

(x) नष्टानि

4. (i) किम् आनेतव्यमस्ति आपणात?

(ii) अभ्यासपुस्तिकाः तु मया अपि आनेतव्याः।

(iii) परमद्य गृहे मे मातुलः आगमिष्यति।

(iv) मम मातुलः सायंकाले आगमिष्यति।

(v) आगच्छतु तदा तु शीघ्रमेव चलावः।

5. (i) महत्सु एव

(ii) कोऽतिभार

(iii) प्रत्युवाच

(iv) तन्तुवायम् च

6. (i) (क) दातव्यम्

(ii) (ग) गम् + क्त

(iii) (ख) आनी + क्तवतु

(iv) (ख) उपविष्टः

7. (i) (ग) बालमृगेन्द्र

(ii) (घ) पटम्

(iii) (ख) अकरुणं

(iv) (ख) मुनिना

8. (i) (ग) गच्छ

(ii) (ख) दास्याम:

(iii) (ग) अवदन्

(iv) (ख) वदसि

9. (i) शुष्कपत्रराशे:

(ii) पुत्रेण

(iii) पुष्करिणी

(iv) महयम्

10. (i) (क) प्रवीणतां

(ii) (ख) निषिध्यते

(iii) (क) महामत्स्य:

11. (i) (ख) तिष्ठति

(ii) (ग) जानामि

(iii) (ख) सुन्दरम्

(iv) (ग) सुखानि

पठितावबोधनम्

12. (अ) (i) संगीते (ii) पुत्रेण

(iii) शुक्लाम्बरधरमित्यादिश्लोकं

(आ) (i) सुब्बण्णस्य संगीते सहजाभिलाषः राजभवने संवृत्या संगत्या दृएीबभूव।

(ii) शुक्लाम्बरधरमित्यादिश्लोकं श्रुत्वा तत्रत्याः सर्वे पर्यनन्दन् ।

(iii) किञ्चित्कालानन्तरं तत्र समागतो राजा समुपविश्य पुराणमाकर्णयति स्म।

(इ) (i) पर्यनन्दन्

(ii) साकं

(iii) संवृत्या

13. (अ) (i) काञ्चनसंसगीत्

(ii) मारकतीं

(iii) मूर्खः

(आ) (i) काचः काञ्चनसंसर्गात् मारकतीं द्युतिम् धते।

(इ) (ii) मूर्खः सत्सन्निधानेन प्रवीणतां याति।

(iii) काचः काञ्चनसंसर्गात् मारकतीं द्युतिम् धत्ते।

(इ) (i) मूर्खः

(ii) मारकतीं

(iii) प्रवीणतां

14. (अ) (ii) द्वारि स्थिताः

(ii) पञ्चदशमुद्राः

(iii) तन्तुवायाः

(आ) (i) तन्तुवायाः अयोग्यमूल्यत्वात् पटं न निर्मान्ति।

(ii) वै. गौरांगः तन्तुवायान् गलहस्तेन निष्कासयति।

(iii) वै० गौरांगः तान् कशया ताडयति।

(इ) (i) मूल्यम्

(ii) वयं

(iii) वै० गौराङ्गाय

15. (i) वर्णितम्

(ii) राजपरिवार

(iii) प्रापयितुं

अथवा

(क) (i) शुभाशुभकर्मफलत्यागकर्ता भक्तियुक्तः नरः ईश्वरस्य प्रियः।

(ख) (i) यदि विनाशः निश्चितः तर्हि श्रेष्ठनिमिताय त्यागः वरम् भवति।

(ग) (i) यदि मानवः स्वकल्याणं इच्छति तर्हि तेन षड् दोषाः त्यक्तव्याः।

16. (i) राज्यशासकाः

(ii) चरन्ति

(iii) जायते

17. 'क' स्तम्भस्य वाक्यांशानां 'ख' सत्म्भस्य वाक्यांशैः सह मेलनं कुरुत।

क भाग:	ख भाग:
(1) कसुमस्तबकस्येव	(ग) द्वयी वृत्तिर्मनस्विन:
(2) निद्रा तन्द्रा भयं क्रोध:	(क) आलस्य दीर्घसूत्रता
(3) मन्त्रो विजयमूलं हि	(घ) राज्ञां भवति राघव
(4) जघन्याश्च जघन्येषु	(ख) भृत्यास्ते तात योजिता:।

18. (i) बुद्धिमान्

(ii) कातर:

(iii) मन:

(iv) संसार

(v) समाप्ते

19.

(i) संस्कृतभाषाया:

(ii) सम् + कृ + क्त

(iii) भारोपीयपरिवारस्य

(iv) संस्कृतभाषायाम्

20.

(i) चत्वार:

(ii) यजुर्वेदस्य

(iii) सामवेदात्

(iv) षड्

(v) उपनिषद:

21.

(i) 24000 चतुर्विंशतिसहस्र

(ii) वाल्मीकि:

(iii) महाभारतस्य

(iv) अष्टादश

आदर्श प्रश्नपत्रम-5

कक्षा एकादशी

संस्कृत (केन्द्रिकम्) कोड़ 322

समयः होरात्रयम् **पूर्णांकाः 80**

सामान्य निर्देशाः

- प्रश्नानां निर्देशाः ध्यानेन पाठनीयाः
- कृपया सम्यक्तया परीक्षणं कुर्वन्तु यत् अस्मिन् प्रश्नपत्रे 21 प्रमुखाः प्रश्नाः सन्ति।
- सर्वेषा प्रश्नानां संस्कृतेन उत्तराणि लेखनीयानि
- प्रश्नपत्रे चत्वारो भागाः भविष्यन्ति
- 'क' भागः– अपठित अतबोधनम् 10 अङ्काः
- 'ख' भागः– रचनात्मक कार्यम् 15 अङ्काः
- 'ग' भागः– अनुप्रयुक्त व्याकरणम् 20 अङ्काः
- 'घ' भागः– 1. पठितावबोधनम् 25 अङ्काः
  2. संस्कृतसाहित्येतिहासस्य सामान्यः परिचयः 10 अङ्काः

भागः 'क'

अपठितांशवधोधनम्

1. अधोलिखित गद्यांशं पठित्वा प्रदत्त प्रश्नान् उत्तरत–

संसारे सर्वाधिकभाषासु अनूदितः ग्रन्थोऽस्ति – श्रीमदभगवद्गीता। गीतायाः एकः प्रसिद्धः श्लोकांशोऽस्ति – "यद्यदाचरति श्रेष्ठः तत्तदेवेतरो जनः।" अस्याः पंक्ते। अर्थ

अस्ति – यथा श्रेष्ठाः ज्येष्ठाः समाचरन्ति तथैव कनिष्ठाः अपि व्यवहरन्ति। यदि शिक्षकाः विद्वांसः, विनम्राः संयमादिगणोपेताः च भवन्ति तेषां छात्राः तान् आदर्शान् मत्वा तेषां गंणानाम् अनुसरणं कर्तुं प्रयतन्ते। मातापितरौ यथा सन्ततिं पालयतः शिक्षयतः च स्वीजीवने अपि यथा व्यवहरतः तथैव सन्ततयः अपि गुणान् अङ्गीकुर्वन्ति। अत एव श्रेष्ठानां जनानां वरिष्ठानां नागरिकानां, नेतृणाम् अभिनेतृणां क्रीडाकानां च इदं प्रमुखं कर्तव्य भवेत् यत् ते स्वचरिश्रस्य निर्मलतां रक्षेयुः परोपकारादिकर्मसु च निरताः भवेयुः। यतः सामान्यजनाः तान् आदर्शान्। मन्यते।

(अ) एकपदेन उत्तरत– (केवलं प्रश्नद्वयम्) **1 × 2 = 2**

(i) सर्वाधिकभाषासु अनूदितः ग्रन्थः कः?

(ii) यथाश्रेष्ठाः समाचरन्ति तथा के व्यवहरान्ति?

(iii) वयं कस्य निर्मलतां रक्षेम?

(आ) पूर्णवाक्येन उत्तरत– (केवलं प्रश्नद्वयम्) **2 × 2 = 4**

(i) 'यद्यदाचरति श्रेष्ठः' अस्याः पंक्ते। कः अर्थः?

(ii) छात्राः कान् आदर्शान् मत्वा अनुसरणं कुर्वन्ति?

(iii) श्रेष्ठानां, वरिष्ठानां, क्रीड़कानां च कर्तव्यं किं भवेत्?

(इ) अस्य अनुच्छेदस्य समुचितं शीषर्कं लिखत। **1**

(ई) यथानिर्देशम् उत्तरत– (केवलं प्रश्नत्रयम्) **1 × 3 = 3**

(i) 'अनूदितः ग्रन्थः' अनयोः विशेषणपदं किम्?

(क) ग्रन्थः (ख) अनूदितः

(ग) श्रेष्ठः (घ) ज्येष्ठः

(ii) 'यथा श्रेष्ठाः ज्येष्ठाः समाचरन्ति' अत्र क्रियापदं किम्?

(क) व्यवहरन्ति

(ख) मन्यन्ते

(ग) समाचरन्ति

(घ) कुर्वन्ति

(iii) 'पुस्तकम्' इत्यस्य पर्यायपदम् अनुच्छेदात् चित्वा लिखत।

(क) गीता

(ख) प्रसिद्धः

(ग) ग्रन्थः

(घ) कर्तव्यम्

(iv) 'सामान्यजनाः तान् आदर्शान् मन्यन्ते' अत्र कर्तृपदं किम्?

(क) आदर्शान्

(ख) सामान्यजनाः

(ग) मन्यन्ते

(घ) सामन्याः

भागः 'ख'

रचनात्मक कार्यम्

2. भवान्/भवती रमेशः/रमा/शैक्षिक-भ्रमण-दले समावेशाय प्रधानाचार्यां च पुनः पत्रं लिखत। **1/2 × 10 = 5**

सेवायाम्

(i) .....

राजकीय सर्वोदय सहशिक्षा विद्यालयः, सुल्तानपुरी

विषयः (ii) ..... समावेशाय निवेदनम्।

मान्याः!

सादरं (iii) ..... अस्ति यद् अहम् एतस्मिन् (iv) ..... एकादशी कक्षायाम् 'अ' वर्गे पठामि। एवं मया सूयते यद् आगामिनि शीतकाले अस्माकं विद्यालयात किमपि (v) ..... नैनीतालं गमिष्यति। नूतनः स्थलानां दर्शने, नूतन-तथ्यानां ज्ञानार्जने च मम (vi) ..... अभिरुचिः। अतः अहम् अपि (vii) ..... दलेन सह गन्तुम् इच्छामि। एतदर्थं मया माता-पित्भ्याम् (viii) ..... अपि प्राप्ता। साग्रहं (ix) . ..... यदं एतदर्थम् अनुमतिं प्रदाय (x) ..... अयं जनः।

भवतां विनीत। शिष्य/शिष्या

रमेशः/रमा

मञ्जूषा

अनेन, महति, अनुमतिः, प्रार्थयामि, कृतार्थीकरणीयः, निवेदनीयम्, प्रधानाचार्याः, विद्यालये, शैक्षिक भ्रमणदलम्, शैक्षिकभ्रमणदले।

3. मञ्जूषाप्रदत्तशब्दानां साहायतया अधोलिखितां कथां पूरयित्वा पुनः लिखत–

1/2 × 10 = 5

भारतीयः योगी सर्वत्र (i) ....., विश्वे सर्वदिक्षु स्वस्य योगबलात् अध्यात्मज्ञानं प्रसारितवान् स्वामिविवेकानन्दः। विदेशेषु तेन प्राप्ताः (ii) ..... असंख्यकाः। स्वामी महानौकया चीन देशं प्राप्नोत्। तत्र (iii) ..... चीनतरजनानां प्रवेशः निषिद्धः इति सः जानातिस्म। तथापि इतरमतेषु विद्यमानाः अत्कृष्टाः अंशा। (iv) .... इति धिया सः बलात् मन्दिरमेकं प्रविष्टवान्। सपदि द्वित्राः रक्षका। (v) .... उपरुध्य स्थिताः। स्वामिन्ः (vi) ..... कश्चन द्विभाषाज्ञः अनुवादक' आसीत्। यदा सः अपि (vii) ..... उद्युक्तः तदा स्वामि तं गृहीत्वा 'महोदय। योगी इति पदं (viii) ..... कथम् अभिधीयते' इति अपृच्छत्। (ix) ..... तत् पदं त्वरया उच्चार्य अपगतः। श्रणान्तरे स्वामी रक्षकान् उद्दिश्य 'अहं भारतदेशात् आगतः योगी अस्मि' इति उच्चैः अवदत्। आश्चर्य नाम। (x) ..... चीन रक्षकाः स्वामिनं नमस्कृतवन्तः सत्कृतवन्तः च।

मञ्जूषा

मन्दिरेषु, पूज्यते, ज्ञातव्याः, साहारयार्थम्, स्वामिनम् अनुवादकः, प्रहरणोद्युक्ताः, चीनभाषया, अनुभवाः, पलायने

4. वार्तालापे शब्दसूची साहाय्येन रिक्तस्थानं पूरयत– $1 \times 5 = 5$

वैधः– आगच्छ पुत्र। किं जातम्? जवरः अस्ति किम्?

राजीवः (i) .....

वैधः– एवम्। ज्वरः न अस्ति। उदरे पीड़ा वर्तते। ह्यः किं भक्षितम्?

राजीवः (ii) .....

वैधः– अहो् अपणे आलुकस्य वटकाः खादिताः। किं न जानासि? अधुना बहिः खाद्यवस्तूनि न खादितव्यानि। एतत् चूर्णं स्वीकरोतु।

राजीवः (iii) .....

वैधः– अरे नहि! कटुः नास्ति। पुनरपि औषधे कृते स्वादः न गणनीयः।

राजीवः (iv) .....

वैधः– दिने त्रिवारम् एकचमसमात्रम् उष्णजलेन ग्रहीतव्यम्।

राजीवः (v) .....

वैधः– पुनः आगमनस्य आवश्यकता एव न भवष्यिति। स्वास्थ्यं प्रति भविष्ये जागरुकः भव। आरोग्यं परमं सुखम्।

राजीवः धन्यवादः/प्रणमामि।

मञ्जूषा

(i) न एतत् चूर्णं कटुः अस्ति।

(ii) न ज्वरः न अस्ति। उदरे पीड़ा वर्तते।

(iii) पुनः आगमनम् कदा भविष्यति?

(iv) ह्यः अधिकं किमापि न आपणे आलुकस्य वटकाः स्वादिताः।

(v) अस्तु ददातु। दिने कतिवारं स्वीकरणीयम्?

भागः 'ग'

अनुप्रयुक्त व्याकरणम्

5. अधोलिखित-वाक्येषु रेखांकितदानां सन्धिं सन्धि विच्छेदं वा कुरुत (केवल प्रश्नत्रयम्) $1 \times 3 = 3$

(i) ददर्श रामो दुर्दर्श युगान्ते भास्करं याता।

(ii) कोऽप्रियः प्रियवादिनाम्।

(iii) अस्ति मध्यदेशालङ्कार- भूता मेशलेन भवो विन्ध्याटवी नाम।

(iv) तन्तुवायः- विंशत्यधिकं शतम्।

6. अधोलिखितवाक्यषु रेखाङ्कितपदानां प्रकृतिप्रत्ययोः प्रकृतिः प्रत्यमानां वा पदेषु शुद्धं चित्वा लिखत - (केवलं प्रसत्रयम्) $1 \times 3 = 3$

(i) सम्प्राप्तकालं दातव्यं ददासि न विलम्बसे।

(क) दा + तव्यम्

(ख) दा + तव्यत्

(ग) दा + तब

(घ) दा + क्त

(ii) सोऽनर्थः सुमहान् स्मृतः।

(क) स्मृ + त

(ख) स्मृ + क्तः

(ग) स्मृ + क्त

(घ) सु + मृतः

(iii) न त्वं विक्रेतुं प्रभुः।

(क) वि + मा ल्यप्

(ख) वि + की तुम

(ग) वि + क्री + तुमुन

(घ) वि+ क्रेट + क्त

(iv) दुष्यन्तः निमित्तं सूच् + क्त्वा।

(क) सूचिवा

(ख) सूचित्वा

(ग) सुचित्य

(घ) सुचः

7. अधोलिखितवाक्येषु प्रदत्तीकल्पेभ्यः समुचित शब्दान् चित्वा रिक्त स्थानानि पूरयत। (केवल प्रश्नत्रयम)। **1 × 3 = 3**

(i) किं न खलु वालेऽस्मिन् औरत इव ..... सिध्यति मे मनः।

(क) पुत्रम् (ख) पुजेन

(ग) पुत्र (घ) पुत्रात्

(ii) ..... सह आगच्छतु।

(क) मम (ख) मया

(ग) मे (घ) मयि

(iii) ..... परितः नाना वृक्षाः सन्ति।

(क) पुष्कर्ण्या

(ख) पुष्करिणी

(ग) पुष्करिणीं

(घ) पुष्करिर्ण्याः:

(iv) मुनिः ..... प्रति बालकम् आनीतवान्।

(क) आश्रम

(ख) आश्रमेण

(ग) आश्रम

(घ) आश्रमे

8. अधोलिखितवाक्येषु प्रदत्तविकल्पेभ्यः समुचितक्रियापदं चिला रिक्त स्थानानि पूरयत- **1 × 3 = 3**

(i) तंत्र ग्रामस्य जनाः स्नानं .....।

(क) करोति (ख) कुर्वन्ति

(ग) कुर्मः (घ) कुरु

(ii) न अहं क्रेतु.....।

(क) शक्यते (ख) शक्नोमि

(ग) शस्तुम् (घ) शक्लुतः

(iii) न वयं वटान् .....।

(क) निर्मामाः

(ख) निर्माति

(ग) निर्मान्ति

(घ) निर्मितः

(iv) नहि, ते मां .....।

(क) वाडविण्यान्तः

(ख) ताडयन्ति

(ग) ताडयति

(घ) ताडयतः।

9. समुचित उपपदविभक्तिरूपं चिनुत - केवलं प्रसवयम्) **1 × 3 = 3**

(i) पुराणिकशास्त्री भवन ..... साकम् अगमत्। (पुत्र)

(ii) ..... पार्श्वे सुब्बवणः उपविष्टः आसीत्।

(iii) ..... समीपे राज्ञः प्रमाणपत्रम् अस्ति।

(iv) यूयं निर्मितान् पटान् ..... दत्त। अस्मद्)

10. अधोलिखितवाक्येषु वाच्यानुसारं रिक्तस्थानानि पुरयत-(केवलं प्रश्नद्वयम्)

1 × 2 = 2

(i) रामेण विद्यालयः .....।

(क) गच्छति (ख) गम्यते

(ग) गतः (घ) अगच्छत्

(ii) छात्राभिः उत्तराणि .....।

(क) लिखितम्

(ख) लिखिताम्

(ग) लिख्यते

(घ) लिखितानि

(iii) शिक्षकेण ..... पठिता।

(क) बालिका

(ख) बालिकां

(ग) बालिकाः

(घ) बालिकायः

11. प्रदत्तमिकल्पेभ्यः शुद्ध पदं चित्वा लिखत - (केवलं प्रश्नन्त्रम्) $1 \times 3 = 3$

(i) बालकः ..... प्रसन्नः सञ्जातः।

(क) कृष्णः

(ख) कृष्णस्य

(ग) कृष्णम्

(घ) कृष्णान्

(ii) अयमेव समुचितः .....।

(क) समयः

(ख) समयेन

(ग) समयात्

(घ) समयस्य

(iii) बालकः ..... कम्पते क्रन्दति च।

(क) भयम्

(ख) भयाय

(ग) भयेन

(घ) भयात्

(iv) पुष्करिणीं परितः नाना .....सन्ति।

(क) वृक्षः

(ख) वृक्षाः

(ग) वृक्षैः

(घ) वृक्षम्

भागः 'घ'

पठित-अवबोधनम

12. अधोलिखितं गद्यांश पठित्वा तदाधारित-प्रश्नानाम् उत्तराणि

संस्कृतेन लिखत-

एकदा तु प्रत्यचसि सहसैव तस्मिन बने मृगयाकोलाहलध्वनि -रुदचरत् आकर्ण्य च तमहमुपजातवेपथुरभकतया भयविह्वलः पितुः पचपुटान्तरमूविशम् अधिराच्च प्रशान्ते तस्मिन् क्षोभितकान्ने, मृगया कलकले पितुरुत्सङ्गादीदिन निष्क्रम्य कोटरस्थ एवं शिरोधरां प्रसार्य किमिदमिति दिक्षुराभिमुखमापत च्छत रसैन्यमहाक्षम् मध्ये च तस्य प्रथमे वयसि वर्तमान शबरसेनापतिमपश्यत्

(अ) एकपदेन उत्तरत- (केवलं प्रश्नदृवयम्)

(i) भयविह्वलः शुकशावकः कस्य पक्षपुरान्तरमाविशम्।

(ii) शुकशावकः कां प्रसार्य अपश्यत्?

(iii) शुकशावकः शपरसेनायाः मध्ये कम् अपश्यत्?

(आ) पूर्णवाक्येन उत्तरत - (केवलं प्रश्नद्वयम्)

(i) एकदा प्रत्युषसि तस्मिन् बने किम् अभवत्?

(ii) कीदृशः शुकशावकः पितुः पक्षपुरान्तरमतिशम्?

(iii) शुकशावकः कदा शिरोधरां प्रसार्य शबरसैन्यमद्राक्षत्?

(इ) यथानिर्देशम् उत्तरत - (केवलं प्रश्नद्वयम्)

(i) 'अन्तिमे' पदस्य किं विलोमपदं अत्र प्रयुक्तम्?

(ii) 'प्रथमे वयसि' इत्यनयोः पदयोः किं विशेषण पदम् प्रयुक्तम्?

(iii) 'शबरसेनापतिमश्यम्' अत्र किं क्रियापद प्रयुक्त्म्

13. अधोलिखित पद्यांशं पठित्वा तदाधारितवान् प्रश्नान् संस्कृतेन उत्तरत -

काचः काञ्चनसंसर्गादि धत्ते मारकर्ती द्युतिम्।

तथा सत्सन्निधानेन मुर्खो माति प्रतीशताम्

(अ) एकपदेन उत्तरत- (केवलं प्रश्नद्वयम् **1/2 × 2 = 1**

(i) काचः कदा मारकतीं घुतिं धते?

(ii) सत्सन्निथानेन कः प्रवीणताम् याति?

(iii) केन मूर्खः प्रवीणताम् याति।

(आ) पूर्णवाक्येन उत्तरत-(केवलं प्रश्नद्वयम्) **1 × 2 = 2**

(i) कः काञ्चनसंसर्गाद् धत्रे मारकतीं धुतिम्,

(ii) सत्सन्निधानेन कः कां याति?

(iii) काचः काञ्चनसंसर्गाद् कां धते।

(इ) यथानिर्देशम् उत्तरत-(केवलं प्रश्नद्वयम्) **1 × 2 = 2**

(i) 'मर्खो याति प्रवीणताम्' अत्र किं कर्तृपदं प्रयुक्तम्?

(ii) 'कान्तिम्' पदस्य पर्यायपदं किं प्रयुक्तम्?

(iii) 'विद्वान्' पदस्य किं विलोमपदं प्रयुक्तम्?

14. अधोलिखितं नाटयांश पठित्वा तदाधारितान् प्रश्नान् संस्कृतेन उत्तरत-

(ततः प्रविशन्ति पटं विक्रकेतुं क्रेतुं च कश्चितत्तन्तुवायः श्रेष्ठिनों च)

श्रेष्ठी - तन्तुवाय! किमस्य पटस्य मूल्यम्?

तन्तुवायः - विंशत्यधिकं शतम्।

श्रेष्ठी - नहि, नहि किञ्चिदधिकमेतत्। शतं मूल्यं गृहणीष्व।(ततः प्रविशति सानुचरो वैदेशिको गौराङगः।) स राजमुद्राङ् कतं प्रमाणपत्रम् दर्शयित्वा श्रेष्ठिनौ तन्तुवायञ्य भर्त्सयति।

वै. गौराङ्गः - तन्तुवाय। पश्य राजमुद्राङिकतं प्रमाणपत्रम्। न त्वं विक्रेतुं प्रभुः।

तन्तुवायः - तर्हि किमहमेनं पटं कुर्याम्?

वै. गौराङ्गः - इमं पटं मह्यं देहि, अहमेनं पटं विक्रकेष्ये, गृहणीष्व इमाः पञ्चाशन्मुद्राः (इति पञ्चाशनमुद्रा-सति)

(अ) एकपदेन उत्तरत-(केवलं प्रश्नद्वयम्) **1/2 × 1 = 1**

(i) पटस्य मूल्यं किं अस्ति?

(ii) गौराङगः प्रमाणपत्रम् दर्शयित्वा कौ भर्त्सयति?

(iii) विंशत्यधिकं कस्य मूल्यम् अस्ति?

(आ) पूर्णवाक्येन उत्तरत-(केवलं प्रश्नद्वयम्) **1 × 2 = 2**

(i) कः राजमुद्राङिकेतं प्रमाणपत्रं दर्शयति?

(ii) 'वैदेशिक गौरङगः पटस्या किं मूल्यं ददाति?

(iii) कः विक्रेतुं प्रभुः न आसीत्?

(इ) यथानिर्देशम् उत्तरत-(केवलं प्रश्नत्रयम्) **1 × 2 = 2**

(i) 'राजमुद्राङ्कितं प्रमाणपत्रं' अनयोः पदयोः विशेषणपदं किम्?

(ii) 'दास' इति शब्दस्य किं विलोमपदं प्रयुक्त्?

(iii) 'श्रेष्ठनौ तन्तुवायश्च भर्त्सयति।' इत्यत्र क्रियापदं किमस्ति?

15. अधोलिखितस्य पद्यस्य भावार्थं मञ्जूषाप्रदत्तपदैः पूरयित्वा पुनः लिखत-

1 × 3 = 3

(i) कञ्चिद् बलस्य भक्तं च वेतनं न यथोचितम्।

सम्प्राप्तकालं दातव्यं ददासि न विलम्बसे।।

भावार्थः-सैनिकेभ्यः (i) ....., (ii) ..... च उचित समये (iii) .....। भोजनवेतनयोः प्रदाने (iv) ..... न करोमि।

मञ्जूषा

ददासि, भोजनं, विलम्बं, वेतनं

अथवा

प्रदत्तभावार्थत्रयात् शुद्धं भावार्थं यित्वा लिखत- **1 × 3 = 3**

(क) कोऽप्रियः प्रियवादिनाम्।

(i) सदा प्रियमेव वक्तव्यम्।

(ii) प्रियवादी जनः सर्वेषां शत्रुः भवति।

(iii) ये जनाः प्रियं वदन्ति तेषां कृते कोऽपि अप्रियः (शत्रुः) न भवति।

(ख) वत्स सर्वदमन। शुन्तलावण्यं प्रेक्षस्व।

(i) वत्स! सर्वदमन शकुन्तलायाः पुत्रः अस्ति।

(ii) वत्स सर्वदमन! अस्य पक्षिणः सौन्दर्यं पश्य।

(iii) मम वत्सः सर्वदमनः शकुन्तलां पश्यति।

(ग) महाराजस्य बहु सन्तोषोऽभवत्।

(i) महाराजः सन्तुष्टः नाभवत्

(ii) राजा दुःखं प्राप्तवान्।

(iii) राज्ञः अतीव सन्तुष्टः अभवत्।

16. अधोलिखितान्वये रिक्तस्थानानि पूरयत- **1 × 3 = 3**

ये तु सर्वाणि कमाणि मयि संन्यस्य मत्पराः।

अनन्येनैव योगेन मां ध्यायन्त उपासते।।

अन्वयः- तु ये सर्वाणि (i) ..... मयि संन्यस्य मत् (ii) ..... (भूत्वा) अनन्येन योगेन माम् एव ध्यायन्तः (iii) .....।

मञ्जूषा

अपरा, उपासते, कर्मात्रि

17. अधोलिखितानां 'क' स्तम्भस्य वाक्यांशनां 'ख' स्तम्भस्य वाक्यांशैः सह सार्थक मेलनं कुरुत- **1/2 × 4 = 2**

'क'	'ख'
(i) समः शत्रौः च मित्रे च	(अ) बाहो स्पन्दसे वृथा।
(ii) मनोरथाय नाशंसे किं	(ब) बलात्कारोण कर्षति।
(iii) प्रकीडितुं सिंहशिशुं	(स) तथा मानापमानयोः।
(iv) निर्ममो निरहंकारः	(ह) समदुःखसुख क्षमी।

18. अधोलिखित वाक्येषु रेखांकितपदानां प्रसंगानुसारम् अर्थ लिखत–(प्रश्नचतुष्टयम्)

1/2 × 2 = 2

(i) सुब्बण्णस्य संगीते सहजाभिलाषः आसीत्।

(ii) सुब्बण्णः पुराणप्रवचनं कुतुहलेन श्रणोति।

(iii) अहं पुराणप्रवचनं न करोमि।

19. अधोलिखितप्रश्नानाम् उत्तराणि लिखत-(केवलं प्रश्नत्रयम्) **1 × 3 = 3**

(i) सर्वाधिकप्राचीना भाषा का?

(ii) संस्कृतशब्दस्य कः अर्थः?

(iii) संस्कृतशब्दस्य व्युत्पतिं लिखत?

(iv) देववाणी इति कस्याः भाषायाः नामवर्तते?

20. अधोलिखित प्रश्नानाम् उत्तराणि लिखत-(केवलं प्रश्नचतुष्टयम्) $1 \times 4 = 4$

(i) वेदा: कति सन्ति?

(ii) प्राचीनतम: वेद: क:?

(iii) गेयात्मक: वेद: क:?

(iv) ऋग्वेदे कति मण्डलानि सन्ति?

(v) ज्ञानप्रधाना: आध्यात्मिका: ग्रन्था: केनवेदेन सम्बन्धिता:?

21. अधोलिखित प्रश्नानाम् उत्तराणि लिखत-(केवलं प्रश्नत्रयम्) $1 \times 3 = 3$

(i) रामायणस्य रचयिता क:?

(ii) महाभारते कति पर्वाणि सन्ति?

(iii) पुराणानि मुख्यत: कति सन्ति?

(iv) महर्षि वेदव्यासस्य रचना का?

आदर्श प्रश्नपत्रम्

कक्षा एकादशी

संस्कृत (केन्द्रिकम्) कोड 322

समयः होरात्रयम् **सम्पूर्णाङ्काः 80**

भागः 'क'

अपठितांशवबोधनम्

1. (अ) (i) श्रीमद् भगवद्गीता

(ii) कनिष्ठाः

(iii) स्वचरित्रस्य

(आ) (i) अस्याः पंक्तेः अर्थः अस्ति– यथा श्रेष्ठाः ज्येष्ठाः समाचरन्ति तथैव कनिष्ठाः अपि व्यवहरन्ति।

(ii) छात्राः शिक्षकाः विद्धासः विनम्राः संयमादिगुणोपेताः च भवन्ति तेषां तान् आदर्शान् मत्वा तेषां गुणानम्क अनुसरणं कर्तुं प्रयतन्ते।

(iii) श्रेष्ठानां, वरिठानां, क्रीडकानां च कर्तव्यं भवेत् यत् ते स्वचरित्रस्य निर्मलतां रक्षेयुः परोपकारोदिकर्मलु च निरता। भवेयुः।

(इ) श्रीमद्भगवद्गीता/यद्यदानारति श्रेष्ठः बलदेवेतरो जनः

(ई) (i) ख अनुदितः

(ii) ग समाचरन्ति

(iii) ग ग्रन्थ

(iv) घ समान्यजनाः

2. (i) प्रधानाचार्या:

(ii) शैक्षिकभ्रमणदले

(iii) निवेदनीय

(iv) विद्यालये

(v) क्षेक्षिकभ्रमणदलम्

(vi) महति

(vii) अनेन

(viii) अनुमति:

(ix) प्रार्थयामि

(x) कृताथीकरणीय

3. (i) पूज्येन

(ii) अनुभवा:

(iii) पलायने

(iv) ज्ञातव्य:

(v) स्वामिनम्

(vi) साहय्यार्थम्

(vii) अनुवादक

(viii) मन्दिरेषु

(ix) चीनभाषया

(x) प्रहरणोद्युक्ता:

4. (i) नजरः न अस्ति! उदरे पीडा वर्तते।

(ii) झः अधिक किमपि न आपणे आलुकस्य वटकाः स्वदिताः।

(iii) न स्तत् चूर्ण कटः अस्ति!

(iv) अस्तु ददातु। दिने कतिवारं स्वीकरणीयम्।

(v) पुनः आगमनम् कदा भविष्यति।

भागः 'ग'

अनुप्रयुक्त

5. (i) रामः + दुर्दर्शं

(ii) कः + अप्रियः

(iii) मध्यदेश : अलङ्कार

(iv) विंशतिः + अधिकं

6. (i) (ख) दा + तव्यत्

(ii) स्मृ + क्त

(iii) (ग) वि + क्री + तुमुन

(iv) सूचित्वा

7. (i) (ग) पुत्रे

(ii) (ख) मया

(iii) (ग) पुष्करिणी

(iv) (ग) आश्रमम्

8. (i) (ख) कुर्वन्ति

(ii) (ख) शक्नोमि

(iii) (क) निर्मामः

(iv) (ख) ताडयिष्यन्ति

9. (i) पुत्रेण

(ii) पितुः

(iii) अस्य

(iv) महयम्

10. (i) (ग) गतः

(ii) (घ) लिखितानि

(iii) (क) बालिका

11. (अ) (i) पितुः

(ii) शिरोधरां

(iii) शबरसेनापतिम्

(आ) (i) एकदा तु प्रत्युषरि सहसैव वने मृगयाकोलाहल ध्वनि रुद रचयत।

(ii) नयविहवलः शुकशावकः पितु पक्ष पुडान्त रविशा।

(iii) अचिराच्च प्रशान्ते तस्मिन् श्रोभितकानने मृगयाकलकल
पितुरुत्सङ्गादीषदिव निष्क्रम्य कोटरस्थ एव शिरोधरां प्रस्तार्थ शवर
सैन्य मद्राक्षम्

(इ) (i) प्रथमे

(ii) प्रथने

(iii) अपश्यम्

12. (अ) (i) काञ्चनसंसगदि

(ii) मूर्खो/मूखे

(iii) सत्सन्ति धनेन

(आ) (i) काच

13. (अ) (i) विशंत्यधिक शवम्। (ii) श्रेष्ठिनो तन्तुवायञ्च

(iii) पटस्य

(आ) (i) वै॰ गौराङ्गः राजमुद्राङ्किकंत प्रमाणपत्रं दर्शयति।

(ii) वेदेशिक गौरङ्गः पटस्य पञ्चाशन्मुद्राः ददामि।

(iii) तन्तुवायः विक्रेतु प्रभु न आसीत्।

(इ) (i) राजमुद्राँकिकंत

(ii) प्रभु

(iii) भर्त्सयति

14. (क) (i) भोजन (ii) वेतन (iii) ददासि (iv) विलम्बं

15. (क) (i) ये जना प्रियं वदन्ति तेषां कृते कोऽपि अप्रियः (शत्रुः न भवति)।

(ख) (ii) वत्स सर्वदमन। अस्य पक्षिणः सौनृहर्यं पश्य।

(ग) (iii) राज्ञः अतीव सन्तुष्टिः अभवत्।

16. (i) कर्माणि

(ii) अपराः

(iii) उपासते

17. (क) (ख)

(i) सम: शत्रौ च मित्रे य (स) तथा मानापमानयौ:

(ii) मनोरथाय नाशंसे किं (अ) बहो स्पन्दसे वृथा

(iii) प्रकीडितुं सिंहाशिशुं (ब) बलात्कारेण कर्वति

(iv) निर्मनो निरहंकार: (द) सम दु:खसुख श्रमी

18. (i) स्वाभाविकीइच्छा

(ii) उत्सुकतया

(iii) पुराणस्य कथां

19. (i) संस्कृतभाषा

(ii) व्याकरणनियमै: सम्पन्नम असाधुत्वादिदोषै: रचितम्।

(iii) उपसर्ग क धातु: क्त प्रत्यय

(iv) संस्कृतभाषाया:

20. (i) चत्वार:

(ii) ऋग्वेद:

(iii) सामवेद:

(iv) दश

(v) उपनिषद:

21. (i) महर्षि वाल्मिकी

(ii) अष्टदशपर्वाणि

(iii) अष्टादश

(iv) महाभारतम्

नोट्स

नोट्स